ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

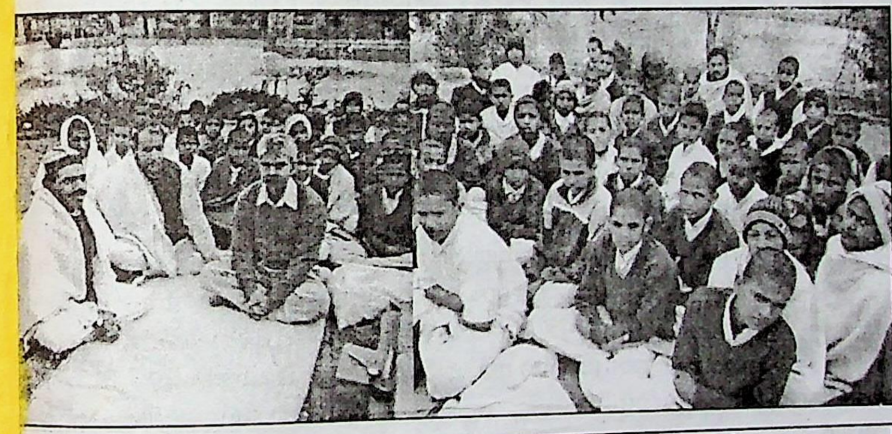
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४४ अंक २८ | १ जनवरी से ७ जनवरी, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८३ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०६ | सम्वत् २०६२ | पौ०शु०१

एक प्रति २ रुपया (भारत में) वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुलों में अंग्रेजी और कम्प्यूटर शिक्षा भी आवश्यक

विगत १३ नवम्बर, २००५ को क्षेण भारत के पांडिचेरी प्रान्त प्रथम आर्यसमाज की स्थापना र्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य गुरुकुलों की व्यवस्था को और अधिक आकर्षक एवं राष्ट्रहित तथा विद्या अर्जित करने वालों के लिए कल्याणकारी बनाने के लिए विचार व्यक्त किए।



गुरुकुल कलानोर में ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए श्री विमल वधावन आर्य, आचार्य यशपाल तथा डॉ० सुरेन्द्र वर्मा।

प्रयासों से सम्भव हुई। इस ग्रम आर्य समाज के मन्त्री डॉ० रेन्द्र वर्मा लगभग दस दिन की ल्ली यात्रा पर आए। इससे र्व उन्होंने गुजरात में जामनगर े आर्यसमाज तथा ऋषि ानन्द जन्मस्थली टंकारा की तिविधियों को भी देखा।

२७ दिसम्बर को प्रातः ६ बजे र्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ाल वधावन आर्य के साथ डॉ० ेन्द्र वर्मा हरियाणा के कुछ ुकुलों के दर्शनार्थ गए। उनके ाथ सार्वदेशिक सभा के पप्रधान आचार्य यशपाल भी थे। स दल ने गुरुकुल कलानौर, न्या गुरुकुल खरगौदा, स्वामी यामुनि विद्यापीठ सोनीपत तथा रुकुल मटिण्डु का दौरा किया। त्येक गुरुकुल में इन आर्य नेताओं ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ो सम्बोधित करते हुए उनसे ारक वार्तालाप किया तथा

श्री विमल आर्य ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति से निकलने के बाद प्रत्येक ब्रह्मचारी वास्तव में एक उत्तम आर्य पुरुष बनकर निकलता है। उसके पास चरित्र और उज्ज्वल मेधाबुद्धि के रूप में ईश्वर के दो अनमोल तोफे होते हैं जिनका आज सामान्य जनों में अभाव बनता जा रहा है।

उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति में वर्तमान सामाजिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दृष्टिगत अंग्रेजी तथा कम्प्यूटर शिक्षा का अच्छे स्तर का समावेश एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है। अंग्रेजी और कम्प्यूटर शिक्षा को गुरुकुलों के नियमित पाठ्यक्रमों में शामिल करके तथा अच्छे स्तर का प्रबन्ध उपलब्ध करवा कर गुरुकुलों को आकर्षण का केन्द्र बनाया जा सकता है।

वैदिक संस्कृति की रक्षा और प्रचार प्रसार के दोनों प्रमुख मंचों, आर्यसमाज तथा गुरुकुलों और अन्य शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से अंग्रेजी और कम्प्यूटर शिक्षा रूपी साधनों के प्रयोग में हमें संकोच नहीं करना चाहिए। इन साधनों से घृणा करते करते यदि हमने आर्यसमाज आंदोलन को इन साधनों से वंचित रखा तो हम उद्देश्य प्राप्ति में सफल नहीं हो पाएंगे। संस्कृत भाषा के माध्यम से वैदिक ग्रन्थों का प्रचार प्रसार भी कम्प्यूटर से ही सम्भव है।

डॉ० सुरेन्द्र वर्मा ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था को पहली बार करीब से देखने पर मेरे मन में एक विचित्र उत्साह का संचार हो रहा है कि हमारे आर्य पूर्वजों ने परमपिता परमात्मा की कृपा से किस तरह ये सब व्यवस्थाएं जुटा कर कार्य किए। हमारे मन में भी परमेश्वर ऐसे संकल्प उत्पन्न करें कि हम दक्षिण भारत में भी इसी प्रकार से वैदिक धर्म प्रचार प्रसार की योजनाएं बना सकें।

आचार्य यशपाल जी ने कहा कि मेरे जीवन की सारी शिक्षा गुरुकुलों में हीं हुई। हमारे पिता स्वामी दयामुनि जी को इस पद्धति से इतना प्रेम हुआ कि उन्होंने ही कई गुरुकुलों की स्थापना का महान कार्य सम्पन्न कराया। गुरुकुल पद्धति तो मुझे अपना निज जीवन लगती है इसके लिए जीना और मरना ही मुझे प्रिय है।

उन्होंने कहा कि अपने गुरुकुलों में अंग्रेजी और कम्प्यूटर शिक्षा के प्रवेश के सुझाव का क्रियान्वयन करने के लिए मैं स्वयं तत्पर हूं।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर कई समारोह

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सारे देश की आर्यसमाजों, सभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा विभिन्न स्तरों पर आयोजित किए गए। दिल्ली में २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या एक धर्मांध मुसलमान ने कर दी थी। उनके संस्कार के लिए अन्तिम यात्रा २५ दिसम्बर को दिल्ली के जिस मार्ग से होती हुई गई उसी मार्ग से प्रतिवर्ष एक विशाल शोभायात्रा २५ दिसम्बर को ही आयोजित की जाती है। आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में यह यात्रा अपने आप में एक विशाल गौरव का प्रतीक है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी यह यात्रा नई सड़क स्थित बलिदान भवन से प्रारम्भ होकर लालकिले के सामने एक जनसभा के रूप में सम्पन्न हुई।

शेष पृष्ठ ७ पर



बलिदान दिवस शोभा यात्रा के अवसर पर मंचस्थ श्री वेदव्रत शर्मा, पि. चन्ददेव, डॉ० योगानन्द शास्त्री, श्री लक्ष्मीचन्द, श्री राजेन्द्र दुर्गा तथा डॉ० रविकान्त। दूसरे चित्र में श्री जगदीश आर्य, श्री अनिल तनेजा, श्री इन्द्रदेव एवं श्री गुलाब सिंह राघव।

वेद स्वाध्याय

(ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त २ मन्त्र १ से ६ तक)

वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहिश्रुधी हवम्।।
१.२.१

वायु उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा जरितारः। सुतसोमा अहर्विदः।।
१.२.२

अथ तेषामुक्थानां श्रवणोच्चारणनिमित्तमुपदिश्यते।
१.२.३

इन्द्रवायू इमे सुता उपप्रयोभिरागतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि।।
१.२.४

वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू। तावायातमुपद्रवत्।।
१.२.५

वायविन्द्रश्च सुन्वत आयातमुप निष्कृतम्। मक्षित्था धिया नरा।।
१.२.६

मित्रं हुवे पूतदक्षं व्ररुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता।।
१.२.७

ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। क्रतुं बृहन्तमाशाथे।।
१.२.८

कवी नो मित्रावरुणा तुविजाताउरुक्षया। दक्षं दधाते अपसम्।।
१.२.६

Self Study of Vedas

Rigveda Mandal 1, Sukta 2, Hymn 1 to 9

Hymn 1 : O Almighty God! Life Principle of all lives, enlivening the whole animate world, of Grandest Majesty, mayest Thou be ever accessible to us be manifest in our hearts and hear our suppplications. O Lord, all the objects of nature are made by Thee accessible to all Thy creatures. We beseech Thee, protect their properties befitting them for the daily life of Thy creatures.

Hymn 2 : (1) O God of Infinite Power : Thy praisers or devotees glorify Thee well with the Mantras, (Holy Verses) being desirous of attaining true knowledge and having prepared the Juice of Soma and other plants for medical experiments.

(2) The other meaning is about Vayu or air. The scientists praise it or describe its properties so that it may be utilised properly.

Hymn 3 : (1) O Omniscient God, the Illuminator of the Vedic Speech! Thy Speech revealed in the form of the four Vedas which gives us the knowledge of various sciences and thus keeps us in touch with them is achieved by a person who imparts knowledge without deceit and who drinks the nectar of the Science of various objects created by Thee.

(2) In the case of the air, it is with its co-operation or through its medium that the sound can be heard which gives us knowledge of various sciences.

Hymn 4 : Because Yajnas producing water with various activities and all attainable enjoyments shine on account of the sun and the air and when they come, all beings desire happiness with the food materials and other articles.

Hymn 5 : O Omniscient God, the sun and the air created by Thee uphold and give light to all the objects of universe which Thou makest. They soon come to these objects to make them more useful.

Hymn 6 : O Omnipresent God! as the light of the sun in the sky and the air help in the growth of the sap of plants and herbs, so the soul and Prana (Vital breath) which reside in the body cause the growth or development of juice of the essential ingredients of the body and with their actions and intelligence soon accomplish their objects and reap the fruit of the deeds done by them.

Hymn 7 : I who am desirous of acquiring the knowledge of arts and crafts, accept the sun of pure vigour in the sky which gives us happiness in our daily activities on account of his light and the Prana residing in the body which is the devourer of diseases, as they accomplish the act of composing water. In the same way, I acquire the science of prana and apana (inhalation and exhalation etc.) which is the destroyer of various maladies.

Hymn 8 : Above mentioned Mitra and Varuna are created by God who is absolute Truth. They are augmenters of truth and water and causes of establishing contact with God, Veda and the water. They pervade this vast Yajna in the form of the universe.

Hymn 9 : The Mitra and Varuna are givers of happiness. They are famous on account of many qualities. They dwell in many objects of the world and are of dominion. They maintain strength and accomplish many deeds. They are born for the benefit of many and are the refuge of multitude. ▫

वैदिक धर्म सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज, फतेहपुर शेखावाटी, जिला सीकर (राज०) द्वारा दिनांक १८, १६, २० नवम्बर, २००५ को वैदिक धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दौरान सम्पन्न पंचकुण्डीय यज्ञ में २० जोड़े यजमान बने। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विनोद शास्त्री थे। अन्य आचार्य थे – ओमप्रकाश अवस्थी, रामाचार्य, रजनीकांत शर्मा, विमल प्रकाश व हुलासचन्द्र शास्त्री। वैदिक धर्म सम्मेलन में वैदिक आश्रम, पिपराली (सीकर) के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के एवं वैदिक अध्यात्म चेतना केन्द्र, सीकर के प्रमुख आचार्य अवस्थी जी के आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

भजनोपदेशकों श्री जबरसिंह, पं० मंगलदेव शर्मा के मधुर एवं ओज पूर्ण भजनोपदेशों को सुनकर श्रोताओं ने ज्ञानगंगा की शीतल धारा में डुबकियां लगाई। १६ नवम्बर को न्यू राजस्थान पब्लिक स्कूल में स्वामी सुमेधानन्द जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ जिसे नगर की प्रायः सभी शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों ने सुना। कार्यक्रम में फतेहपुर नगर व देहातों के ही नहीं अपितु शेखावटी क्षेत्र के अन्य कस्बों से भी आये हजारों श्रोताओं ने भाग लिया।

निर्वाचन समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

प्रधान : स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
महामन्त्री : श्री हृदयेश आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री मधुकर सरीन

ऐषणाओं की तृष्णा बुझाने की दौड़ में अग्निवेश

– महेन्द्र पाल आर्य



अभी 19, 20, 21 नवम्बर 2005 में उ० प्र० के आजमगढ़ जिला रानी की सराय के पास जमाते इस्लामी की तीन दिवसीय अधिवेशन मनाया गया, इसमें भाग लेने वालों में वक्ता के रूप में अग्निवेश भी थे।

अग्निवेश 21 नवम्बर, रविवार के दिन मुसलमानों को खुश करने के लिए सभी मर्यादाओं को दॉव पर लगा दिया, यद्यपि इस से मेरा कोई लेना देना नहीं था, किन्तु दैनिक जागरण 21 नवम्बर के पृष्ट 9 पर, चित्र सहित वाराणासी अंग में लिखा स्वामी अग्निवेश अध्यक्ष आर्य समाज कान्फ्रेन्स को संम्बोधित कर रहे हैं ।

आर्य समाज का अध्यक्ष लिखा, जब कि जागरण वालों को पता ही नहीं, अग्निवेश किसके और कहां के अध्यक्ष हैं ? आर्य जनों, मैं अग्निवेश के दिये गए वक्तव्य व उसकी समीक्षा लिखना और समग्र आर्य जनों को अवगत कराना अपना कर्त्तव्य समझ कर लिख रहा हूँ । मानव ऐषणाओं के वशीभूत होकर क्या नहीं कर सकता ? अग्निवेश ने अपना वक्तव्य बिसमिल्ला हिर रहमा निर्रहीम से प्रारम्भ किया, जब कि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौदह सम्मुल्लास में इसी वाक्य को गलत सिद्ध किया है, कि कुरान का बिसमिल्ला ही गलत है। आर्यो का एक काल तो वह भी था जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली की जामामस्जिद से अपने वक्तव्य को प्रारम्भ किया था वेद मन्त्र से, त्वम हि नः पिता वसो त्वम माता शतकृतः से, और आज ऐषणाओं की तृष्णा बुझाने वाले अग्निवेश ने वेद छोड़ कर कुरान को पकड़ लिया, जब कि ऋषि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने कुरान के मानने वालों को सत्य के आधार पर कुरान छुड़वाकर वेद पकड़वाये थे । किन्तु दयानन्द और श्रद्धानन्द का गला घोट कर अग्निवेश आर्य समाज के अध्यक्ष कहलवाने में जरा सा भी लज्जित महसूस नहीं करते ।

वेद और कुरान अगर एक होता तो फिर स्वामी श्रद्धानन्द की, पं० लेखराम की व महाशय राजपाल की तथा भाई श्याम लाल की हत्या क्यों और कैसे होती ? अग्निवेश लोकेषणा के कारण वैदिक मर्यादाओं को ताक पर रखते हुए आर्य समाज का भी गला घोट कर अपनी तृष्णा बुझा कर मुसलमानों को सन्तुष्ट कर रहे है । न मालुम ऋषि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मा ईश्वर व्यवस्था के अनुसार कहां है ? मेरे विचार से उन महापुरुषों की आत्मा जहां कहीं भी होगी, अग्निवेश के इन क्रिया–कलापों के चाल चलन को व ऐषणाओं में डूबा देखकर अवश्य रो रही होगी । और यह भी कह रहे होंगे कि जिस वेद को जो ईश्वरीय ज्ञान है विषपाण कर प्राणों की बाजी लगाकर न मालूम आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथियों ने कितने ही इस्लाम जगत के विद्वानों को परास्त किया तथा इस्लाम और कुरान के जानकारों को कुरान छोड़ वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने को बाध्य किया। अब उनके दिये गये वक्तव्य को देखें दैनिक जागरण ने लिखा स्वामी अग्निवेश अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा ने जमा अते इस्लामी के तीन दिवसीय कांफ्रेन्स के अन्तिम दिन रविवार को बिसमिल्ला हिर रहमा निररहीम से अपनी बात शुरू की । उन्हों ने कहा कि जमाअते इस्लामी के मंत्र से सर्व प्रथम मैं पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद साहब को नमन करता हूँ, जिन्हों ने जिन्दा बेटियों को गाढ़ने से रोका, औरत और मर्द के बीच अपमान जनक व्यवहार को दूर किया, औरतों को सम्मान पूर्वक जीने का हक दिया है, उसका अनुपालन ही सारी समस्याओं का हल है, स्वामी जी ने औरत मर्द के बीच बेइन्साफी, जातिवाद की बेइन्साफी, अमीर गरीब की बेइन्साफी तथा काले गोरे की बेइन्साफी पर विस्तृत बयान कर जन सैलाब को काफी प्रभावित किया, आगे और भी है। परन्तु यहीं तक अग्निवेश के बयान में ही वैदिक मान्यताओं का गला घोट कर रख दिया, प्रथम मैं उसकी शुरुआत पर लिख चुका हूँ, अग्निवेश ने कहा सर्वप्रथम मुहम्मद साहब को मैं नमन करता हूँ, जो वैदिक मान्यता ही नहीं अपितु इस्लाम पर भी कुठाराघात है, क्योंकि वैदिक मान्यतानुसार एक परमात्मा को छोड और किसी को नमन नहीं करना चाहिये, और इस्लाम में भी एक अल्लाह को छोड़ किसी और के पास झुकना ही शिर्क है । अग्निवेश एक तरफ तो आर्य समाज, कहीं आर्य प्रतिनिधि सभा, फिर कहीं सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष बता रहे हैं अपने को। इधर वैदिक मान्यता को जानते तक नहीं, विशेष कर मैं सामवेदी से जानना चाहूंगा क्या आप वेद को जानते भी हैं ? या मात्र नाम ही सामवेदी लिखते हैं? अगर वेद को जानते तो फिर अग्निवेश के इस वेद विरूद्ध वक्तव्यों को स्वीकार कैसे करते ? उनको गुरु मान कर पिछलग्गू हा कर वैदिक सिद्धान्त के जानने व मानने वालों को धोखा कैसे देते ? यादव जी पर मैं दया करता हूँ क्योंकि वह आर्य नहीं है यादव है, पर आप तो सत्य के व्रती, और सामवेदी अपने नाम से लिख कर दुनिया को बताते हैं ।

अब जमाते इस्लामी वालों की भी बुद्धि मारी गई, उन के मंच पर ही शिर्क का प्रतिपादन हुआ। जहां मस्जिदे अक्सा के इमाम भी मौजूद थे, आर्य लोगों एक बात का ध्यान रखना, आर्य समाज के संस्थापक ***ऋषि दयानन्द से एक नरेश ने कहा स्वामी जी आप मूर्ति पूजा का विरोध न करें मैं राज्य का कुछ भाग आप के नाम कर दूंगा, जवाब मिला उसे तो सांस रोक कर पार कर सकता हूं किन्तु परमात्मा के राज्य को कैसे पार करूंगा ? नरेश ने कहा महाराज इतना बड़ा दानी कोई नहीं मिलेगा, ऋषि ने जवाब दिया इतना बड़ा त्यागी भी आप को कोई नहीं मिलेगा, मात्र बात थी ईश्वर के अतिरिक्त मूर्ति के सामने नमन की। आज आर्य समाज का नाम ले कर दयानन्द का अपमान मात्र लोकैष्णा के तृष्णा बुझाने के लिए अग्निवेश ने वैदिक सिद्धान्तों को ताक पर रख दिया।*** अब इस्लाम के मानने वालों को देखें, मोहन दास करमचंद (महात्मा) गांधी का पुत्र हीरा लाल गांधी ने जब अब्दुल्ला गांधी बनकर इस्लामिक मंच पर कहा था – हे आल्ला अगले जन्म में किसी मुसलमान के घर जन्म देना, इतने कहने पर मुसलमानों ने मंच से नीचे गिराया था, और उसी मंच से अल्लाह को छोड़ मुहम्मद को नमन की बात मात्र एक सिद्धान्तहीन लाल वस्त्रधारी गैर मुस्लिम से सुनने हेतु तौहीद व अल्लाह की वहदानियत को भी तिलांजजली दिया गया, क्योंकि वह लोग भी ऐषणाओं से ग्रसित हैं।

आगे और देखें हजरत मुहम्मद ने औरत, मर्द के बीच अपमान जनक व्यवहार को रोका, पर आर्य जनों को बखूबी मालूम है, कि इस्लाम के जन्म काल से आज तक औरत व मर्द में सामनता नहीं हैं, आज भी शरियती कानून में अगर पुरुष के मुकावले में औरतों को गवाही देनी हो तो एक पुरूष के मुकाबले में दो औरतों को गवाही देनी होगी, फिर पिता की सम्पत्ति में भी पुत्र व पुत्री बराबर के हकदार नहीं, मात्र बेटी रूपयों में चौअन्नी की हकदार है, पति की सम्पत्ति में मात्र पत्नी दो आने की अधिकारी है, अल्लाह ने कुरान की सुरा निसा आयात तीन में जिक्र फरमाया निसाओकुम हर सुल्लाकुम फातु हर सकुम अन्ना शेतुम व कद्देमु ले अनफुसे कुम।

अर्थ = औरतें, मर्द के खेत हैं, उस खेत से जैसा चाहो फसल उत्पन्न करो, यहां औरतों की मर्यादा मात्र बच्चा पैदा करने का यन्त्र बाताया, सुरा बकर में कहा गया, लिबासुल्ला कुमवअनतुम लिबासुल्ला हुन्ना जिसका अर्थ है – स्त्री और पुरुष एक दूसरे के परिधान हैं, पहनने का कपड़ा अर्थात् मैला हो बदल लो, धो लो, मैला कर भी सकते हो, साफ भी रख सकते हो, दाग लगा सकते हो, और नहीं भी।

अल्लाह के पास भी औरत, मर्द में अन्तर है, मर्दों को मस्जिद में जमात के साथ नमाज का आदेश है, और औरतों की जमात नहीं होती, कोई इनके इमाम नहीं बन सकते यही कारण है कि औरतों को आज तक मस्जिद मे जाने की अनुमति नहीं है। न मालूम अग्निवेश को इस्लाम में औरत–म[र्द] में बराबरी कहां दिखाई पडी अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए कु[छ] भी कहने को तैयार हैं अग्निवेश

वाह मेरे ! युगप्रवर्तक ऋ[षि] देव दयानन्द कैसे आपक[ा] ऋण चुकाएं, आपने औरत मर्द के लिए समान अधिका[र] मुहैया कराते हुए मानवता प[र] बहुत बड़ा उपकार किया है, जब तक यह सृष्टि रहेगी त[ब] तक उसकी हर पीढ़ी या[द] रखेगी।

आर्य जनों को एक बात [मैं] और भी बता दूँ, अग्निवेश हिन्दुअं[ों] को या आर्य जनों को गाली दे[कर] ईसाई व मुसलमानों की मात्र हमदर्दी नहीं ले रहे हैं, अपितु नोट भी कमा रहे हैं। अग्निवेश क[ा] जितना विरोध हम करेंगे, अग्निवेश को उतनी ही हमदर्दी उन लोगों से मिलेगी, यही कारण है कि हमारे आर्य जगत के विद्वानों ने इतना कुछ न लिखकर सामान्य तरीके से लिखा। मैं भी मात्र आर्य जनों को सच्चाई तथा यथार्थ दर्शाने हेतु लिखता हूँ । वरना अग्निवेश क्या है आर्य लोगों के सामने ? जिन अंग्रेजों के खिलाफ आर्यो ने बिगुल बजाया और भारत से अंग्रेजों को खदेड़ कर रहे, इन आर्य शूरवीरों से अग्निवेश का क्या मुकाबला ? क्योंकि मच्छर भगाने के लिए तोप की आवश्यकता नहीं होती, पर याद रखना जिस दिन धैर्य का बॉंध टूटेगा उस दिन वैदिक सिद्धान्तों के रक्षार्थ आर्य लोग अपने आर्यत्व का जलवा अवश्य दिखा देंगे ।

आर्य समाज की मान्यता पर जो कुठाराघात अग्निवेश द्वारा हो रहा है मैं अब तक आर्य जनों को लेखनी के माध्यम से बताता आया हूँ, अपने सभी लेखों को अग्निवेश को, सत्यव्रत सामवेदी को भेजता रहा हूँ । अभी राकेश जी भटनागर कालका जी वालों ने मुझसे कहा आप स्वामी जी से शास्त्रार्थ करना चाहें तो मैं व्यवस्था करूं, मैंने उनको चुनौती लिखित 3 दिसम्बर 2005 ई–मेल के द्वारा दिया है। आर्य जन आप लोग भी तैयारी करें और अग्निवेश द्वारा अवैदिक मर्यादाओं को उखाड़ फेकें ।

- 26-ए, मीठा पानी,
अग्रनगर प्रेमनगर-III,
नांगलाई, दिल्ली-110041

आर्यसमाजों के नाम खुला पत्र
विषय : वेद प्रचार

– डॉ० सत्यदेव आजाद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का चिरऋणी रहेगा जिन्होंने देशवासियों को जागृत कर समाज में व्याप्त कुरीतियों और अज्ञान अन्धकार को नष्ट करने की दिशा में अनथक प्रयास किया। वेदों का भाष्य किया, देश को एक सूत्र में पिरोये रखने के लिए हिन्दी भाषा को सर्वश्रेष्ठ माध्यम माना तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना कर ईश्वर को निराकार, अजन्मा और सर्वान्तर्यामी बताया। आर्यसमाज की थाती को सुदृढ़ और विश्वव्यापी बनाये जाने हेतु आर्यसमाज मिशन में विश्वास रखने वाले प्रत्येक सभासद व सदस्य का परम पुनीत कर्त्तव्य है कि वह स्वयं यथाशक्ति व्यक्तिगत रूप से अथवा आर्यसमाजों के माध्यम से सामूहिक रूप से वेद प्रचार हेतु नवीन साधनों को अपनाए। आज आर्यसमाजों में सप्ताह में एक बार मात्र यज्ञ करने, आर्यसमाज के नियम पढ़ लेने, जयघोष करने तथा वर्ष में एक बार वार्षिकोत्सव का आयोजन कर भजनीकों व व्यवसायिक उपदेशकों को संतुष्ट कर देने अथवा शोभा यात्रा निकाल देने से ही कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो पायेगी। वार्षिकोत्सवों में आयोजक चाहते हैं कि उन्हें यश मिले। अधिक चन्दा देने वाला व्यक्ति स्वागताध्यक्ष बनना चाहता है। उपदेशक गण अपना नीरस व संस्मरणात्मक घिसा पिटा उपदेश देने के लिए श्रोताओं के अमूल्य समय की चिन्ता न करते हुए संयोजकों से अधिक से अधिक समय की मांग करते दिखाई देते हैं जब कि न्यूनतम समय में ही अधिकाधिक बात कह देना योग्यता का सूचक है।

आज हमें समय के साथ चलना होगा। प्राचीन साधनों द्वारा वेद प्रचार करना आज निरर्थक है। सर्वप्रथम हमें मीडिया से सम्पर्क करना होगा – (१) सम्पूर्ण देश में आकाशवाणी केन्द्रों का जाल सा बिछा हुआ है आप अपने नगर अथवा नगर के समीप वाले आकाश वाणी केन्द्र से नित्यप्रति प्रसारित होने वाले वन्दना कार्यक्रम में ईश्वरोस्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्रों का अर्थ सहित प्रसारण करा सकते हैं। उस केन्द्र से समय समय पर स्वामी दयानन्द, आर्यसमाज, वेदों की भूमिका अंधविश्वास निवारण आदि विषयों पर वैदिक विद्वानों द्वारा वार्ताएं प्रसारित करा सकते हैं। इसके लिए कुछ विषयों का निर्धारण कर प्रस्तावित वार्ताकारों के नामों व पतो सहित सम्बंधित केन्द्र के निदेशक के साथ आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा सम्पर्क किया जा सकता है। इसी प्रकार दूरदर्शन केन्द्रों के निदेशकों से सम्पर्क स्थापित कर यज्ञ, योग आदि के सावधि कार्यक्रम किये जा सकते हैं।

(२) आर्यसमाज के विद्वान व विदूषियां स्थानीय व राष्ट्रीय समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में वैदिक विचार धारा से सम्बन्धित अपने आलेख प्रकाशनार्थ भेजे। विधवा विवाह, कन्या शिक्षा, अपसंस्कृति विरोध आदि कार्यक्रम भी सुधारवादी हैं।

(३) आर्यसमाजों में रामकथा और कृष्ण कथाएं आयोजित की जायें। आर्यसमाज के विद्वान बिना किसी पूर्वाग्रह व दुराग्रह के शुद्ध वैदिक सत्यनारायण की कथा आदि का भी आयोजन सार्वजनिक स्थलों पर करें।

(४) गैर आर्यसमाजी परि[...] में यज्ञों का आयोजन करें [...] अत्यन्त रोचक ढंग से उन्हें अ[...] बात समझाएं। अनुसूचित [...] व पिछड़ी जाति के मोहल्ले[...] कराये गए ऐसे आयो[...] लाभदायक भी होते हैं। यज्ञ[...] उपरान्त यहां वैदिक साहित्य [...] बांटा जा सकता है।

(५) केन्द्रीय व प्रादेशि[...] राजकीय कार्यालयों तथा सरक[...] विद्यालयों के पुस्तकालय [...] सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को निःशुल[...] दिया जाये।

(६) आर्यसमाज के भजनीक[...] को स्पष्ट निर्देश दिये जायें कि फिल्मी तर्ज पर वैदिक गीत, भज[...] न सुनायें। हमारा लोक संगी[...] बहुत समृद्ध है।

(७) आर्य समाज के उपदेश[...] पौराणिकों का खण्डन न क[...] अपितु उन्हें अपनी बात सप्रमा[...] समझाएं। खण्डन करने से [...] विरोधी बनते हैं। छोटी लकीर [...] बराबर में बडी लकीर खींच क[...] ही उसे छोटा दिखाये।

(८) सार्वजनिक स्थलों [...] आर्यसमाज के दो-दो, तीन-ती[...] नियम पत्थर पर खुदवा क[...] लगवाये जायें।

(९) मेलों, तमाशों, कुम्भ आदि[...] के बीच यज्ञों व प्रवचनों [...] आयोजन करायें जायें।

आज आवश्यकता इस बात[...] की है कि महर्षि के अनुयायी क[...] जाने में स्वयं को गौरवान्वित [...] समझने वाले सभी कार्यकर्त्ता[...] पदलोलुपता और स्वार्थ प्रवृत्ति [...] त्याग कर वेद प्रचार के कार्य [...] तन मन और धन से सक्रिय हों। [...] अहंकार और अधिनायकवाद के [...] स्थान पर विनम्रता व कर्त्तव्य[...] शीलता का मार्ग अपनाएं। [...] पाश्चात्य संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, खान पान, सम्बोधन तथा रहन सहन के व्यामोह से अपने परिवार को बचायें तथा अपसंस्कृति के नागपाश में जकड़ते समाज को 'वेदों की ओर लौटों' की मानसिकता से परिचित करायें।

वस्तुतः आज वेदों के विधिवत् प्रचार प्रसार की महती आवश्यकता है।

– मन्त्री, आर्यसमाज अर्जुनपुरा
डीगगेट, मथुरा – २८१००१

WHAT ARE THE SIGNS OF A POSITIVE HUMAN BEING ?

— Dr. T.R. Khanna, USA

First, he is firmly committed to being a good human being. His thoughts are good. He has good qualities. He has firm determination and is free of self-tormentation. He shows his positivity through his deeds. All his actions are positive in spite of challenges.

A positive human being is focused and is devoid of restlessness. He is always enriching his thoughts and his life. He talks of good qualities and encourages good qualities. He is very rich inside, not inwardly bankrupt. He is always improving. A positive human being talks about health and self-improvement; whereas a negative human being talks about his plight and sickness.

A positive human being is always gaining soul qualities and helping others improve their lives. He is cheerful; he doesn't talk negatively. He is interested in good things. A positive human being is intoxicated with goodness and is very earnest in doing good. A positive human being is always useful. He does't waste time. He starts a good program and sticks with it. He encourages others with their good program. He is very refreshing to be with and easy to work with. In other words, he doen't create difficulty for others or for himself. He has a good attitude. He is not easily upset. He is always in a peaceful, yet energetic state at the same time.

A positive human being has a healthy mind. He is balanced. He has waves after waves of inspiration. He is totally into self-uplift and uplifting others. A positive human being preserves good health, a good situation, and the good life. A positive human being is very pure hearted but at the same time has a lot of power of discernment.

A positive human being is watchful and aware of the pitfalls of negativity, of falsehood, and shallowness. He is not insincere or deceitful. He can always be trusted. a positive human being is neither pretentious nor a facadist. He is real.

A positive human being has a good demeanor, his behavior is good; his bivrations are good. He is very wise and deep. A positive human being is loyal, sincere, and dedicated to soul uplift. A positive human being also is very caring and helpful. He is not neglectful or careless. He is nurturing to his soul, and to other souls.

A positive human being is content, yet very progressive. He has a good attitude in all circumstances. He doesn't dwell on gross negative feelings or live in intellectual confusion. A positive human being doesn't fall prey to self-doubt because his whole life is based on consciousness. His self-confidence and positivity come from soul consciousness and deep wisdom. He makes every moment and every day the best so that his life is full.

विश्वब्राह्मण सम्मेलन का औचित्य

– डॉ० सुभाष चन्द्रशास्त्री

आर्यजगत् दिनांक ११ दिसम्बर, २००५ के अंक में डॉ० जयदत्त उप्रेती का लेख 'विश्वब्राह्मण सम्मेलन २००५ (लन्दन)' पढ़ा। उस लेख में यह भी ज्ञात हुआ कि माननीय डॉ० साहब भी उक्त सम्मेलन में सम्मिलित हुए तथा आर्य सिद्धान्तानुसार अपने वक्तव्य भी दिये। मुझे लगता है कि यह उचित होता कि एक आर्यजगत् के सम्माननीय पत्रिका में इस प्रकार के सम्मेलनों के विषय में उसके औचित्य अनौचित्य पर चर्चा की जाती, उसको महिमामंडित करने की नहीं।

आज निरन्तर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समाज में फैले इस महारोग को समाप्त करने के लिए नाना प्रकार के लेख छपते रहते हैं। शिक्षाविद समाज शास्त्री इसके लिए बहुत चिन्तित हैं कि समाज से यह ऊंच नीच की भावना कब समाप्त होगी।

वैज्ञानिक उत्थान के इस युग में भी संगच्छध्वं, संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्, समानी प्रथा सह वोऽन्नभागः जैसे वैदिक साम्यवादी विचारधारा को न अपनाकर कुछ व्यक्ति अभी भी अपने को मानवों में श्रेष्ठ बताने पर तुले हुए हैं तथा मध्यकालीन बर्बर युग को लाना चाहते हैं। भारतवर्ष से बाहर भी जाकर इस प्रकार के अशास्त्रीय एवं अमानवीय सम्मेलनों को करते हुए बाज नहीं आते।

यदि ये पौराणिक तथाकथित ब्राह्मण पुराण, मनुस्मृति या महाभारत को मानते हैं तो क्रमशः उनके वचन पर तो ध्यान से विचार करें –

१. जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते। – पुराण

२. शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैव शूद्रताम्। – मनु०

३. द्वेब्रह्मणी वेदितव्ये शब्दब्रह्म परञ्च यत्।

शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति।।

क्या ये सभी जो इस प्रकार के सम्मेलनों में भाग लेते हैं या उनके पुत्र पुत्र्यादि हैं वे शब्दब्रह्म = वेद को जानते हैं या मानते हैं अथवा परब्रह्म को जानते हैं यदि वे इनमें से एक में भी निष्णात हैं तो "ब्राह्मण" कहलाने के योग्य हैं, नहीं तो कदापि नहीं।

एक दूध की दुकान पर मैं एक बार दूध पी रहा था। दुकान का मालिक नौकर को – चतुर्वेदी ! यह गिलास धो, यह दूध दे आदि आदेश दे रहा था। मेरे पास आने पर मैंने उससे पूछा – चतुर्वेदी हो ? हां ! क्या जानते हो वेद कितने हैं ? उसने कहा – ये वेद क्या होते हैं ? यह है ब्राह्मणत्व एवं चतुर्वेदित्व। क्या यह भी एक हजारों वर्षों से चला आ रहा आरक्षण नहीं है ? हम मानते हैं – पितृ, पितामह प्रपितामह विद्वान रहें होंगे। परन्तु उनके नाम का सम्मान अयोग्य सन्तान को क्यों ? दूसरे तथाकथित जातियों में उत्पन्न ब्रह्मवेत्ता या विद्वानों का वैसा सम्मान क्यों नहीं। जिस प्रकार कलेक्टर का बेटा कलेक्टर, इंजीनियर का बेटा इंजीनियर, राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री का बेटा राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री केवल मात्र अपनी योग्यता से ही बन सकता है या इस पद को पा सकता है उसी प्रकार किसी योग्य ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण का योग्य बेटा ही इस पद को प्राप्त कर सकता है नहीं तो वह अपनी अयोग्यता से निम्नवर्ण को प्राप्त करेगा ही।

इस लेख में डॉ० साहब ने आरक्षण नीति पर भी अनेक विद्वानों के वक्तव्य को दर्शाया तथा इसके विरोध में उनके संयुक्त राष्ट्रमहासभा को उठाने की बात लिखी। यदि ये इस आरक्षण का विरोध करते हैं तो हजारों वर्षों से चले आ रहे कुलगत आरक्षण का भी विरोध होना चाहिए जिसके कारण से समाज में व्यक्ति का सम्मान या असम्मान की भावना जुड़ी हो। हां आर्यसिद्धान्त सभी प्रकार के आरक्षणों का विरोध करता है तथा समानता के अधिकार में विश्वास करता है। परन्तु यह भी मानता है कि कुलगत आरक्षण भी ठीक नहीं तथा जन्मना जातिगत आरक्षण भी ठीक नहीं।

आज आर्यसमाजों में भी इसी प्रकार के जातिवादी मानसिकता के लोग भरे पड़े हैं तथा आर्यसमाज की उन्नति में बाधक बने खड़े हुए हैं। अभी तो हमें ऋषि सिद्धान्तानुकूल आर्य बनना है तभी हमारा समाज बनेगा।

अन्त में आर्यजगत् के पत्र पत्रिकाओं के सम्माननीय सम्पादकों से निवेदन है कि सिद्धान्त विरुद्ध लेखों को छापने से पूर्व उन लेखों को ध्यानपूर्वक पढ़ लें जिससे आर्यजनों को उचित एवं सिद्धान्तसम्मत लेख पढ़ने को मिलें।

– आर्यसमाज बारां (राजस्थान)

परमेश्वर की सत्ता का आनन्द लेना हो तो यांत्रिक सत्ता से ऊपर उठो

हे मानव ! हे भव-उपवन के स्वर्णिम पुष्प ! अपने सच्चे स्वरूप में जाग। तू शरीर है इस भ्रांति से बाहर आ। शरीर, मन तथा इंद्रियां तेरे यंत्र हैं। संसार में आत्मा के संकल्प को चरितार्थता के लिए तुझे प्रदान किये गये हैं। यह बाह्य सत्ता है जो यांत्रिक कहलाती है।

इस समय तू मन तथा इंद्रियों की इच्छाओं को अपनी समझ रहा है। यह अज्ञान है। जिससे तुझे बाहर आना है। ये इच्छाएं बाह्य सत्ता में, बाह्य पुरुष में उठती हैं। तू एक दिव्य पुरुष है। तेरा निवास भीतर, बाह्य सत्ता के – मनोमय, प्राणमय तथा अन्नमय पुरुषों के पीछे, परे, दूर गहराई में है। भीतर डुबकी लगा। सत्ता की गहराई में बैठ। तेरा उद्धार होगा। तुझे अपने सत्य स्वरूप का दर्शन होगा। शरीर को अपना आप समझने की भ्रांति से तू बाहर आयेगा। तभी तू जगत पिता का प्यारा बनेगा। उनका प्रेम तेरे हृदय में उत्पन्न होगा।

जब पिता की याद में पलकों की नींद उड़ जाती है, हृदय उनके प्रेम में छटपटाता है, विह्वल रहता है, हम भोजन और विश्राम भूल जाते हैं, शारीरिक क्रियाओं को उतना ही महत्व प्रदान करते हैं जितना अनिवार्य हो, जब मन से वासनाएं झड़ जाती हैं, संस्कार हमें छोड़ कर चले जाते हैं, इंद्रियां अंतर्मुख हो जाती हैं, विषयों के प्रति आकर्षण से हम ऊपर उठ जाते हैं, सारी सत्ता प्रदीप की लौ का रूप धारण करती है, जब हम अपनी चिंता नहीं करते, पूर्ण रूप से प्रभु के चिन्तन में डूबे रहते हैं, जब हमारी वही स्थिति हो जाती है जो अंडे के अंदर पक्षी की – या तो अंडे को टूटना होगा नहीं तो पक्षी के प्राण चले जायेंगे – तब हम स्वीकार कर लिए जाते हैं। हमारे सौभाग्य का सूर्य उदय होता है। जन्म जन्मान्तरों से पोषित हमारी अंतरात्मा की अभिलाषा पूर्ण होती है। हमारे जीवन आंगन में मानों शुष्क कल्प वृक्ष पुष्पित–पल्लवित हो उठा हो। प्रभु अपने कर कमल हमारी ओर बढ़ाते हैं, हमें उठाते हैं, अपनी दिव्य गोद में स्थान प्रदान करते हैं। उनका वरद हस्त हमारे शीश पर होता है। तभी हृदय का चिर बंद द्वार खुलता है। अंतर आवरणहीन होता है। दिव्य ज्योति का निर्झर हमारे अंदर प्रस्फुटित होता है। अमृत कुम्भ का ढक्कन हटा दिया जाता है। जिस एक सत्य सूर्य से ये असंख्य ब्रह्माण्ड प्रकाशित हैं, उस सूर्य का दिव्य आलोक हमारी चेतना पर पड़ता है। मन बुद्धि आलोकित हो जाते हैं। आत्मा की सर्वोच्च पूर्णता का पथ हम अपने सम्मुख प्रशस्त पाते हैं। सभी प्रकार के भय से, पतन की संभावनाओं से मुक्त होकर निर्बाध गति से आगे बढ़ते हैं। संसार में जीवन का, आत्मा के आगमन का सुफल लाभ करते हैं। अपनी सत्ता के सत्य का, आत्मा का साक्षात्कार कर मुक्त चेतना में निवास करते हुए पृथ्वी पर परमेश्वर के यंत्र के रूप में जीवन यापन करते हैं। और, हम कहेंगे – संसार में परमेश्वर का यंत्र बनना सबसे महान उपलब्धि है।

– सुखबीर आर्य, पांडिचेरी

श्री नवीन सब्बरवाल नहीं रहे

आर्यसमाज अशोक विहार फेस–३ के पूर्व प्रधान श्री नवीन सब्बरवाल का देहावसान २५ दिसम्बर को प्रातः काल बेला में हो गया।

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दिल्ली के निगम बोध घाट पर किया गया। जिसमें हजारों स्थानीय नर–नारियों तथा परिजनों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजली दी। शोक सभा का आयोजन २७ दिसम्बर को आर्यसमाज अशोक विहार में ही किया गया।

पृष्ठ १ का शेष

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर कई समारोह

मार्ग में आर्यसमाज दिवान हाल द्वारा टाऊन हाल के प्रांगण में स्थित स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा के निकट एक विशाल मंच द्वारा शोभा यात्रा का स्वागत विचारों के प्रसारण, पुष्पमालाओं एवं प्रसाद वितरण से किया। इस स्वागत समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल ने की तथा दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री डॉ० योगानन्द शास्त्री इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, उपमन्त्री श्री लक्ष्मीचन्द कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, दिल्ली सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री चन्द्रदेव, श्री इन्द्रदेव, श्री रोशनलाल गुप्ता आदि ने भी विचार व्यक्त किए। आर्यसमाज दिवान हाल के मन्त्री डॉ० रविकान्त ने इस स्वागत मंच का संचालन किया।

मुख्य समारोह की अध्यक्षता दिल्ली सभा के प्रधान श्री राजसिंह आर्य ने की तथा, संचालन श्री धर्मपाल आर्य ने किया। शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी देवव्रत सरस्वती प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सहित अन्य आर्य नेताओं ने किया।

हरिद्वार में भी २३ दिसम्बर को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में एक भव्य बलिदान दिवस शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा, कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार, दिल्ली सभा के प्रधान श्री राजसिंह आर्य एवं हरियाणा सभा के प्रधान श्री आचार्य बलदेव जी सहित हजारों अन्य आर्य जनों ने भाग लिया।

विस्तृत सूचनाएं अन्य स्थानों से भी प्राप्त होने पर प्रकाशित की जाएगी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2003-05 सार्वदेशिक साप्ताहिक 1-1-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C)93/2003-05
R.N. No. 626/57 Licensed to Post Without Pre-payment Licence No. U(C) 93/2003-05 in NDPS on 29/30-12-2005

प्रतिष्ठा में

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

नव स्थापित आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर रामघाट मार्ग अलीगढ़ की यज्ञशाला के उद्घाटन के अवसर पर ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा डॉ० बुद्धदेव जी आचार्य, प्राचार्य सर्वदानन्द साधु आश्रम संस्कृत महाविद्यालय अलीगढ़ थे। उक्त कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दर्शन के प्रकाण्ड मनीषी डॉ० स्वामी मुक्तानन्द जी (हरिद्वार) रहे। स्वामी जी ने प्रतिदिन दोनों समय के प्रवचन में यज्ञ महिमा, कर्मविज्ञान, आत्मा का स्वरूप, मानवजीवन का उद्देश्य, मोक्ष का स्वरूप, ईश्वर प्राणिधान आदि गम्भीर विषयों पर प्रवचन दिये जिसका लाभ प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उठाया।

इस कार्यक्रम में भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह शास्त्री एवं श्री रामावतार आर्य के भजनोपदेश निरन्तर चलते रहे। वेद पाठ गुरुकुल साधु आश्रम के ब्रह्मचारियों ने किया।

उक्त पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति १६ अक्टूबर को हुई इस अवसर पर आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ जिसके अध्यक्ष डॉ० स्वामी मुक्तानन्द रहे एवं मुख्य वक्ता अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० एस०पी० शर्मा ने वेद की सार्वकालिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी चेतनदेव जी 'वैश्वानर' डॉ० बुद्धदेव जी, श्री देवनारायण भारद्वाज, डॉ० विजय विद्यालंकार के प्रवचन हुए एवं कन्या गुरुकुल भयां चामड़ अलीगढ़ की कन्याओं तथा गुरुकुल साधु आश्रम के ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम भी हुए। इस समस्त कार्यक्रम के आयोजन का वहन महर्षि दयानन्द नगर उपनगरी (कालोनी) के संस्थापक महाशय लोटन सिंह आर्य ने व्यक्तिगत रूप से किया। समग्र कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डॉ० विनय विद्यालंकार ने किया।

– डॉ० विनय विद्यालंकार

पूर्वी दिल्ली में शोभायात्रा

आर्यसमाज सादत पुर विस्तार (करावल नगर क्षेत्र) पूर्वी दिल्ली ६४ का एक दिवसीय तृतीय रविवार दिनांक ११ दिसम्बर, २००५ को उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर करावल नगर टेलीफोन एक्सचेंज के निकट श्री जगदीश प्रधान जी के निवास पर श्री कुंवरपाल शास्त्री जी के आचार्यत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में श्री ओमबीर सिंह जी तथा श्री जगदीश प्रधान जी के सुपुत्र मुख्य यजमान के रूप में सम्मानित हुए। अन्त में यज्ञ के ब्रह्मा श्री कुंवरपाल शास्त्री जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यज्ञमानों को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् श्री राजेन्द्र जी खारी (अध्यक्ष वैलफेयर ऐसोसियेशन खजूरी) के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि ओम् ही परमात्मा का मुख्य नाम है इसलिए हमें ओम् का ही जाप करना चाहिए।

इस अवसर पर एक विशाल शोभायात्रा भी इसी स्थान से निकाली गयी जिसका नेतृत्व पूर्वी दिल्ली के आर्य नेता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी ने किया। शोभायात्रा करावल नगर क्षेत्र के मुख्य बाजारों से गुजरती हुई गीतांजली पब्लिक स्कूल खजूरी खास के निकट समाप्त हुई।

सहारनपुर में वेद प्रचार

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर द्वारा ३० अक्टूबर से ४ नवम्बर तक ग्राम घसैती, मयानगी, नल्हेडा गूर्जर, जन्धेडा समसपुर जलालपुरा में वेदप्रचार कार्यक्रम श्री नरेशदत्त जी आर्य भजनोपदेशक के रथ द्वारा मनाया गया।

कार्यक्रम के समापन पर जलालपुरा ग्राम में स्वामी अरण्य मुनि जी ने कहा कि ईश्वर आखों से देखने का विषय नहीं है। यज्ञ ज्ञान का विषय है। धर्म के दस लक्षणों की व्याख्या कर कहा कि जो धर्म को मारता है धर्म उसे मार देता है। और कहा कि हम सभी का कर्तव्य बनता है कि हम नित्य सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना अवश्य करें। राजाराम जी शास्त्री ने कहा कि वेद मानव जाति का प्राचीनतम ग्रन्थ है। वह परमेश्वर गुरुओं का भी गुरु है। संसार की सब सत्य विद्याएं वेदों से ली गई हैं। केवल वेद ही परमात्मा की वाणी है। साधुराम जी आर्य ने कहा कि ईश्वर के स्वरूप को हमें आर्यसमाज के दूसरे नियम के अनुसार देखना चाहिए। यदि सच्चिदानन्द आदि गुण नहीं है तो वह ईश्वर नहीं है। नरेश दत्त जी आर्य भजनोपदेशक, अंगद सिंह आर्य आदि ने भजनो के माध्यम से बहुत शिक्षाप्रद एवं सार्थक प्रचार किया। इस अवसर पर सर्वश्री विजयपाल, अजब सिंह आर्य, बलजीत सिंह आर्य, रामसिंह सुनहरीसिंह शम्भू सिंह, रेखारानी, सुनेहरी सिंह, राजेश कुमारी, रीना देवी, जयवीर सिंह, नितिन कुमार आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सतपाल सिंह आर्य और संचालन आदित्य प्रकाश ने किया। ग्राम घसौती में आर्यसमाज स्थापित की गई। अध्यक्ष ओमपाल सिंह, मन्त्री – सुरेन्द्र सिंह तथा कोषाध्यक्ष – स्वतन्त्र प्रताप सिह और आठ आर्य सभासद चुने गये। पांचों दिन स्वामी अरण्यमुनि जी महाराज ने बिना दक्षिणा लिए प्रचार किया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in* वेबसाइट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४४ अंक २६ | २२ जनवरी से २८ जनवरी, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८३ | सृष्टि सम्वत् १६६०८५३१०६ | सम्वत् २०६२ | मा०कृ०७

एक प्रति २ रुपया (भारत में) वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

स्वामी रामदेव के विरुद्ध कम्युनिस्टों का प्रलाप
वैदिक धर्म पर चोट का प्रयास

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा बैठक का आयोजन दिनांक ८ जनवरी, २००६ (रविवार) को आर्यसमाज वाशी, मुम्बई में आयोजित किया गया जिसमें सर्वसम्मति से स्वामी रामदेव जी के विरुद्ध कम्युनिस्ट नेत्री वृन्दा कारत द्वारा अनर्गल प्रलाप को कम्युनिस्टों की वैदिक धर्म के विरुद्ध साजिश घोषित किया गया।

सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता में चली इस बैठक में देश–विदेश के महत्वपूर्ण सभासदों ने भाग लिया। बैठक में इस षड्यन्त्र के विरुद्ध प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए सभा मन्त्री श्री विमल आर्य ने कहा कि कम्युनिस्टों एवं तथाकथित पंथनिरपेक्ष राजनीतिज्ञों की साजिश का शिकार शंकराचार्य के बाद अब स्वामी रामदेव को बनाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज को कम्युनिस्टों की देशद्रोही एवं अधार्मिक और असामाजिक विचारधारा के विरुद्ध एक गम्भीर और लम्बी योजना बनाकर संवैधानिक अभियान छेड़ना चाहिए। भारत एक धर्मप्रिय देश है। यहां के समस्त पंथों की आध यात्मिक विचारधारा का मूल धर्म और ईश्वर उपासना है और भारतीय संविधान में धर्म की पूर्ण स्वतन्त्रता है। अतः ऐसे राष्ट्र में कम्युनिस्ट विचारधारा पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए जो धर्म और ईश्वर उपासना का विरोध करती है।

कम्युनिस्ट नेता या दल किसी भी फार्मेसी या देश के नागरिकों के प्रतिष्ठानों में दखल देने के लिए अधिकृत नही हैं। वृन्दा कारत को स्वामी रामदेव की दवाइयों के नमूने व्यक्तिगत रूप से लेने तथा उनकी जांच का कोई कानूनी अधिकार नहीं है।

दूसरी तरफ कम्युनिस्टों ने एक नियोजित षडयन्त्र के तहत विदेशी कम्पनियों की शह पर वैदिक धर्म की चिकित्सा पद्धति को बदनाम करने का कुत्सित प्रयास किया है जिसकी समूचे आर्य जगत ही नहीं देश विदेश के समस्त धर्म प्रेमी एवं स्वस्थ प्रेमी लोगों एवं संगठनों ने निन्दा की है।

स्वामी रामदेव एवं वैदिक चिकित्सा पद्धति के विरुद्ध इस षडयन्त्र का प्रतिकार करते हुए समूचे देश की आर्यसमाजों एवं सभाओं ने सीधी कार्यवाही प्रारम्भ कर दी है।

दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर से एक जबरदस्त विरोध प्रदर्शन कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय के समक्ष किया गया तथा वृन्दा कारत का पुतला फूंका।

गाजियाबाद में ८ जनवरी को धरना व प्रदर्शन का कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें लगभग ७० आर्यसमाजों के हजारों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। जिला आर्य सभा के मंत्री श्री माया प्रकाश त्यागी के वक्तव्यों को दैनिक समाचार पत्रों ने काफी महत्वपूर्ण तरीके से प्रकाशित किया।

श्री मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि स्वामी रामदेव ने कोल्ड ड्रिंक बनाने वाली कंपनियों एवं अंग्रेजी दवा बनाने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खिलाफ अभियान चलाया हुआ है जिस कारण उक्त कंपनियों की तरफ से उन्हें लगातार धमकियां दी जा रही थी। ध मकियों से कामयाब न होने पर उन्होंने उक्त हथकंडा अपनाया है।

स्वामी जी के टेलीविजन पर आने वाले प्रवचन एवं उनके योग को विश्व के १७० देशों में दिखाया जा रहा है। इस कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पेय एवं दवा की बिक्री घट रही है। अब तो वृंदा भी आए दिन बयानों को बदल रही हैं। वह पता नहीं स्वयं भी शाकाहारी हैं या नहीं लेकिन शाकाहारी लोगों की प्रवक्ता बन गई है।

शेष पृष्ठ ७ पर



आलस्य नहीं कर्त्तव्यपालन करें
दयानन्द जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश की मांग

समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा देश विदेश की आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लगे अन्य सामाजिक संगठनों से निवेदन है कि भारत सरकार के प्रधानमन्त्री डॉ० मनमोहन सिंह, रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली, राष्ट्रपति डॉ० अब्दुलकलाम, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली, श्रीमती सोनिया गांधी, १० जनपथ, नई दिल्ली तथा अपने अपने प्रान्तों के मुख्यमन्त्री, राज्यपाल, अपने अपने क्षेत्र के संसद सदस्यों, विधान सभा सदस्यों आदि को तुरन्त एक विशेष पत्र लिखकर निम्न मांगे प्रस्तुत करें :–

१. भारत की स्वतन्त्रता के प्रथम उद्घोषक, महान राष्ट्रवादी सन्त तथा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की दशमी (इस वर्ष २३ फरवरी, २००६) पर प्रतिवर्ष के लिए सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की जाए।

२. दयानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में ये सब उच्च राजनीतिक अधिकारी अपने अपने कार्यालयों से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन कार्यों एवं सिद्धान्तों के अनुरूप देशवासियों के नाम सन्देश जारी करें –

(क) जातिवाद, प्रान्तवाद तथा सम्प्रदायवाद को त्यागकर भारतवासियों में राष्ट्रीय एकता बनाए रखने

(ख) महिलाओं के सम्मान को बढ़ाने

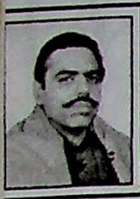
(ग) अन्धविश्वासों को त्यागकर वैज्ञानिकता पूर्ण व्यवहारो को अपनाने तथा

शेष पृष्ठ ८ पर

सम्पादक

सम्पादकीय

पागलखाने में भी स्वर्ग बनाया जा सकता है



लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, होड, विलासिता के सुख, भौतिकवादी और व्यक्त संसार में बड़े से बड़ा पद, सत्ता, अधिकार आदि ने इस सारी दुनिया को एक पागलखाने में तबदील कर दिया है। इस पागलखाने से छुटकारा पाने का एक मार्ग तो कुछ विचारकों ने बताया कि छोड़-छोड़ के भाग जाओ परन्तु वैदिक सिद्धान्तों ने यह पाठ पढ़ाया कि सौ वर्ष जीना हो या बार-बार जन्म लेकर हजारों लाखों वर्ष के जन्मों की योजना बनानी हो – किसी भी हालत में कर्मशीलता का त्याग नहीं किया जा सकता। **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।** यजु० ४०/२

इस उपदेश के बाद दूसरा वैदिक उपदेश मिला कि

यस्मिन्त्सर्वाणि
भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक
एकत्वमनुपश्यतः।।
यजु० ४०/७

अर्थात् जो आत्मा समस्त मनुष्यों प्राणियों में एक जैसी आत्मा के तत्व को महसूस करता है अर्थात उसमें अपने-पराए, लाभ-हानि, मान-अपमान आदि के द्वन्द्व शून्य हो जाएं तो वह इस पागलखाने में रहकर भी सुख-दुख के चक्रव्यूह से बच सकता है।

एक लघु कथा जिससे मैं न तो पूर्ण रूप से सहमत हूं और न पूर्ण रूप से असहमत – कुछ व्यक्ति एक मोटर नाव में बैठकर समुद्र की यात्रा करते करते काफी दूरी पार कर गए, अचानक आए तूफान से नाव पलट गई। सब डूब गए। मृत शरीरों का सम्बंध तो मिट्टी-कीचड़ के समान होता है। उनमें से एक यात्री का शरीर समुद्र की लहरों के सहारे किसी तरह एक निर्जन टापू पर जा लगा। प्राण शेष थे अतः सूर्य देवता के तेज से उस व्यक्ति की आंखे खुली। एक निर्जन टापू पर जितना भी भू क्षेत्र था, उसका दौरा किया। परन्तु वह टापू वास्तव मे निर्जन था, वहा मनुष्य नाम की कोई चीज नहीं थी। केवल वृक्षों, वनस्पतियों से भरा एक विशाल भू-खण्ड और चारों तरफ समुद्र का घेरा जहा से दूर तक किसी वस्तु का नामोनिशान तक भी न था। खाने-पीने, पहनने, ओड़ने को भी कुछ नहीं। एक दिन, दो दिन, एक मास, दो मास, एक वर्ष, दो वर्ष ... परन्तु कही कोई व्यक्ति या वस्तु दृष्टि में आती नजर नहीं आई। लगभग पांच वर्ष का समय उस मनुष्य ने कैसे बिताया होगा, यह एक अलग चर्चा का विषय हो सकता है।

पांच वर्ष बाद अचानक उसे दूर एक जहाज दिखाई दिया उस जहाज की ओर बड़ी उत्सुकता से वह निहार रहा था। वर्ष की एक लम्बी डाल हाथ में लेकर उसे हिलाना शुरु किया जिससे जहाज चालकों, यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सके। अन्ततः वह जहाज उसकी तरफ आ गया। जहाज के कार्यकर्त्ताओं ने उसे जहाज पर आने को कहा। उसने प्रश्न किया कि क्या कुछ पुराने अखबार उनके पास है। जवाब में उन्होंने कुछ दिनों पूर्व के कुछ अखबार उसे दिए। उन्हें कुछ क्षण देखकर उसने कहा कि तुम्हारी धरती पर अब भी बलात्कार, कत्ल, सत्ता बदलने के संघर्ष, चोरी-डकैती, मार-काट, धोखाधड़ी पहले की तरह ही चल रहे हैं। विगत पांच वर्षो से मैंने तो इसी निर्जन स्थल को ही स्वर्ग समझना प्रारम्भ कर दिया है। अब तो मुझे तुम्हारी, देशो, राज्यों, नगरों, गांवो में बटी धरती एक पागलखाना सा लगती है। इस विचार को प्रकट करके उसने उस जहाज पर चढ़कर पुनः अपनी पुरानी जिन्दगी में जाने से इन्कार कर दिया।

अखबारों को पढ़ने से या गम्भीरता से इस समाज को देखने पर तो मुझे भी यह धरती कभी-कभी एक विशाल पागलखाना सा लगने लगती है। जिन वस्तुओं को हम सुख के नाम पर अपने जीवन, अपने परिवार और समाज का अंग मान लेते हैं वास्तव में वे सब ही हमारे लिए आध्यात्मिक दृष्टि से दुःखदायी साबित होते हैं।

परन्तु वैदिक उपदेशों के आधार पर अपने जीवन का निर्णय करते हुए कर्म छोड़ कर निर्जन द्वीप की तलाश मुझे नहीं है। हां, इतना अवश्य है कि हमारी आत्मा सदैव परमात्मा के साथ मेल बना कर रखें और सुख सुविधाओं, पद, धन सम्पन्नता, मान-सम्मान की इच्छा से विमुख रहते हुए बड़ी सरलता के साथ हमारा जीवन सुकर्मों में लगा रहे। इस धरती रूपी पागलखाने के कथित बुद्धिमान, बड़े-बड़े पदों से शोभित तथा धन सम्पन्न लोग सरलता से जीवन यापन करने वालों को ही पागल कहने लगते हैं।

किसी भी कार्य के लिए अन्धी दौड़ ही पागलपन है। पद और धन के लिए समाज में शोर-शराबा, असभ्य आचरण क्या पागलपन नहीं है। यह पागलखाना बनाया किसने है – मनुष्यों ने। अतः मानव बन्धु ही पागलपन को छोड़ कर इसे स्वर्ग भी बना सकते हैं। हमारी सरलता, सन्तोषी भावना हमें वही एकान्तवास का आनन्द दे सकती है – इसी भीड़-भाड़, शोर शराबे के बीच।

परमपिता, परमात्मा हमारे सच्चे मित्र, बन्धु, माता-पिता, अतः सर्वोच्च सहायक हैं। शाश्वत आनन्द प्राप्त करने में परमात्मा की सहायता किसी को भी वेद के उपदेश पर सच्चा और वास्तविक आचरण करने मात्र से प्राप्त हो सकती है। **– विमल वधावन आर्य**

गर्व का विषय हैं योग और आयुर्वेद

– स्वामी रामदेव



यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी के लगभग सात लाख चिकित्सक होते हुए भी हमारी केन्द्रीय सरकार इनके लिए चिकित्सा बजट में से मात्र ३ प्रतिशत खर्च करती है, जबकि एलोपैथी के देश भर में कुल सवा छह लाख चिकित्सक ही हैं, फिर भी इसको चिकित्सा बजट का ६७ प्रतिशत मिलता है। मैं एलोपैथि का आलोचक होते हुए भी यह स्वीकार करता हूं कि आकस्मिक उपचार एवं शल्य चिकित्सा में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने बहुत उन्नति की है और आवश्यकता पड़ने या जीवन रक्षा के लिए एलोपैथी का आश्रय दोषपूर्ण नहीं है। परन्तु मैं साथ में यह भी जोड़ना चाहता हूं कि बहुत से रोग जिनको एलोपैथ, आयुर्वेद एवं होम्योपैथ आदि में असाध्य कोटि का माना जाता है, वे बिना किसी दवा के मात्र योग के द्वारा निर्मूल किए जा सकते हैं।

हमने आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के मानदण्डों के अनुरूप यह पाया है कि उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, श्वांस रोग, वात रोग, गठिया, अम्ल-पित्त आदि पित्त रोग, तनाव एवं अवसाद आदि शताधिक व्याधियां योग से पूरी तरह ठीक हो सकती हैं। मधुमेह के रोगियों की शर्करा की मात्रा को तो हम एलोपैथी की दवाओं या इंसुलिन से भी नियंत्रित कर सकते हैं। मेरे अपने अनुभव के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि मधुमेह का नियंत्रण एवं कुप्रभावों का निवारण प्राणायाम के द्वारा किया जा सकता है, जबकि उच्च रक्तचाप एवं अस्थमा, दमा आदि रोगों को पूर्णतः दूर किया जा सकता है। यह केवल योग द्वारा ही सम्भव है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के मानदण्डों के अनुरूप हमने उन तमाम रोगियों का दस्तावेजीकरण किया है, जिनको योग एवं आयुर्वेद के उपचार लेने से पहले कैंसर, हैपेटाइटिस, किडनी, थायराइड एवं सिरोसिस ऑफ लीवर की समस्या थी तथा योगायुर्वेद के उपचार के बाद वे अब पूर्ण स्वस्थ हैं। साथ ही, उनकी सभी चिकित्सकीय जांच सामान्य हैं, लेकिन हमारे यहां ऐसे प्रबुद्ध लोगों की कमी नहीं है, जो योग एवं आयुर्वेद को आज भी तिरस्कार से देखते हैं। यद्यपि अभी कुछ वर्षो से सबकी मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन भी हुआ है। पिछले कुछ दिनों से चल रहे विवाद के सम्बन्ध में संक्षेप में मैं कहना चाहूंगा कि देश के जिम्मेदार व्यक्तियों को सामाजिक संस्थाओं एवं अपने अपने क्षेत्र में सेवा में लगे शीर्ष व्यक्तियों के सम्बन्ध में टीका-टिप्पणी करने से पहले पूर्ण तथ्यों से अवगत होना चाहिए।

यदि मेरे द्वारा बताए योग एवं जीवनशैली से करोड़ों लोगों की जिन्दगी में परिवर्तन हुए और मेरे आह्वान से करोड़ों लोगों ने शीतल पेय एवं फास्ट फूट खाना छोड़ दिया तथा प्राणायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लिया, तो यह शर्म की नहीं गर्व की बात है। जहां तक प्रश्न आयुर्वेद का है, तो इस सम्बन्ध में मैं कहूंगा कि आयुर्वेद उपचार की अपनी परम्परा एवं प्रक्रिया है। उसमें ओषधि निर्माण की भी एक प्रामाणिक विधा है। जो लोग इस बारे में जरा भी नहीं जानते हैं वे गलत बातें कर भ्रम फैला रहे हैं। ऐसे लोगों को पहले सच का पता लगाना चाहिए था, फिर अपनी बात कहनी थी। ये लोग योग, आयुर्वेद के साथ देश की सभ्यता-संस्कृति को नुकसान पहुंचा रहे हैं। □

कार्यालय : २३२७०५०७   ओ३म्   गोशाला : २२४१६२२०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

१८२वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

का भव्य आयोजन

फाल्गुन वदी दशमी, २०६२
तदनुसार २३ फरवरी, २००६ (बृहस्पतिवार)

यज्ञ : प्रातः ६.०० से १०.०० बजे तक
स्थान : महर्षि दयानन्द गो-सम्वर्धन केन्द्र, गाजीपुर, दिल्ली-११००६६

मनुष्य वही है जो प्राणिमात्र के लिए मरे

– खुशहाल चन्द्र आर्य

वेद कहता है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' सारे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ, सदाचारी, सभ्य, ईमानदार, परोपकारी, धार्मिक) बनाओं और यह भी कहता है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सारा विश्व एक परिवार है, इसलिए हे ! संसार के पुरुषो, तुम बिना किसी वैर भाव रखे, प्रेमपूर्वक, मिल जुलकर सुख व शान्ति से एक परिवार की भांति रहो। यहां तक तो राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्ति 'मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे' बिल्कुल सही है किन्तु वेद उससे भी आगे बढ़कर यह कहता है कि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्चति स पण्डितः' सब प्राणियों की आत्मा को जो व्यक्ति अपनी आत्मा के समान समझता है यानि प्राणि मात्र के दुःख सुख को अपने दुःख सुख के समान समझता है वही पण्डित या विद्वान् है। इसी बात को व्यास जी ने अपने शब्दों में कहा है 'आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरत् जो व्यवहार हम दूसरों से नहीं चाहते, वैसे हम भी दूसरों के प्रति न करें। वेद इसी उदार मानवता की भावना को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहता है 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' भूमि तुम्हारी माता है और तुम सब उसके पुत्र हो। पृथ्वी पर जितने भी प्राणि, यहां तक कि पेड-पौधे भी सभी एक पृथ्वी माता के पुत्र होने के नाते सभी परस्पर भाई बहन हो, इसलिए भाई बहन की भांति एक दूसरे का हित चिन्तन करते हुए प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करो। इन मन्त्रों के उपदेश से मानव की उदारता व विशालता की सीमा और भी बढ़ जाती है। वेदों में मित्रता के भाव को भ्रातृभाव से कम नहीं आंका गया। वेद का यह मन्त्र इसी भाव की ओर संकेत करता है। 'मित्रस्य चक्षुसा सर्वाणी भूतानि समीक्षन्तांम्। मित्रस्य चक्षुसा समीक्षा महे' तुम सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देंखो और सब प्राणि भी तुम्हें मित्र की दृष्टि से देखें। इन ऊंच भावो व शिक्षाओं के मन्त्रों को जीवन में धारण करने से मानव, महामानव बनता हुआ देवत्व व ऋषित्व को प्राप्त हो जाता है। जो व्यक्ति मानवता के गुण जैसे दया, करुणा, परोपकार, उदारता, सहृदयता, निष्पक्षता आदि को अधिक से अधिक अपने जीवन मे धारण करता है, उसका जीवन उतना ही पवित्र व आदर्श तो बनता ही है साथ ही उसको प्रतिफल के रूप में वह लोगों की दृष्टि में उतना ही अधिक आदर व सम्मान पाने का पक्ष बनता है।

वैसे तो इस पवित्र भारत भूमि पर सहस्रों महापुरुष, सन्त, महात्मा, स्वामी, ऋषि, महर्षि हुए हैं। सभी जीव मात्र से प्रेम व स्नेह रखने वाले हुए हैं कारण हृदय की उदारता के बिना कोई भी व्यक्ति महापुरुष, सन्त, महात्मा, ऋषि व महर्षि बन ही नहीं सकता फिर भी हम अपने देश के गौरवमय इतिहास को गहराई से देखते हैं तो हमारे समक्ष दो ऐसे महापुरुष उपस्थित होते हैं जिनका पूरा जीवन ही प्राणिमात्र की सेवा व रक्षा के लिए समर्पित था। वे है महात्मा बुद्ध और महर्षि दयानन्द।

महात्मा बुद्ध अपने बचपन काल से ही किसी वृद्ध, दुःखी, अपाहिज को देखता था तो उसका हृदय, द्रवित व दुखित हो उठता था और यह दुःख क्यों होता है ? इसका कैसे निवारण किया जा सकता है ? इन्ही सोच विचारों में वह चिन्तित रहता था। कितनी ही घटनाएं हैं जिनको देखकर बुद्ध का हृदय दुखित व व्यथित हो उठा था। कभी किसी वृद्ध को कमर झुकाए चलते देखकर, कभी कुष्ठ रोगी को तो कभी मृत व्यक्ति को ले जाते हुए देखकर। परन्तु सबसे अधिक दुःख व पीड़ा उसको तब हुई जब उसने किसी यज्ञ में ब्राह्मणों द्वारा पशुबलि देते हुए देखा। बुद्ध से नहीं रहा गया और ब्राह्मणों (यज्ञकर्त्ताओं) से पूछा कि आप यज्ञ को सर्वोत्तम कर्म कहते हो, तब इन निर्दोष व मूक पशुओं को मारकर यज्ञ में क्यों डालते हो। ऐसा दुष्कर्म करने से तुम्हारा यह यज्ञ कर्म सर्वोत्तम कैसे हुआ ? किसी जीव के प्राण लेना तो दुष्कर्म व पाप है। ब्राह्मणों ने कहा कि यज्ञों में पशु बलि देना तो वेदों में लिखा है। तब बुद्ध ने कहा कि मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता जिसमें किसी निरपराध जीव की हत्या करने का लिखा हो। फिर पण्डितों ने कहा कि वेद तो ईश्वरीय वाणी है, उसकी आज्ञा का पालन न करना धर्म विरुद्ध है। तब बुद्ध ने कहा कि ज़ो सब प्राणियों का पिता कहलाकर वह अपने ही एक पुत्र से अपने ही दूसरे पुत्र का वध करवाता है, जबकि उसे रक्षा करने का आदेश देना चाहिए। ऐसे अन्यायी व पक्षपाती ईश्वर को भी मैं नहीं मानता। चाहे ब्राह्मणों के गलत उत्तर से बुद्ध ने गलत निर्णय लिया परन्तु इससे यह तो सिद्ध ही होता है कि महात्मा बुद्ध किसी भी प्राणि की हिंसा होने के कितने सख्त विरोधी थे और हर प्राणी के प्रति उनके हृदय में कितना अधिक प्यार था जिनकी रक्षा के लिए उसने ईश्वर तक को भी चुनौती दे डाली। यह महात्मा बुद्ध के उदार हृदय का ही परिणाम था जिससे बौद्ध धर्म का प्रचार सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि बाहर के देशों चीन, जापान, तिब्बत, म्यांमार व श्रीलंका आदि में भी बहुत तीव्र गति से हुआ।

दूसरे महापुरुष हमें दिखाई देते हैं जो प्राणी मात्र को अपना ही परिवार समझते थे। वे थे महर्षि दयानन्द ! महर्षिजी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए ही कहा है कि जो सब प्राणियों से यथायोग्य स्वात्मवत् व्यवहार करे यानि प्राणी मात्र के दुःख-सुख, हानि-लाभ को अपना दुःख-सुख हानि लाभ समझे और जो व्यवहार आप दूसरों से चाहते हैं वही व्यवहार आप दूसरों से भी करें दूसरी पहचान बताई कि बलवान से बलवान अन्यायी व्यक्ति चाहे वह चक्रवर्ती राजा ही क्यों न हो उससे कभी न डरे और न इसका सत्कार करे किन्तु निर्बल से निर्बल धर्मात्मा व सज्जन व्यक्ति से सदा डरते रहे और उसका सम्मान करते रहें। यदि हम महर्षि के जीवन का एक एक पल व एक एक श्वांस परोपकारी व राष्ट्रीय कार्यों के लिए ही समर्पित था। स्वामी जी के सभी कार्य जैसे नारी शिक्षा, अछूतोद्धार, बाल–वृद्ध विवाह निषेध, सती प्रथा का विरोध गो आदि पशुओं की रक्षा का प्रयत्न, पुनर्विवाह का प्रचलन, पंच महायज्ञों की हर गृहस्थी के लिए अनिवार्यता तथा वेद जो ईश्वर ने प्राणिमात्र के हित व कल्याण के लिए बनाए हैं उनका, प्रचार व प्रसार करना आदि मानव मात्र ही नही बल्कि प्राणी मात्र की सेवा व रक्षा करना ही प्रकट करते हैं। उनके जीवन में एक नहीं अनेक घटनाएं ऐसी आती है जिनसे ज्ञात होता है कि महर्षिजी अपने जीवन से दूसरों के जीवन को कहीं अधिक मूल्यवान समझते थे, दूसरों के दुःख को सहन नहीं करने के कारण और उसका दुःख दूर करने के लिए अपना जीवन भी जोखिम में डालने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। उनके जीवन की दो घटनाएं जहां प्रस्तुत करते हैं जिससे उनके हृदय की उदारता व विशालता का अन्दाज लगाया जा सकेगा।

पहली घटना को सुनकर हर व्यक्ति के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और समझ में आता है कि परोपकारी व्यक्ति की रक्षा ईश्वर कैसे करता है ? स्वामी जी जंगल से होकर कहीं जा रहे थे तो उन्होंने देखा की कुछ ढोंगी व्यक्ति साधु के वेश में किसी देवी की पूजा कर रहे है और एक तरफ एक माता अपने लाडले बच्चे को गोद में लिए रो रही है। स्वामी जी ने उस माता जी से पूछा आप क्यों रो रही हैं ? माता ने कहा बेटा ! ये साधु अभी मेरे इस गोद वाले बच्चे को मार कर देवी को भेंट चढ़ाएंगे इसलिए में रो रही हूं। तब स्वामी जी ने उन ढोंगी साधुओं से कहा कि यदि आप देवी को इस बच्चे की बलि न देकर मेरी बलि दे देओ तो क्या आपको कोई आपत्ति है ? स्वामी जी के हृष्ट पुष्ट और सुन्दर शरीर को देखकर वे खुश हो गए और बोले कि हमें कोई आपत्ति नहीं। यदि आप अपनी बलि देना चाहते हो तो हम इस बच्चे को छोड़ सकते हैं। स्वामीजी ने अपनी बलि देने के लिए जैसे ही सिर नीचे किया और एक साधु ने मारने के लिए खंजर उठाया, उसी समय काफी पुलिस घोडों पर चढ़ी हुई आती दिखाई दी और वे सब ढोंगी साधु सारा सामान वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए। बाद में पुलिस वालों से स्वामी जी के पूछने पर मालुम हुआ कि सरकार ऐसी हत्याओं को रोकने के लिए पुलिस द्वारा ऐसे अन्धविश्वासी लोगों पर छापे मारती रहती है और इन अमानुषिक कार्यों को करने से रोकती है। इसलिए हम इनको पकड़ने आए थें।

दूसरी घटना इसी भांति है कि स्वामीजी कहीं जा रहे थे, तब उन्होंने देखा कि एक गाड़ी कीचड़ में फंसी हुई है। गाड़ीवान बैलों को काफी मार रहा है किन्तु बैल गाड़ी को नहीं निकाल पा रहे हैं और गाड़ी टस से मस भी नहीं हो रही है। स्वामीजी से बैलों को पिटता हुआ नहीं देखा गया और वे गाड़ीवान से बोले कि आप कृपया इन बैलों को खोल दीजिये। मैं आपकी गाड़ी कीचड से बाहर निकाल दूंगा। गाडीवान ने बैलों को खोल दिया और स्वामीजी ने अपने प्राणायाम व शारीरिक बल से क्षण भर में ही गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकाल दिया। जब गाड़ीवान, स्वामीजी के प्रति आभार व्यक्त करने लगा तब स्वामी जी बोले कि मैंने तो आपके लिये नहीं, मेरे दिल के कष्ट को दूर करने के लिए गाड़ी निकाली है। आभार तो मुझे आपके प्रति करना चाहिए कि आपने मेरी आत्मा को खुश करने के लिए मुझे सुअवसर प्रदान किया। यह सुनकर गाड़ीवान चकित हो गया और उस महान् आत्मा को हृदय से धन्यवाद देते हुए प्रस्थान किया।

अफसोस की बात तो यह है कि जैसे महात्मा बुद्ध के अनुयायी उनके अहिंसा के सन्देश को न मानकर अधिकतर जीवों को अपना भोज्य बना लिया है, उसी प्रकार जो महर्षि दयानन्द ने मानव–मात्र को अपने भूले हुए गौरवमय, सम्बोधन जिनमें एक जाति 'आर्य', एक धर्म 'वैदिक धर्म' एक उपास्य देव 'ओ३म्' एक भाषा 'संस्कृत', एक झण्डा 'ओ३म् का', एक अभिवादन 'नमस्ते' को बतलाकर सारे विश्व को एक मंच पर लाना चाहते थे और उसी उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की और उनके सदस्यों को नित्य संगठन सूत्रों का पाठ करने का आदेश दिया परन्तु आज उसी आर्यसमाज के शीर्ष नेता परस्पर लड़ झगड़ रहे हैं। जिसके कारण आर्यसमाज का पतन होता जा रहा है। और कतना पतन करेगे यह भविष्य ही बतायेगा।

– आर्यसमाज बड़ाबाजार
१ मुन्शी सदरुद्दीन लेन
कोलकाता – ७००००७

विवाह अर्थात् गृहस्थाश्रम संस्कार का महत्व

– आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में गृहस्थाश्रम को सर्वश्रेष्ठ आश्रम बताया है। आमतौर पर लोगों का यह मानना है कि गृहस्थ तो मानो जैसे जी का जंजाल है मगर महर्षिजी ने इस समुल्लास में ऐसे दिशा निर्देश दिए हैं जिनके विधिवत् कार्यान्वयन से गृहस्थ को सुख का आधार बनाया जा सकता है। महर्षिजी अपने ग्रन्थ 'संस्कार विधि' में लिखते हैं – 'गृहाश्रम संस्कार उसको कहते हैं कि जो ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना और नियत काल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना, और सत्य धर्म में ही अपना तन–मन–धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तान की उत्पत्ति करना। इन विवेचित लक्ष्यों को प्राप्त करके ही गृहस्थ को सफल बनाया जा सकता है। असल में गृहस्थ के लक्ष्यों को प्राप्त न कर सकने की भूल आरभ से ही हो जाती है। वर वधु के चयन के समय बहुत ही सावधानी बर्तने की आवश्यकता है। विवाह संस्कार एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया है मगर आजकल इसे इतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता है। इसका कुपरिणाम भी हमारे सामने है। जिस गृहस्थ रूपी भवन की नीव ही पक्की नहीं होगी वह भला स्थायित्व कैसे प्राप्त कर सकता है ? गृहस्थ बनने के लिए निश्चित रूप से विशेष योग्यता होनी चाहिए इसीलिए महर्षिजी मनु महाराज जी को उद्धृत करते हुए लिखते हैं – वेदानधीत्य वेदो .... गृहस्थारममाविशेत्। अर्थात् जब यथावत् ब्रह्मचर्य आचार्यानुकूल वर्त्तकर, धर्म से चारों, तीन व दो अथवा एक वेद को सांगोपांग पढकर जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हुआ हो, वह पुरुष व स्त्री गृहाश्रम में प्रवेश करे। संस्कार विधि में भी उन्होंने वर वधु के उत्तम गुण, कर्म स्वभाव व विद्यादि गुणों की चर्चा की है। वर वधु के आपसी सामंजस्य से ही गृहस्थ को सुखी बनाने की नीव रखी जा सकती है। जब दोनों ही उत्तम गुणों से युक्त होंगे तभी तो वे जीवन आनन्द से व्यतीत करेंगे। कुछ व्यावहारिक बातों की ओर भी हमारा ध्यान दिलाने के लिए वे मनु के आधार पर कहते हैं – 'असपिण्डा च या ... दारकर्मणि मैथुने। अर्थात् जो कन्या माता के कुल की छः पीढियों में न हो और पिता के गोत्र की न हो उस कन्या से विवाह करना उचित है। इस सम्बन्ध में वे एक मनोवैज्ञानिक तथ्य का उल्लेख भी करते हैं कि जितना प्रेम परोक्ष वस्तु से होता है उतना प्रत्यक्ष से नही। वह वस्तु चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हो मगर बहुत साधारण लगती है। वे निकट विवाह के दोष तथा दूर विवाह के गुणों का भी बड़ा सार्थक तथा मनोवैज्ञानिक विवेचन करते हैं कि प्रथम तो जो बाल्यावस्था में इकट्ठे खेले हों, एक दूसरे को नंगा देखा हो, गुण, दोष और स्वभाव आदि, से परिचित हों, तो उनका विवाह होने पर परस्पर प्रगाढ़ प्रेम होने की कम संभावना है। जैसे पानी में पानी मिलने से कोई विलक्षण गुण नहीं होता वैसे ही एक गोत्र व कुल में विवाह होने से धातुओं के अदल बदल न होने से उन्नति नहीं होती। माता पिता के कुल तथा भिन्न गोत्र में विवाह करने से उत्तम एवं मेधावी सन्तान पैदा होगी। स्थान परिवर्तन से विभिन्न रोगों तथा वृत्तियों को बदलने में सुगमता रहेगी। समीप यदि विवाह कराया जाएगा तो छोटे छोटे झगड़े या मनमुटाव भी तुरन्त कन्या या वर पक्ष के पास पहुंच जाया करेंगे, जिससे आपसी कलह बढ़ने की पूरी पूरी संभावना बन जाती है। समीप यदि कन्या होगी तो वह बार बार अपने मां बाप के घर जाएगी। उस समय मां बाप प्रेमवश अपनी बेटी को कुछ न कुछ देते रहेंगे, जिससे भले ही मुख से कुछ न बोलें मगर उनकी आर्थिक दशा पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ेगा। किसी भी बात पर अहंकार आदि होने पर कन्या तुरन्त अपने मां बाप के घर जाकर कलह क्लेश का कारण बन जाएगी। मां बाप दूर होंगे तो धीरे धीरे क्रोध आदि का आवेश समय पाकर स्वतः ही ठण्डा होकर पति पत्नी में पुनः प्रेम स्थापित हो जाएगा। वे निरुक्त का वाक्य उद्धृत करते हुए लिखते है – दुहिता दुर्हिता दूरे हिता भवति। अर्थात् कन्या का नाम दुहिता इस कारण से है कि इसका विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है, निकट होने में नहीं।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है जिसकी ओर महर्षिजी ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है कि वंशानुगत दोषों से बचने के लिए भी सम्बन्ध स्थापित करते समय विशेष सावधानी बर्तनी चाहिए। वे मनुजी के आधार पर कहते हैं कि कुछ ऐसे कुल हैं जिनके पास धन धान्य या अन्य भौतिक प्रसाधनों की भले ही प्रचुरता हो मगर जो कुछ सत्क्रियाओं से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख, बवासीर, क्षय, दमा, मिरगी, श्वेत कुष्ठ आदि रोगों से ग्रस्त हों वहां कन्या या वर का विवाह सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। क्योंकि आगे आने वाली सन्तानों में भी ये दुर्गुण या रोग प्रवेश कर जाएंगे। शारीरिक स्वस्थता के साथ साथ शारीरिक सौन्दर्य की ओर भी ध्यान देने के बाद ही विवाह सम्बन्ध स्थापित करने चाहिएं। इसलिए ऐसे कुलों में भी विवाह करना वर्जित है जिस कुल में शारीरिक सौन्दर्य न हो। इसी प्रकार अनर्थक और अशोभनीय नाम रखने वाले कुलों को भी वर्जित किया गया है। अव्यंगांगी. ....मृद्वंगीमुद्वहेत्स्त्रियम् अर्थात् जिसके सरल सूधे अंग हों, विरुद्ध न हों, जिसका नाम सुन्दर अर्थात् यशोदा, सुखदा आदि हों, हंस और हथिनी के तुल्य जिसकी चाल हो, वैसी स्त्री के साथ विवाह करना चाहिए। इस विवेचन से हम इस बात को भली प्रकार समझ सकते हैं कि महर्षिजी इस मामले में कितने गंभीर हैं। आज इन बातों को मनोवैज्ञानिक तथा चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा भी अहमियत दी जा रही है। यह दुर्भाग्य की बात है कि आज भी कुछ अज्ञानी लोग केवल कुण्डलियों आदि के मिलान पर ही विश्वास करते हैं या दहेज आदि के नाम पर बच्चों की बोलियां लगाई ज़ाती हैं ... गुण, कर्म व स्वभाव के मिलान तथा शारीरिक परीक्षण आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इससे गृहस्थ की गाडी असमय में ही चरमरा जाती हैं।

महर्षिजी अत्यधिक विलक्षण प्रतिभा के मालिक थे। उन्होंने जिन बातों का उल्लेख अपने प्रवचनों एवं लेखों में किया है वे अत्यधिक सार्थक, मनोवैज्ञानिक, व्यवहारिक और सार्वभौमिक हैं। उन्होंने मानवमात्र की समस्याओं का जिस सूक्ष्मता से चिन्तन व मनन किया, उसी सूक्ष्मता से उनका निराकरण भी संसार के समक्ष रखा। एक समय था जब छोटे छोटे अबोध बच्चों को विवाह सूत्र में बांध दिया जाता था तथा इस कुप्रथा के कारण उस दम्पति के छोटी अवस्था में ही दुर्बल और रोगी सन्तान पैदा हो जाती थी। जनसंख्या में वृद्धि हो जाती थी। यही नहीं अपने पावों पर खड़ा होने से पूर्व ही गृहस्थी के बोझ तले दब जाने के कारण पति पत्नी अस्वस्थ होकर नरक जैसा जीवन व्यतीत करते थे। बाल विधवा व विधुर होकर उनके लिए जीवन एक अभिशाप बन जाता था। किशोरावस्था में ही मैथुन आदि करने के कारण शीघ्र मृत्यु का ग्रास बन जाते थे। सन्तानों की शिक्षा अधूरी रह जाती थी। जिन मां बाप का अपना ही शारीरिक व मानसिक विकास नहीं होता था उनकी सन्तान भी अविकसित ही रहती थी। महर्षिजी की पैनी दृष्टि जब इस कुप्रथा पर पड़ी तो समाज की मान्यताओं से लोहा लेते हुए उन्होंने व्यवस्था दी 'सोहलवें वर्ष से लेकर चौबीसवें वर्ष तक कन्या और २५वें वर्ष से लेकर ४८वें वर्ष तक पुरुष का विवाह समय उत्तम है। इसमें १६ और २५ में विवाह करे तो निकृष्ट, अठारह बीस वर्ष तक स्त्री तथा तीस पैंतीस या चालीस वर्ष के पुरुष का मध्यम, चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह उत्तम है। उन्होंने उस समय की 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी... ' आदि कुत्सित मान्यताओं का घोर खण्डन करते हुए कहा – 'जिस देश में (उपर्युक्त बताई युवावस्था) इसी प्रकार विवाह की विधि श्रेष्ठ और ब्रह्मचर्य विद्याभ्यास अधिक होता है वह देश सुखी और जिस देश में ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण रहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है, वह देश दुःख में डूब जाता है। क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहणपूर्वक विवाह के सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है। 'महर्षिजी की इन्हीं मान्यताओं का सुश्रुत आदि ने भी निर्देश किया है। आठ, नौ और दसवें वर्ष में विवाह करना निष्फल है क्योंकि सोहलवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं।

एक बहुत ही विचारणीय बात यह है कि विवाह किनकी इच्छा पर होना चाहिए ? आजकल देखा यह जाता है कि या तो मां–बाप अपनी सन्तान पर अपनी इच्छा थोप देते हैं या फिर सन्तान मा बाप की इच्छा के विपरीत स्वेच्छाचारी बन जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस सम्बन्ध में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं – 'लड़का लड़की के अधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता पिता विवाह करना कभी विचार, तो भी लड़का लड़की की प्रसन्नता के बिना नहीं होना चाहिए। क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता (है) और सन्तान उत्तम होती है। अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है, माता पिता का नहीं। क्योंकि जो उनमें परस्पर प्रसन्नता रहे, तो उन्ही को सुख और विरोध में उन्हीं को दुःख होता (है)। इस प्रकार महर्षिजी ने सन्तान की इच्छा को ही प्रमुखता दी है मगर मां बाप अपनी सम्मति अवश्य दे सकते हैं। उन्होंने स्वयंवर विवाह को प्राथमिकता दी है – 'जब तक इसी प्रकार ऋषि मुनि राजा महाराजा आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या का न पढ़ना, बाल्यवस्था में पराधीन अर्थात् माता पिता के आधीन विवाह होने लगा, तब से क्रमशः आर्यावर्त्त देश को हानि होती चली आई है। इससे इस दुष्ट काम को छोड़के सज्जन लोग पूर्वोक्त प्रकार से स्वयंवर विवाह किया करें। सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्णाव्यवस्था भी गुण कर्म स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए। इन पंक्तियों में उन्होंने यह तो कहा ही है कि लड़का

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

विवाह अर्थात् गृहस्थाश्रम संस्कार का महत्व

लड़की की इच्छानुसार स्वंयवर विवाह उत्तम है मगर साथ ही एक और महत्वपूर्ण बात उन्होंने यह भी जोड़ दी कि विवाह अपने अपने वर्ण में ही होना चाहिए। महर्षिजी के इस आदेश से किसी को जातिवाद का भ्रम नहीं होना चाहिए। वास्तव में वर्ण और जाति के भेद को न समझने के कारण तथा वर्ण व्यवस्था के ठीक ढंग से कार्यान्वयन न होने के कारण ही इस प्रकार की भ्रान्ति पैदा होती है। इसलिए महर्षिजी ने जहां अपने ही वर्ण में विवाह करने का आदेश दिया वहीं पर विस्तार से वर्ण की वास्तविकता का विवेचन भी इस समुल्लास में कर दिया है। उनके अनुसार वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं बल्कि व्यक्ति के गुण-कर्म और स्वभाव से मानी जानी चाहिए।

चाहे जीवन का कोई भी क्षेत्र हो अज्ञानता ही व्यक्ति के दुःख का कारण है और इसके विपरीत ज्ञान ही व्यक्ति की उन्नति और सुख का आधार है। इसलिए महर्षिजी ने व्यक्ति को श्रेष्ठ बनाने पर ही सबसे अधिक बल दिया है क्योंकि यही समाज व राष्ट्र की भी मूल ईकाई है। व्यक्ति यदि श्रेष्ठ बन जाए तो वह सब जगह श्रेष्ठता का सृजन कर सकता है। संस्कार विधि में महर्षिजी ने विस्तार से मानव को श्रेष्ठ बनाने की प्रक्रिया का संस्कारों के रूप में विस्तृत उल्लेख किया है मगर इस चतुर्थ समुल्लास में भी गर्भाधान की चर्चा की है क्योंकि यही से मानव निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। उन्होंने खान पान, आचार विचार तथा गर्भाधान की पूरी प्रक्रिया का विवेचन किया है ताकि गर्भ से ही बालक में उत्तम संस्कारों का सृजन हो सके। उसके बाद चौथे तथा आठवें महीने में क्रमशः 'पुंसवन' और 'सीमन्तोन्नयन' संस्कार की चर्चा की हैं इन संस्कारों का उद्देश्य है गर्भस्थ सन्तान में निरोगता, स्वस्थता, सुन्दरता और तेजस्विता तथा मानसिक विकास करना। बालक के जन्म के बाद पहला ही संस्कार है – जातकर्म। यह भी अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण संस्कार है। महर्षि जी ने बहुत बारीकी से इस संस्कार की भी समस्त प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। बच्चे का मुख, नाक आदि साफ करना, नाड़ी छेदन, स्नान, कान के पीछे पत्थर बजाना, सिर पर घी में डूबोया फाया रखना, सोने की शलाका से घी और मधु के साथ जिव्हा पर 'ओ३म्' लिखना और बालक के कानों में 'त्वम् वेदोऽसि' कहना। इन सभी प्रक्रियाओं का बालक के भावी जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। सत्यार्थ प्रकाश में इस संस्कार के बाद महर्षि लिखते हैं कि 'पश्चात् नामकरणादि' संस्कार 'संस्कार विधि' की रीति से यथाकाल करता जाए। वास्तव में संस्कारों से ही व्यक्ति के जीवन को उत्कृष्टता और पूर्णता प्रदान की जा सकती है और इसी से गृहस्थ भी उत्कृष्टता व सार्थकता को प्राप्त होता है।

महर्षिजी के अनुसार गृहस्थाश्रम कोई भोगस्थली नहीं है बल्कि इसमें पति पत्नी को संयम के साथ रहना है – अब इस पर स्त्री और पुरुष को ध्यान रखना चाहिए कि वीर्य और रज को अमूल्य समझें। जो कोई इस अमूल्य पदार्थ को ..... खोते हैं वे महामूर्ख होते हैं ... जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है, वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी सदृश है। उनके मन में नारी के प्रति बहुत ही सम्मान का भाव था। इसलिए जिस नारी को मध्यकाल में मात्र भोग की सामग्री भर समझा जाने लगा था, उन्हें पैरों की जूती और पत्थर तक की संज्ञा दी जाने लगी थी, उन्हें यज्ञोपवीत धारण करने तथा पढ़ने का अधिकार नहीं था ऐसे समय में उन्होंने नारी के लिए मुक्ति के द्वार खोल दिए। उसे यज्ञोपवीत धारण करने, य करने, पढ़ने पढ़ाने के ही अधिकार नहीं दिए बल्कि व्यवस्था दी कि नारी को पिता, भाई, पति और देवर सत्कारपूर्वक भूषणादि से प्रसन्न रखें इसी से उनका कल्याण होगा। जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है वहां देवता निवास करते हैं, जहां इनका सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं ... जहां नारी शोकाकुल होकर दुःख पाती है वह कुल नष्ट जो जाता है ... स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें। महर्षिजी के इस कथन में भी बहुत व्यावहारिकता और सार्थकता है क्योंकि नारी को विद्वान व प्रसन्न रखने से ही वह बालकों की प्रथम गुरु बनकर उनमें अच्छे संस्कार स्थापित करने में समर्थ हो सकती है पति पत्नी को आपस में मीठा और धर्मयुक्त व्यवहार करना चाहिए क्योंकि – 'सन्तुष्टो भार्यया ... ' अर्थात् जिस कुल में पति पत्नी एक दूसरे से सन्तुष्ट रहते हैं उस कुल में सब सौभाग्य और एश्वर्य निवास करते हैं, जहां कलह होता है वहां दुर्भाग्य और दरिद्रता होती है। जो पति पत्नी एक दूसरे को ह्रदय से प्यार नहीं करते वहां प्रसन्नता नहीं हो सकती है। पति-पत्नी को विवाह संस्कार की सभी प्रक्रियाएं स्मरण रखनी चाहिएं क्योंकि उनमें ही उनके गृहस्थ को सुखी बनाने के सूत्र छुपे हुए हैं। उन्होंने एक दूसरे के सुख दुःख में सखा की तरह साथ निभाने की प्रतिज्ञा की है तथा यह भी कहा होता है कि आज से हम दोनों ऐसे मिल गए हैं जैसे दो स्थानों से लाया हुआ जल आपस में मिल जाता है। एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझने की जरूरत नहीं है बल्कि सहयोग और सेवा भाव से दोनों को गृहस्थ की गाड़ी को सुघड़ता के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। व्यभिचार आदि से दूर रहकर तथा एक दूसरे के प्रति विश्वास और प्रेमयुक्त कुशलतापूर्वक व्यवहार करके ही गृहस्थ को सुखी बनाया जा सकता है। सदा प्रिय सत्य दूसरे का हितकारक बोले अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोले। एक दूसरे को प्रसन्न करने के लिए किसी प्रकार के झूठ का सहारा न लें। हितकर बोलें और व्यर्थ के विवाद से बचें। गृहस्थ के लिए इन्हीं व्यावहारिक बातों को महर्षिजी ने धर्म माना है क्योंकि धर्म हमारे इस लोक व परलोक की उन्नति करने वाला है।

आगे धर्म की इसी प्राप्ति के लिए उन्होंने ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और वैश्वदेव यज्ञ करने का विधान प्रस्तुत किया है। गृहस्थ को सुखी बनाने तथा अपनी लोक परलोक की उन्नति के लिए प्रत्येक गृहस्थ को ब्रह्म यज्ञ अर्थात् परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। महर्षिजी का तो आदेश है कि गृहस्थ को भी योगी की तरह कम से कम प्रतिदिन एक घण्टा परमात्मा का ध्यान करना चाहिए। देवयज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र आदि करना, पितृयज्ञ अर्थात् जीवित मां बाप और बुजुर्गों की सेवा करना, अतिथियज्ञ अर्थात् वेद के विद्वानों और घर आए अतिथियों का सम्मान और सेवा करना तथा वैश्वदेव यज्ञ अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति दया की भावना रखना और किसी भी प्रकार की हिंसा आदि न करना। महर्षिजी चाहते हैं कि गृहस्थी को अपना समूचा जीवन ही यज्ञमयी बना लेना चाहिए तथा परोपकारादि के कार्यो को सदा उत्साह के साथ करता रहे। यही आश्रम अन्य तीनों आश्रमों और समाज एवं राष्ट्र की हितसाधना कर सकता है इसलिए दानादि समर्पण की भावना प्रत्येक गृहस्थ में होनी अनिवार्य है मगर दान भी पात्र कुपात्र को देखकर ही देना चाहिए। धर्म के नाम पर ठगने वाले, लोभी, कपटी, घातक, द्वेषी, धूर्त, स्वार्थी, हठी तथा पाखण्डी आदि को दान नहीं देना चाहिए। दान के पात्र वेदादि के ज्ञाता और निःस्वार्थ भाव से जगत् का उपकार करने वाले ही हैं। महर्षिजी ने इस प्रकार के निर्देश दिए हैं कि पति पत्नी में कभी सम्बन्ध विच्छेद व पुनर्विवाह आदि की नौबत ही न आए। उन्होंने एक समय में एक ही पत्नी या पति रखने की अनुमति दी है, पुनर्विवाह केवल अक्षतयोनि और अक्षतवीर्य के लिए ही है। इसी क्रम में उन्होंने पुनर्विवाह के दोष आदि भी बताए हैं। इसके स्थान पर उन्होंने ऋषि मुनियों व शास्त्रों द्वारा अनुमोदित नियोग व्यवस्था को मान्यता दी है। यह व्यवस्था किसी प्रकार का व्यभिचार नहीं बल्कि केवल इच्छा होने पर समाज व सम्बन्धियों आदि द्वारा अनुमति लेने के बाद विवाह संस्कार के समान ही सन्तानोत्पत्ति की एक आपात् व्यवस्था के समान है।

इस समुल्लास के अन्त में महर्षिजी इस आश्रम की श्रेष्ठता के बारे में कहते हैं – 'जैसे नदी और बड़े बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर हैं ... इसके बिना किसी भी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता ... इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है ... इसलिए मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहाश्रम को धारण करे ... परन्तु गृहाश्रम में तभी सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों प्रसन्न, विद्वान, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों ....।' उनकी दृष्टि में गृहस्थ आश्रम की श्रेष्ठता का आधार धर्म, नैतिकता तथा आपसी व्यवहार ही है इसलिए उन्होंने कुछ और व्यावहारिक निर्देश देते हुए कहा है – 'जहां तक हो वहां तक अप्राप्त वस्तु की इच्छा, प्राप्त रक्षण और रक्षित की वृद्धि, बढ़े हुए धन का व्यय देशोपकार करने में किया करें। सब प्रकार के ... व्यवहारों को अत्युत्साहपूर्वक प्रयत्न से तन, मन, धन से सर्वदा किया करें। अपने माता पिता, सास श्वसुर की अत्यन्त सुश्रुषा करें। मित्र और सुशिक्षा करने ... और धर्मयुक्त व्यवहार करके मोक्ष का भी साधन किया करें कि जिसकी प्राप्ति से परमानन्द भोगें। इस परमानन्द तक पहुंचने के लिए सदाचार को आधार बनाकर चलना अनिवार्य है इसलिए उन्होंने दुराचार से दूर रहने की चेतावनी दी है – 'दुराचारी ही पुरुषो ... अर्थात् जो दुष्टाचारी पुरुष है वह संसार में सज्जनों के मध्य निन्दा को प्राप्त, दुःख भागी और निरन्तर व्याधियुक्त होकर अल्पायु का भी भोगने हारा होता है। इसलिए व्यक्ति को सदाचार का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि यही व्यक्ति की चतुर्दिक उन्नति का आधार है 'सदा दृढ़कारी, कोमल स्वभाव, जितेन्द्रिय ... धर्मात्मा, मन की जीत, विद्यादान से सुख प्राप्त होवे... मिथ्याभाषण कभी न करे . .. क्योंकि वह चोरी आदि पापों का करने वाला है... अधर्म को छोड़ जैसे धर्माचार अर्थात् ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियता से पूर्ण आयु और धर्माचार से उत्तम प्रजा तथा अक्षय धन को प्राप्त होता है तथा जो धर्माचार से वर्त्तकर दुष्ट लक्षणों का नाश करता है, उसके आचरण को सदा किया करें।

– ८१/एस-४, सुन्दरनगर (हि०प्र०)

धर्मवीर बाल हकीकतराय का २७३वां बलिदान दिवस (२ फरवरी)

- १३ वर्षीय बालक को हिन्दू धर्मावलम्बी होने पर गर्व था।
- उसने इस्लाम ग्रहण करने से मना कर दिया था।
- उसने अपनी गर्दन कटवा ली थी। उसका बलिदान प्रेरणादायक है।
- उसका बलिदान दिवस, विद्यालयों में बाल दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

– इन्द्रदेव, संस्थापक, सावरकर विचार मंच, बुलन्दशहर

काकोरी केस के अमर शहीदों के नमन कार्यक्रम पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा ज्योतिबाफूले नगर द्वारा

आतंकवाद का साया

कर्तव्य हमारा है पहला - इस देश की रक्षा करनी है। सब मिलकर इसको नमन करो यह भारत सब की जननी है।।

मान्य श्री प्रधानमन्त्री जी, मान्य जी गृहमंत्री जी भारत सरकार, मान्य मुख्यमंत्री जी उत्तर प्रदेश के ध्यानाकर्षण हेतु।

गुप्तचर विभाग केन्द्र एवं प्रदेशीय शासन, उत्तर प्रदेश को आतंकवादी गतिविधियों के स्पष्ट संकेत पहले ही मिल चुके हैं कि उत्तर प्रदेश आतंकवादियों की शरण स्थली बन चुका है। सहारनपुर, गाजियाबाद, पिलखुआ, मुजफ्फरनगर, बिजनौर जनपदों में कुख्यात शेख उमर अहमद, अब्दुल करीम उर्फ टूडा, आले अहमद, अब्दुल जव्वार इत्यादि के पास से संवेदनशील हवाई अड्डों, दूरदर्शन केन्द्रों, देश के चार महानगरों, फौजी छावनियों, भारतीय सैन्य अकादमी, नेशनल डिफेंन्स अकादमी, लोकसभा के चित्रों के साथ भारी मात्रा में हथगोले, आर०डी०एक्स०, ए०के०-४७, नकद राशि की बरामदगी निश्चय ही उनकी कुत्सित भयानक गतिविधियों की ओर संकेत करती है। लशकर का उत्तर भारत में आपरेशन कमांडर डॉ० सलीम सालार पिछले दिनों नेपाल से ठिकाना बदल कर जम्मू कशमीर में घुस पैठ कर चुका है। डॉक्टर ने आतंकवादियों के दो दस्तों को दिल्ली की तरफ रवाना कर दिया है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आतंकवाद कभी भी विकराल रूप धारण कर सकता है। प्रदेश के पश्चिमी भू-भाग में आई०एस०आई० पाकिस्तान का गुप्तचर विभाग अपनी अच्छी खासी पैठ बना चुका है इस विभाग और संगठनों के लिए आगरा नोडल प्वांइट रहा है फिरोजाबाद, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली के नजदीक होने के कारण अत्यधिक संवेदनशील है। गुप्तचर व्यूरों की ओर से गृह मंत्रालय को भेजी गई ताजा रिपोर्ट के बाद दिल्ली, मुम्बई, बंगलौर और कोलकाता एयरपोर्ट की सुरक्षा कड़ी कर दी गई है पिछले २ वर्षो की अपेक्षा इस बार आतंकवादी हमलों की योजना प्राप्त जानकारी के आधार पर दस गुना अधिक है। लश्करे तईबा ने इस बार बंगला देश के आतंकवादी संगठन हरकत उल जेहाद के साथ मिलकर हमलों की योजना बनाई है इस संगठन ने ही भारत बंगलादेश बस सेवा के नाकाम करने के लिए ढाका में बम धमाके किए थे।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में चंदोली, मिरजापुर, सोनभद्र, भवानीपुर, खोरा डीह, नौगढ इत्यादि क्षेत्र नक्सलवाद से प्रभावित हैं। उत्तर प्रदेश के मड़िहान, राजगढ, अहरौरा स्थानों में नक्सली गाव गांव निःसंकोच निर्द्वन्द्व बेखोफ घूम रहे हैं। पुलिस महकमा बेखबर और बेबस सा दिखाई पड रहा है। क्षेत्र के युवक युवतियों को अपने संगठन से जोड़कर उनमें से कुछ को पाकिस्तान अफगानिस्तान के प्रशिक्षण केन्द्रों पर भेज रहा है मडिहाम थाना क्षेत्र के मटिहानी व बलुरी पहाडी समेत कई गांवों में किशोरियों, युवतियों को आर्थिक प्रलोभन तथा भय के आधार पर नक्सली सगठन से जुड़ने की चर्चा भी प्रकाश में आयी है, कई युवतियों ने तो नक्सली संगठन के युवकों से बाकायदा शादी कर ली है। इन्हें नौगढ़ के जंगलों में हथियार चलाने की ट्रेनिंग दी जा रही है। अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए खूनी व हिंसक क्रान्ति का पाठ योजनाबद्ध रीति से पढ़ाया जा रहा है।

काकोरी केस के अमर शहीदों के नमन कार्यक्रम का यह अधिवेशन देश के विशाल हित में इस प्रकार की गतिविधियों को अत्यन्त चिन्ता की दृष्टि से देखता है - देश के कर्णधारों से बलपूर्वक अनुरोध करता है - कि इन तथ्यों को ध्यान में रखकर त्वरित कार्यवाही की जाये। जिससे आतंकवादी अपने इरादों में कामयाब न हो सकें। □

संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है

– हरवंश लाल कपूर

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के १० नियमों का निर्धारण वेद के आधार पर करते समय उपरोक्त नियम आर्यसमाज के हर सदस्य के लिए उसके जीवन उद्देश्य के रूप में निर्धारित कर दिया और फिर इसकी विस्तृत व्याख्या की। शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति करना। यह तीन प्रकार की वृत्ति यदि संसार के मनुष्य समाज में हो तो इससे संसार का उपकार हो जाता है।

प्रथम शारीरिक उन्नति के लिए शरीर को निरोग और स्वस्थ रखना तथा परिवार जनों, ईष्ट मित्रों और सम्पर्क में आने वाले सब मनुष्यों के शरीर को निरोग और स्वस्थ रखना और शारीरिक विकास करना तथा कराना मनुष्य का उद्देश्य रहना चाहिए।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि मनुष्य की सोच आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित सत्यनिष्ठ, ईश्वर आस्तिक, परोपकारी, अहिंसक और औरों के काम आने वाली रचनात्मक सोच रहनी चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञान अर्जित करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज का प्रथम नियम निर्धारित किया कि 'सब सत्य विद्यायें और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। इस सत्य विद्या का स्रोत कहां हैं, इसके लिए आर्यसमाज के तीसरे नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निर्देश दिया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है'। परम शब्द को धर्म से पहले लगाकर महर्षि ने मनुष्य को धर्म की पराकाष्ठा का ज्ञान कराया और बता दिया कि सब सत्य विद्याओं का ज्ञान अर्जित करने के लिए हमें वेद पढ़ना और पढ़ाना चाहिए। यदि हम पढ़ने पढ़ाने में असमर्थ हैं तो हमें विद्वानों से सुनना और सुनाना चाहिए।

जो मनुष्य स्वयं वेद पढ़कर या वेद का ज्ञान विद्वान् से सुनकर दूसरे मनुष्यों को वेद ज्ञान विज्ञान पढ़ाता है एवं सुनाता है तो यह वेद प्रचार सबसे बड़ा परोपकार है। सत्य विद्याओं का ज्ञान प्रवाहित करने से सब मनुष्य वेद ज्ञान के ज्ञानी विज्ञानी बन जाते हैं और उनकी विचारधारा सात्विक धर्म परायण हो जाती है। धर्म परायण विचारों से मनसा, वाचा, कर्मणा पूर्ण मनुष्य समाज सात्विक, अहिंसक, परोपकारी और यज्ञमय जीवन व्यतीत करने वाला बन जाता है।

सामाजिक उन्नति और विकास को भी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य आचरण का उद्देश्य निर्धारित किया है। मनुष्य समाज का अंग है, जिसमें वह पैदा हुआ, माता पिता, बहन भाई के रिश्ते, वंश के अन्य व्यक्ति, पूर्वजों के साथ उनके रिश्ते और रिश्तों के साथ जुड़े कर्तव्य मनुष्य जीवन का मार्गदर्शन करते हैं। मनुष्य को समाज में सफल और स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए धन एश्वर्य की आवश्यकता त्याग भाव से भोगने के लिए वेद ज्ञान में निर्धारित है। यह व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं, बल्कि सार्वजनिक आवश्कयता है।

आर्यसमाज के नौवें नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परोपकार की इस भावना से संसार के उपकार करने के मानवीय उद्देश्य को प्रबल शब्दों में कर्तव्य के रूप में बतलाया है 'केवल अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए'। यह नियम सर्व उपकारी, मनुष्य के व्यक्तिगत और सार्वजनिक विकास और उत्कर्ष अर्जित करने वाला साधन और माध्यम है। इसे अपने जीवन का उद्देश्य माना जाए तो संसार में हिंसा, विरोधाभास, ईर्ष्या-द्वेष, अपराध वृत्ति, झूठ फरेब जैसे दुर्गुण तुरन्त प्रभाव से समाप्त हो जाएंगे। आज के इस श्रृंगार रस में डूबे हुए समाज में आपराधिक वृत्ति, आतंकवाद, जाति पाति पर आधारित भेदभाव और आक्रमणकारी हिंसक प्रवृत्ति का मूल कारण यह है कि हम सबने उपरोक्त वैदिक नियमों का, जिनका महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के दस नियमों में विशेष उल्लेख किया है, का अनुसरण करना छोड़ दिया है। आर्यसमाज, अन्य धर्मस्थान व समाज सेवी संस्थाओं ने परोपकारी कार्य करने का प्रयास किया है जैसे निःशुल्क चिकित्सालय खोले हैं, पाठशालाएं, व्यायामशालायें खोली हैं, यज्ञशाला बनाई हैं, गौशालाओं का निर्माण किया है, परन्तु इन सबके होते हुए भी मनुष्य के अन्तःकरण की पवित्रता की है।

स्वार्थ सिद्धि ने पवित्रता को, परोपकार की भावना को नष्ट कर दिया है और इसके स्थान पर जोरजबरदस्ती ने अपराध की सीमा तक भी पहुंचकर मनुष्य स्वार्थ सिद्धि की पूर्ति के लिए अपने आपको अनैतिकता के दलदल में गिराता चला जा रहा है। मनुष्य के आचरण की पवित्रता के बारे में कवियों ने बहुत सुन्दर कविताएं लिखी हैं। एक कवि की दो पंक्तियां प्रस्तुत हैं –

फ़रिश्तों से बेहतर है, इन्सान होना।
कर्म पर ही निर्भर है, सम्मान होना।।

वैदिक संस्कृति के मूल्यों का आदर और सम्मान करते हुए मनुष्य कर्म को धर्म अपनी सत्यनिष्ठा से बना लेता है तथा पुरुषार्थ से अर्जित किया हुआ धन ऐश्वर्य एक व्यक्ति के समक्ष पात्र में खाद्य पदार्थो के रूप में आता है और वह ईश्वर का ध्यान करने उनका भोग लगाने वाला ही है, इतने में एक अतिथि पहुंचता है। वह व्यक्ति वह खाद्य पदार्थ ससम्मान उस अतिथि के समक्ष प्रस्तुत कर देता है। वह गृहस्थी खाद्य पदार्थ के सेवन की इच्छा करने जा रहा था, वह उसका [illegible] प्रस्तुत कर दिया, वह उसका धर्म है। यह जीवन दर्शन है। मनुष्य अपने व्यक्तिगत भोग से पूर्व अपने परिवार, वंश, आसपड़ोस, सम्पर्क में आने वाले ईष्ट मित्रों, विद्वानों, संन्यासियों का विचार करके उनकी तृप्ति के पश्चात् स्वयं ईश्वरीय पदार्थो का भोग करता है, उसको वेद की भाषा में 'तेन व्यक्तेन भुजीथा' कहा गया है। इस सृष्टि में परमात्मा ने मनुष्य के भोग व सेवन के लिए नाना प्रकार के पदार्थों की रचना की है, परन्तु उनका त्याग भाव से सेवन करो, त्याग भाव से रहो, यह शिक्षा हमें यज्ञ देता है। हम अपने घर से अपने पुरुषार्थ से कमाई से सामग्री, घृत, मिष्ठान आदि यज्ञशाला में ले जाकर यज्ञ की पवित्र अग्नि प्रज्जवलित करके वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ आहुति डालते हैं, उसका प्रभाव जहां उसके यजमान व्यक्ति को लाभकारी हो रहा है, वहीं दूसरी ओर समस्त संसार के वनस्पति, जीव जन्तु मनुष्यों को उसका लाभकारी प्रभाव प्राप्त हो रहा है, इसलिए वेद की भाषा में यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है।

परमपिता परमात्मा को हम सब प्राणि जो किसी भी स्थान पर रहते हैं, कोई भी मत रखते हैं, ईश्वर की सत्ता में अवश्य विश्वास करते हैं तो हमारा कर्तव्य बनता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज के इस नियम की अवश्य पालना करें – 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है'। □

पृष्ठ १ का शेष

स्वामी रामदेव के विरुद्ध ...

मुरादाबाद मण्डलीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस षड्यन्त्र का भारी विरोध किया है। सभा ने समस्त सम्बद्ध संगठनों को जारी परिपत्र में कहा है कि आयुर्वेद मनुष्य को निरोगी रखने के लिए एवं दीर्घ आयु प्रदान करने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाला ज्ञान विज्ञान है। ऋषिराजों ने शास्त्रों में वर्णित प्राचीन सफल उपयोगी चिकित्सा पद्धति को अपनाकर प्रकृति प्रदत्त सुलभ सस्ती वनस्पतियों से जुड़ी बूटियों की खोज कर व्याप्त सामान्य व जटिल व्याधियों की सफलतम सम्पूर्ण चिकित्सा विधि अपनायी थी। वर्तमान युग में आयुर्वेद ने अपनी महत्वता पुनः सिद्ध की है, भयावह दुष्परिणामों से युक्त दवाईयों को प्राकृतिक जड़ी बूटियों के उपचार से जीत लिया गया है।

योग के वर्तमान मार्गदर्शक स्वामी रामदेव जी – योगासान, प्राणायाम एवं आयुर्वेदिक औषधियों के माध्यम से पर्याप्त समय से करोड़ों लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करा रहे हैं। उनके द्वारा आयोजित योग शिविरों में अपार जनसमूह की उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि जनमानस को शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति का सुलभ अवसर प्राप्त हो रहा है। इस रोग मुक्ति अभियान के प्रारम्भ से ही बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने कार्य में बहुत बड़ी बाधा एवं अवरोध मान रहे हैं।

देश में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में व्यापक चर्चा है कि स्वामी रामदेव जी महाराज की योगसाधना और औषधियां विभिन्न प्रकार की जटिल असाध्य बीमारियों से मुक्ति दिला रही हैं। पूज्य स्वामी जी के शिविरों का चमत्कारी प्रभाव यह है कि अधिकतर घरों में योग साधना प्रारम्भ हो गयी है। बहुत बड़ी जनसंख्या शीतलपेय कोका–कोला आदि को व्रतपूर्वक त्याग चुकी है – स्वामी रामदेव का संकल्प है कि कालचक्र में वैदिक अनुसंधान विस्मृत और नष्ट हो रहा था। उसे फिर से जीवित करना और योग से ही शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति करना राष्ट्रवाद और स्वदेशीकरण ही उनके जीवन का लक्ष्य है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के श्री कृष्णचन्द आर्य ने भी अपने वक्तव्य में इस षडयन्त्र का भरपूर विरोध किया है।

औरैया (उ०प्र०) में भी आर्यसमाज ने योग विद्या को जन जन तक पहुंचाने वाले तथा मानव जीवन को स्वस्थ व सुखद बनाने का दिव्य सन्देश देने वाले महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी स्वामी रामदेव जी के समर्थन में एक विशाल जलुस आर्यसमाज मन्दिर से नगर के सभी संगठनों के समर्थन को लेकर नगर के प्रमुख मार्गो से होता हुआ विशाल हजारों–हजारों के समुदाय में विशाल जलूस निकाला व वृन्दाकरकात का पुतला फूंका गया।

राष्ट्रपति को सम्बोधित करते हुए एक ज्ञापन भी जिलाधिकारी महोदय को दिया गया। इस जलूस में पूरे नगर के सभी संगठन अपने आर्यसमाज के बैनर व नेतृत्व के लिये आ गये। □

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस (वसन्तोत्सव)

आर्यसमाज मन्दिर, वाई ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली में रविवार ५ फरवरी, २००६ को प्रातः ८.३० बजे से दोपहर १.३० बजे तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रातः ८.३० बजे से ६.३० बजे तक यज्ञ, ६.३० बजे से १० बजे तक श्री राजवीर शास्त्री के मनोहर भजन, १० बजे से १२ बजे तक स्कूल के बच्चों के गायन, भाषण एवं रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा विशेष कार्यक्रम, हकीकत राय का ड्रामा आदि प्रस्तुत किए जाएंगे। १२ से १.३० बजे तक विशेष सभा होगी जिसमें श्री वेदव्रत शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, श्री ब्र० राजसिंह आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, श्री अशोक आहूजा (विधायक), श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट, श्री विश्वामित्र मेधावी वैदिक प्रवक्ता, श्री बनारसी-सिंह पत्रकार, श्री विजय गुप्त आशुकवि पधारेंगे और अपने विचार रखेंगे। अन्त में १.३० बजे ऋषि लंगर होगा।

शनिवार ४ फरवरी, २००६ को प्रातः १० बजे से १२ बजे तक हकीकत राय के जीवन पर भाषण व कविता गायन आदि की प्रतियोगिता होगी जिसमें पांचवी कक्षा से १२वीं कक्षा तक के बच्चे भाग ले सकेंगे। विजेता बच्चों को तथा अन्य भाग लेने वाले बच्चों को स्वर्गीय श्री रतनलाल जी सहदेव की स्मृति में पारितोषित–स्मृति चिन्ह, रविवार ५ फरवरी को मुख्य समारोह में दिए जाएंगे।

– रोशन लाल गुप्ता, महामंत्री

गाजियाबाद का जनपदीय आर्य महासम्मेलन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में जनपदीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन १७, १८, १६ फरवरी को ग्राम करैहडा (मोहन नगर) की नई चौपाल पर किया जा रहा है। इस अवसर पर नैतिक मूल्य रक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, स्वास्थ्य रक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा। देश के सुप्रसिद्ध विद्वान, विदुषियां तथा आर्य नेताओं से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए आप सपरिवार इस सम्मेलन में भाग लें।

माया प्रकाश त्यागी,
मो० ६३१६८०५५०४
नरेन्द्र कुमार आर्य,
मो० ६४१२६२०३६२
सतीश आर्य,
मो० ६८१८३३०३३१

मेरठ में प्रान्तीय आर्यवीर सम्मेलन

मेरठ में प्रथम बार प्रान्तीय आर्यवीर दल महासम्मेलन का आयोजन ११ व १२ फरवरी, २००६ को बड़े ही उत्साह से आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने तथा युवावर्ग में राष्ट्रीय व सामाजिक चेतना जागृत करने के लिए भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

– रिछपाल सिंह चौधरी

कुष्ठ रोगियों के बीच यज्ञ

आर्यसमाज की सार्थक पहल - ओम् बिरला

३१ दिसम्बर – कुष्ठ रोगियों के बीच उन्हीं के द्वारा यज्ञ करवाना आर्यसमाज का एक पुण्य प्रयास है। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि जिन कुष्ठ रोगियों को समाज निरस्कृत एवं हेय दृष्टि से देखता है, आर्यसमाज द्वारा उनके बीच पहुंचकर एक सार्थक एवं प्रेरणादायक प्रयास किया जा रहा है। इससे कुष्ठ रोगियों में आत्म विश्वास बढेगा एवं वे अपने आपको समाज का अंग मानेंगे। आर्यसमाज ने नर सेवा ही नारायण सेवा को साक्षात किया है। मैं इस पुण्य कार्य के लिए आर्यसमाज को हार्दिक साधुवाद देता हूं।

उक्त विचार संसदीय सचिव ओम बिरला ने जिला आर्य प्रतिनिधि



सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल के समक्ष कुष्ठ रोगियों के मध्य यज्ञ करने हेतु आमंत्रित करने पर व्यक्त किये।

नववर्ष की पूर्व संध्या एवं अमावस्या के उपलक्ष्य में जिला आर्य सभा के तत्वावधान में कुष्ठ रोगियों के बीच उन्हीं के द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। वीर सावरकर नगर में आयोजित इस यज्ञ में कुष्ठ रोगियों ने हिस्सा लिया। पंडित ओंकार आर्य के पौरोहित्य में इस यज्ञ में पहले कुष्ठ रोगियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। यज्ञ के पूर्व वैदिक प्रार्थना हुई इस अवसर पर उनके गले में गायत्री मंत्र के केसरिया दुपट्टे पहनाये गये। सभी कुष्ठ रोगी एवं उनके परिजन इससे अभिभूत हुऐ। यज्ञ में पवित्र आहुतियां देते समय पूर्ण उल्लासमय वातावरण था। इस यज्ञ में आठ कुष्ठ रोगी स्त्री पुरुष याज्ञिक थे। यज्ञ के बाद में उनके सुखी जीवन हेतु पुष्प वर्षा के साथ मंत्र बोले गये। अमावस्या एवं महामृत्युंजय के मंत्रों द्वारा भी आहुतियां दी गई एवं शांतिपाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर बोलते हुए जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि आर्यसमाज का लक्ष्य संसार का उपकार करना है। चड्ढा ने बताया कि आर्यसमाज दलितों, कुष्ठ रोगियों, गरीबों एवं बेसहारा लोगों की सेवा में तत्पर रहा है।

हाडौती वेद प्रचार समिति के प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि आज हम कुछ नया अनुभव कर रहे हैं। हम मानते हैं कि कुष्ठ रोगी भी समाज के अंग हैं तथा इनकी सेवा करना हमारा दायित्व है।

इसके पश्चात अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में कुष्ठ रोगियों एवं बस्ती के अन्य जरूरत मंद लोगों में आटा, चावल व अन्य सामग्री वितरित की गयी। कुष्ठ रोगियों को आर्यसमाज की ओर से बर्तनों के सेट भी वितरित किए गए। जिसमें स्टील की थाली, ग्लास, कटोरा आदि शामिल थे।

इस वितरण में श्रीमती गायत्री दुबे, श्रीमती अनिता शर्मा, श्रीमती अनिता गुप्ता, श्रीमती गीता चड्ढा, रूकमणी देवी, श्रीमती सीता बाहेती, श्रीमती रमा बाहेती, रामप्रसाद याज्ञिक, श्रीचन्द गुप्ता, जे.एस. दुबे, कैलाश चन्द बाहेती, अरविन्द पाण्डे, कंवर लाल सुमन, डॉ. के. एल. दिवाकर, दिनेश शर्मा, मुकेश चड्ढा, दर्शन पिपलानी, क्षेत्रपाल, रघुराज सिंह आर्य व बनवारी लाल सिंघल ने वस्त्र वितरित किए।

इस अवसर पर स्थानीय निवासियों ने आर्यसमाज द्वारा किए गए शुभ कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अन्त में जिला मंत्री कैलाश बाहेती ने सभी का आभार व्यक्त किया।

– जे०एस०दुबे, उपप्रधान

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22-1-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08
R.N. No. 626/57 Licensed to Post Without Pre-payment Licence No. U(C) 93/2006-08 in NDPS on 19/20-01-2006

पांडिचेरी में एक दिवसीय संस्कार प्रशिक्षण शिविर

विगत १३ नवम्बर, २००५ को पांडिचेरी प्रान्त में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन द्वारा आर्यसमाज की स्थापना के बाद सुनामी सहायता कार्यों के अन्तर्गत जीवन प्रभात पाडिचेरी का कार्य तो जोर शोर से चल रहा है, साथ ही आर्यसमाज द्वारा सामाजिक और आध्यात्मिक गतिविधियां भी प्रारम्भ हो चुकी है।



३१ दिसम्बर को स्थानीय टैगोर आर्टस कालेज के युवा छात्र छात्राओं को एक. दिवसीय संस्कार प्रशिक्षण कैम्प के माध्यम से सामाजिक कार्यों तथा आध्यात्मिक ज्ञान में दक्षता प्राप्त करने के मार्ग पर आमन्त्रित किया गया। विभिन्न मत पन्थों के लगभग ७० युवक–युवतियों ने श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी तथा श्री सुनील खुराना, कर्नल सतनाम सिंह, श्रीमती दीप कौर तथा दिल्ली के श्री जगदीश शर्मा के साथ प्रातः ६ से ११ बजे तक श्रमदान के द्वारा समूची कालोनी में सफाई अभियान चलाकर महावीर नगर को एक माडल बस्ती बनाने का प्रयास किया।

११ बजे प्रातराश के उपरान्त श्री आर्य तपस्वी जी ने 'कार्य के महत्व' पर आध्यात्मिक प्रवचन देते हुए इतिहास की घटनाओं तथा शास्त्रीय प्रमाणों के बल पर सेवा कार्यों की सर्वोच्चता को सिद्ध किया।

भोजन के उपरान्त श्री सुनील खुराना ने कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट के प्रयोग से युवकों को राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय धर्म प्रचार प्रयासों में शामिल होने तथा एक सफल व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित किया।

सायंकाल ३ बजे के बाद विचार–विमर्श सत्र के अन्तर्गत जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म, दण्ड, ईश्वर, प्रकृति तथा विज्ञान आदि पर खुलकर चर्चा हुई जिससे इन युवक युवतियों में एक नए ज्ञान और उत्साह का संचार हुआ।

टैगोर आर्ट्स कालेज के प्रोफेसर डॉ० पी०के० स्वामी तथा डॉ० वी. कुमारसन ने भी इस संस्कार प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। ▢

प्रतिष्ठा में

20845 श्री रामनरेश शर्मा (5/05)
प्रशासन लेखा अनुभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरांचल)

पृष्ठ १ का शेष

आलस्य नहीं कर्त्तव्यपालन करें

(घ) भारत में राष्ट्रवाद के सिद्धान्तों को स्थापित करने के लिए सदैव कृत संकल्पित रहें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के इन सिद्धान्तों को भारत के संविधान में नागरिकों के कर्तव्य नामक अध्याय के अनुच्छेद ५१ (ए) में भी शामिल किया गया है।

३. स्थानीय टी.वी. केन्द्रों, रेडियो स्टेशनों तथा अन्य टी.वी. चैनलों, समाचार पत्रों–पत्रिकाओं आदि में भी सार्वजनिक अवकाश की मांग तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुरूप लेख, उनके जीवन की घटनाएं टाइप करवाकर प्रकाशनार्थ भेजें।

अपनी संस्थाओं के लैटर पेड पर टाइप करवाकर प्रत्येक अधिकारी को अलग–अलग सम्बोधित करते हुए ही सुन्दरता से यह पत्र भेजे जाएं। अपने पत्रों की एक–एक प्रतिलिपि जानकारी हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को १४८८, पटौदी हाउस, (आर्य अनाथालय के पास) दरियागंज, नई दिल्ली–२ के पते पर भी भेजें।

आलस्य धर्म मार्ग को रोकता है आपके कर्त्तव्यपालन से ही धर्म मार्ग व्यापक होगा।

– विमल वधावन आर्य
सभा मन्त्री

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in* वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४५ अंक १ — २६ मार्च से १ अप्रैल, २००६ तक — दयानन्दाब्द १८४ — सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ — सम्वत् २०६३ — चै०कृ०१:

एक प्रति २ रुपया (भारत में) वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

अग्निवेश की वास्तविकता – राजनीति स्वार्थ, राष्ट्रद्रोह और कम्यूनिज्म

महर्षि दयानन्द की समग्रता –

ईश्वर भक्ति, राष्ट्रप्रेम और शुद्ध वैदिक विचार

प्रिय आर्यजनो !

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर अग्निवेशी गुण्डागर्दी शब्द का प्रयोग मैं पहले भी कई बार कर चुका हूं। कुछ व्यक्तियों को इस शब्द पर आपत्ति हुई है। यह आपत्तिकर्त्ता आर्यसमाजों सभाओ के पदो पर भी आसीन हैं और स्वयं को आर्यसमाजी और महर्षि दयाननछ का भक्त सिद्ध करने का प्रयास केवल पदो के नाम पर करते हैं।

कृपया चिन्तन करें कि सच्चा आर्यसमाजी कौन होता है ? महर्षि दयानन्द के विचारों को समग्र रूप में मानकर उन पर कौन चलने के लिए तैयार है ? इस एक बिन्दू पर चिन्तन करने के बाद ही यह तय हो सकता है कि वास्तव में राजनैतिक गुण्डागर्दी, देशद्रोह, विदेशी षड्यन्त्र और यहां तक कि आतंकवाद, मार्क्सवादी, कम्यूनिस्ट, नक्सलवाद की श्रेणी में अग्निवेश और उसके समर्थक तत्व आते हैं या नहीं।

भारत के इतिहास पर मोटा सा सरसरी चिन्तन भी देश प्रेम और देशद्रोह को स्पष्ट करने में सहायता करेगा।

आप स्मरण कर सकते है उस इस्लामिक युग का जब जलालुद्दीन मोहम्मद नामक राजा ने जनता को गुमराह करने के लिए अपना नाम अकबर रख लिया। अकबर का अर्थ बड़ा सुन्दर है। महान, परोपकारी, प्रजा का पालक सबको सुख देने वाले परमात्मा के लिए फारसी उर्दू में अकबर शब्द प्रयोग किया जाता है।

"अल्ला–हो–अकबर" के उच्चारण से स्पष्ट है कि परमात्मा का नाम ही अकबर है। इस जलालुद्दीन ने अपनी नीचताओं, कामुकताओ, राजनीतिक उच्चाईयों को येन केन हासिल करने की नीतियों, अत्याचार, हमलो, लूट आदि से अपने को ढकने के लिए अपने नाम के साथ अकबर लगाना शुरू कर दिया। लोग अकबर को एक महान राजा के रूप में सम्बोधित करते समय यह भूल जाते हैं कि इस आर्यावर्त में वैश्यावृत्ति का पेशा आरम्भ करने वाला, जजिया कर लगाने वाला पक्षपाती सम्प्रदायिक व्यक्ति महान कैसे हो सकता है।

महान तो वह वीर आर्य राजा महाराणा प्रताप सिह था जिसके साथी एक–एक करके उसे छोड़ते गए परन्तु अकेला वीर अन्तिम सासों तक टक्कर लेता रहा। उसके जितने साथी अकबर से जा मिले, आज उन्हें कोई याद भी नहीं करता, जबकि महाराणा प्रताप का नाम याद आते ही सिर श्रद्धा से नमन करता है।

अकबर के समय में भी पंजाब में गुरु नानक देव जी ने एक सच्चे संत के रूप में इस्लामी अन्ध विश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई तो उस स्वाभाविक साधू जीवनचर्या में से अपने स्वयं के पारिवारिक हिन्दू रीतियों के विरुद्ध भी उन्होंने जनता को मार्गदर्शन देना प्रारम्भ कर दिया। इस्लाम में क्या रखा है, इस विचार के साथ–साथ मूर्ति पूजा में भी क्या रखा है। यह सोच गुरु नानक देव जी ने जनता के सामने रखते हुए सत, तप, दान और दया के उपदेश देने प्रारम्भ कर दिए। मुसलमानों ने तो इसका विरोध करना ही था, हिन्दुओं ने भी अपने कारणों से विरोध किया बेशक सीमित।

उधर गुरुनानक देव जी की परम्परा आगे बढ़ी। गुरु अंगददेव जी, गुरु अमर दास, गुरु रामदास से होती हुई गुरु अर्जुनदेव जी तक यह लहर गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में पहुचती गई। यह एक तीसरी धारा बनती जा रही थी। इस तीसरी धारा में हिन्दुओं की जनसंख्या ही शामिल हो रही थी। नतीजा यह निकला कि हिन्दुओं का विरोध तो यदा कदा विचारो, तर्कों तक ही सीमित था परन्तु मुसलमानी शासको का विरोध जुनूनी बनता जा रहा था। मुसलमान शासकों ने पांचवे गुरु अर्जुनदेव जी के विरुद्ध बादशाही कहर प्रारम्भ कर दिया। य[illegible] समय अकबरी गुण्डागर्दी की वंश परम्परा के चलते–चलते जहांगीर का था। जहांगीर ने गुरु अर्जुनदेव जी से कहा कि गुरु ग्रन्थ साहिब में हजरत पैगम्बर की प्रशंसा [illegible] भी कुछ गीत शामिल कर दि[illegible] जाएं। दो टूक जवाब मिलने [illegible] बाद सत्ताहरवी शताब्दी में गुरु अर्जुन देव पर दो लाख रुप[illegible] जुर्माना लगाया गया। इस्लामी विरोध केवल वैचारिक विरोध नहीं था यह तो राजनीतिक अत्याचार बन चुका था।

छठे गुरु हरगोविन्द देव जी ने तो इस विरोध का बदला लेने के लिए दो तलवारे टांग कर गुरु पद की शोभा बढ़ाई थी।

उसके बाद गुरु हर राय, गुरु हरकिशन का समय निकला तो नौवे गुरु तेगबादुर जी के साथ जहांगीर के वंशी औरंगजेब ने क्या कुछ नहीं किया। दिल्ली में उनकी गर्दन धड़ से अलग करते हुए और क्रूरता की सीमाओं के

शेष पृष्ठ ७ पर

श्री सुदर्शन शर्मा सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान बनें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने श्री सुदर्शन शर्मा को सभा का कार्यकारी प्रधान नियुक्त किया है। कुछ अपरिहार्य कार्यों से श्री स्वामी सत्यम जी ने स्वयं कार्यकारी प्रधान के रूप में कार्य करने में असमर्थता व्यक्त की थी।



श्री सुदर्शन शर्मा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान थे। आर्यसमाज की सेवा के लिए आप कृतसंकल्प रहते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में उन्होंने सदैव आर्यसमाज को अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की हैं।

कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने इस दायित्व को कुशलतापूर्वक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति एवं आर्यसमाज के उत्थान के लिए निर्वहन करने का संकल्प व्यक्त किया है।

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती दुर्घटनाग्रस्त

छपते–छपते प्राप्त समाचार अनुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की परामर्शदाता समिति के अध्यक्ष पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी जम्मू से शिमला जाते हुए कार यात्रा में दुर्घटना ग्रस्त हो गए हैं। उनकी स्थिति खतरे से बाहर है परन्तु ड्राइवर को गम्भीर चोंटे आई हैं। इलाज के लिए वे १–२ दिन में जालन्धर प्रस्थान करेंगे। विस्तृत समाचार अगले अंक में। **– विमल वधावन आर्य, 9811221083**

क्या आप जानते हैं ?

मुकदमों में देरी से निर्णय क्यों होता है ?

अदालतों में चल रहे मुकदमों में सदैव दो पक्ष होते हैं। दोनों पक्षों में सत्य र असत्य, अच्छे-बुरे, उचित-नुचित, कानूनी- गैरकानूनी आदि ो लेकर कोई विवाद अदालत समक्ष यह सोचकर प्रस्तुत किया ाता है कि अदालत में सर्वोच्च म्मान के पद पर विराजमान ानून और सत्य की परख करने ले योग्य महानुभाव अपनी बुद्धि, विवेक, कानून आदि के आधार र इसका तुरन्त निर्णय करके वाद का निपटारा करेंगे। सलिए ऐसे महानुभावों को यायाधीश कहा जाता है।

परमात्मा का नाम भी यायाधीश है जो असंख्य जीवों ो अपने द्वारा रचित प्रकृति के नियमों में चलने के लिए प्रेरित रता है और प्रत्येक जीव को उसके कर्मानुसार न्यायपूर्वक फल प्रदान करता है। उस सर्वोच्च अशरीरधारी परमपिता परमात्मा का प्रतिनिधि मानते हुए अक्सर लोग इसीलिए इस धरती पर कार्य करने वाले शरीरधारी न्यायाधीशों को भी परमात्मा का रूप मानने लगते हैं। यह सत्य भी है। अदालतों के न्यायाधीश वास्तव में नागरिकों के विवादों को न्याय नियमों के अनुसार सदैव शान्त करने में लगे रहते हैं।

प्रश्न यह है कि ऐसे ईश्वरीय कार्यों को करने में फिर आवश्यकता से अधिक देरी क्यों ?

प्रश्न अवश्य जटिल है परन्तु उत्तर नहीं। इस देरी में न्यायाधीशों का दोष निकालना पर्याप्त उत्तर नहीं है।

विवादों, मुकदमों की निरन्तर बढ़ती संख्या इसका एक कारण है। इसका समाधान करने का प्रयास सरकार समय समय पर करती रहती है। न्यायालयों तथा न्यायाधीशों की संख्या भी बढ़ाने का प्रयास चलता रहता है।

उलझन भरी न्यायिक प्रक्रिया का एक अन्य कारण है। इस समस्या को सुलझाने का प्रयास भी निरन्तर चलता रहता है। नए नए सरल कानूनों के निर्माण से ये उलझने साफ करने का प्रयास भी लगातार चल रहा है।

सबसे प्रमुख कारण है – विवादग्रस्त लोगों द्वारा जानबूझकर विवादों को लम्बा करना। अदालत के सामने उपस्थित दो पक्षों में स्वाभाविक है कि एक पक्ष सत्य और दूसरा असत्य है, एक उचित तो दूसरा अनुचित है, एक कानून सम्मत तो दूसरा गैरकानूनी है।

सत्य पक्ष की सदैव यह अभिलाषा रहती है कि मुकदमें का निर्णय जल्दी से जल्दी हो। परिणामतः यह पक्ष सदैव अदालत के साथ सहयोग की मुद्रा में रहता है। समय पर कार्यवाही पूर्ण करना, समय पर बहस के लिए तैयार रहना, समय पर बहस समाप्त करना, निरर्थक बातों में न्यायाधीश को न उलझाना।

परन्तु असत्य, अनुचित और मुलजिम पक्ष सदैव इसी टोह में लगा रहता है कि किस तरह टाईमपास किया जाए, नए–नए निराधार प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करना, बहस करने में बहानेबाजी, बहस को उल–जलूल बातों से लटकाते जाना, यहां तक कि किसी न किसी माध्यम से जजों को यह सन्देश भेज कर प्रभावित करने का प्रयास करना कि इस मुकदमें में विलम्ब करना ही हमारा समर्थन है। क्योंकि यह पक्ष जानता है और न्यायाधीश भी जानते हैं कि चाह कर भी झूठे के पक्ष में सत्य रूपी निर्णय की घोषणा नहीं की जा सकती।

इन्हीं बातों का ग्रहण तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिल्ली उच्च न्यायालय में लम्बित मुकदमें पर लगा हुआ है।

इन्हीं प्रवृतियों के सहारे तो अग्निवेश खुलेआम यह घोषणाएं करता फिरता है कि तीन वर्ष तक मैं मुकदमें का फैसला नहीं होने दूंगा। इन दाव पेचों और भारतीय न्याय व्यवस्था की दलित अवस्था के बारे में वह जानता है कि न्याय करने में देरी यहां का मुख्य अन्याय है।

Justice Delayed is
justice denied.

कुछ लोग कहते हैं ईश्वर के घर में भी देर है पर अन्धेर नहीं। परन्तु वास्तव में ईश्वर के घर न देर है न अंधेर। यह तो हमारे अपने कर्मों का फेर है।

वैसे दिल्ली उच्च न्यायालय की न्याय व्यवस्था अभी इस स्तर तक नहीं गिरी।

ईश्वरीय ताकत के सहारे
हम आश्वस्त हैं
जरा ईश्वर भक्ति करके
भूत और भविष्य को देखो
असुरो के किले,
हमेशा ध्वस्त है

– विमल वधावन आर्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय पादप संरक्षण संवर्धन संगोष्ठी

स्वास्थ्य देश की प्रमुख सम्पत्ति

- किसानों को दिया जाए आयुर्वेदिक ज्ञान : श्री श्री रविशंकर
- देश में बनाई जाए जड़ी-बूटी आधारित कृषि नीति : रामदेव
- सिरमौर बनना है तो आलस को अभी से ही त्यागना होगा

हरिद्वार। आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकर ने कहा भारतवर्ष में स्वास्थ्य को देश की प्रमुख सम्पत्ति घोषित करना चाहिए। संस्कृति को बचाना तो योग और आयुर्वेद को पाठ्यक्रमों में शामिल करना होगा। भारत को उस समय जागने की निष्क्रियता से बचना होगा, जब सब जाग चुके हों। उन्होंने कहा भारत को यदि विश्व का सिरमौर बनना है, तो उसे निष्क्रियता का त्याग करना होगा।

श्री श्री रविशंकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुई तीन दिवसीय राष्ट्रीय पादप संरक्षण संवर्धन संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के नाते सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा भारत की मूल औषधियों को पेटेण्ट कराने के लिए भारत सरकार तब जागती है, जब अमेरिका में उनका पेटेण्ट हो चुका होता है। उन्होंने कहा संस्कृति को बचाने के लिए सरकारी तौर पर योग और आयुर्वेद को पाठ्यक्रमों में शामिल करना होगा। स्वास्थ्य को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित कर देना चाहिए।

प्रख्यात योगी स्वामी रामदेव ने कहा भारत में जड़ी-बूटी आधारित कृषि नीति बनाना बहुत जरूरी है। आयुर्वेद को राष्ट्रीय नीतियों में शामिल किया जाना चाहिए।

२०० वर्ष पूर्व एलोपैथिक पद्धति अचानक उठ खड़ी हुई और आज हालत यह है कि आज एलोपैथिक जगत २० लाख करोड़ की दवाइयां दुनिया में बेच रहा है। डॉक्टरों का खर्च भी लगा दें तो यह राशि ४० लाख करोड़ से ऊपर जाती है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद सस्ता और प्रामाणिक इलाज उपलब्ध कराता है। देश की कृषि व्यवस्था में जड़ी बूटियों को शामिल किया जाना चाहिए।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा पदमश्री प्रसिद्ध वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा ने कहा दुर्भाग्य का विषय है कि समृद्ध आयुर्वेद होते हुए भी देशवासी एलोपैथी की ओर दौड़ रहे हैं। राष्ट्रीय वनस्पति शोध संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिक डॉ० एच०एम० बहल ने कहा पादप विविधता के क्षेत्र में अभी बहुत काम करना बाकी है।

कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार तथा उपकुलपति वेदप्रकाश शास्त्री ने भी विचार रखे। संचालन डॉ० महावीर अग्रवाल ने किया।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री वेदव्रत शर्मा, हरियाणा से सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल, उप-मन्त्री श्री देवेन्द्र शर्मा, पंजाब सभा के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, उत्तरांचल से सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री [illegible]



संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में मं[illegible] श्री अशोक चोपड़ा, श्री वेदव्रत शर्मा, आचार्य यशपाल,

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

– भवानी लाल भारतीय

लोकसेवा के महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए लम्बी आयु प्राप्त करना आवश्यक नहीं है। यदि पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन के आरम्भ में ही अपने कार्य और पुरुषार्थ की रूपरेखा निश्चित कर ले, तो थोड़े समय में ही वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। यह तथ्य आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान्, वेदादि शास्त्रों के अप्रतिम प्रवक्ता, तथा धर्मप्रचार के लिए पराकाष्ठा की लगन रखनेवाले पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन से सिद्ध होता है। पं० गुरुदत्त का जीवन छब्बीस वर्ष की अल्पावधि का ही था, तथापि इस अत्यन्त संक्षिप्त काल में उन्होंने अध्ययन, लेखन, संगठन तथा धर्मप्रचार का जो कार्य कर दिखाया, वह शतायु भोगी लोगों के लिए भी ईर्ष्या उत्पन्न करनेवाला है। पं० गुरुदत्त का जन्म **२६ अप्रैल १८६४** को मुलतान के लाला रामकृष्ण के यहां हुआ। अध्ययन में इनकी रुचि बाल्यकाल से ही थी, अतः मुलतान से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर, उच्चतर अध्ययन के लिए वे लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए। यह जनवरी १८८१ की घटना है। आर्यसमाज मुलतान के सभासद् तो वे १८८० में ही बन गए थे।

जब १८८३ में स्वामी दयानन्द के रुग्ण होने के समाचार आर्यसमाज लाहौर में आए, तो इस समाज के अधिकारियों ने लाला जीवनदास एवं पं० गुरुदत्त को स्वामी जी की सेवा सुश्रूषा के लिए अजमेर भेजने का निश्चय किया। १६ वर्ष के इस युवक को महाप्राण दयानन्द के जीवन के अन्तिम दृश्य ने हिलाकर रख गया। उन्होंने देखा कि किस प्रकार एक आस्तिक एवं लोकहित के लिए समर्पित महापुरुष, अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त करने के पश्चात् किस निर्भीकता के साथ अपनी आत्मा को सर्वात्म से मिलाने के लिए तत्पर है। दयानन्द के परिनिर्वाण के इस अभूतपूर्व दृश्य ने पं० गुरुदत्त के मन और मस्तिष्क पर बड़ा अनोखा प्रभाव डाला।

स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् लाहौर के आर्यसमाजियों ने, अपने आचार्य की स्मृति को चिरजीवित रखने के लिए 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' के नाम से एक विद्यालय की स्थापना का निश्चय किया। इस शिक्षण संस्था के संस्थापकों में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का नाम भी महत्वपूर्ण है। डी०ए०वी० कॉलेज के लिए धन संग्रहार्थ जो प्रतिनिधि मण्डल देश के अनेक नगरों में गए, उनमें पं० गुरुदत्त की भूमिका सार्थक तथा सराहनीय रही। इस कार्य के लिए वे दिल्ली, अलीगढ़, बरेली, मुरादाबाद, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, फर्रुखाबाद आदि अनेक नगरों में गए। वहां से पर्याप्त धन एकत्र किया। संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) के अतिरिक्त उन्होंने पंजाब के अनेक नगरों में भी भ्रमण किया। कॉलेज के लिए धन संग्रह करने के अतिरिक्त उन्होंने वैदिक विषयों पर प्रवचन भी किए। उनके प्रवचनों की सर्वत्र प्रशंसा होती थी।

पं० गुरुदत्त ने 'विज्ञान' विषय लेकर एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उन दिनों उच्च शिक्षित भारतीयों के लिए सरकारी सेवा में प्रवेश पा लेना कोई कठिन कार्य नहीं था। किन्तु पं० गुरुदत्त की ऐसे किसी काम में रुचि नहीं थी जो उनके सार्वजनिक जीवन तथा आर्यसमाज की सेवा में बाधक बने। एक बार तो उन्हें अतिरिक्त सहायक कमिश्नर के लिए होने वाली परीक्षा में बैठने की सलाह भी दी गई, किन्तु गुरुदत्त की रुचि प्रशासनिक कार्यों की अपेक्षा, अध्ययन अध्यापन में अधिक थी। १८८७ में जब गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर के विज्ञान के प्रोफेसर ओमन अवकाश पर गए, तो पं० गुरुदत्त को अस्थायी रूप से उनके स्थान पर रख लिया गया। १८८६ में वे डी०ए०वी० कॉलेज में अवैतनिक रूप में गणित तथा विज्ञान पढ़ाने लगे।

पं० गुरुदत्त द्वारा रचित साहित्य

पं० गुरुदत्त का संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार था। यद्यपि उन्हें किसी गुरु के चरणों में बैठकर संस्कृत का विधिवत् अध्ययन करने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु मात्र स्वाध्याय के बल पर ही उन्होंने पाणिनीय व्याकरण पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया। वैलेण्टाइन लिखित 'संस्कृत व्याकरण के सरल पाठ' नामक प्रारम्भिक व्याकरण की पुस्तक उन्होंने मुलतान में हाई स्कूल में पढते समय ही समाप्त कर डाली थी। पं० गुरुदत्त का पाणिनीय शास्त्र पर इतना अधिकार हो गया था कि व्याकरण पढ़ने के लिए आयु में उनसे अधिक बड़े स्वामी अच्युतानन्द, स्वामी स्वात्मानन्द,



स्वामी महानन्द तथा स्वामी निजात्मानन्द नामक चार संन्यासियों ने तो उनसे विधिवत् 'अष्टाध्यायी' सीखी थी।

अब पं० गुरुदत्त ने 'दि रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया। इसमें उनके 'वेद और वेदार्थ', 'आर्य सभ्यता और दर्शन, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त आदि विषयों पर कुछ गम्भीर लेख छपे। १८८८ में 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' (The Terminology of the Vedas) नामक उनका महत्वपूर्ण समीक्षामूलक लेख छपा, जिसे उन्होंने अपने आचार्य तथा इस (१६वीं) शताब्दी के एकमात्र वैदिक विद्वान् स्वामी दयानन्द की स्मृति में समर्पित किया। इसी क्रम में दूसरा निबंध The Terminology of the Vedas and European Scholars (वैदिक संज्ञा विज्ञान तथा यूरोपीय विद्वान्) प्रकाशित हुआ। इसमें प्रो० मैक्समूलर तथा प्रो० मोनियर विलियम्स आदि द्वारा किए गए वेदार्थ की त्रुटियों की विवेचना है। उनके इन ग्रन्थों को वैदिक क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति मिली। 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' को तो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डिग्री कक्षा की पाठ्यपुस्तक के रूप में स्थान मिला।

पं० गुरुदत्त ने उपनिषदों की सुगम, किन्तु सारगर्भित व्याख्याएं लिखीं। ईश, मुण्डक तथा माण्डूक्य – इन तीन उपनिषदों पर पं० गुरुदत्त के व्याख्यात्मक ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'वैदिक टेक्स्ट्स' (Vedic Texts) शीर्षक से उन्होंने कतिपय वेद मंत्रों के वैज्ञानिक अर्थ भी किए। इनमें से प्रथम The Atmosphere शीर्षक है जिसमें ऋग्वेद (१/२/१) के मंत्र **'वायवा याहि दर्शतेमे'** की व्याख्या है। द्वितीय The Composition of Water (जल की संरचना) शीर्षक है जिसमें ऋग्वेद के मंत्र (१/२/७) **'मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्, धियं घृताचीं साधन्ता'** की व्याख्या है। इस मंत्र में प्रयुक्त मित्र और वरुण को पं० गुरुदत्त ने ओषजन (Oxygen) तथा नत्रजन (Nytrogen) का वाचन माना है तथा दोनों के मिश्रण में जल की उत्पत्ति बताई है। Vedic Text का तीसरा भाग 'गृहस्थ' शीर्षक है जो ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के पचासवें सूक्त के प्रथम तीन मंत्रों का व्याख्यान है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेद और वैदिक विषयों पर किए गए आक्षेपों का उत्तर देने में भी, पं० गुरुदत्त की लेखनी ने कभी प्रमाद नहीं किया। उन्होंने मोनियर विलियम्स के ग्रन्थ 'भारतीय प्रज्ञा' (The Indian Wisdom) की आलोचना लिखी तथा पादरी टी० विलियम्स द्वारा नियोग प्रथा पर किए गए आक्षेपों का उत्तर दिया। इसी पादरी ने जब वेदों में मूर्तिपूजा के अस्तित्व को लेकर कुछ भ्रमात्मक बातें लिखीं, तो पं० गुरुदत्त ने उसका सटीक उत्तर दिया।

फ्रैडरिक पिन्कॉट नामक एक अंग्रेज लेखक के वेद विषयक विचारों की समीक्षा भी उन्होंने लिखी थी। कतिपय दार्शनिक विषयों पर उनके गम्भीर निबन्ध, इस तथ्य के परिचायक हैं कि गूढ़ तथा जटिल विषय की विवेचना करना उनके लिए कितना सहज था। 'The Realities of Inner Life' तथा 'Pecuniomania' आदि उनके निबन्ध इसी कोटि में आते हैं। पं० गुरुदत्त का अंग्रेजी भाषा पर सहज अधिकार और उनकी विषय विवेचना शक्ति को देखकर बड़े बड़े विद्वान् भी मुग्ध रह जाते थे।

बौद्धिक क्षमता तथा कर्मठता में पं० गुरुदत्त बेमिसाल थे, किन्तु उनका निजी जीवन सर्वथा अनियमित था। उन्होंने स्वास्थ्य की ओर कभी ध्यान नहीं दिया यद्यपि अपने विद्यार्थी काल में वे नियमित व्यायाम करते रहे थे। शरीर को कष्ट देने में वे सुख अनुभव करते और गर्मी तथा सर्दी में, ऋतु नियमों के प्रतिकूल आचरण करते। भोजन भी उनका अनियमित तथा नितान्त अल्प होता था। उनके सहपाठी तथा मित्र लाला लाजपतराय ने उनकी अनियमित जीवन शैली पर पर्याप्त विस्तार से लिखा है। निरन्तर भाषण, लेखन तथा सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण पं० गुरुदत्त का स्वास्थ्य खराब हो गया। वे राजयक्ष्मा के शिकार हो गए।

स्वास्थ्य सुधार के लिए वे पर्वतीय स्थल मरी (पाकिस्तान) भी गए, किन्तु स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। अब उनके जीवन का संध्याकाल आ गया था। डॉ० नारायण दास और जालंधर के हकीम शेर अली की चिकित्सा ने कुछ दिनों तक उनके जीवनदीप को स्थिर रक्खा, किन्तु पं० गुरुदत्त के शरीर की दुर्बलता जिस सीमा तक पहुंच चुकी थी, उससे उबरना कठिन था। अन्ततः १६ मार्च १८६० को इस युवा मुनि का देहान्त हो गया।

लाला लाजपतराय ने अपने इस मित्र तथा सहयोगी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें असाधारण व्यक्तित्व का धनी, सच्चा, गम्भीर, संस्कृत का पारगामी विद्वान् तथा ऋषियों की परम्परा का उत्तराधिकारी बताया। पं० गुरुदत्त ने ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का अठारह बार अध्ययन किया। इसके प्रत्येक पारायण ने उन्हें नवीन जानकारियां प्रदान की थीं। 'आर्य पत्रिका' (लाहौर), 'ट्रिब्यून' (लाहौर), 'दि ट्रू लाइट' (एक ईसाई पत्र), 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' (लाहौर) जैसे पत्रों ने इस युवा मनीषी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सर सैयद अहमद खां द्वारा स्थापित ऐंग्लो मुहम्मडन कॉलेज (वर्तमान में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी) के मुख पत्र 'अलीगढ़ इन्स्टीट्यूट गजट' ने भी अपने २५ मार्च १८६० के अंक में, पं० गुरुदत्त के निधन पर अपार दुःख व्यक्त किया।

स्वतन्त्रता नहीं स्वच्छन्दता से विवाह पूर्व रोमांस युवाओं व देश के लिए कितना हितकारी ?

– आचार्य आर्य नरेश, वैदिक गवेषक

संसार में सभ्य कहलाने वाले मनुष्यों और भोग योनियों में जी रहे पशु पक्षियों में एक मौलिक अन्तर है। मनुष्य शिक्षा व संस्कारों से नियमपूर्वक स्वतन्त्र जीवन जीते हैं और पशु शिक्षा व संस्कार रहित स्वभाव से स्वच्छन्द जीते हैं। मनुष्य होते हुए भी जो भोग शिक्षा व संस्कार के अभाव में पशुओं की तरह मात्र आहार, निद्रा एवं मैथुन के लिए मनमाने ढंग से जीते हैं, उन्हें हम स्वच्छन्द, असभ्य अथवा जंगली मानते हैं।

जो बुद्धिमन्द-जन कुतर्क करते हुए यह कहते हैं कि हम स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र नागरिक हैं अतः हमें मनमाने ढंग से विचरने की सुविधा मिलनी चाहिए ऐसा उनका कहना अनुचित है, क्योंकि स्वतन्त्रता शब्द का अर्थ स्वच्छन्दता या मनमानी नहीं। वस्तुतः स्वतन्त्र शब्द में भी एक तन्त्र अर्थात् नियम या सूत्र काम कर रहा है जो उस पर चलने वाले को अनुशासन में बांधकर रखता है। जबकि 'स्वच्छन्दता' बिना किसी नियम या आचार संहिता के चलने वाले मनमाने व्यवहार का नाम है क्योंकि उसमें कोई तन्त्र या अनुशासन पर चलने का बन्धन नहीं है। खेद का विषय है कि भाषा विज्ञान से शून्य मूढ़जन स्वच्छन्छता को स्वतन्त्रता मानने की भूल कर रहे हैं। सभ्य मनुष्यों का परिवार, समाज या राष्ट्र किसी 'तन्त्र' अर्थात् नियम से बनता है। जबकि जंगली जनों या प्राणियों का कुनबा या जीवन किसी सामाजिक व राष्ट्रीय नियम से रहित स्वच्छन्दतापूर्ण मनमाने ढंग से चलता है। मनुष्य बिना किसी बलात् रस्सी आदि बन्धन के बिना स्वतः नियमपूर्वक चलने वाला स्वतन्त्र प्राणी है परन्तु पशु बिना किसी नियम या आचार संहिता के मनमाने ढंग से चलने वाला अथवा रस्सी चेन आदि से बांधकर अनुशासन में रखने योग्य स्वच्छन्द प्राणी है।

असभ्य मनुष्यों और जंगली प्राणियों में बहुत सी बातें समान दिखाई देती हैं। जंगली मनुष्य जंगली पशुओं के समान नग्न रहने में शर्म नहीं करते, यदि करते हैं तो नाम मात्र की। नर व मादाओं में परस्पर शारीरिक सम्बन्ध भी बिना किसी सार्वजनिक संस्कार के होते हैं, वे बदल बदल कर अनेक मादाओं या नरों से सम्बन्ध करना भी बुरा नहीं समझते। कितनी योग्यता व किस आयु में कौन नर किस मादा से शारीरिक सम्बन्ध बनाए इसका भी कोई नियम नहीं होता। यह बात आज भी दक्षिण उड़ीसा में रहने वाले मुण्डापेटा वनवासी लोगों में पायी जाती है। जंगली मनुष्यों के जीने का मुख्य उद्देश्य सुरक्षित तथा सुखी रहने हेतु पेट भरने के लिए कुछ करना और बिना पारिवारिक सम्बन्ध, योग्यता अथवा आयु को देखे किसी के भी साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाना है। जबकि सभ्य मनुष्य मात्र पेट भरने या भोग विलास करने की अपेक्षा अपने जन्म देने वाले ओ३म् प्रभु का धन्यवाद व साधना तथा माता–पिता गुरुजन और राष्ट्र की सेवा के कार्य हेतु नियमपूर्वक जीता है। मनुष्य इसी कारण से धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहलाता है।

मनुष्यों की तरह पशुओं में मां बहन व समाज को ध्यान में रखकर किसी पारिवारिक या सामाजिक नियम को बनाकर व्यवहार करने की योग्यता नहीं होती, इसीलिए उन्हें असभ्य या जंगली और मनुष्यों को सभ्य व सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय नियमों की आचारसंहिता से ही 'मनुष्य' वस्तुतः मनुष्य कहलाता है। वैदिक वाङ्मय के व्याकरणाचार्य श्री यास्क 'निरुक्त' में **'मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्य'** से विचारपूर्वक नियमानुसार श्रेष्ठ कर्म करने वाले को ही मनुष्य परिभाषित करते हैं। यह सर्वविदित है कि शिक्षा, अनुशासन और आचार संहिता के बिना रहने वाले लोगों को असभ्य, जंगली या पिछड़ाहुआ कहा जाता है। जब वे जंगली लोग शिक्षित होकर वस्त्र पहनना, नियमपूर्वक विवाह करना, केवल अपने ही भोग विलास के लिए न जीकर माता, पिता, आचार्य तथा देश की सेवा हेतु योग्य व्यवहार करना सीख लेते हैं तब उन्हें सभ्य कहा जाता है।

यह बात हार्दिक दुःख से लिखनी पड़ रही है कि कुछ तथाकथित प्रगतिवादी बुद्धिमन्द लोग अत्यन्त पुरुषार्थ व विद्या से संस्कारित बने इस सभ्य मानव समाज को आचारहीन व स्वच्छन्द बनाने का राग अलाप रहे हैं। एक कहता है कि नग्नता प्रगति की पहचान है, दूसरा कहता है कि वेश्यावृत्ति एक सभ्य काम है तथा तीसरा कहता है कि बिना योग्य आयु व संस्कार के सार्वजनिक रोमांस करना कोई अपराध नहीं है ? हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि विश्वगुरु ऋषि सन्तान भारतीयों को ऐसे पशुतापूर्ण जंगली कार्यों के लिए उकसाने वाले लोग राष्ट्र के महान् शत्रु हैं। ये लोग धन व सत्ता के लोभ में विदेशी इशारों पर नाचकर भारत की युवा पीढ़ी को व्यसन व रोमांस के स्वच्छन्द भोग से खोखला करके भारत को पुनः परतन्त्र बनाना चाहते हैं।

यह ध्रुव सत्य है कि सभ्य बलवान व चरित्रवान् युवा जन ही किसी महान् देश की नींव रूपी आधार होते हैं। पाश्चात्य जनों से प्रभावित होकर बहुत से युवाजन यह कुतर्क देते हैं कि हमारा परस्पर का प्यार एक भाई बहन जैसा ही है। अपरिपक्व विद्यार्थी व युवा हो विवाह संस्कार के बिना स्वच्छन्द रमण 'रोमांस' करने को अनुचित नहीं मानते उन्हें अपनी बुद्धि पर लगा ताला अवश्य खोलना चाहिए। उन्हें ये अवश्य जानना चाहिए कि भाई बहन के सात्विक प्यार और युवाओं के स्वच्छन्द रोमांस. में आकाश व पाताल का अन्तर है। भाई बहन का पवित्र प्यार निःस्वार्थ व सात्विक होता है उन्हें परस्पर प्यार करने हेतु माता पिता से डरकर अथवा विद्यालय से भागकर किसी एकान्त स्थान की आवश्यकता नहीं होती। परस्पर प्यार करते समय न तो वे उत्तेजित होते हैं और न ही एक दूसरे की शिक्षा आदि में बाधक होते हैं। बहन के द्वारा विवाह सम्बन्ध हेतु किसी अन्य युवक से बात करने, विवाह हेतु किसी योग्य युवक के देखने या विवाह करके चले जाने पर प्रसन्न होता है। भाई स्वयं भी बहन के लिए विवाह हेतु योग्य युवा वर की खोज करता है। वह अपने पति के साथ मन मुटाव होने पर घर लौट आने पर दुःखी होता है। यह है एक सभ्य नर व मादा के बीच भाई बहन वाला सच्चा प्यार।

ठीक इससे विपरीत स्वच्छन्द युवाओं का रोमांस स्वार्थ व तामसिकता से भरा होता है। इसके लिए वे घर, विद्यालय अथवा कार्यालय से भागकर किसी एकान्त स्थान को चुनते हैं। माता, पिता तथा आचार्य का डर भी बना रहता है। अनैतिक सम्बन्ध होने के कारण ही वे परस्पर एक दूसरे को भाई बहन कहकर नहीं पुकारते। अपने बीच में किसी तीसरे नर या मादा के आने पर पीड़ित होते हैं। वे रोमांस को मुख्य और माता, पिता व आचार्य की आज्ञा व शिक्षा को गौंण समझने लगते हैं। रात की नींद और दिन की भूख तथा पढ़ने की इच्छा समाप्त होने लगती है, पढ़ाई में अंक कम आने लगते हैं, स्वास्थ्य गिरने लगता है जिससे चेहरा पीला पड जाता है और आंखें व गाले पिचकने लगती है। रोमांस में डूबे युवा एक दूसरे को अधिक आकर्षित करने हेतु श्रृंगार में डूबने लगते हैं, धन का सिनेमा तथा होटलों में अपव्यय प्रारम्भ हो जाता है। शारीरिक सम्बन्ध भी बनने लगते हैं और एक दूसरे को सदा के लिए पाने के लिए पुलाव पकने लगते हैं1 इतने में कोई एक यदि तीसरे से प्यार अथवा विवाह करने की बात करता है तो झगड़े, हत्याएं अथवा आत्महत्याओं का दौर प्रारम्भ हो जाता है। रोमांस के अभद्र दृश्यों को देखकर चरित्रवान् बच्चे भी बिगड़ने लगते हैं। कभी–कभी ऐसे दृश्यों की ओर वाहन चालकों का ध्यान आकर्षित होने से दुर्घटनाएं भी हो जाती हैं। रोमांस में असफल होने के कारण यदि लड़कियां अधिकतम आत्महत्या का मार्ग अपनाती हैं तो लड़के अधिकतर हत्या करने, अश्लील फिल्म बनाकर या गर्भवती बनाकर निन्दित करने अथवा एसिड आदि से जलाने का शत्रुतापूर्ण मार्ग अपनाते हैं। विवाह से पूर्व किए गए स्वच्छन्द रोमांस सम्बन्धों के पता चलने अथवा विवाहोपरान्त भी पुराना रोमांस चलते रहने से अधिकतर गृहस्थ नर्क बन जाते हैं अथवा तलाक होने से टूट जाते हैं। यही है मौलिक अन्तर भाई बहन के सात्विक प्यार व युवाओं के स्वच्छन्द रोमांसपूर्ण यथेच्छाचार में।

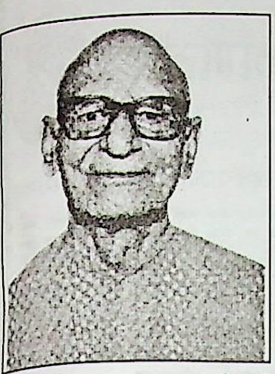
जो लोग विद्यार्थी काल में ऐसे रोमांस अथवा स्वच्छन्द यौनाचार के पक्ष में हैं उन्हें ऐसी मूर्खतापूर्ण स्वीकृति देने से पूर्व ऊपर बताई गई हानियों के साथ साथ वर्तमान के दैनिक-पत्रों में असफल प्रेमियों की गम्भीर घटनाओं पर अवश्य विचारना चाहिए। अनेक लडके लड़कियां इस स्वच्छन्द रोमांस के कारण मृत्यु की भेंट चढ़ रहे हैं। इसी तामसिक रोमांस के फलस्वरूप एक असफल युवा ने पड़ोस की लड़की का कहीं और विवाह हो जाने पर उसके पूरे परिवार को जिन्दा जला दिया। भाई बहन की भावना से रहित इसी स्वच्छन्द रोमांस के कारण प्रतिदिन अनेक विद्यालयों व महाविद्यालयों के युवाओं में लड़ाई, झगड़े व गुटबाजी का माहौल बना रहता है। इस स्वच्छन्द रोमांस से सामाजिक वातावरण भी बिगड़ता है।

गत दिनों लारेन्स रोड दिल्ली के पास सड़क के बीचों बीच एक आचारहीन युवा एक दूसरे को अपनी ओर खींच रहे थे, एक कहता था इधर चलो तो दूसरा कहता था उधर चलो। आस पास के सभी लोगों की दृष्टि उन पर टिकी थी। कुछ दिनों पूर्व एक बस में यात्रा करते हुए विचित्र दृश्य देखने को मिला। जैसे ही बस रूकी तो लड़कों में एक लड़की के लिए झगड़ा होने लगा, एक पकड़कर उतारना चाहता था तो दूसरा उसे पकड़कर खींच रहा था परिचालक तथा यात्री चिल्लाए कि क्या बकवास है ? ऐसा लग रहा था जैसे कि दो कुत्ते एक कुत्ती के लिए लड़ रहे हों। क्या

तृतीय पुण्यतिथि पर

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को सादर स्मरण

– डॉ० महेश विद्यालंकार



स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी

आर्यसमाज को अपने उदयकाल से ही अनेक संन्यासी, विद्वान्, प्रचारक, तपस्वी, त्यागी, बलिदानी, मिशनरी आदि महापुरुषों की परम्परा प्राप्त रही है। इसी विरासत, वसीयत और परम्परा ने ऋषि और आर्यसमाज के सिद्धान्तों, आदर्शों, कार्यों, उद्देश्यों आदि को आगे बढ़ाया है। तभी आर्यसमाज की जीवन्त चेतना, वैचारिक क्रान्ति, विचारधारा, शक्ति एवं आन्दोलन आदि के रूप में इसकी पहचान बनी है। आर्यसमाज के अतीत का इतिहास अत्यन्त उज्ज्वल, प्रेरक, तप, त्याग सेवा, परोपकार आदि विशेषताओं से परिपूर्ण मिलता है। इसी प्रभावी आदर्श परम्परा को स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने बड़ी श्रद्धा, निष्ठा, दृढ़ता, कट्टरता समर्पण और त्यागभाव से निर्वाह किया है। उन्होंने ऋषि और उनके मिशन के झण्डे को सदा सबसे ऊपर रखा। उनका योगदान सदा स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को आर्यसमाज की विचारधारा पैतृक विरासत के रूप में मिली थी। उन्होंने इन्हीं संस्कारों, विचारों, आदर्शों और परम्परा को आजीवन दृढ़ता तथा स्वाभिमान से अपनी पहचान बनाकर निर्वाह किया। जीवन अनेक उतार चढ़ाव, वाद विवादों तथा उलझनों से निकला। कभी गलत बातों, सिद्धान्त विरुद्ध तथा ऋषि विरुद्ध कार्यों से समझौता नहीं किया। कई बार स्वामी जी के जीवन में ऐसे अवसर, परिरिस्थिति तथा मोड़ आए जब वे सिद्धान्तवादी आदर्शों के लिए अकेले पड़ गए, मगर समाज हित को सर्वोपरि रखते हुए पतनकारी बातों के आगे झुके नहीं। अकेले खड़े रहे। स्वामी जी के जीवन में सरलता, सादगी, निर्भीकता सिद्धान्तप्रियता, स्पष्टवादिता, अनुशासन की कठोरता आदि गुण थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन, आर्यसमाज, वेदप्रचार तथा ऋषि मिशन में आहूत कर दिया। उन्हें व्यक्ति नहीं, सिद्धान्तप्रिय थे। उनके जीवन की अनेक सैद्धान्तिक घटनाएं, खट्टे मीठे अनुभव और ऋषि मिशन के प्रति समर्पण की भावना सदा प्रकाशस्तम्भ बनकर आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करती रहेगी।

पूर्व नाम श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित जी १९४१ दिल्ली इंजीनियरिंग कालेज में कार्य करते थे। तत्कालीन वायसराय ने कालेज में आना था। कालेज के प्रिंसिपल ने भी लक्ष्मीदत्त दीक्षित जी को कहा आप कल खादी का धोती–कुर्ता पहनकर न आना। कहीं वायसराय नाराज न हो जाएं। नौकरी से हटाए जाने के खतरे को जानते हुए, स्वाभिमान एवं अस्मिता की रक्षा हेतु अगले दिन कालेज में धोती कुर्ता पहनकर गए। उन्होंने खादी पहनने का व्रत आजीवन निर्वाह किया। एक बार पानीपत कालेज में शासन की परवाह किए बिना, उन्होंने ओ३म् ध्वज को राष्ट्रीय ध्वज से ऊपर मानते हुए उतारने से मना कर दिया। ओ३म् तो सर्वोपरि और सृष्टि का रक्षक है। कालेज के उत्सव पर तत्कालीन प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई आमन्त्रित थे। उन्हें आने में पांच मिनट की देरी हो गई। किन्तु बिना प्रतीक्षा किए प्रिन्सिपल दीक्षित जी ने कार्यक्रम आरम्भ कर दिया। वचन और समय की प्रतिबद्धता उनके चरित्र की विशेषता थी। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज उनकी श्वांसों व धड़कनों में बसा था। पानीपत का बड़ा आर्यसमाज उनकी सक्रियता तथा योगदान का सदा ऋणी रहेगा।

पारिवारिक, दायित्वों, कर्तव्यों आदि से निवृत्त होकर २७ जुलाई १९८० में बिना घोषणा, धूम धड़ाके चुपचाप दीनानगर मठ गए। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती बन गए। गीता का कर्मदर्शन उनका जीवन दर्शन बन गया। वे उच्चकोटि के विद्वान्, विचारक सिद्धान्त मर्मज्ञ, दार्शनिक एवं शास्त्रीय परम्परा के ज्ञाता थे।

उन्होंने वैदिक चिन्तन व आर्यसमाज की परम्परा को आधार बनाकर विविध विषयों पर जो साहित्य सृजन किया है। वह सदा विद्वत्समाज में पठनीय, स्मरणीय और वन्दनीय होगा। सत्यार्थभास्कर, भूमिका भास्कर, संस्कार भास्कर, अनादि तत्वदर्शन, तत्वमसि, आध्यात्म मीमांसा आदि ग्रन्थ ऋषि एवं आर्यसमाज के गौरव को सदा समुन्नत बनाए। रखेंगे। वे दिन रात लेखन में लगे रहे। पढ़ते लिखते अन्तिम समय में वे अपनी आंखों की ज्योति भी गवां चुके थे। मैंने स्वयं उन्हें बड़ी तत्परता, निष्ठा तथा लग्न में लिखते देखा है। वे कहा करते थे – ऋषि का ऋण उतार रहा हूं। सच्चे अर्थों में स्वामी जी जीवन, लेखनी और वाणी से ऋषि ऋण उतार गए ? आज इस जीवट, लग्न व भाव–भावना के दीवाने विद्वान संन्यासी कितने हैं ? उन्होंने कभी एक रुपया तक पुस्तकों की रायल्टी न मांगी और ली। न कभी अपनी पुस्तकों को बेचने के विज्ञापन दिए और न ही प्रयास किया। जो किया वह इदं दयानन्दाय और इदं आर्यसमाजाय की भावना से समर्पित कर दिया।

स्वामी जी ने आर्यसमाज के सभी प्रदर्शन, सत्याग्रहों व आन्दोलनों में सक्रिय अपनी विद्वता एवं कर्मठता का परिचय दिया। हैदराबाद सत्याग्रह में पूरा समय जेल में रहे। आजादी के बाद भारत सरकार ने सभी सत्याग्रहियों को ताम्रपत्र व पेंशन देकर सम्मानित किया। स्वामी विद्यानन्द जी ने सम्मान तथा पेंशन लेने से मना कर दिया ? मैं किसी पुरस्कार व पेंशन के लिए जेल नहीं गया था ? मैंने तो आर्यसमाज तथा देश सेवा के प्रति कर्तव्य निर्वाह किया है। स्वामी जी अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों आदि में रहते हुए उन्होंने सदा अपनी ब्राह्मण वृति को जागृत रखा। सेवा निवृत्ति पर जो पैसा मिला, उसे केन्द्रीय सभा में दस हजार और दस हजार बड़ा बाजार पानीपत में प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान को सम्मानित किया जाए। इस भावना से जमा करा दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय – संस्कृत विभाग में वेदाध्ययन करने वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था करवाना स्वामी जी का ही प्रयास था। मुझे स्मरण है जब पं० उदयवीर जी शास्त्री दर्शनाचार्य गाजियाबाद में अन्तिम अवस्था में थे। स्वामी विद्यानन्द जी को पता चला, तुरन्त अपने पास से पांच हजार रुपये भिजवाए।

सत्यार्थप्रकाश न्यास द्वारा स्वामी जी को इक्यावन लाख राशि वैदिक मनीषी के सम्मानार्थ भेंट की गई। स्वामी जी ने तत्काल वही पर साहित्य प्रकाशन एवं शोध हेतु दे दी।

मुझे स्वामी जी का स्नेहाशीर्वाद प्राप्त रहा। मैं उनके पास कभी–कभी घण्टों बैठता था। आर्यसमाज का इतिहास, परम्परा, सिद्धान्त, महापुरुषों के तप–त्याग, बलिदान एवं शास्त्रीय चर्चा होती थी। इन विषयों में मैंने स्वामी जी से बहुत कुछ सीखा और पाया है। मैंने स्वामी जी को आर्यसमाज की दशा, दिशा और अधःपतन पर भाव विह्वल होकर कई बार रोते देखा है। जब वे वर्तमान आर्यसमाज की चर्चा करने लगते थे तो निराश हताश भी हो उठते थे। उठते बैठते, सोते उन्हें आर्यसमाज की ही चिन्ता परेशान करती थी। वे अपने कष्ट व पीड़ा के लिए कभी नहीं रोए। आर्यसमाज के लिए रोए। ऐसे सुयोग्य विद्वान् संन्यासियों का आज बड़ी तेजी से आर्यसमाज में अभाव होता जा रहा है। यह चिन्तनीय एवं विचारणीय है। स्वामी जी के साथ बहुत यादें, बातें और स्मृतियां जुड़ी हैं। विस्तार भय से संकेत नहीं कर पा रहा हूं।

तृतीय पुण्य स्मृति दिवस पर मैं स्व० स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को समूचे आर्यजगत् की ओर से बड़ी श्रद्धाभावना से स्मरण एवं नमन करता हूं। □

आप चाहेंगे ऐसे स्वच्छन्द रोमांस को ? बस में यात्रा करते हुए विश्वविद्यालय के समीप एक लड़की हमारी बगल में बैठ गई। कुछ देर के पश्चात् खिड़की की तरफ से ५–६ विद्यार्थी नीचे खड़े होकर उसका नाम लेकर चिल्लाने लगे। जब लड़की कुछ नहीं बोली तो लड़कों ने चिल्लाकर कहा कॉलेज में तो अपने यार के साथ खूब बातें करती हो, अब हमारे साथ बात करने में क्यो शर्म आती है।

इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं कि यदि विवाह के पश्चात् युवाओं का सुयोग्य सम्बन्ध घर व समाज को स्वर्ग बनाता है तो विवाह से पूर्व किया गया पशुवत रोमांस परिवार, विद्यालय व समाज को नर्क बनाता है। कार्यालयों में भी चलने वाले स्वच्छन्द रोमांस, अधिक गपशप, छेड़छाड़ निर्धारित समय से पूर्व अवकाश व परस्पर झगड़े होकर राष्ट्र के कार्य को हानि पहुंचती है। हमें यह गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि विद्यालय अथवा कार्यालय शिक्षा ग्रहण करने अथवा राष्ट्र सेवा करने के स्थल हैं या कि रोमांस करने के पिकनिक स्थल !

स्वच्छन्द रोमांस को उचित ठहराने वाले बुद्धिमन्द लोग यह न भूलें कि एक विद्यार्थी व योग्य युवा के निर्माण में राष्ट्र का बहुत धन व्यय होता है। उनके असफल रोमांस के कारण हो रही आत्महत्याओं के कारण राष्ट्र की आर्थिक एवं योग्य कार्यकर्त्ताओं की कमी से बहुत हानि हो रही है। इस विचार से यह सिद्ध होता है कि विवाह से पूर्व विद्यार्थियों का 'स्वच्छन्द रोमांस' शिक्षा, स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक सत्कार तथा राष्ट्र के कार्य को भयंकर हानि पहुंचा रहा है।

मेरे देश के पढ़े लिखे बुद्धिमन्द नेता, विद्यालयों के प्रबन्धक तथा माता पिता यह बात ध्यान में रखें कि इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे प्रगतिशील देशों की सबसे बड़ी समस्या वहां के संस्कारहीन स्वच्छन्द रोमांसप्रिय बच्चे ही हैं। इतना जान लेने पर भी जो लोग स्वच्छन्द भोग विलास का समर्थन करते हैं तो लगता है कि उनके पूर्व जन्म के आचारसंहिताहीन पशुता के संस्कार को बदलने हेतु राष्ट्रभक्त लोगों को विशेष ज्ञान व बल का प्रयोग करना होगा, जिससे कि विश्वगुरु कहलाने वाले भारत की सभ्यता, संस्कृति और अस्मिता को बचा जा सके। भारत को परतन्त्रता से बचाने हेतु यह परम आवश्यक है कि रोमांटिक युवाओं को स्वच्छन्द व्यवहार के स्थान पर अनुशासित स्वतन्त्र व्यवहार से संस्कारित किया जाए। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सदस्य यह मांग करते हैं कि समलैगिंक रोमांस, विवाह से पूर्व विद्यार्थियों एवं अन्यों के रोमांस तथा सार्वजनिक किसी भी प्रकार के रोमांस पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए।

– उद्गीथ साधना स्थली, हिमाचल

आर्यजन, आर्यसमाजें एवं आर्य शिक्षण संस्थाएं
नव सम्वत्सर (विक्रमी सम्वत् २०६३) तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस
धूमधाम तथा उत्साह से मनाएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य जी ने एक साक्षात्कार में कहा है कि इस वर्ष नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम तथा उत्साह से मनाएं। इसी दिन सृष्टि सम्वत् भी है, विक्रमी सम्वत् २०६३ का प्रारम्भ अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा है, चेती चांद हैं, गुड़ी पड़वा उगाड़ी तथा नवराह जैसे महत्वपूर्ण पर्व हैं।

अतः देश विदेश की समस्त आर्यसमाजों, स्त्री आर्यसमाजों, गुरुकुलों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वे नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस को बड़ी धूमधाम तथा उत्साह से मनाएं –

१. इन दिनों आर्यसमाज मन्दिरों तथा शिक्षण संस्थाओं पर **ओ३म् के ध्वज** फहराएं जाएं तथा भवनों पर **दीपमाला** की जाए।

२. अपने अपने क्षेत्रों में **प्रभात फेरियां** निकाली जाएं।

३. आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने अपने क्षेत्र के **संभ्रान्त** तथा **प्रतिष्ठित व्यक्तियों** से सम्पर्क करें और उन्हें **यज्ञ में यजमान** बनने की प्रेरणा दें।

४. आर्यसमाज **एक वैचारिक क्रान्ति है, धर्म नहीं**, इस विषय पर गोष्ठियों का आयोजन करें जिसमें क्षेत्र के प्रतिष्ठित एवं विद्वानों को आमन्त्रित कर आर्ष साहित्य भेंट करें।

५. बच्चों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती अथवा आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों पर आधारित **चित्रकला प्रतियोगिताओं**, **वाद विवाद** अथवा **भाषण प्रतियोगिताओं** का आयोजन किया जाए। प्रतियोगिताओं में **प्रथम**, **द्वितीय** तथा **तृतीय** स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जाए।

६. इस शुभावसर पर आर्यसमाजें, स्त्री आर्यसमाजें, आर्य शिक्षण संस्थान तथा व्यापारिक संगठन अपने अपने क्षेत्र में बड़े बड़े **दीवार पोस्टर** छपवाकर चिपकाएं। (नमूना देखें)

७. आर्यसमाजें अपने क्षेत्र के विद्वानों, लेखकों, कवियों, चिकित्सकों, इंजीनियरों तथा सम्भ्रांत लोगों को बधाई-पत्र भेजें, जिससे उन्हें नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस की जानकारी प्राप्त हो सके।

– विमल वधावन आर्य
सभा मन्त्री

पोस्टर का नमूना

ओ३म्

नव सम्वत्सर (२०६३) तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् बृहस्पतिवार ३०. मार्च, २००६ ई० की

देशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं



निवेदक

आर्यसमाज/शिक्षण संस्थाओं के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण

बधाई पत्र का नमूना

ओ३म्

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०७ — चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २०६३

चेती चांद/उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/नवरह — ३० मार्च २००६



नव सम्वत्सर तथा
आर्यसमाज स्थापना दिवस
आपके एवं
आपके परिवार के लिए
कल्याणकारी एवं मंगलमय हो

निवेदक

आर्यसमाज/शिक्षण संस्थाओं के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण

सत्, तप, दान और दया

आत्मा के उत्थान के बड़े सुन्दर माध्यम हैं। एक बार इनको अपने जीवन में लागू करके देखो। चारो तरफ आनन्द ही आनन्द नजर आएगा। सच्चा आदमी बड़ा होता है, झूठा आदमी छोटा (नीच) होता है। तप करने वाला महान समझा जाता है विलासता में डूबा हुआ नहीं। दान देने वाला दाता माना जाता है, वह बड़ा होता है जबकि दान लेने वाला या दान के साथ दुरुपयोग करने वाला छोटा (कमजोर और कभी–कभी नीच माना जाता है)। दया करने वाला ही बड़ा होता है, दया लेने वाला नहीं।

– परमपिता की प्रेरणानुसार

पृष्ठ १ का शेष

ाघते हुए सात दिन में सात सौ क्तियों को (सौ व्यक्ति प्रतिदिन) त के घाट उतार दिया गया। क तरफ इस्लामी राजनीतिक नून और दूसरी तरफ न्धविश्वासों को दूर करने की यत से विशुद्ध वैदिक परम्पराओं सुसज्जित ईश्वर भक्ति की ह तीसरी धारा गुरु शिष्य रम्परा से सच्चे ईश्वर भक्तों गैर क्षात्र मर्यादा को सिर पर जा कर रखने वालों का एक हान टोला इकट्ठा करने के लिए टी हुई थी।

औरंगज़ेब की तबीयत और नून ठीक करने के लिए अब रु गोविन्द देव जी की पारी रम्भ हुई। १३ वर्ष की आयु से ३ वर्ष की आयु तक लगभग २० र्ष यह युवक अपने अन्दर पिता बदले और वैदिक धर्म की रक्षा लिए तप का यज्ञ रचाता रहा। वर्ष की अवस्था में इस गुरु ने र्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के १४ र्ष के तप से भी अधिक तप रने के बाद स्वयं को ईश्वर क्ति के साथ साथ शेरों की वृतियों पर सिंह घोषित करते ए सिरों की मांग बैशाखी के वन अवसर पर कर दी। परम ता परमात्मा की कृपा हुई और न्दुओं के टोले के टोल पंच प्यारों पीछे गुरु गोविन्द सिंह जी के तृत्व में जुटने शुरू हो गए। फिर ट से ईट बजी औरंगजेब की। रन्तु इस संघर्ष में भी कई नकम्मे, स्वार्थी, डरपोक, लालची त्तों के समान आचरण करने ाले हिन्दुओं ने भी गुरु गोविन्द संह का विरोध किया और यह ल गए कि यह तो सच्चे वैदिक र्म की रक्षा का ही बिगुल था।

इस मोटे से इतिहास से यही खने को मिला कि घर को लगी ाग, हमेशा घर के चिराग से। र के ही लोग देशद्रोहियों के ाथ शामिल हुए। घर के ही लोगों अपने सुधारवादी आन्दोलनों का रोध किया। घर के ही लोग धारवादियों पर कहर बरसाने के ए यदा कदा आगे आए।

यही परम्परा ब्रिटिश साम्राज्य देखने को मिली। महर्षि दयानन्द ा एक बहुआयामी व्यक्तित्व था। जा राममोहन राय ने सती प्रथा ा विरोध किया तो हम उन्हें हर्षि दयानन्द के समान समाज धारक मान बैठे ? यह एक भूल । राजा ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ौर मैकाले का खुला समर्थन किया। मैडम वेलवटस्की और र्नल अल्कार ने कुछ बातों पर हर्षि की शिष्यता स्वीकार की रन्तु महर्षि ने उन्हें भी झटक या क्योंकि वे उनके समग्र चिन्तन

विशेष रूप से वे रिद्धी सिद्धी के तमाशे करना चाहते थे।

समग्रता को स्वीकार करके ही किसी महान व्यक्ति का अनुयायी स्वयं को सिद्ध किया जा सकता है। यह एक कट्टर विचार है। नही तो तुम अपने घर, हम अपने घर। हां कभी–कभी जब भी मिले तो एक अच्छे मानव की भांति हम मिले, यह तो सम्भव है।

वैदिक धर्म की रक्षा विशुद्ध और समग्र रूप से ही होगी।

राजनीतिक दलों का आचरण आज जनता से छिपा नहीं है। अर्ध सत्य पर आधारित पंथ निरपेक्षता का एक मार्ग इन्हें मिल गया है। सब पंथों की अच्छी बातों की तारीफ करो और बुराईयों की तरफ से आंखे बन्द कर लो। इस कार्य में उन्हें अपने सहायक भी चाहिए। हर पंथ में ऐसे सहायक उन्हें मिल जाएंगे। परन्तु महर्षि दयानन्द के मार्ग का दर्शन कर चुका व्यक्ति कैसे अपने तुच्छ स्वार्थों की भांति इन राजनीतिज्ञों का सहायक बने।

परन्तु विगत १०–२० वर्षो से अग्निवेश ने इन राजनीतिज्ञों को यह आश्वासन और सहायता देना प्रारम्भ कर दिया। नतीजा अच्छा निकला।

इस बात को समझाने की आवश्यकता नही कि राजनीतिज्ञों के सत्ता प्रेम की भांति, ईसाइयों का पोपादेश (रोम का आदेश) सारे विश्व में, विशेष रूप से उन हिस्सों में जहां गैर ईसाई सरकारे हैं और ईसाइयों की संख्या कम है, मतान्तरण के द्वारा अपनी संख्या बढ़ाना है। इसी प्रकार इस्लामी गुट येन केन प्रकारेण अर्थात् शाम, दाम, दण्ड, भेद सबके प्रयोग से अपनी राजनीतिक शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं। कम्युनिस्टों का कोई दीन–ईमान नही अतः वे इन दोनों वर्गों अर्थात् ईसाईयत और इस्लामिक शक्ति के समर्थन के लिए तैयार है। थोड़ा बहुत ईसाईयत का विरोध इस कारण से है क्योकि अमेरिका और इग्लैण्ड ने हमेशा कम्यूनिस्ट केन्द्र रूस का विरोध ही किया है। कम्यूनिस्ट का अपना एक निर्धारित मार्ग है। समानता स्थापित करने के नाम पर असमानता को परस्पर संघर्ष में रखना।

अब आज के युग में ऐसे लोगो को बहुत महत्व मिलता है जो किसी भी एक पंथ की समन्वयता को भूल कर 'जो अच्छा लगे उसे अपना लो जो बुरा लगे उसे जाने दो' के मार्ग पर राजनीति का समर्थन कर सके। आज की राजनीतिक सोच है लूट में मेरा विरोध मत करो, मौका मिले तो तुम भी लूट लो। ऐसे लोगों को देश की राजनीति में ...

योजनाएं भी महत्व देती है।

पोप को एक ऐसे ही साम्यवादी व्यक्ति से मिलवाते हुए यह कहा जाए कि देखिए यह महानुभाव देखने में हिन्दू साधू लगते है परन्तु हमारे लिए बड़े काम के हैं। हमारे अच्छे कार्यों की तारीफ करते है और हमारे षडयन्त्रों से आंखे बन्द कर लेते हैं। बस और क्या चाहिए।

क्या यह छवि थी महर्षि दयानन्द सरस्वती की या उनके नाम पर अपने को आर्यसमाजी बताने वाले किसी अन्य साधू की?

उनका नारा था समग्र वैदिक मानसिकता–मानवता, निष्पक्षता, परस्पर प्रेम, ईमानदारी और उच्च चरित्र के साथ–साथ पाखण्ड मुक्त और अन्धविश्वास मुक्त।

केवल सती प्रथा का विरोध, भ्रूण हत्या का विरोध या इक्का दुक्का अन्य सामाजिक कार्य। बस यही स्वामी दयानन्द जी का जीवन दर्शन नहीं था। आतंकवाद, भ्रष्ट राजनीति, पक्षपात, स्वार्थवाद, राष्ट्रद्रोह, मतान्तरण, हिन्दु लड़कियों का रोज रोज चीरहरण ये सब अग्निवेश के भगवे चोले के अन्दर कोई हलचल नहीं मचाते।

भगवेचोले के अन्दर से अफगानिस्तान में बुद्ध की मूर्तिया तोड़ने का समर्थन तो हो गया परन्तु कश्मीर, पंजाब में हजारो लाखों मौतो पर यह भगवा चोला मौन क्यो रहा ?

गुजरात की रेल में हिन्दू जले तो भगवा चौला मौन और मुसलमान मरे तो भगवा रंग रो उठा। यह केवल राजनीति समर्थन का पाखण्ड था।

शबाना आजमी के पीछे दुम हिलाता है यह भगवा चोला परन्तु जब हिन्दू लड़कियों को मुसलमानउठा ले जाए तो यह भगवा चोला आज तक कितनी बार त्याग के लिए विचलित हुआ।

ईसाइयों के चर्चो, स्कूलों, कालेजों में जा जाकर उनकी प्रशंसा के गीत गाने वाले भगवे चोले ने कभी मतान्तरण के विरुद्ध आवाज क्यों नहीं उठाई ? बल्कि शर्महीन भगवेचोले ने कई बार ईसाई लेखकों के साथ अपने नाम से लेख लिख लिख कर मतान्तरण का समर्थन किया।

इसी समर्थन के सब्ज बाग दिखाकर इस भगवे चोले ने केन्द्र सरकार को चलाने वाली कांग्रेस और कम्यूनिस्ट चेलों चेलियों की मदद से सार्वदेशिक सभा पर हमला कर दिया। इस एतिहासिक टकराव को अभी तो एक वर्ष हुआ है। हमारे कई आर्य भाई अभी से विचलित हो गए। ईश्वर यदि हमारे साथ है तो समय के फेर में हम नहीं पड़ेगे। यदि कलयुग सीमा पार करके ...

चुका हो कि सच्चाई को पूरी तरह दबाना ही भारत के शासको, कार्यपालको, न्यायाधीशों की कार्यशैली बन जाए तो फिर भी हम ईश्वर के न्याय को स्वीकार करेंगे।

आज यह हमला राजनैतिक प्रभाव में पुलिस प्रशासन के सहयोग से सफल हो गया नहीं तो क्या मजाल थी कि १०० के मुकाबले हजारो आर्य पुरुष इस भगवे चोले को ही न छीन लेते। यह एक सच्चाई है कि पुलिस–प्रशासन के विरुद्ध खुली जंग छेड़ने का सामर्थ्य हमारे पास नही हैं और अभी इच्दा भी नहीं है।

पुलिस के आयुक्त डॉ० के०के० पाल और उपायुक्त डॉ० मदन मोहन ओबराय का हंसमुख चेहरा एक श्रेष्ठ आत्मा की सदैव झलक दिखाता रहा है। गत एक वर्ष में मैं दर्जनों बार इनसे मिला। इनकी सुहृदयता, प्रेम और हंसी से मैंने अपने दर्द को हमेशा सहलावट महसूस की। परन्तु कोरा प्रेम कब तक झूठी तसल्ली देता रहेगा। जब भी मैं इनसे मिला – बाहर आकर इनके लिए हमेशा एकमात्र प्रार्थना मुंह से निकली। 'हे परम पिता परमात्मा, मेरे इन भोले भाइयों ने पंजाबी संस्कृति, उन दसों गुरुओं की संस्कृति को भुला कर अपनी पवित्र आत्मा को अपनी नौकरी के आगे गिरवी रख दिया है। इनकी नौकरी तो निस्सन्देह केन्द्र सरकार के गिरवी पड़ी है। केन्द्र सरकार सोनिया गांधी और कम्युनिस्टो के गिरवी पड़ी। उन महान गुरुओं की धरती से जुडे इन भोले भाइयों को सन्मार्ग दिखाओ। ये समझते है कि सच्च क्या है और झूठ क्या है, देश भक्ति क्या है और देशद्रोह क्या है परन्तु समग्र रूप से अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा नहीं कह पा रहे, इनके ऊपर पड़े इन बन्धनों से मुक्त होने का सामर्थ्य इन्हें प्रदान करो।'

हमारी गाडी तो ईश्वर के सहारे है और हमे अपने कर्मों पर विश्वास है ईश्वर हमारा साथ कभी नहीं छोडेगा। अग्निवेश की गाडी तो पुलिस और राजनीति के सहारे है। इन दोनों शक्तियों का आज तक अपना ही कभी कोई स्थाई सम्बन्ध नहीं रहा तो अग्निवेश को स्थाई सहारा कहां से मिलेगा। हो भी यही रहा है। एक सहारे का खौफ इतना जबरदस्त हुआ कि आगे सहारे बन्द हो गए। सोनिया गांधी ने साक्षात खड़े होकर हमे कहा कि 'हम से गलती हो गई है, अग्निवेश गलत आदमी है'। परन्तु गलती सुधारने के लिए सबको तिनके से सहारे की प्रतीक्षा है।

अग्निवेश और उसके ...

बल पर एक हमला किया तो उत्साह से उछलते हुए कदम बढ़ने लगे। १. बंगाल सभा पर कलकत्ता में हमला, २. मध्य विदर्भ सभा पर नागपुर में हमला, ३. दिल्ली, ४. हरयाणा सभा पर हमले, ५. गुरुकुल कांगड़ी पर विशाल गुण्डागर्दी का आतंक, ६. मिन्टो रोड पर कब्जे के लिए हमला, ७ आर्यसमाज गोरेगांव, मुम्बई पर हमला, ८. महर्षि दयाननद गोसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर दिल्ली के लिए षडयन्त्र, ९. सार्वदेशिक प्रेस और सार्वदेशिक साप्ताहिक पर निराधार शिकायतें और गैरकानून रूप से ३ अंक प्रकाशित जिसका हर्जाना बाकायदा डाक विभाग में जमा करवाना पड़ा, १०. दीवान हाल पर कब्जे के षडयन्त्र।

परन्तु ईश्वर का सहारा तो दूर राजनीतिक या पुलिस या अदालतों का सहारा किसी एक भी कुकृत्य में इन्हें नहीं मिले। यह सारी अग्निवेशी गुण्डागर्दी और भी बढ़ सकती है। परन्तु हम ईश्वर भक्त लोगों के सोचने, समझने और आचरण का अपना एक तरीका है। वह तरीका और वह सहारा किसी भी गुण्डागर्दी का सामना करना जानता है।

इस पवित्र संघर्ष में सच्चे आर्यों की धैर्य परीक्षा है। अग्निवेश ने एक पत्रिका में कुछ नामों का उल्लेख करते हुए यह दावा किया है कि कुछ आर्यसमाजी और सभाओं के पदाधिकारियों का उसे समर्थन हैं। अरे ऐसे तत्व आज पहली बार पैदा नहीं हुए, ऐसे समर्थक तो सारे इतिहास में भरे पड़े हैं जो खड़े एक पक्ष में होते हैं और सहानुभूति दूसरे पक्ष से। अग्निवेश खुद भी तो ऐसा ही तत्व है जो खड़ा हिन्दुस्तान में है और सहानुभूति सारे ईस्लाम और ईसाई जगत के प्रति दिखाता है। बनता है आर्यसमाजी और सहानुभूति कम्युनिस्टों और कभी कांग्रेस तो कभी भाजपा को दिखाता है। बैपेंदी के लोटे कही भी लुडके हमें तो यज्ञ का एक छोटा सा पात्र बनकर सदा उस पवित्र यज्ञ के ही काम आना है।

हमारे मन में तो एक ही पवित्र वाणी गूंजती रहती है

मैं हू परम पुरुष का दासा,
देखन आयो जगत तमाशा।।

महर्षि दयानन्द की विचारधारा में भी यही सन्देश छिपा है

हिम्मत न हारिए
प्रभु न विसारिए
जैसे जिन्दगानी चले
वैसे ही गुजारिए।।

एक और प्रेरणा

रुक जाना नहीं, तू कभी हार के
काटों पे चलके मिलेंगे साए बहार के।।

अहर्निशं सेवामहे। चरैवेति, चरैवेति।

– विमल वधावन आर्य

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08 सार्वदेशिक साप्ताहिक 26-3-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2003-
Licensed to Post Without Pre-payment Licence No. U(C) 93/2003-05 in NDPS on 23/24-03-20
R.N. No. 626/57

अत्यावश्यक परिपत्र

आर्यसमाज के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

मान्यवर, सादर नमस्ते !

आर्यसमाजों का **वित्तीय वर्ष ३१ मार्च २००६** को समाप्त हो रहा है। आप आगामी वर्ष के लिए **वार्षिक साधारण सभा** की बैठक विधानानुसार आर्यसमाज के नियमों उपनियमों के अनुसार **३१ मई, २००६ तक अवश्य** आयोजित करलें तथा आगामी वर्ष **के अधिकारियों, आर्य वीर दल' के लिए अधिष्ठाता** तथा **आर्य प्रतिनिधि सभाओं के लिए प्रतिनिधियों** का निर्वाचन, यदि गत वर्ष न किया हो, तो करलें। आपकी आर्यसमाज की ओर से **प्रथम दस सभासदों** पर एक और **प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदों पर एक प्रतिनिधि** निर्वाचित किया जा सकता है, जिनकी **आयु २५ वर्ष** से कम न हो और जो किसी आर्यसमाज में **सदाचारपूर्वक दो वर्षों** तक सभासद् अंकित रहे हों।

सदाचार की परिभाषा

'सन्ध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक संस्कार, पत्नीव्रत या पतिव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यों और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, जुआ, चोरी, छल, कपट, रिश्वत आदि दुराचार हैं।"

१५ मई, २००६ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशियां अपनी अपनी **आर्य प्रतिनिधि सभाओं** के कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें—

(१) १ अप्रैल २००५ से ३१ मार्च, २००६ तक का वार्षिक विवरण —
 क यज्ञ, संस्कार, शुद्धियां, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय, साधारण रीति एवं बिना दहेज कराए गए विवाहों का तथा समारोहों का विवरण।
 ख आर्यसमाज के अधीन चल रही **संस्थाओं, विद्यालयों, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्य वीर दल** आदि का विवरण।
 ग आर्यसमाज में सेवारत **धर्माचार्य/पुरोहित का नाम, योग्यता, आयु तथा अनुभव।**
 घ **वार्षिकोत्सव** किन तिथियों में सम्पन्न हुआ?

(२) १ अप्रैल, २००५ से ३१ मार्च २००६ तक का आय व्यय विवरण।

(३) सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वयं बना लें :
क्रम संख्या, सदस्य का नाम, पिता का नाम, पता, आयु, वर्ष भर में प्राप्त सदस्यता शुल्क तथा दूरभाष नम्बर।

(४) सदस्यता शुल्क का **दशांश, वेदप्रचार राशि** और **आर्य प्रतिनिधि सभाओं** की पत्रिका का **वार्षिक शुल्क** अथवा **आजीवन शुल्क।**

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी आर्यसमाज का सहयोग प्रदान करें।

कृपया उपरोक्त विवरण अपनी अपनी आर्य प्रतिनिधि सभाओं को तथा सम्प्रति एक प्रति अस्थायी कार्यालय **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-२** पर भी भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद भवदीय

विमल वधावन आर्य
सभा मन्त्री

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्तकालयाध्यक्ष (12/99)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

श्रीमती कमला ... कनाड़ा में निध...

कनाड़ा – सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री तिलकराज खन्ना की माता जी श्रीमती कमला देवी खन्ना का २५ फरवरी २००६ को कनाड़ा समय के अनुसार रात्रि १० बजे देहावसान हो गया। वे ६२ वर्ष की थीं। उनके पति श्री हर नारायण खन्ना वर्तमान में लगभग १०० वर्ष की अवस्था में है। श्री हर नारायण खन्ना क्रान्तिकारी शहीद भगतसिंह के साथ पढ़े हैं।

श्रीमती कमला देवी ने अन्ति... समय में तीन बार ओ३म ... उच्चारण करके देह त्याग किए... उनके दुखद देहावसान पर कना... के आर्य नेता श्री अमर ऐरी सहि... समस्त आर्यजनों ने श्री तिलकरा... खन्ना जी को सान्त्वना दी है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री ... विमल वधावन आर्य ने भी अपने सन्दे... में श्रीमती कमला देवी की आत्मा ... सद्गति की प्रार्थना की है।

ओम सपरा एवं अनिल आर्य को पितृ शोक

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, आर्यसमाज, मुखर्जी नगर, दिल्ली–६ ... प्रधान, श्री ओम सपरा एवं श्री अनिल आर्य के पिताश्री, श्री ठाकुरदा... सपरा, आयु ८० वर्ष का रविवार, २६ फरवरी, २००६ (शिवरात्रि) ... २५–२६ फरवरी की रात्रि १२.३० बजे निधन हो गया। दाह संस्का... २६ फरवरी को प्रातः ११ बजे निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ... जिसमें दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों आर्य बन्धुओं ... भावभीनी विदाई दी। श्री ठाकुरदास जी का जन्म शहर अलीपु... मुलतान (अब पाकिस्तान) में २१ अगस्त, १९२६ को हुआ था। अपने पी... परिवार में सर्वश्री ओम सपरा, प्रमोद सपरा, अनिल आर्य, विज... सपरा, संजय सपरा, सत्य सपरा, ६ बेटे व बहुएं छोड़ गए हैं।

श्रद्धांजलि सभा २८ फरवरी को आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प ... सम्पन्न हुई जिसमें गणमान्य लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2**
(**फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७**) से मुद्रित, **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

ओ३म्

वेदा:
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक ४ | १४ मई से २० मई, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | वै०कृ०१

भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में इसी वर्ष प्रारम्भ होगा

श्रद्धानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

सितम्बर में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के रूप में आयोजित होगा वेदारम्भ समारोह

स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्य-भूमि पर पुनः वैदिक धर्मियों की चहल पहल के लिए कमर कसी श्री सुदर्शन शर्मा ने

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक ६ मई २००६ में उपदेशक विद्यालय खोलने की एक चिरप्रतीक्षित योजना को अन्तिम रूप देते हुए सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। सभामन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने अन्तरंग बैठक में इस योजना का विस्तृत विवंरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि हमारे प्रयासों को यदि परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ तो यह योजना २००६ के जुलाई माह से शुरू होने वाले शैक्षणिक सत्र से ही प्रारम्भ हो जाएगी।

उपदेशक, प्रवचनकर्त्ता, पुरोहित, धर्माचार्य, भजनोपदेशक तथा सिद्धान्तनिष्ठ विद्वान् तैयार करने की इस योजना का नाम सम्भवतः श्रद्धानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय रखा जाएगा। गुरुकुल की पुण्य-भूमि नाम से प्रसिद्ध स्थान मूल कांगडी ग्राम में स्थित है। इसी स्थान पर १९०२ ई० में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। १९२४ में भयंकर बाढ के कारण गुरुकुल का स्थानान्तरण बाहर मुख्य मार्ग के निकट कर दिया गया था जहां आज भी यह विश्वविद्यालय सुचारु रूप से चल रहा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपस्या, त्याग और ईश्वरभक्ति का अनुपम प्रतीक है. यह पुण्य भूमि, जो वर्तमान विश्वविद्यालय से लगभग ११ किलोमीटर दूर है। इस पुण्य-भूमि पर पहुंचने के लिए गंगा की मूल धारा के बीच में से होकर निकलना पडता है। गंगा को पार करने के लिए यहां कोई पुल नहीं और निकट भविष्य में बनने की कोई योजना या सम्भावना भी नहीं है।

शेष पृष्ठ ३ पर

अंग्रेजी भाषा तथा उत्तम प्रवचनकला, पत्रकारिता, कम्प्यूटर-इण्टरनेट, संगीत-भजन, योग-क्रिया, लेखन आदि में दक्षता सहित तैयार होंगे वैदिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत प्रचारक, पुरोहित, उपदेशक, भजनोपदेशक, विद्वान् तथा कार्यकर्ता

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का विचार स्थगित

सार्वदेशिक सभा की विशेष आपातकालीन बैठक में यह निर्णय लिया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन का विचार फिलहाल स्थगित रखा जाए।

श्री राजसिंह ने २६ मार्च की अन्तरंग बैठक में स्वयं क्षमा याचना करते हुए आश्वासन दिया था कि वे भविष्य में कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा तथा सभामन्त्री श्री विमल वधावन से विचार-विमर्श करके तथा उनकी सलाह पर एवं सार्वदेशिक सभा के पूर्ण नियन्त्रण में महासम्मेलन आयोजन का कार्य करेंगे। परन्तु १४ मई की प्रस्तावित बैठक के लिए उन्होंने न तो इन अधिकारियों से कोई विचार-विमर्श किया और न स्वीकृति ली। यहां तक कि श्री सुदर्शन शर्मा तथा कई अन्य अधिकारियों को बैठक की सूचना तक भी नहीं दी। अन्तरंग सभा ने श्री राजसिंह के इस स्वेच्छाचारी व्यवहार को घोर अनुशासनहीनता मानते हुए फिलहाल सम्मेलन के आयोजन का विचार ही स्थगित रखने का निर्णय लिया है। निकट भविष्य में परिस्थितियां सामान्य होने पर ही सम्मेलन का आयोजन सम्भव हो पाएगा। □

वैचारिक क्रान्ति शिविर
रजत जयन्ती समारोह २८ मई को

आपको विदित होगा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भारत के आदिवासी क्षेत्रों में गरीब, अनपढ़, बेसहारा लोगों के शोषण को रोकने तथा धर्नान्तरण जैसे अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रों के शिकार बनने से उनके बचाव के लिए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की स्थापना वर्ष १९६९-७० में की गई थी। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (पूर्व नान लाला रामगोपाल शालवाले) श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी तथा श्री पृथ्वीराज़ शास्त्री जैसे महान् आर्य नेताओं की दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप गठित यह संस्था आज माता प्रेमलता शास्त्री एव श्री वेदव्रत मेहता जी तथा कई अन्य आर्य विद्वानों एवं सहयोगियों के सहारे से अपने लक्ष्यबद्ध कार्यक्रम को लेकर लगातार कर्त्तव्यनिष्ठ भावना से अपने मिशन की ओर अग्रसर है।

शेष पृष्ठ ३ पर

अन्तरंग सभा में कोई परिवर्तन नहीं

कुछ षड्यन्त्रकारियें ने २६ मार्च की अंन्तरंग बैठक के निर्णयों के विरुद्ध भी सभा प्रधान जी से
२२-४-२००६ को ही एक ऐसा पत्र हस्ताक्षरित करवा लिया है जिसमें पदाधिकारी परिवर्तन की घोषणा
शामिल है। अन्तंरग बैठक दिनांक २६ मार्च का यह स्पष्ट निर्णय है कि सार्वदेशिक सभा की १८ जुलाई
२००४ को गठित साधारण सभा तथा अन्तरग सभा में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा। गत अन्तरंग
बैठक दिनांक ६ मई में इस पत्र को भी अस्वीकार करते हुए रद्द घोषित किया गया है।

अग्निवेश के षड्यन्त्रों से सावधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक अत्यावश्यक आपातकालीन बैठक में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य के हस्ताक्षर युक्त एक पत्र दिनांक २२-४-२००६ को अस्वीकार कर दिया गया जो उन्होंने श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय के नाम लिखा था जिसमें अग्निवेश से समझौते के कुछ बिन्दु लिखते हुए यह प्रस्ताव किया गया कि श्री श्रोत्रिय तथा अग्निवेश मिलकर सभा के संचालनार्थ एक तदर्थ समिति गठित कर लें।

कुछ षड्यन्त्रकारी व्यक्ति अग्निवेश के इशारे पर इस प्रकार की उलझने पैदा करके मुकदमें के निर्णय में और विलम्ब के मनसूबे बना रहे हैं। उल्लेखनीय है कि दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री अर्जुन कुमार सीकरी ने विगत माह १७ अप्रैल को ही सुनवाई पूर्ण करके निर्णय देने के लिए फाईल रखी है। निर्णय में देरी करवाने की यह एक सोची-समझी चाल थी जिसमें कै० देवरत्न आर्य जी की शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता का लाभ उठाते हुए उन्हें भी इस षड्यन्त्र में लपेटने का कुचक्र रचा गया।

अन्तरंग बैठक ने यह भी निर्णय किया है कि भविष्य में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य के हस्ताक्षर से कोई भी पत्र आदि बिना अन्तरंग की स्वीकृति के क्रियान्वयन नहीं हो पाएंगे। □

योग और यज्ञ आत्मा को परमात्मा से जोड़ते हैं

आर्यसमाज आयुध निर्माणी, मुरादनगर (उ०प्र०) के तत्वावधान में २० से २३ अप्रैल की तिथियों में योग, यज्ञ एवं वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया जिसका संचालन एवं प्रबन्ध श्री माया प्रकाश त्यागी, प्रधान, श्री शिवजी सिंह मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सहयोग से किया गया। इस समाज के संरक्षक महाप्रबन्धक श्री के० पी० पण्डा हैं। शिविर में चार दिन तक स्वामी बालयोगी जी ने विभिन्न योगिक क्रियाओं के अभ्यास को प्रस्तुत करके आर्यजनों को स्वस्थ शरीर एवं रोग मुक्ती के उपायों का प्रशिक्षण दिया।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, वैदिक वैज्ञानिक श्री सूर्य प्रकाश कपूर इस शिविर के समापन समारोह में सम्मिलित हुए। उ०प्र० के ग्राम विकास मंत्री श्री राजपाल त्यागी इस समारोह में मुख्य अतिथि थे।

श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भारत के प्राचीन ऋषियों, मुनियों की वैदिक संस्कृति तथा आधुनिक भारत के बीच एक कड़ी का कार्य किया है।

उनके अनुयायी सच्चे आर्य आज भी जनता को परमपिता परमात्मा की शक्ति तथा उनकी वाणी वेद के उपदेशों से जोड़ने का प्रयास करते रहते हैं। योग और यज्ञ के द्वारा प्रकृति माता के माध्यम से ही प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा से जुडा रह सकता है। परमात्मा की उपासना से शून्य रहकर कोई भी वैज्ञानिक या भौतिकवादी विकास विनाशकारी ही साबित होगा। श्री आर्य ने कहा कि आर्यसमाज के सेवा कार्य भी इसी ईश्वर-भक्ति से प्रेरित होते हैं। उन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा देश विदेश में चलाए जा रहे वेद मन्त्रों के रूप में पिरोकर भावी युगों के लिए रख दिया था उन्हें आज के वैज्ञानिक करोड़ों रुपये



उत्तर प्रदेश के ग्राम विकास मंत्री श्री राजपाल प्रचार सामग्री का विमोचन करते हुए। साथ में (दाएं) श्री माया प्रकाश त्यागी (बाएं) सर्वश्री विमल आर्य, वेदव्रत शर्मा तथा स्वामी बालयोगी खड़े हैं।

वैदिक धर्म रक्षा के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि महात्मा गांधी का कथन – जहां आर्यसमाज है वहां प्राण है बिल्कुल सत्य प्रतीत होता है क्योंकि आर्यो ने सदैव निःस्वार्थ भाव से समाज में निर्माण कार्य ही किए हैं।

वेद मन्त्रों के आधार पर वैज्ञानिक शोध करने वाले विद्वान् श्री सूर्य प्रकाश कपूर ने कहा कि जो वैज्ञानिक उपलब्धियां हमारे वेद मन्त्रों के द्रष्टा ऋषियों ने करोड़ों वर्ष पहले समाधिस्थ अवस्था में देख ली थी और उन्हें खर्च करके भी पूरी तरह समझ नहीं पा रहे हैं।

वेद ज्ञान को समझने के लिए श्रद्धा के साथ-साथ मन, बुद्धि और आत्मा की पवित्रता और परोपकार की भावना चाहिए।

उन्होंने बताया कि भूमि-सूक्त में पृथ्वी में ऊर्जा का मुख्य केन्द्र उसकी नाभि में होना बताया है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने वर्ष २००२ से इस सिद्धान्त को मानना प्रारम्भ किया है। इस समारोह में सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कंचन कुमार के भजन भी प्रस्तुत हुए।

बंसल समिति द्वारा सुझाव आमन्त्रित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक १६ मार्च, २००६ में जम्मू-काश्मीर के आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि श्री० योगेन्द्र मुनि जी ने एक विशेष प्रस्ताव रखते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संचालन में जम्मू-काश्मीर सभा के भी प्रतिनिधि शामिल करने की मांग की। हिमाचल सभा के प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा उत्तरांचल सभा के प्रतिनिधि श्री देवराज आर्य ने भी अपनी-अपनी सभाओं के प्रतिनिधि गुरुकुल कांगड़ी के संचालनार्थ शामिल किए जाने की मांग की। विचार विमर्श के उपरान्त सर्वसम्मति से सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल को एक सदस्यीय समिति के रूप में नियुक्त किया गया। श्री बंसल जी को यथायोग्य विद्वानों एवं आर्यजनों से विचार-विमर्श करके अपना निर्णय देने के लिए अधिकृत किया गया है। श्री रामफल बंसल जी ने दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-काश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तरांचल सभाओं के पदाधिकारियों, विद्वानों तथा आर्यजनों से इस विषय में सुझाव आमन्त्रित किए हैं कि क्या गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय तथा आर्य विद्या सभा के संचालनार्थ लागू त्रिशाखन के स्थान पर उपरोक्त सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों को शामिल करके नई संचालन व्यवस्था की जाए।

इस विषय पर आपके विचार **३० मई से पूर्व** श्री रामफल बंसल जी को उनके **कार्यालय चैम्बर नं० २३५, दिल्ली उच्च न्यायालय, नई दिल्ली** के पते पर पहुंच जाने चाहिए। जो महानुभाव इस सम्बन्ध में श्री रामफल बंसल जी से भेंट करके उन्हें अपने लिखित विचार देना चाहे वे आने से पूर्व दूरभाष ९८६६५५१४१४ पर सम्पर्क करके निश्चित समय पर पधार सकते हैं।

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजौरी गार्डन, दिल्ली वार्षिकोत्सव सम्पन्न

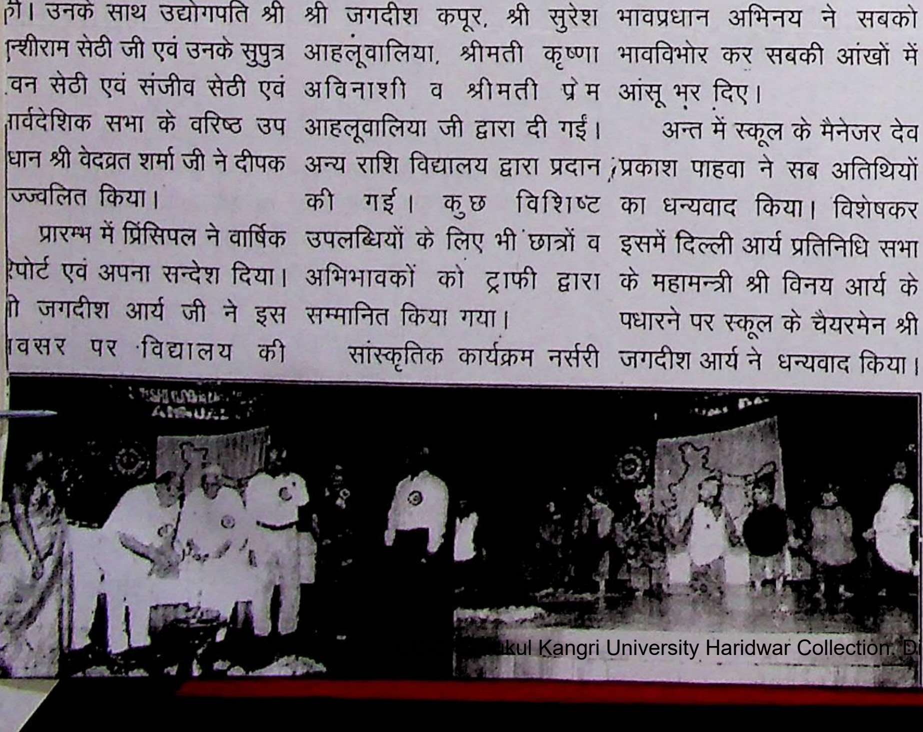
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का वार्षिक उत्सव १–४–२००६ को एयरफोर्स ऑडिटोरियम सुब्रतो पार्क में मनाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति श्री रामकुमार गुप्ता ने की। उनके साथ उद्योगपति श्री लक्ष्मीराम सेठी जी एवं उनके सुपुत्र पवन सेठी एवं संजीव सेठी एवं सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी ने दीपक प्रज्वलित किया।

प्रारम्भ में प्रिंसिपल ने वार्षिक रिपोर्ट एवं अपना सन्देश दिया। श्री जगदीश आर्य जी ने इस अवसर पर विद्यालय की गतिविधियों की जानकारी दी। सत्र २००५–०६ में प्रथम व द्वितीय स्थान पाने वाले छात्रों को छात्रवृतियां प्रदान की गई। कुछ छात्रवृति राशि प्रबन्ध समिति व समाज के मान्य सदस्यों श्रीमती राजपांडे, श्री जगदीश कपूर, श्री सुरेश आहलूवालिया, श्रीमती कृष्णा अविनाशी व श्रीमती प्रेम आहलूवालिया जी द्वारा दी गई। अन्य राशि विद्यालय द्वारा प्रदान की गई। कुछ विशिष्ट उपलब्धियों के लिए भी छात्रों व अभिभावकों को ट्राफी द्वारा सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम नर्सरी कक्षा के नन्हें बच्चों द्वारा प्रारम्भ हुआ जोकि अत्यन्त मनमोहक व शिक्षाप्रद था। इसके उपरान्त महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर एक नाटिका युग युगान्तर युगद्रष्टा प्रस्तुत की गई, जिसमें बच्चों ने भावप्रधान अभिनय ने सबको भावविभोर कर सबकी आंखों में आंसू भर दिए।

अन्त में स्कूल के मैनेजर देव प्रकाश पाहवा ने सब अतिथियों का धन्यवाद किया। विशेषकर इसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य के पधारने पर स्कूल के चैयरमेन श्री जगदीश आर्य ने धन्यवाद किया।



बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का विधिवत कार्य प्रारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बिहार के पूर्व प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री द्वारा की गई आर्थिक अनियमितताओं के दृष्टिगत बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य संचालनार्थ एक तदर्थ समिति का गठन दिनांक १–६–२००५ को किया गया था। इस तदर्थ समिति के प्रधान श्री विजयशंकर मिश्र तथा मन्त्री श्री नगेन्द्र राय को बनाया गया था। दिनांक ११ दिसम्बर, २००५ की बैठक में तदर्थ समिति ने श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता को कार्यकारी मन्त्री नियुक्त किया। बिहार सभा के मुख्य कार्यालय श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नया टोला पटना को लेकर एक वाद सं० ७ (एम)/२००६ पटना के एस०डी०एम० न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। इस वाद का निपटारा अपने आदेश दिनांक १ अप्रैल, २००६ के द्वारा करते हुए न्यायालय ने इस तदर्थ समिति को वैद्य ठहराया तथा मुख्य कार्यालय का नियन्त्रण विधिवत इस समिति को प्राप्त हो गया।

तदर्थ समिति के अधिकारियों की देखरेख में बिहार सभा का कार्य सुचारु रूप से प्रारम्भ हो गया है। बिहार प्रान्त की समस्त आर्यसमाजें वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए अब तदर्थ समिति के अधिकारियों से सभा कार्यालय में सम्पर्क कर सकती हैं।

बिहार सभा के कार्यकारी मन्त्री श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता ने आर्य कन्या विद्यालय, नया टोला पटना की प्रबन्ध समिति नियुक्त करते हुए श्री राजेश कुमार को अध्यक्ष तथा श्री सुनील कुमार को सचिव नियुक्त किया है। इसी प्रकार दयानन्द कन्या विद्यालय मीठापुर के अध्यक्ष श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता तथा सचिव श्रीमती रत्ना आर्या तथा ... विद्यालय, मीठापुर पटना के अध्यक्ष श्री रिपु दमन ...

पृष्ठ १ का शेष

श्रद्धानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय कांगड़ी

जब पानी कम होता है तो इसे ट्रेक्टर-ट्राली द्वारा पार किया जाता है और वर्ष में लगभग २ माह जब जल स्तर चढ़ जाता है तो नांव द्वारा इसे पार किया जाता है।

१६२४ की बाढ़ के तुरन्त बाद जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की बैठक में यह निर्णय लिया जाने लगा कि बच्चों की सुरक्षा हेतु मुख्य सड़क मार्ग के निकट भूमि खरीदकर वहां गुरुकुल बनाया जाए तो स्वामी श्रद्धानन्द जी भावुक होकर कहने लगे कि दान में मिली भूमि का तप अधिक हमें मिलेगा क्योंकि इसमें दान देने वाले और लेने वाले दोनों का तप शामिल होता है। बाकी रही बाढ़ की बात तो मैं गंगा माता से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि ब्रह्मचारियों के लिए बनी इस पुण्य-भूमि पर फिर कभी बाढ़ न आए। परन्तु सांसारिक बुद्धियां ईश्वर-भक्ति की भाषा को नहीं समझ सकती। गुरुकुल का स्थानान्तरण तो हो गया परन्तु १६२४ से आज तक इस पुण्य भूमि पर बाढ़ कभी नहीं आई।

पुनः लगभग ८० वर्षों के उपरान्त सार्वदेशिक सभा ने इस पुण्य-भूमि पर महान् संकल्प के साथ दूरगामी प्रभाव वाली इस योजना को मूर्त रूप देने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया है।

इस उपदेशक महाविद्यालय की योजना तैयार करने के लिए श्री विमल वधावन विगत लगभग एक वर्ष से चिन्तन कर रहे थे। गत सप्ताह उन्होंने आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, डॉ० महेश विद्यालंकार, डॉ० ज्ञान प्रकाश तथा श्री वेदव्रत शर्मा जी से उपदेशक महाविद्यालय के पाठ्यक्रम पर गम्भीर विचार-विमर्श किया तथा उनके मार्ग दर्शन से ही इस विस्तृत योजना को अन्तिम रूप देकर क्रियान्वयन की स्थिति तक पहुंचा दिया है। इस सम्बन्ध में हैदराबाद के आचार्य कविशासन रघुमन्ना तथा बंगलोर के निकट स्थिति शान्तिधाम गुरुकुल के श्री सत्यव्रत एवं कर्नाटक सभा के प्रधान डॉ० राधाकृष्ण वर्मा से भी विद्वानों की सहायता उपलब्ध कराने पर विचार विमर्श किया गया है। गुरुकुल बहालगढ़ के आचार्य विजय पाल जी से भी सहायता की कामना की गई है।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, उपमन्त्री श्री देवेन्द्र शर्मा, पंजाब सभा के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज तथा मन्त्री एवं गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार ने भी इस योजना के विभिन्न पहलुओं पर अपने अपने विचारों से इसे अन्तिम रूप देने में सहायता प्रदान की है।

श्री सुदर्शन शर्मा ने पंजाब सभा के प्रधान एव गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में हर सम्भव सहायता जुटाने का संकल्प लिया है जिससे इस महान् योजना को सफलतापूर्वक चलाकर आर्यसमाज के लिए आधुनिक विद्याओं से ओत-प्रोत प्रचारक, उपदेशक, पुरोहित और विद्वान् तैयार किए जा सके।

प्रारम्भ में लगभग २५ विद्यार्थियों को इस योजना में शामिल किया जाएगा। उनके लिए आवास, भोजन, वस्त्र, शिक्षा सामग्री तथा फीस आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क होगी। यह सारा कार्य देश-विदेश की विभिन्न आर्यसमाजों/सभाओं तथा अन्य दानी महानुभावों के सहयोग से एकत्रित दान-कोष से संचालित होगा। एक ब्रह्मचारी की प्रायोजक राशि लगभग ६०,०००/- रुपये प्रतिवर्ष निर्धारित होगी।

यह पाठ्यक्रम तीन वर्ष का निर्धारित होगा। जिसमें ब्रह्मचारियों को विद्यालंकार अथवा वेदालंकार की डिग्री के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलाया जाएगा। प्रवेश के लिए योग्यता १०+२ (बारहवीं) कक्षा उत्तीर्ण, अंग्रेजी का अच्छा अनुभव तथा उपदेशक प्रचारक बनने में रुचि को आधार बनाया जाएगा।

इस योजना के लिए निर्धारित विज्ञापन प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से भिन्न-भिन्न प्रान्तीय भाषाओं वाले दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकाशित किए जाएंगे।

इस योजना में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त, ब्रह्मचारियों को वक्तृत्व कला, पत्रकारिता, कम्प्यूटर, इण्टरनेट संगीत-भजन, योग क्रिया, लेखन आदि में भी पारंगत किया जाएगा। तीन वर्ष के इस पाठ्यक्रम को उतीर्ण करने के उपरान्त तैयार ब्रह्मचारियों को सार्वदेशिक सभा की देखरेख में प्रान्तीय सभाओं, आर्यसमाजों के माध्यम से कार्यार्थ नियुक्त किया जाएगा।

श्री सुदर्शन शर्मा ने पुण्य-भूमि पर समस्त व्यवस्थाएं जुटाने के लिए अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देश दे दिए हैं। इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग बैठक भी शीघ्र आयोजित की जा रही है।

श्री सुदर्शन शर्मा इस योजना को लेकर भावुकता से सदैव यही विचार करते हैं कि हमारे पूर्वजों ने कितनी बड़ी तपस्या से इतनी विशाल संस्थाओं का निर्माण किया। अतः हमें किसी भी कीमत पर उनकी रक्षा और उनके सदुपयोग के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। बाधाओं को दूर करना ही आर्यत्व और वीरता है, बाधाओं से डरकर रूक जाना नहीं।

श्री विमल वधावन आर्य ने समस्त प्रान्तीय सभाओं से निवेदन किया है कि निकट भविष्य में वे सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्धारित विज्ञापन अपने अपने प्रान्त की भाषाओं वाले लोकप्रिय दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकाशित करवाकर अवश्य सहयोग करें।

जुलाई में प्रवेश के उपरान्त, सितम्बर/अक्टूबर माह तक ब्रह्मचारियों को एक अन्य स्थल पर आवास उपलब्ध करवाकर इस सत्र का प्रारम्भ किया जाएगा। सितम्बर माह में एक अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के रूप में इस उपदेशक महाविद्यालय का प्रथम वेदारम्भ समारोह भी आयोजित होगा।

अमेरिका के डॉ० दिलीप वेदालंकार ने भी इस योजना को हर सम्भव सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार को दिया है।

इस योजना में मारीशस, नेपाल तथा अन्य देशों से भी ब्रह्मचारियों के प्रवेश का प्रयास किया जाएगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की जन्मभूमि तलवन पंजाब की सामान्य जनता भी आज अपने महान पूर्वज की महान् कर्मस्थली पुण्य-भूमि गुरुकुल कांगड़ी के दर्शनों के लिए व्याकुल है। इस पुण्य-भूमि पर पुनः चहल-पहल के आगमंन की कल्पना ही इतनी मधुर है कि लगता है आर्यसमाज में फिर एक बार स्वामी श्रद्धानन्द के पथ पर चलने वालों का जन्म होने की तैयारी प्रारम्भ कर दी गई है।

कन्या गुरुकुल दाधिया का प्रवेश आरम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान के अलवर जिले में शाहजहांपुर कस्बे व राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या ८ के निकट दाधिया ग्राम में स्थित है। इस गुरुकुल की स्थापना वैदिक शिक्षा व संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से की गई थी। तब से यह गुरुकुल शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। परीक्षाओं को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से पूर्ण मान्यता प्राप्त है तथा समस्त सरकारी सेवाओं में प्रवेश के लिए मान्य है।

गुरुकुल की विशेषताएं – १. केवल कन्याओं को प्रवेश, २. योग्य अध्यापिकाओं द्वारा अध्यापन, ३. निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था, ४. पूर्ण प्राकृतिक सुरम्य व स्वास्थ्यवर्धक वातावरण, ५. उत्तम रहन सहन व पौष्टिक भोजन, ६. विशाल भवन व तरणताल, ७. गोशाला से निःशुल्क दुग्ध व्यवस्था, ८. दोनों समय सन्ध्या, हवन व नैतिक शिक्षा, ६. कम्प्यूटर शिक्षा।

प्रवेश के लिए पंचम कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। ८, १०, १०+२ संस्कृत विषय साहित्य उत्तीर्ण कक्षाओं का प्रवेश अगली कक्षा में दिया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें – आचार्या, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान। मोबाईल नं० ०६४१४२३१५७० फोन नं० ०१४६५-२८१२२७

पृष्ठ १ का शेष

वैचारिक क्रान्ति शिविर रजत जयन्ती समारोह २८ मई को

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के द्वारा संचालित आश्रमों, विद्यालयों, छात्रावासों तथा बालवाड़ियों की कुल संख्या ६० से अधिक है। आदिवासी क्षेत्रों में इस संस्था के प्रति बढती रुचि के दृष्टिगत वर्ष २००२ में आर्यसमाज रानीबाग, दिल्ली में ही एक गुरुकुल को संचालित करने का महान् संकल्प लिया गया। आर्यसमाज रानीबाग के समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों एवं सहयोगियों के सम्मिलित शुभप्रयासों के फलस्वरूप आज लगभग ५० आदिवासी, दलित गरीब बालकों का यह गुरुकुल भारत में आर्यों का एक दर्शनीय स्थल बनता जा रहा है।

विगत २५ वर्षों से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आदिवासी युवक युवतियों का दिल्ली में प्रतिवर्ष मई माह में एक शिविर आयोजित करके वैदिक धर्म, समाज-सेवा तथा रक्षा के उपायों से अवगत कराते हुए एक पारंगत आर्य के रूप में तैयार करके कार्य-क्षेत्र में उतारा जाता है। इन्हीं पारंगत आर्यों में से कुछ को ५००/- रुपये मासिक पर बालबाडियां संचालित करने के लिए नियुक्त किया जाता है।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी **१४ मई से २८ मई २००६** तक **'वैचारिक क्रान्ति शिविर'** का आयोजन **आर्यसमाज रानीबाग**, दिल्ली में ही आयोजित होगा। इस आयोजन के मुख्य समारोह इस प्रकार हैं –

उद्घाटन समारोह : १४ मई, २००६ (रविवार) रात्रि ७ बजे

यज्ञोपवीत संस्कार एवं शोभायात्रा : २१ मई, २००६ (रविवार) प्रातः ८ बजे।

समापन समारोह : २८ मई, २००६ (रविवार) प्रातः १० बजे।

२५वें वर्ष का यह **वैचारिक क्रान्ति शिविर रजत जयन्ती शिविर** है। इस अवसर पर आपसे विशेष निवेदन है कि अधिकाधिक आर्यजनों तथा पारिवारिक सदस्यों सहित इस शिविर के समस्त कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर पुण्य लाभ के भागी बनें तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में प्रमुख सहयोगी के रूप में हमारे साथ कदम से कदम बढ़ाते हुए इस मानव जीवन को सार्थक करें। आपके द्वारा तन-मन और धन से किया गया सहयोग तथा आपकी उपस्थिति उन आदिवासी, दलित, गरीब, अनपढ़ और पिछड़े क्षेत्रों के युवक-युवतियों के लिए एक दैविक आशीर्वाद सिद्ध होगी जो इस शिविर के दौरान वैदिक धर्म एवं देश की रक्षा का संकल्प लेकर कार्यक्षेत्र में उतरने की घोषणा करेंगे। □

भूकम्प मुक्त विश्व

आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है। इस समय वैज्ञानिक संस्कृति ने श्वेत जातियों को संसार को विजेतृ शक्ति बना दिया है। मगर भूकम्प के बारे में आधुनिक वैज्ञानिक मानवता की कोई ठोस राहत दिला पाने में पूर्णतया नाकाम साबित हो रहे हैं। न तो भूकम्प के बारे में सही पूर्वानुमान लगाया जाना सम्भव है और भूकम्प को रोक पाना तो उनकी कल्पना से भी परे की बात है। इस असफलता का कारण यह है कि भूकम्प आने का सही और मूल कारण उनको नहीं मालूम है। वह धरती कवच के टुकड़ों (Plates) के किनारों पर प्लेटों के आपसी रगड़ने से भूकम्प का आना मानते हैं। धरती कवच बहुत सारे बड़े और छोटे टुकड़ों में विभाजित है और यह प्लेटें लगातार धीरे धीरे चलती रहती हैं और गतिशील रहती हैं। औसतन ५-१० से०मी० प्रतिवर्ष की गति से उनके किनारे आपस में घिसटते रहते हैं। इन किनारों के आपस में अटकने और फिर एकदम छूटने से जो टूट-फूट और झटके लगते हैं उनसे भूकम्प पैदा होता है। इस व्याख्या को Theory of Plate Movement कहा जाता है। चूंकि प्लेटों का size इतना बड़ा है कि वह कई कई देशों के क्षेत्रफल से भी बड़ा है इसलिए वह सोचते हैं कि मानवता इन बृहत आकार की प्लेटों की आपसी गति और टकराव/रगड़ को रोक पाने में असहाय और असमर्थ है। मगर इस असहाय अवस्था तक पहुंचने के पीछे मूल कारण यह है कि आधुनिक पश्चिमी वैज्ञानिकों ने वैदिक दर्शन का साक्षात्कार नहीं किया है। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में भूमि-सूक्त लिखा हुआ है। भूमि-सूक्त में ६३ मन्त्र हैं जिनमें भूमि की मुख्य विशेषताएं शामिल हैं। इन ६३ मन्त्रों में १२वां मन्त्र भूमि के मध्य भाग में नाभि के अन्दर यानि कि भूगर्भ के केन्द्र में ऊर्जा के स्रोत होने की चर्चा करता है। इसको हिरण्य नाभः भी कहा जाता है। हिरण्य शब्द का अर्थ है सुनहरे रंग वाला। याद रहे कि Radioactivity जिसके दो प्रारूप हैं Nuclear Fission। जब अनन्त आग जलते हैं तो तापमान ७००० डिग्री सेल्सियस पहुंचने से सुनहरे रंग की किरणों अग्नि से निकलती हैं जिससे भूगर्भ का केन्द्र सुनहरे रंग का ऊर्जा उत्पन्न होकर धरती की सतह पर स्थित १३४३ Active ज्वालामुखियों के मुख से आग निकल कर दूर आकाश तक पहुंच जाती है। हिन्दू शास्त्रों में हिरण्य को अग्नि का रेत (बीज/कारण) कहा गया है। यानि कि Radioactivity के दो प्रारूप Nuclear Fission। अतः Nuclear Fission बेतहाशा अग्नि पैदा करते हैं। इस तथ्य की जानकारी हिन्दू शास्त्र देते हैं। पृथ्वी में अग्नि Nuclear Fission द्वारा पैदा होती है और सूर्य में अग्नि Nuclear Fusion द्वारा पैदा होती है इन दोनों प्रकार की अग्नि की चर्चा अथर्ववेद के सूक्त में की गई है। यह असीम अग्नि भूमि के केन्द्र से अपनी यात्रा प्रारम्भ करके धरती कवच पर स्थित ज्वालामुखियों, गर्म पानी के चश्मों, प्लेटों में हलचल पैदा करके उनको गतिशील करके झकझोरती हुई, पहाड़ों में उथल पुथल मचाकर भूकम्प पैदा करती हुई, समूचे धरती कचव को कहीं कम कहीं अत्यधिक सेंकती हुई, धतरी की सतह पर बसे हुए ६०० करोड़ मनुष्यों और अन्य प्राणियों को गर्मागर्म सुखद और पवित्र/शुद्ध वातावरण प्रदान करती हुई और पर्वतों पर गर्म तासीर की जड़ी बूटियां, फल-फूल, औषधियां, केसर, शिलाजीत, मेवे पैदा करती हुई दूर आकाश में निकल जाती है। अग्नि की इस यात्रा को नियमित और सुखप्रद सुविधाजनक करने के लिए मानवता के पास Geothermal Energy से बिजली बनाने वाले Heat Exchangers उपलब्ध हैं। जिनकी सहायता से भूकम्प, सुनामी और ज्वालामुखी रोके जा सकते हैं और साथ ही साथ Pollution रहित साफ सुथरी बिजली पैदा की जा सकती है। प्राचीन और अर्वाचीन सत्य विद्याओं के स्वतन्त्र अणवेषक श्री सूर्य प्रकाश कपूर जी ने Feb. 2004 में विज्ञान भवन में हुई World Congress में सम्मिलित ५० देशों के वैज्ञानिकों के सामने यह रहस्योद्घाटन किया था कि भूकम्प, सुनामी, जवालामुखी Geothermal Areas में जमा हुई Surplus Geothermal Energy के विस्फोट का दुष्परिणाम हैं और Geothermal Energy को बिजली में परिवर्तित करके विनाश को विकास में बदला जा सकता है। भारत सरकार की Science & Technology Ministry की Seismology Division की सितम्बर २००५ में हुई संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ० हर्ष गुप्ता और दूसरे सदस्यों के सामने भी उन्होंने कहा कि अमेरिका के अन्दर North California स्थित Big Geysers Area में पिछले पच्चीस वर्षों से १८०० Mega watt बिजली पैदा कर रहे Plant ने उस क्षेत्र को भूकम्पों से मुक्त कर दिया है। उसी तर्ज पर १०६०० मेगा वाट बिजली भारत में स्थित सात Geothermal Areas से Harness करके समूचे भारत को भूकम्प, सुनामी और ज्वालामुखी विस्फोटों से मुक्त किया जा सकता है। National Disaster Management Authority के समक्ष तीन बार भाषण दे चुके स्वतन्त्रा आविरष्कारक श्री सूर्य प्रकाश कपूर जी ने यही तथ्य बार-बार दोहराया है। National Institute of Disaster Management के Convener प्रो० सन्तोष और दूसरे सदस्यों के समक्ष भी दिसम्बर २००४ को सुनामी आपदा के दौरान उन्होंने यही बात कही थी। देश की सर्वोच्च संस्था National Disaster Management Authority (जिसके Chairman प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह हैं) को चाहिए कि Geological Survey of India को बाध्य करे कि वह देश के सातों Geothermal Areas से १०६०० मेगा वाट बिजली पैदा करने के लिए Heat Exchangers लगाकर देश की जनता को भूकम्प, सुनामी और ज्वालामुखी विस्फोट की त्रासदी से जल्द से जल्द निजात दिलाएं।

यह तो रही भूमि के अग्नि तत्व के सुनियोजित करने की बात। याद रहे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार यह आठ प्रकार की परमपिता परमेश्वर की अपरा/अचेतन/जड़/लौकिक प्रकृति है इससे ऊपर और बेहतर एक चेतन प्रकृति भी है जिसे हम परा/अलौकिक प्रकृति के नाम से जानते हैं जिसने सम्पूर्ण जगत को धारण कर रखा है उस चेतन प्रकृति को प्रसन्न और संतुष्ट करने के लिए हमें गोहत्या, जीव हत्या, मांसाहार जैसे जघन्य अनैतिक अपराधो पर अकुश लगाना होगा। एक सभ्य और नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज में Guilty conscious मानवों के लिए कोई स्थान नहीं होता। पंचमकारी (मांस, मछली, मदिरा, मैथुन, मुद्रा) सेवित समाज को हर रोज सूर्य की पहली किरण के साथ कटने वाली लाखों गऊओं/भेंड़ों-बकरों/मुर्गों की बद्दुआओं के दुष्परिणाम स्वरूप दैविक प्रकोपों का खामियाजा भुगतना ही पड़ता है। जब जमाने के आका जिसमें भारत सरकार के सभी सांसद सम्मिलित हैं २६ अक्टूबर २००५ को सुप्रीम कोर्ट की नई और सुधरी हुई Judgement आने के बावजूद गोरक्षा के लिए संसद में कानून बनाने में देरी करेंगे तो लाजमी है कि सरकारी और गैरसरकारी कत्लखानों में कट रही लाखों गऊओं, भेड-बकरियों और मुर्गों की बद्दुआ भूलोक से ऊपर उठकर चिच्छक्ति के सातों लोकों (भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्) तक पहुंचेगी। राजधानी दिल्ली में भूकम्प जैसा दैविक प्रकोप आने की हालत में सभी सांसद जमीन के नीचे ठीक उसी प्रकार दबे हुए मिलेंगे जैसे २६ जनवरी २००१ के भुज के भूकम्प के बाद पूरा महीना भूले भटके शव और जीवित व्यक्तियों को स्विस से आए Sniffer Dog Squads ने सूंघ-सूंघ कर निकाला था।

भारत सरकार को तुरन्त गौऊओं की हत्या, जीवों की हत्या, मांस निर्यात जैसे जघन्य और असभ्य कुकृत बन्द करने होंगे। सभी जीवों को जीने का उतना ही अधिकार है जितना प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति को – अहिंसा परमो धर्मा। हम ईश्वर के नियमों की अवहेलना नहीं कर सकते यह मांस भक्षण का वहशीपन हमें Guilty Conscious करता है जिससे दैविक प्रकोपों के रूप में हमें सजा मिलनी अनिवार्य हो जाती है।

गावो विश्वस्य मातरः
गोभिः विप्रश्च वेदाभिः सतीभिः
ब्रह्मवादिभिः।
अलुब्धैः दानशीलश्च सप्तभिः
धार्यते महीः।।
कटती गौऊएं करें पुकार बंद
करो यह अत्याचार।
अब कोई गुलशन न उजडे
अब वतन आजाद है।

सहारनपुर का जिला स्तरीय सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज रामपुर (सहारनपुर) में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर द्वारा आयोजित वेद सम्मेलन के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार विश्वविद्यालय के मान्य उपकुलपति श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री ने कहा कि वेदों की शिक्षा को अपनाये बिना भारतीय संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती। आज हमारे देश के अमीर वर्ग के लोग अपने बच्चों को इसाई मिशनरीज के स्कूलों में शिक्षा दिला रहे हैं परन्तु आने वाले कल पर इसका बड़ा भयानक प्रभाव पड़ेगा। वेदों की संस्कृति विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति है। भारत हमेशा विश्व गुरु रहा है। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त समस्त विश्व में सभ्यता और संस्कृति भारत से ही पहुंची। आर्यजाति के आलस्य और प्रमाद के कारण, स्वाध्याय छोड़ने के कारण हम गुलाम हुए थे। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सोई आर्यजाति को जगाकर सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ लिखकर, वेदों का सरल और शुद्ध वैज्ञानिक भाष्य कर, वेदों की ओर लोटने का नारा देकर, आर्यसमाज की स्थापना कर हम पर भारी उपकार किया है।

दिल्ली से पधारे आचार्य अर्जुन देव जी वर्णी ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। महर्षि दयानन्द महाराज ने आर्यसमाज के नियम में यह घोषणा कर विश्व में हमारे मस्तक को ऊंचा किया है। वेद ही समस्त संसार में ऐसा ग्रन्थ है जिसमें पैदा होने से ले जाकर मरने तक की समस्त आवश्यकताओं तथा समस्त विषयों का ज्ञान है। केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है जितनी ज्ञान की लोगों को आवश्यकता है उतना ही ज्ञान परमात्मा ने वेदों के माध्यम से दिया। ईश्वर का ज्ञान तो अनन्त है। आगे कहा वेदों के आधार पर अपने जीवन में अपनाकर ही सुखों को प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त अर्थात दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। रुड़की से पधारे शास्त्रीय संगीतज्ञ उपवेद ने संगीत के माध्यम से वेदों की महिमा का बखान किया। श्री मामचन्द जी आर्य पथिक ने मधुर स्वर से भजनों से वेद और स्वामी दयानन्द का गुणगान कर जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर डॉ० ओमप्रकाश वर्मा, राजाराम जी शास्त्री आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री फिरोजीलाल जी ने की। कार्यक्रम का संचालन आदित्य प्रकाश संयोजक जिला आर्य उपप्रतिनिधि ने किया, साधूराम, ब्रजमोहन, राजकुमार कंवरपाल सिंह, जसवीर, कुलदीप, शिवप्रसाद, अनिल कुमार, ओमप्रकाश बख्शी, जसवन्त सिंह जी, आनन्द प्रकाश, बारुराम शर्मा आदि कई सौ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। श्री मोल्हड सिंह जी का विशेष योगदान रहा।

– आदित्य प्रकाश, संयोजक
आर्य उपप्रतिनिधि सभा खेड़ा
अफगान (सहारनपुर)

अवलोकन

— श्रीतमी चन्द्रप्रभा चोपड़ा



'आर्यसमाज' शब्द को पढ़ते या सुनते ही एक ऐसी संस्था का चित्र मानस-पटल पर उभर कर आता है जिसका उद्भव समाज कल्याण एवं सुधारक के रूप में हुआ। भारतीय समाज में जब अनेक कारणों से कई कुरीतियां पनपने लगीं तो उस समय स्वामी दयानन्द सरस्वती के रूप में अवतरित हुई एक महान आत्मा जिसने अपने अथक प्रयासों द्वारा स्वयं तो अनुपम योगदान दिया ही और हम सबको भी वह मार्ग दर्शाया जिसका उद्देश्य केवल सुधार था। हम यदि आर्यसमाज के नियमों की विवेचना करें तो प्रत्येक नियम में निहित मानव के उत्थान और कल्याण की भावना जिस प्रकार उभर कर समक्ष आती है उसका समकक्ष हमें किसी भी अन्य संस्था या धर्म में दिखाई नहीं देता। इन नियमों में कहीं भी एक जाति या देश के विकास व कल्याण की संकीर्ण परिधि नहीं अपितु सारे संसार के हर प्राणी के उपकार की भावना उभर कर समक्ष आती है।

निस्सन्देह अपने स्वामी के उस लक्ष्य को हमने आज भी संजोया हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के रूप में वेदों का जो अपार ज्ञान भण्डार हमें दर्शाया वह आज भी अलग अलग प्रान्तों में आर्यसमाज द्वारा संचालित वेद संस्थानों, दैनिक व साप्ताहिक सत्संगों के रूप में उनके सिद्धान्तों को प्रकाशित कर रहा है। सुधार की वह लहर जो एक समय अपार सागर का रूप धारण कर रही थी अब एक सीमित धारा की तरह क्यों होती जा रही है?

हम जब अन्य धार्मिक स्थलों में जाते हैं तो परिवार के हर स्तर के लोग वहां उपस्थित होते हैं। मन्दिरों, गुरुद्वारों, गिरिजाघरों में बच्चे, किशोर, युवक, नवविवाहित और व्यस्क एवं वृद्ध सभी प्रकार के लोग अपने-अपने ढ़ंग से अपना सहयोग देने व मन के उद्‌गार व्यक्त करने में लीन दिखाई देते हैं। पर हमारे आर्य समाज के समारोहों में हमारे किशोर व युवक दिखाई ही नहीं देते। स्वामी दयानन्द की धरोहर पर हम कब तक गर्व कर सकेंगे। अगर हम युवा पीढ़ी के उभरते जीवनों को इस ओर प्रेरित करने में असफल रह रहे है तो !

इस समस्या के कारणों की तह तक पहुंचने का प्रयास जब किया तो कई संदेहास्पद प्रश्न मन में उठने लगे। आखिर हम में कमी कहां रह गई ? क्या हमारे युवाओं के साथ हमारा सामाजिक आदान प्रदान किसी कारणवश कमजोर हो गया है ? हमने अपने धर्म की इतिश्री क्या केवल हवन मंत्रों, कुछ प्रवचनों, योगाभ्यास या लोक कल्याण से ओत प्रोत कुछ क्रियाओं तक सीमित कर दी है ? क्या अन्य धर्मों की कुरीतियों को सुधारने हेतु हम खण्डन-मण्डन की प्रक्रिया में इस प्रकार जूझ गए कि हमारी संस्था ज्ञान प्रधान हो गई और श्रद्धा एवं भक्ति की प्रधानता लुप्त होने लगी ? अपने अधिवेशनों में तर्क वितर्क और व्यर्थ के स्वागत आडम्बरों में इस सीमा तक लीन हो गए कि उसमें नीरसता आने लगी ? अपने आर्य समाज के समारोहों में क्या हम अपनी विद्वता का प्रदर्शन करने में, आपसी राजनीति में, लोभ, उच्च पदों की आकांक्षा आदि में इस प्रकार रम गए कि हमारे बाद क्या ? इस ज्वलन्त समस्या की ओर ध्यान ही नहीं जाता।

हमें आत्म निरीक्षण करना होगा, उस निष्ठा को जगाना होगा ताकि हम जान सकें कि इन उच्च सिद्धान्तों के प्रसार के प्रति हमारी युवा शक्ति, जो एक उदासीन भाव रखे हुए है, वह कैसे अपने उत्तरदायितव को समझे। आवश्यकता है उनके अन्तर्मनों में उस उत्साह को जगाने की उस विश्वास को प्रज्वलित करने की ताकि वे इसमें शिथिलता न आने दें। हमें उस श्रद्धा, उस आत्म विश्वास को फिर उज़ागर करना होगा जो किसी संस्था को सफल बनाने के लिए अनिवार्य है। हमारा जीवन उस आदर्श से अछूता न हो जिसका अनुकरण आने वाली पीढ़ी स्वेच्छा से न करना चाहे। कभी भी किसी पर भी अपने विचारों को थोपकर, लादकर हम उद्देश्य की प्राप्ति अधिक समय तक नहीं कर सकते। इतिहास इस बात का गवाह है कि प्राचीनकाल में जब ब्राह्मणों के कठिन श्लोक या रूढ़िवादी प्रक्रियाएं या गतिविधियां साधारण जनता पर बोझ बनने लगीं तो वे कबीर, सूरदास, नानक, तुलसी आदि की खिचड़ी भाषा में दिए गए मन को छूने वाले विचारों की ओर आकर्षित होने लगे। मन जब चिन्ताग्रस्त होता है वह मूक भाव से अपने इष्ट व परमात्मा के साथ एक तार में बंधकर अपने उद्‌गार प्रकट करना चाहता है।

आज की युवा पीढ़ी अत्यन्त सजग एवं जागरूक है। आवश्यकता है केवल उनमें निहित स्पन्दन शक्ति को प्रज्ज्वलित कर प्रेरित करने की और यह उत्तरदायित्व आज के प्रतिनिधियों का है। वे स्वयं इस प्रश्न का उत्तर पूछें कि हमने जो बीडा उठाया है, जो कार्यभार वहन किया है क्या हमारी उपलब्धियां हमारी युवा पीढ़ी के हाथों सुरक्षित हैं ? कहां है आज वे आर्य कुमार जो अपने बड़ों का हालचाल पूछते हुए, उनके द्वारा खींचे गए वृक्ष को पल्लवित व विकसित कर, धर्म को परिष्कृत रख अपना दायित्व निभाएंगे ? इस समस्या का सजग एहसास ही हमारे सकारात्मक भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है और यदि वास्तव में हम मानव जाति का हित चाहते हैं तो हम निश्चिन्तता की सांस ले सकेंगे। हमारे बाद कौन इस प्रश्न का उत्तर दे पाएंगे।

— ई-८, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वरजी दर्शनाचार्य — दर्शनयोग महाविद्यालय आर्यवन रोजड की अध्यक्षता में जेशठ कृष्णा १० सोमवार से जेष्ठ शुक्ला १ रविवार वि.स. २०६३ तदनानुसार २२ मई २००६ से २८ मई, २००६ तक ७ दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर जामनगर में किया जा रहा है, जिसमें माताएं भी भाग ले सकेंगी।

आचार्यजी के साथ शिविर में सहयोगी सर्वश्री (१) ब्र० दिनेशकुमार आर्य — रोजड़ (२) ब्र. विशालजी आर्य — गांधीनगर (३) ब्र० चंद्रेशजी आर्य — गांधीधाम (४) श्रीमती सद्‌गुणाबेन आर्या — जुनागढ़ (५) श्रीमती भावनाबेन आर्या — जुनागढ़ रहेंगे।

शिविर में क्रियात्मक योग सधना सिखाने के साथ साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम निम, आसन, प्राणायाम, प्रत्यहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध, ममत्व को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः ४ से ६.३० बजे तक रहेगी। जिसमें लगभग ६ घण्टे मौन व्रत का पालन करना अनिवार्य होगा। शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि,

१. वह रोगी न हो, धूम्रपानादि व्यसनों से रहित हो।

२. कम से कम १० (दस) कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त हो तथा पूर्ण अनुशासन में चलने वाला हो।

३. १५ से ६० तक आयु वाले पठित और नए व्यक्तियों के शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

स्थाई शिविरार्थियों के लिए शिविर शुल्क (भोजन सहित) रु० ४००/— तथा अस्थाई शिविरार्थियों के लिए शिविर शुल्क रु० १०० निर्धारित किया गया है। आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाएंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाएगी। दूर से आने वाले शिविरार्थी अपनी वापसी का रलेवे आरक्षण पूर्व ही करा लेवें।

निवेदक — धर्मवीर खन्ना, (प्रधान), **सतमाल आर्य, डॉ० अविनाशभाई भट्ट**, शिविर व्यवस्थापक

पत्र व्यवहार — आर्यसमाज मन्दिर, आर्यसमाज मार्ग, खंभालिया गेट बाहर, जामनगर - ३६१००५

दूरभाषा ०२८८ — २५५०५५०, २६७०६७६, Web : www.aryasamajjamnagar.org

email : info@aryasamajjamnagar.org

पाठकों के पत्र

आदरणीय विमल जी आर्य

सादर नमस्ते।

उभयत्र कुशलं वितनोत देवाः। भले ही सार्वदेशिक साप्ताहिक के पृष्ठों में कमी हो गई है किन्तु प्रकाशित थोड़े पन्नों में भी सारगर्भित सामग्री उपलब्ध हो रही है। देश को ईसाईयत व इस्लामीकरण की ओर तेजी से झोकने में मदद करने वाले कम्यूनिस्ट छद्मवेशी साधु सन्यासी इसके अन्जाम से आंखे बन्द किए हुए हैं। कितना भयंकर परिणाम सामने है और आगे भयंकरतम स्थिति आने वाली है। देश ईसाई व मुसलमानों को बढ़ावा देने वाले लोगों के हाथ में अपनी प्राचीन संस्कृति को दिन व दिन खो रहा है और विद्यार्थियों का मनचाहा सपना पूरा हो रहा है।

'पद से नहीं धर्म पथ से देश व धर्म की सेवा' शीर्षक से अंक २७ का लेख पढ़कर मेरे जैसे वृद्ध व कृशकाय शरीर में जोश खरोश उमड़ पड़ता है। जो लोग पवित्र मन से सर्वजन हिताय कार्य करने हेतु कमर कस लेते हैं उन्हें सदैव सफलता व आत्मबल मिलता रहता है। सच्चे आर्य जन आपके साथ हैं।

सत्ता के बल पर घुसे हुए या घुसाए हुए घुसपेठियों के मनसूबे पूरी नहीं होंगे वे सदा भय से अक्रान्त सशंकित पथभ्रष्ट उल्टी गिनती गिनने में लगे रहेंगे। पतन की परत उनके चहरों से स्पष्ट झलकती है।

अस्तु — नरेन्द्र पुद्दीर, दयालनगर, खांडा

गुरुकुल वैद्यनाथ धाम का स्थापना दिवस

गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम, देवघर (झारखण्ड) का ८७वां त्रिदिवसीय स्थापना दिवस समारोह श्री समनवमी (७ अप्रैल) को प्रातः ब्रह्म यज्ञ एवं हवन के साथ प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ में गुरुकुल के पदाधिकारियों, आचार्य, अध्यापकों, ब्रह्मचारियों, प्राक्तन छात्रों एवं भारी संख्या में स्थानीय लोगों ने भाग लिया। तत्पश्चात् गुरुकुल के यशस्वी प्राक्तन छात्र श्री भुवनेश्वर ब्रह्मचारी के कर-कमलों से 'ओ३म्' ध्वजोत्तोलन हुआ तथा महर्षि स्वामी दयानन्द की जय, गुरु विरजानन्द की जय, कृण्वन्तो विश्वमार्यम, ओ३म् का झंडा ऊंचा रहे, वेद की ज्योति जलती रहे आदि नारों से दिग्दिग्न्त गूंज उठा। फिर प्रारम्भ हुआ गुरुकुल के नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार जो गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री महावीर प्रसाद एवं अन्य आचार्य श्री विद्यानन्द झा, श्री रामजन्म प्रसाद यादव एवं श्री अरविन्द कुमार वाजपेयी द्वारा सम्पन्न हुआ। सायं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में श्री रामजन्म प्रसाद यादव द्वारा गाए वैदिक भजनों पर श्रोतागण झूम उठे। इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषता राष्ट्रस्तरीय कैसियोवादक एवं संगीत सम्राट श्री गौरीशंकर फलाहारी की उपस्थिति रही। ...... श्री कमलनयन देव, श्री विनय देव, ट्रिपल पर श्री सोनाफलाहारी के साथ-साथ श्री शेखर कुमार के गायन ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। मंच का संचालन एक विशिष्ट अंदाज में श्री वीरेन्द्र प्रसाद सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री रामशंकर प्रसाद सिंह ने किया।

८ अप्रैल को प्रातः ब्रह्मयज्ञ एवं हवन के बाद गुरुकुलीय शिक्षा के महत्व पर एक विचार-गोष्ठी आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल प्रबन्ध समिति के मंत्री श्री भारतभूषण त्रिपाठी ने की। श्री त्रिपाठी ने गुरुकुलीय शिक्षण पद्धति को विश्व की सर्वोत्तम शिक्षण पद्धति सिद्ध किया। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री महावीर प्रसाद ने गुरुकुल वैद्यनाथ धाम की शिक्षण व्यवस्था की रूप रेखा प्रस्तुत कर इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। श्री शिवजी राम ने नैतिक पतन के काल में इसे उपयोगी ही नही अनिवार्य बताया। अन्य वक्ताओं में श्री रामशंकर प्रसाद सिंह, श्री विद्यानन्द झा, श्री रूपेश मिश्र ने भी अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन श्री वीरेन्द्र प्रसाद सिंह ने एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अरविन्द कुमार वाजपेयी ने किया। तत्पश्चात प्राक्तन छात्र सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें एक सौ से अधिक प्राक्तन छात्रों ने भाग लिया ... गुरुकुल के संचालन में हर परिस्थिति में गुरुकुल प्रबन्ध समिति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का संकल्प लिया तथा गुरुकुल के उत्थान में अपने सहयोग का वायदा किया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज उदयपुर, राजस्थान

प्रधान – डॉ० प्रेम चन्द गुप्त
मन्त्री – डॉ० श्रीराम आर्य
कोषाध्यक्ष – श्री मीठालाल चौधी

आर्यसमाज दिलशादगार्डन, दिल्ली

प्रधान – श्री राजकुमार भंडारी
मन्त्री – श्री रामचन्द्र
कोषाध्यक्ष – श्री विनोद वालिया

महर्षि दयानन्द चौक का शिलान्यास



८ अप्रैल को आर्यसमाज मन्दिर, महरौली ने १३२ वें आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अपनी समाज में एक समारोह आयोजित किया और इसी अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती चौक का शिलान्यास भी श्री सज्जन कुमार जी (सांसद बाहरी दिल्ली) के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दूसरे मुख्य अतिथियों में चौधरी सतबीर सिंह (महापौर दिल्ली) उच्च कोटि के आर्य विद्वान/सन्यासी/प्रवक्ता/भजनीक और दक्षिण दिल्ली की अन्य समाजों के अधिकारी यथा प्रधान मंत्री और अन्य कर्मठ कार्यकर्ता एवं महरौली की जनता भी उपस्थित रहे। यह कार्य आर्य समाज महरौली की एतिहासिक उपलब्धि है।

राजकोट में आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग हाथीखाना राजकोट गुजरात में दिनांक ३० मार्च, २००६ गुरुवार को आर्यसमाज का स्थापना दिवस (चैत्र सुदि प्रथमा) निमित्ते, नवी आर्यसमाज (शाखा) न्यु मायाणी नगर में प्रातः ६ बजे पन्द्रह कुंडीय यज्ञ का आयोजन, खुले मैदान में, सभी यजमान, अतिथि विशेष राजकोट शहर के सांसद श्री वल्लभ भाई कथीरिया, मेयर श्री धनसुख भाई भंडारी बोर्ड के कार्पोरेटर श्री वटुक भाई आदि अनेक गणमान्य सदस्य उद्योगपति, कान्तीभाई वाछाणी, गोविन्द भाई पटेल, प्रशान्त भाई परमार विपिन भाई सोनी, आदि ने सभी ने मिलकर पवित्र वेद मंत्रों से पूरे, मायाणी नगर को सुगन्धित वातावरण में, वैदिक यज्ञों से स्वाहा–स्वाहा से गुजायमान किया।

प्रातः वेला में यज्ञोपरान्त आशीर्वाद विधि सम्पन्न हुई। सांसद श्री, मेयर श्री, स्वगत विधि, पगड़ी एवं फूलहार से हुई और आशीवर्चन के साथ शोभायात्रा प्रारम्भ हुई, सभी आर्य नर नारी एक साथ गीत गाते, जयकारों के साथ नारे लगाते, महर्षि दयानन्द के गुणगान करते हुए वापस उसी भूमि में जहां नवी आर्यसमाज बनानी है, इकट्ठा होकर आनन्दित होकर शांति पाठ किया। वैदिक अभिवादन के साथ सबने मीठा गौदूध पीते हुए सुबह का यज्ञ पूर्ण हुआ।

डॉ० शिवदत्त शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में सभी आर्यों को जागते रहने की चेतावनी दी, राष्ट्र और राज्य की अधोगति का मुख्य कारण यही है कि हम आपस में बंट गये हैं, टूट गये हैं, हमारे देश के इसके अपनी मातृभूमि के टुकटे, हिस्से नहीं होनें देंगे। अभी तक तेरह टुकडे हो चुके है, हम संकल्प ले कभी बंटने नहीं देंगे।

हम एक ईश्वर की पूजा करे, ईसा मसीह, पैगम्बर मुहम्मद की साधु संन्तों को छोड़कर (दलालों) निराकार ईश्वर की पूजा करें वही सर्व शक्तिमान, न्यायकारी और सत् चित् आनन्द स्वस्थ है। डॉ० जी ने आर्यसमाज के सातवें नियम में कहा – 'सबसे प्रीति पूर्वक यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

प्रचार कार्यों की धूम

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग हाथीखाना द्वारा वेद प्रचार हेतु जो निम्न प्रवृत्तियां हुई

(१) तारीख २६–३–२००६ रविवार १५ कुण्डी यज्ञ आर.एस.एस. के गुरू माधवराव गोलवरकर के जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

(२) चैत्र शुक्ल प्रथमा आर्यसमाज स्थापना दिवस निमित्ते नवी शाखा न्यू मयानी नगर में १५ कुण्डीय यज्ञ प्रातः ६ से ८ यज्ञ और प्रभात फेरी हुई।

सायम ४ से ७ हाथीखाना आर्यसमाज में बृहद यज्ञ, भजन, प्रवचन और प्रीतिभोज हुआ।

(३) तारीख २–४–२००६ रविवार सायम ५ से ७ कुम्भार वाड़ा नशेरी नं० १२ में गायत्री यज्ञ ११ कुण्डीय यज्ञ हुआ। ब्रह्मा श्री शिवदत्त शास्त्री के द्वारा यज्ञ और दान के महत्व को यज्ञमानों को बताया गया।

(४) तारीख ६–४–२००६ गुरूवार सायम ४ से ७, १५ कुण्डीय श्री रामनवमी निमित्ते अमर चौकर में सम्पन्न हुआ।

(५) तारीख ९–४–२००६ रविवार सायम ४ से ७ आशेपाली पार्क मवडी प्लाट में ११ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा टंकारा उपदेशक महाविद्यालय उपाचार्य रामदेव शास्त्री ने कहा यज्ञ करने से सब देवी देवताओं की पूजा हो जाती है।

आर्यों के तीर्थ स्थान प्रेरणामय श्रद्धाधाम

१. महर्षि जन्म स्थली – ग्राम टंकारा, मौरवी तहसील राजकोट, जनपुद गुजरात।

२. महर्षि ज्ञान स्थली – मथुरा – मथुरा नगरी।

गुरुवर विरजानन्द की दिव्य कुटिया का द्वार खटखटाया तो अन्दर से आवाज आई कौन है ? जिज्ञासु दयानन्द ने उत्तर दिया भगवान यही तो जानने के लिए आपके द्वार पर आया है। मैं कौन हूं ? आगे की घटना प्रायः सभी आर्य जनों को ज्ञात है।

३. पाखण्ड खण्डनी ओ३म् पताका स्थल – वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार।

वैदिक धर्म प्रचार क्षेत्र हरिद्वार महाकुंभ मेला में वर्तमान में वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार।

४. महर्षि स्मृति भवन – विषपान अमृत मान जोधपुर राज्य के दीवान की कोठी महर्षि स्मृति भवन।

५. सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली – नवलखा महल, गुलाब बाग उदयपुर, राजस्थान।

६. महर्षि निर्वाण स्थली – भिनाय राजा साहब की भिनय कोठी अजमेर एवं अस्थि विसर्जन आना सागर तट ऋषि उद्यान सरस्वती भवन अजमेर परोपकारिणी सभा।

आर्य बन्धुओ ! आर्यों के उपरोक्त प्रेरणामय श्रद्धाधाम भारत वर्ष में विद्यमान है। परन्तु हरिद्वार का महत्व विशेष है क्योंकि जब १९६६ में आर्यसमाज की स्थापना भी नहीं हुई थी, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरुवर विरजानन्द जी महाराज, जो उस समय आर्षविद्या के सूर्य थे, से शिक्षा प्राप्त कर गुरु–आज्ञा शिरोधार्य कर अवैदिक मत–मतान्तरों का पर्दाफाश करते विभिन्न प्रान्तों का भ्रमण करते, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल, महाराष्ट्र, गुजारात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, आदि स्थानों पर पौराणिक, ईसाई, मुस्लिम अवैदिक सम्प्रदायों के बड़े–२ विद्वानों दिग्विजयों से शास्त्रार्थ माध्यम से जनमानस में वैदिक सिद्धान्तों की श्रेष्ठता बताते अकेला ही वैदिक धर्म की पावन दिव्य पताका फहराते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रथम आगमन पाखण्ड की नगरी हरिद्वार के महाकुम्भ मेले में जहां सैकड़ों पौराणिक मठाधीशाचार्यों के भव्य अखाड़े शामियाने (तम्बू) क्षेत्र स्थानों के मध्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी हरिद्वार के सुविख्यात घाट (हर की पैड़ी) भीमगोड़ा क्षेत्र के पास ही ऋषिकेश मार्ग वर्तमान में भूपतवाला क्षेत्र में वैदिक धर्म हेतु 'पाखण्ड खण्ड्नी ओ३म् पताका फहराई। वही स्थान वर्तमान में वैदिक मोहन आश्रम के नाम से जाना जाता है। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के तत्वावधान में इसका संचालन होता है, जिसके प्रधान मान्यवर ज्ञानप्रसाद जी चोपड़ा (पदम्श्री) हैं।

आश्रम कक्ष में भव्य यज्ञशाला, गोशाला, पाखण्ड खण्डनी ओ३म् पताका स्तम्भ, भोजनशाला, अतिथिशाला है। आश्रम की सुव्यवस्था सभा के द्वारा नियुक्त संचालक श्री यशवीर जी आर्य द्वारा अति सुन्दर तरीके से की जाती है। प्रतिदिन प्रातः सायं यज्ञ, भजन, प्रवचन आदि का संचालन वयोवृद्ध आर्यबन्धु दीवान जी महोदय अतिनिष्ठापूर्वक करते है। आश्रम में अनेक साधक साधिका माताएं भी साधना करती हैं।

वैदिक मोहन आश्रम में विशेष विद्वानों साधक – साधिका महानुभावों का आगमन का समय–समय पर होता रहता है, जिनसे जिज्ञासु महानुभाव दिव्य प्रेरणाएं व मार्गदर्शक पाते रहे हैं।

– स्वामी केवलानन्द सरस्वती
वैदिक मोहन आश्रम
महात्मा हंसराज साधना कुटिर नं० ३७
(पाखण्ड खण्डनी ओ३म् पताका स्थल)
ऋषिकेश मार्ग – भूपतवाला क्षेत्र
हरिद्वार (उत्तरांचल)

ध्यान योग वैदिक दम्पत्ति निर्माण संस्कार शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम में पारिवारिक उन्नति के लिए आर्ष सप्रेष सादर आमंत्रित है। निःशुल्क ध्यानयोग वैदिक दम्पत्ति निर्माण संस्कार प्रशिक्षण शिविर। चतुर्वेद शतक यज्ञ (हृदय रोग चिकत्सा शिविर) सोमवार, दिनांक २६ जून से रविवार दिनांक २ जुलाई, २००६ तक।

योग साधना निर्देशन एवं यज्ञ ब्रह्मा : पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी के सान्निध्य में मुख्याधिष्ठाता, आत्मशुद्धि आश्रम।

शिविराध्यक्ष : श्री पं० खुशीराम जी आचार्य, वेद प्रचार अधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

कार्यक्रम

प्रात : ५ से ७ बजे तक अष्टांग योग का क्रियात्क प्रशिक्षण, आसन–प्राणायान का अभ्यास ७ से ६ बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन, वेदोपदेश १० से १२ बजे तक तक संस्कारों का प्रशिक्षण सायं ३ से ४ बजे तक योग दर्शन सत्यार्थप्रकाश स्वाध्याय।

४ से ६ बजे तक रू, भजन, प्रवचन ६ से ७ बजे ब्रह्मयज्ञ, आसन–प्राणायाम अभ्यास इस सुभावसर पर अनेकों उच्चकोटि के वक्ताओं, संन्यासी–महात्माओं को आमंत्रित किया गया है।

मनोहर भजनों, संगीत का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहेगा।

विशेष सूचना : हृदय एवं छाती रोग चिकित्सा–शिविर दिनांक १ जुलाई, प्रातः १० बजे से सायं ५ बजे तक दिल्ली, पंजाब एवं उ०प्र० नोएडा के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, हृदय व छाती रोग विशेषज्ञ डॉ० मुमुक्षु जी आर्य (एम०बी०बी०एस०, एम०डी०, एम०आर०सी०पी०) शिविर में सेवा प्रदान करेंगे। हृदय रोगियों से निवेदन है कि अपना पुराना रिकार्ड व ई०सी०जी० साथ लेकर आएं।

निवेदक

मुख्याधिष्ठाता – आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़,
दूरभाष : ०१२७६–२३०९६४, चलभाष : [illegible]

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं श्रीकृष्ण को भगवान् क्यों कहते हैं

इस रहस्य को निम्न श्लोक में समझें –

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, धर्मस्य, यशसश्रियः।
ज्ञानवैराग्योश्चैव, षष्णां भग इतीरणाः।।

भावार्थ : सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य, इन छह का नाम भग है, इनमें से जिनके पास एक भी भग हो तो ही उन्हें भगवान् कहा जा सकता है। श्री मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं योगेश्वर श्रीकृष्ण चन्द्र के पास तो सारे ही भग अर्थात् सम्पन्नता उपलब्ध थी, इसलिए उन्हें भगवान कह कर प्रायः पुकारा जाता है। इसलिए वह भगवान् तो थे, परन्तु ईश्वर नहीं, न ईश्वर के अवतार थे, वे महामानव थे।

यदि हम उन्हें एक महामानव (मुक्तात्मा) मानकर उनके जीवन का अनुकरण करेंगे तो हमारा मनुष्य जीवन सफल हो सकता है।

– स्वामी केवलानन्द सरस्वती

श्रीराम एवं श्रीकृष्ण के भक्तों से प्रश्न ?

राम ने तजा था राज, पिता के कथन काज।
तुम मात–तात बात, धूल में मिलाते हो।।

राम ने निषाद आदि, भीलों को लगाया गले।
तुम कह पतित, पैरों से, ठुकराते हो।।

राम ने किया था सती, सीता हित घोर युद्ध।
तुम लाज ललना, लुटेरों से लुटवाते हो।।

एक भी न काम धाम, राम से 'प्रकाश'।
किस बिरते पर अकड़ राम के कहलाते हो।।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2003-05
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 14-05-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2003-05 in NDPS on 11/12-05-2006

।। ओ३म्।। फोन : २८७४१३७०

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल (दिल्ली प्रदेश)

के तत्वावधान में

आर्य वीरांगना व्यक्तित्व विकास व आत्मरक्षण शिविर २००६

दिनांक : ३ जून से ११ जून २००६ तक

स्थान : राष्ट्रीय विरजानन्द अन्ध कन्या विद्यालय, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली-६२

इस शिविर के माध्यम से कन्याओं को शारीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, हस्तकला, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना ही हमारा उद्देश्य है। सभी आर्य भाई बहनों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र से कन्याओं को इस शिविर में भेजकर इसका लाभ उठाएं।

उद्घाटन : ३ जून २००६ शनिवार सायं ५ बजे
समापन : ११ जून, २००६ रविवार प्रातः १० बजे

नियम : १. वीरांगना की आयु कम से कम १३ वर्ष हो, २. ऋतु अनुसार अपना बिस्तर, अपने भोजन के बर्तन, टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लाएं, ३. शिविर का गणवेश २ जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी०टी० शूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं, ४. कोई भी शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु व पैसा साथ न लाए, ५. शिविर शुल्क १००/-- प्रति शिविरार्थी होगा, ६. सभी शिविरार्थी अपना नामांकन १ जून तक अवश्य करा लें तथा ३ जून २००६ शनिवार, दोपहर १२ बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जाए, ७. अस्वस्थ कन्याएं एवं जो अपना काम स्वयं करने में असमर्थ हों, कृपया शिविर में भाग न लें।

– डॉ० उज्ज्वला आचार्या, प्रधान संचालिका
(२५५२४२५४, ९८१०७४०८२२)

राष्ट्र की दिशा क्या हो ?

आर्यसमाज करोल बाग का ७८वां वार्षिकोत्सव अत्यन्त उत्साह पूर्वक १६ अप्रैल, २००६ को राष्ट्रीय सम्मेलन एवं ऋग्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन की अध्यक्षता प्रिसिंपल श्री चन्द्रदेव ने की। वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्र की दिशा क्या हो ? विषय पर अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि डॉ० भाई महावीर पूर्व राज्यपाल मध्य प्रदेश ने मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का विरोध करते हुए चेतावनी दी कि यदि ऐसा ही चलता रहा तो हिन्दु समाज को संघर्ष की राह अपनानी पड़ेगी। प्रो० जयदेव आर्य ने परिस्थितियों के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए आह्वान किया कि आर्यसमाज के नेतृत्व को जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद के विरुद्ध योजनाबद्ध तरीके से इन बुराईयों को जड से उखाड़ने के लिए प्रयास करना चाहिए। अन्य वक्ताओं में डॉ० महावीर एवं स्वामी वेदाश्रेयी चेतनानन्द जी ने वैदिक पथ के अनुसार ही राष्ट्र की दिशा निर्धारित करने की बात कही। आर्यसमाज के प्रधान कीर्ति शर्मा ने सम्मेलन का संयोजन किया तथा कहा कि इतिहास इस बात का साक्षी है जब कभी भी राष्ट्र दिशाहीन हुआ है उसका परिणाम भयावह हुआ है। इसलिए आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य को सदैव जागरूक रहकर अपनी बात को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाना चाहिए।

'रात की बात सितारों ने गगन बेच दिया।
चांदनी चांद की लाखों ने कफन बेच दिया।
आज अधिकार है तुम फूल चुनों या कांटे
फिर न कहना की बहारों ने चमन बेच दिया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४५ अंक ५ | २८ मई से ३ जून, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | ज्ये०शु०१
भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

हिमाचल प्रदेश में राजार्य सभा का प्रथम प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न

भारत के संविधान द्वारा वर्ग संघर्ष को प्रोत्साहन

राजार्य सभा के कई सम्मेलन आयोजित होंगे

गत १३ एवं १४ मई को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में राजार्य सभा का प्रथम प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, मन्त्री श्री विमल आर्य, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के विद्यार्य सभा के रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र शर्मा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, राजार्य सभा के संस्थापक श्री स्वामी इन्द्रदेव जी यति पीलीभीत, राजार्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रघुराज शास्त्री कानपुर, महामण्डलेश्वर आदरणीय महन्त श्री गंगादास जी वैरागी जालन्धर, महन्त श्री गोमतीदास जी जंडू सिंगा जालन्धर एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री आचार्य भगवान देव चैतन्य, हिमाचल में राजार्य सभा के संयोजक श्री ह्रदयेश आर्य, श्री आचार्य रामानन्द जी, श्रीमती सत्यप्रिया चैतन्य, श्रीमती सुनयना आर्या, श्री अखिलेश भारती, श्री ऋषि कुमार आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य आदि अनेक गणमान्य लोगों ने उत्साहपूर्वक इस सम्मेलन में भाग लिया।

वक्ताओं ने जोरदार शब्दों में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज राजार्य सभा का गठन अत्यन्त आवश्यक हो गया है। राष्ट्र में भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अत्याचार, आतंकवाद, अलगाववाद की भयंकर आंधी चल रही है, जो हमारी समस्त श्रेष्ठ प्राचीन परम्पराओं को तिनके की तरह उडाकर ले जा रही है। यदि आर्यसमाज ने राष्ट्र की ओर ध्यान नहीं दिया तो राष्ट्र छिन्न भिन्न हो जाएगा। अराजक तत्व बढते जा रहे हैं विधान सभाओं एवं संसद में अपराधी तत्व प्रवेश कर गए हैं। अतः कानून की धज्जियां उडायी जा रही हैं। शेष पृष्ठ ७ पर

बिजनौर में गोहत्या की घटनाओं के विरुद्ध आर्यसमाज द्वारा आन्दोलन

इण्डिया टी०वी० पर २२ मई रात्रि ६ बजे से प्रसारित एक कार्यक्रम के तहत उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में गायों के मेले का विवरण दिखाया गया। इस विस्तृत फिल्म में महाक्रूरता का चित्र प्रस्तुत करते हुए यह दिखाया गया कि बिजनौर के इस मेले में गायों की बिक्री बडे पैमाने पर होती है और ट्रकों में भर-भर उन्हें साहिबाबाद के एक स्थान पर ले जाकर हत्या की जाती है। इन दर्दनाक दृश्यों को देखकर देश की राष्ट्रवादी आर्य जनता का मन दहल उठा।

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री भारत भूषण त्रिपाठी ने अगले दिन इसकी सूचना सभामन्त्री श्री विमल वधावन तथा उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जय नारायण अरुण को दी तथा समस्त अधिकारियों ने इस जघन्य गो-हत्या काण्ड के विरुद्ध लामबन्द होने की योजना बनाई।

श्री त्रिपाठी ने एक पत्र द्वारा भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, मुख्य मन्त्री तथा जिला प्रशासन को इस घटना से अवगत करवाते हुए सख्त कार्यवाही की मांग की है।

यह सर्वविदित है कि पशु धन भारत की आर्थिक रीढ़ है। वर्तमान में जब गो-दुग्ध के अलावा इसके गोबर एवं गोमूत्र से चिकित्सीय औषधियां बन रही है, बायोफर्टिलाइजर, बायो-गैस तथा उच्चकोटि का कीटनाशक बन रहा है जो हमारी फसलों के लिए हानिरहित एवं बहुउपयोगी है। इसके अलावा पंचगव्य से ऐसी खाद तथा घोल का निर्माण हो रहा है जो भूमि में व्याप्त रासायनिक खादों के जहर को समाप्त कर भूमि की उर्वरा-शक्ति को बढ़ाता है। इसके साथ ही इससे धूप अगरबत्ती, साबुन, शेम्पु एवं सौंदर्य प्रसाधनों के साथ-साथ अनेक रोगों के उपचार हेतु औषधियों का निर्माण भी शुरू हो चुका है, जिससे ह्रदय, किडनी, लीवर, चर्म एवं अन्य रोग विश्वसनीय रूप से ठीक हो रहे हैं।

यह अकाट्य सत्य है कि हम जितनी राशि गायों को खिलाने में खर्च करते हैं उससे १५ से २० गुणा अधिक की सामग्री पंचगव्य के रूप में हमें प्राप्त होता है।

शेष पृष्ठ ७ पर

हरिद्वार गुरुकुल में कोई गबन नहीं

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा आर्य विद्या सभा पर अग्निवेश तथा उसके साथियों की गिद्ध दृष्टि सार्वदेशिक सभा पर हमले के बाद और तेज हो गई। अब षड़यन्त्रों में अग्निवेश का साथ देने वालों में वे भू-माफिया भी शामिल हो गए जिन्होंने ५ वर्ष पहले गुरुकुल की कीमती १४४ बीघा जमीन वेचने का दुस्साहस किया था।

विगत अगस्त माह में आर्य विद्या सभा पर इस गुण्डागर्दी के बादल जब छा रहे थे, तो उस समय विद्या सभा में यह प्रस्ताव किया गया कि पंजाब नेशनल बैंक में विद्या सभा में पड़ी २२ लाख रुपये की राशि को सुरक्षित रखने के लिए कुछ समय के लिए एक नया खाता उसी बैंक की उसी शाखा में खोल दिया जाए। नया खाता खोलकर उसमें से केवल गुरुकुल कर्मचारियों के वेतन तथा कुछ अन्य खर्चों का भुगतान किया गया। कुछ अवधि के बाद जब कानूनी/प्रशासनिक सुरक्षा का प्रबन्ध हो गया तो नए खाते की राशि पुनः पुराने खाते में जमा करवा दी गई। इस नए खाते का संचालन भी पुराने खाते की तरह सभा के प्रस्ताव के आधार पर श्री सुदर्शन शर्मा, श्री स्वतन्त्र कुमार तथा श्री महेन्द्र कुमार कर रहे थे।

इस साधारण से कार्य की दीनानाथ शर्मा नामक उस व्यक्ति ने गबन की परिभाषा में लाने का प्रयास किया जो स्वयं चरित्रहीन, १४४ बीघा भूमि को बेचने की रजिस्ट्रियां करवाने वाला व्यक्ति है। हरिद्वार की अदालत में दीनानाथ ने ही एक मुकदमा किया है जिसमें श्री सुदर्शन शर्मा, श्री स्वतन्त्र कुमार तथा श्री महेन्द्र कुमार को अदालत ने नोटिस भेज कर अपना पक्ष प्रस्तुत करने को कहा है।

आर्यजनों के सूचनार्थ है कि इस सम्बन्ध में कुछ अवांछनीय तत्वों के दुष्प्रचार से प्रभावित न हो। श्री राजसिंह ने भी किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित ऐसी मनगढ़न्त खबरों के आधार पर मुम्बई में दुष्प्रचार का प्रयास किया और ऐसी ही एक अर्ध सत्य पर आधारित खबर बनाकर आर्य सन्देश में भी प्रकाशित कर दी।

शेष पृष्ठ ७ पर

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (हरिश्चन्द्र गुरुजी) का गौरव समारोह

मानव जीवन बहुत ही दुर्लभ है। यदि इस जन्म में सत्य वैदिक ज्ञान न मिले एवं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ न किया जाए तो सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ है। मानवमात्र को वेदज्ञान की प्राप्ति कराने के उद्देश्य से प्राचीनकाल से ही ऋषि, मुनि, साधु, सन्त, समाजसुधारक, वैज्ञानिक एवं धर्मात्माओं ने अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। अपने अगाध वेदज्ञान एवं पवित्र जीवन से समाज को नई दिशा दी। अनेक ने अपना समग्र जीवन राष्ट्रसेवा, समाज सुधार तथा सत्य विचारों के प्रचार हेतु अर्पित किया। ऐसी ही सत्पुरुषों की माला को अपनी साधना व वेदधर्म प्रचार की धुन से सुगन्धित व सुशोभित करनेवाले साधक संन्यासी है स्वामी श्रद्धान्द जी सरस्वती, जिन्होंने पहले 'हरिश्चन्द्र गुरुजी' के रूप में राष्ट्र की छात्रशक्ति को सत्यवैदिक ज्ञान का पथिक बनाया और अब 'श्रद्धानन्द' के रूप में आर्य संगठन को सुदृढ़ बनाने हेतु अपनी सारी आयु समर्पित की। इन्हीं की साधना के फलस्वरूप आज वीरभूमि महाराष्ट्र में सर्वत्र वैदिक सिद्धान्त प्रसृत हैं। स्वामी जी के उपदेशामृत की बदौलत ही मानवता के पथ पर चलने वाले उनके अनुयायी स्वयं को कृतकृत्य मानते हैं। अपने गुरुजी के प्रति अगाध श्रद्धा रखनेवाले उनके सभी शिष्यों ने स्वामी जी का गौरव करने का विचार किया है, उनके इस विशाल गौरव के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रमों का आयोजन आगामी ६, १० एवं ११ जून २००६ को परली–बैजनाथ में किया गया है। स्वामी जी की ढलती आयु में उनके विद्यार्थियों द्वारा रखा गया यह 'गुरु गौरव समारोह (जीवितश्राद्ध)' से आर्य जगत् का भविष्य समुज्ज्वल व सुदृढ़ होगा, यह निश्चित है।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यसमाज परली वैजनाथधाम के सहयोग से परली–बैजनाथ (जिला बीड, महाराष्ट्र) के श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में सम्पन्न हो रहे इस गौरव समारोह के उपलक्ष्य में दिनांक ६, १०, ११ जून, २००६ इन तीन दिनों तक स्वामी जी के शिष्यों का परस्पर परिचय, स्नेह-सम्मेलन, वैदिक सिद्धान्त, दृढ़निष्ठा, वृद्धि तथा आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय विषयों पर मार्गदर्शन, चर्चासत्र आदि विभिन्न कार्यक्रम होंगे। अन्तिम दिन स्वामी जी को आर्य जगत् एवं उनके शिष्यों द्वारा २१ लाख रुपयों की भेंटनिधि अर्पण कर गौरव किया जाएगा। साथ ही इसी कार्यक्रम में स्वामी जी के आर्यसमाज के लिए समर्पित दो परम शिष्य आचार्य शिवमुनि जी एवं वेद विज्ञानमुनि जी का भी सम्मान होगा।

इस भव्य समारोह के लिए आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठित संन्यासी, विद्वान्, धर्मप्रचारक, भजनोपदेशक आदि को आमन्त्रित किया गया है। इनमें सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, आचार्य स्वामी बलदेवजी, स्वामी संकल्पानन्दजी, स्वामी व्रतानन्दजी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, प्रो० राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु', प्रो० डॉ० धर्मवीरजी, आचार्य ब्र० नन्दकिशोरजी, सांसद जयसिंगरावजी गायकवाड पाटील, पं० भानुप्रकाशजी शास्त्री आदि का समावेश है।

८७-वर्षीय स्वामी जी की अपूर्व साधना एवं तपस्या समर्थ नेतृत्व के फलस्वरूप ही महाराष्ट्र में आर्यसमाज के वेदप्रचार कार्यों को नई गति मिली है। देश के होनहार विद्यार्थियों व युवकों को सुसंस्कारित करने तथा उन्हें वैदिक विचारों का अनुगामी बनाने हेतु उन्होंने अपनी आयु के १६-वें वर्ष में 'नैष्ठिक ब्रह्मचर्य' का व्रत लिया और सभी के 'गुरुजी' बनकर जीवनभर विद्यार्थियों से सम्पर्क कर उन्हें एक ईश्वर व उसका शुद्ध स्वरूप, एक वेद धर्म, एक मनुष्य जाति, शुद्ध आचार विचार, ब्रह्मचर्य, व्यसनमुक्ति, नैतिकता आदि का पाठ पढाते रहें। स्वामी जी की अनोखी प्रचार पद्धति की बदौलत ही आज विभिन्न क्षेत्रों में उनके असंख्य शिष्य वेदानुकूल जीवन बीता रहे हैं। अनेक छात्र वैदिक विद्वान्, सुधारक, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् बनकर श्रद्धा व निष्ठा के साथ देश व विदेशों में वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजा रहे हैं।

अतः समस्त आर्यजनों से गौरवनिधि के लिए अधिकाधिक दानराशि भेजने तथा इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने का आवाहन श्रद्धानन्द गौरव समिति के अध्यक्ष डॉ० ब्रह्ममुनि, संयोजक श्री रवीन्द्र सालुंके, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर एवं सदस्यों ने किया है। गौरव निधि हेतु दिया गया दान ८० जी के अनुसार आयकर से मुक्त है।

वेद प्रकाश आर्य
एक और वैदिक धर्म का दीवाना बालक

आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार या देश रक्षा की खातिर कितने ही धर्म वेदी के दीवानों ने घर-बाहर की सांसारिक सुख-सुविधाओं को लात मारते हुए इस कांटों से भरे मार्ग का अवलम्बन किया है। कुछ लोगों को सामान्य परिस्थितियों में ही जब वैदिक धर्म की सेवा के माध्यम से अपनी आत्मा के उत्थान का मार्ग मिल जाता है तो वे बड़ी शान्ति के साथ जीवन में शुभ कार्यों को अपने परिवार और समाज में रहकर करते चले जाते हैं। परन्तु जब कभी परिजन पारिवारिक स्वार्थ के वश मन में उमड़ती तरंगों को उचित मार्ग दर्शन नहीं दे पाते तो वे तरंगे उफान बन कर छलांगें मारती हुई पारिवारिक सीमाओं को पार कर जाती है और एक आन्दोलित रूप में अपने मन की उमंगो-तरंगों को विधि द्वारा अपने लिए निर्धारित मार्ग पर ले जाती है।

११वीं कक्षा में पढ़ने वाला बालक वेद प्रकाश आर्य भी उत्तर प्रदेश के जिला सोनभद्र स्थित ग्राम महेवा वेद मन्दिर में अपने पिता श्री सरजू सिंह आर्य तथा अन्य परिजनों के बीच रहते-रहते वैदिक सिद्धान्तों में गोते लगाता रहता था। कई बार इस बालक ने पिता को उसे किसी गुरुकुल में दाखिल करवाने की प्रार्थना की जिसे अनसुना कर दिया गया। वह घर पर ही रहकर नियमित महर्षि दयानन्द की जीवनी का [illegible] नित्य सन्ध्या उपासना के द्वारा ईश्वर भक्ति में भी लीन रहता था।

१ अप्रैल, २००६ को उसने इन्हीं दो तीन पुस्तकों को साथी बनाकर ग्रह त्याग कर दिया। अब स्वाभाविक रूप से परिजनों को अधिक कष्ट होगा। परन्तु हमें कष्ट इस बात का है कि ऐसी उच्चात्मा प्रिय वेद प्रकाश किन कष्टों से जूझते हुए स्वाध्याय और ईश्वर भक्ति के मार्ग पर भी चल पा रहा है या नहीं। उसे घर से अच्छा अथवा घर के बराबर उचित वातावरण भी मिल पा रहा है या नहीं। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक पवित्र आश्वासन प्रियवर वेद प्रकाश आर्य को देना चाहता हूं कि जब कभी भी कोई संकट असहनीय होता प्रतीत हो तो एक बड़े भाई की तरह मुझसे किसी भी सहायता सहयोग के लिए किसी प्रकार का भी संकोच न करे। आपकी आगे शिक्षा आदि का प्रबन्ध भी किसी अच्छे गुरुकुल आदि में करके वैदिक धर्म का सेवक बनाने में मैं यथासम्भव सहयोग करने का प्रयास करूंगा। आपके परिजनों को तो अब केवल आपके कुशलक्षेम की कामना है।



– विमल वधावन आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा
६८११२२१०८३

पाठकों के पत्र

श्री विमल आर्य जी,

सादर नमस्ते।

ईश्वर सर्वत्र कुशलक्षेम रखे।

सार्वदेशिक साप्ताहिक अंक ४ में कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से ११ कि०मी० दूरी पर श्रद्धानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय खोलने की योजना से बड़ी प्रसन्नता हुई। हमारी इस बाबत चर्चा होती रहती थी कि इस प्रकार का कार्य सार्वदेशिक सभा क्यों नहीं करती। अतः आज मुझे संतोष हुआ। इससे भारत ही नहीं पूरे विश्व को लाभ होगा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष सार्थक होगा। अभी प्रस्तावना के लिए आपको एवं अन्तरंग सभा के सदस्यों तथा श्री सुदर्शन शर्मा जी को हृदय से धन्यवाद देता हूं। इसके साथ ही मैं एक निवेदन करनां चाहता हूं यदि आप चाहते हैं कि महर्षि के सैद्धान्तिक पक्ष को चिरस्थायी रखा जाए तो कृपया आप एक ऐसे संन्यासी से सम्पर्क बनाए रखें जो आर्यजगत में केवल एक ही हैं। मैंने उनके दर्शन किए हैं वे आर्यजगत से शुरू से ही सैद्धान्तिक लड़ाई लड़ रहे हैं। अभी उनकी आयु ६६ वर्ष है। मैं चाहता हूं कि उनकी ज्ञान ज्योति को एकत्र कर महर्षि के मिशन को आगे बढाया जाए। हो सके तो आप उनसे एक बार आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करें। उनका नाम एवं पता है – श्रद्धेय स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती

आर्यसमाज मन्दिर, हापुड़, जिला गाजियाबाद, उ०प्र०

इत्योम्।

भवदीय – अम्बाराम आर्य
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि०, कोटद्वार, उत्तरांचल

आर्यसमाज पश्चिम विहार का उत्सव सम्पन्न
अहंकार को मारने से ही पुण्यकर्म फलदायी होंगे

इस अवसर पर तीन दिन जागृति यात्रा (प्रभात फेरी) निकाली गई। समाज के महामंत्री श्री राजेन्द्र लाम्बा ने अवगत कराया कि २४ से ३० अप्रैल तक प्रातः यजुर्वेदीय महायज्ञ का अनुष्ठान बड़ी संख्या में लोगों ने श्रद्धापूर्वक किया। यज्ञ के ब्रह्मा पूजनीय स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती, सहयोगी–आचार्य राजेन्द्र, यज्ञ-संयोजन एवं वेदपाठ स्त्री आर्यसमाज पश्चिम विहार ने किया। स्वामी जी ने यज्ञ की महिमा बड़े विस्तारपूर्वक समझाई।

पू० स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब तक मनुष्य अपने अहंकार को नहीं मारता तब तक उसके सभी पुण्यकार्य निष्फल से हैं। जब मनुष्य प्रकृति को, मैं मेरे को जान लेता है उसे आत्म बोध हो पाता है।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज लोहाई रोड, फर्रुखाबाद

प्रधान : श्री नवीन चन्द्र मिश्र
मन्त्री : डॉ० हरिदत्त द्विवेदी
कोषाध्यक्ष: श्री राम प्रकाश वर्मा

परदा-प्रथा कितना आवश्यक

– डॉ० (श्रीमती) अनिला सिंह आर्या

भारतीय संस्कृति जो पुरातन है उसमें स्त्री को कभी भी परदे में छुपा कर नहीं रखा। स्त्री समाज में पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर समाज के दायित्व को निभाती थी। जिस भूमि पर वह स्वयं वर का चयन करती थी क्या वहां परदा हो सकता था? परदा प्रथा यहां मुगलों के आगमन के पश्चात् आरम्भ हुई। कालान्तर में वह समाज में जड़ जमा गई जो आज तक भी नहीं काटी गयी। समाज सेवियों ने कुप्रथा को समाप्त करने का अथक् प्रयास किया और परदे में घुटती महिला को खुले वातावरण में सांस लेने का अवसर मिला। परदा जो एक कुरीति बन गया था उसने परिवार के सदस्यों को परस्पर बैठकर वार्ता करने का अवसर खो दिया था। वह आज पुनः प्राप्त हो गया। फलस्वरूप सभी सदस्य किसी भी विषय पर स्वस्थ चर्चा कर सकते हैं।

समाज के कुछ परदा समर्थक बुजुर्गों की राय होती है कि बेटी और बहु में अन्तर है। मैं कहती हूं हां अन्तर तो है। बेटी तो विवाह पश्चात् घर से चली जाती है और बहु विवाह करके आपके घर की स्थायी सदस्य बन जाती है। फिर परदा कैसा ? कपड़ा अदब से पहना होना चाहिए, आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार होना चाहिए, आज्ञाकारी स्वभाव होना चाहिए, सेवा होनी चाहिए और क्या चाहिए ?

मैं यह भी पूछना चाहूंगी कि परदा ही कराना है तो विवाह पूर्व लड़की देखने की रस्म को समाप्त करना चाहिए। परिवार के बुजुर्ग पुरुष न तो लड़की को देखें और न ही उसकी तस्वीर देखें और सम्बन्ध पक्का करें। उस परिस्थिति में तो परदा कराना उचित है।

परदे का प्रभाव मुस्लिम देशों में आज भी इतना अधिक है कि फतवा जारी कर देते हैं और शायद उसी का प्रभाव था कि जम्मू कश्मीर में भी आतंकवादी संगठनों ने बुरका जरूरी है पहनना का ऐलान कर दिया। फरमान के खिलाफ दो युवतियां दिखीं तो सरेआम उनको मौत के घाट उतार दिया, गोली मार कर। यह भयंकर तानाशाही फरमान है। कपड़ा पहनना व्यक्ति की निजी पसन्द ना पसन्द है। उस पर कुछ भी थोपना सरासर नाइंसाफी हैं सर्दी गर्मी के अनुरूप महिला हो या पुरुष पोशाक पहनते ही हैं। वस्त्र धारण करना विकसित समाज की अनिवार्यता है। नग्नता का प्रदर्शन न हो इसलिए वस्त्रों की आवश्यकता है। लेकिन चेहरा ढांपने की प्रतिबद्धता केवल स्त्री के लिए हो यह कहां तक उचित है ?

स्त्री स्वयं परदे में रहना नहीं चाहती यह प्रथा उस पर थोपी जाती है। जरा-सा भी मौका मिलता है तो वह उसे उतार फेंकती है। यह कैसी प्रथा है परदे की जो अपनों से परिचय नही होने देती और गैरों से परायों से प्रगाढ़ परिचय सम्बन्ध घनिष्ठ बनने से रोक नहीं सकती।

मुझे तो परिवार टूटने का एक अहम कारण, परदा भी लगता है जो परस्पर भावनाओं को समझने में आड़े आता है। दूसरे शब्दों में कहूं तो खलनायक की संज्ञा उचित होगी जो एकल परिवार को बढ़ावा देता है। सभी अपनी ढ़पली अपना राग अलापते हैं। घुट-घुट कर कोई भी जीना नहीं चाहता फिर स्त्री ही क्यों ?

परदा जिसे आवरण भी कहते हैं किसी हद तक अच्छा भी है। घर की इज्जत या सम्मान को बनाए रखने के लिए बाहर वाले आगंतुकों से परदा झीना सा कोई बुरा नहीं है। अपने घर में हम कैसे रहते हैं क्या खाते हैं जरूरी नहीं यह बातें बेपरदा हों। तभी तो प्रत्येक घर में बैठक होती है जिसके दरवाजे से अन्दर कोई नहीं जा सकता। परदे से ढक दीजिए अपनी अपने परिवार की कमियों को। लेकिन इन्हें दूर करने का प्रयास भी कीजिए।

परदा डाला जाता है उस पर जो दर्शनीय न हो, जिसमें दुर्गुण या दुर्गन्ध हो। परदा डालकर उन पर भूल जाइए जिससे आज प्रभावित होता हो। इन्सान को बन्द परदे में रखने से वह मानसिक रूप से तो कमजोर होता ही है शारीरिक रूप से भी अनेक बीमारियों का घर हो जाता है। जिस प्रकार अच्छी फसल के लिए हवा, धूप, रोशनी, शुद्ध पानी चाहिए उसी प्रकार स्वस्थ शरीर को भी इनकी आवश्यकता है जो परदे में बन्द करने से नहीं प्राप्त हो सकती। खुला आसमान पाना स्त्री क मौलिक अधिकार है और व उसको न छीना चाहिए।

— कृष्णा नगर, गली नं०
मोदीनगर, उ०प्र

महर्षि दयानन्द प्रणीत वैदिक कर्मकाण्ड की धारा

– ईश्वर दयाल माथुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा समेकित कर्मकाण्ड की धारा जयपुर नगर में फरवरी, २००६ में जिस वेग से बही, वह एक कीर्तिमान है। यह सम्भव हुआ नगर की समस्त आर्यसमाजों के संगठित प्रयासों के बल पर। यही नही आर्यसमाज से इतर एक संख्या वनवासी कल्याण परिषद् ने अपने एक उत्सव में वैदिक (आर्य) पद्धति के श्लोक एवं सूचियों को अपनाया।

फरवरी मास २००६ में जयपुर नगर में हुए कार्यक्रमों की झलक इस प्रकार श्रृंखलाबद्ध देखी जा सकती हैं –

१. संस्कृति - २ उत्सव : सरसंघचालक (स्व०) श्री गुरु गोलवलकर जन्म शताब्दी वर्ष मनाने के लिए संस्कृति – २ का उद्घाटन सत्र ५/२/२००६ को सवाई मानसिंह अस्पताल सभागार में आयोजित किया गया। समारोह में ४२ देशों के धर्माचार्य–प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मंच संयोजक, विशिष्ट अतिथि एवं भारत की ओर से भाग ले रहे माधवाचार्य (काशी) ने सम्बोधन में निम्नलिखित वैदिक (आर्य) प्रार्थना पद्धति के श्लोकों और सूक्तों का वाचन किया –

१. **'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता।'**
२. वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना।
३. संगठन सूक्त।

२. द्वितीय-शनिवासरीय पारिवारिक सत्संग : दिनांक ११–२–२००६ को वैदिक पारिवारिक सत्संग का आयोजन। पण्डित इन्द्रदेव के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ जबकि ओजस्वी एवं सारगर्भित प्रवचन डॉ० रामपाल विद्याभास्कर के हुए।

३. शिव संकल्प एवं 'योगाधिरित शरीर और आत्मा कार्यशाला : मानसरोवर, के ही सन्त टेऊंराम पार्क में १३.०२.२००६ से १६–२–२००६ तक प्रति प्रातः यशपाल यश द्वारा शरीर और आत्मा पर कक्षाएं आयोजित की गईं। प्रातः और सायं हुए शिव–संकल्पया में आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह ने अपने साथी लेखराम शर्मा के साथ भजनों से समा बांधा। १६–२–२००६ रविवार को शिव संकल्प यज्ञ पण्डित हन्द्रदेश शर्मा के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। महिला समाज मानसरोवर की श्रीमती सुधा मित्तल व सन्तोष नारायण ने प्रभावी भजन प्रस्तुत किए एवं श्री भूपेन्द्र सिंह ने नारी शौर्य गाथा की प्रस्तुति दी। सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन की अध्यक्षता श्री विजयसिंह भाटी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने की। नगर के अन्य समाजों के प्रधान एवं मंत्रियों ने भी अपने विचार रखे। कारगिल के अमर शहीद अभियन्यु सिंह की माता श्रीमती माधुरी सिंह का सम्मान भी हुआ। टेऊंराम पार्क महिला समिति की प्रधान श्रीमती शीला गुप्ता द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान को ११००/– रुपये की राशि भेंट की गई।

४. स्वामी दयानन्द दिवस : आर्यसमाज मोतीकटला जयपुर में दिनांक २३–२–२००६ को स्वामी दयानन्द का जन्म दिवस 'जातिवाद के विरुद्ध जंग' के रूप में मनाया गया। यज्ञ, भजन एवं प्रवचन की प्रस्तुति प्रभावोत्पादक रही। डॉ० रामपाल शास्त्री के प्रवचन सारगर्भित हुए। समारोह की अध्यक्षता ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति ने की जबकि विशिष्ट अतिथि डी०ए०वी० स्कूल प्राचार्य एम०एल० गोयल मुख्यवक्ता रहे। सम्मेलन को सर्वश्री डॉ० मुरारी लाल पारीक, भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर, यशपाल यश एवं ईश्वर दयाल माथुर ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर जातीय बन्धन तोड़क विवाह सूत्र में बंधने वाले ग्यार जोड़ों का प्रशस्ति-पत्र और प्रतीव चिन्ह देकर सम्मान किया गया

आर्यसमाज मोतीकटला व प्रधान कैशव देव वर्मा ने उपस्थि जनों का स्वागत और मंत्री अशोव शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया

५. ऋषि दयानन्द बोधोत्स : २६–२–२००६ रविवार क डी०ए०वी० स्कूल वैशाली नग के विस्तृत प्रांगण में बोधोत्सव व आयोजन को अभूतपूर्व कह जाएगा। आयोजन के प्रमुख चर थे नगर शोभायात्रा, १५१-कुण्डी स्वस्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रत्येव कुण्ड से चार–चार जोड़ों न आहुतियां अर्पित की। गुजरा राज्य के राज्यपाल महामहि नवलकिशोर शर्मा एवं राजस्था विधान सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्र सिंह ने भी यज्ञ में आहुतियां अर्पि की।

डॉ० रामपाल विद्याभास्कर व ब्रह्मत्व में आचार्य इन्द्रदेव ने सर्वश्र रविदत्त मेधार्थी, पण्डित कल्याा देव शर्मा, जानकी प्रसाद, वासुदे शास्त्री के ओजस्वी मंत्र पाठ व साथ यज्ञ सम्पन्न कराया।

मध्याह्न सत्र में दयानन्द दर्शन पर व्याख्यान माला क सम्बोधित करने वाले (इतर आर समाजी) पण्डित कलानाथ शास्त्री (जयपुर), पूनम सूरीजी (दिल्ली) डॉ० सतीश प्रकाश (अमेरिका) ए प्रो० सुरेन्द्र कुमार (रोहतक) थे कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि म म. पण्डित नवल किशोर शर्मा ए अध्यक्ष वि. स. एवं कार्यक्रम श्रीमत सुमित्रा शर्मा ने भी अपनी वक्तृत से अभिभूत किया।

आयोजन निस्सदेह अभूतपूर्व था जिसे नगर के सभी समाज एवं आर्यसमाजियों ने सफल बनाया।

— १५७, सन्तोष नगर
न्यू सांगानेर रोड, जयपुर

वेश उवाच - शुद्धि का बखेड़ा हटाओ और आर्यसमाज को बढ़ाओ ?

– मानवेश पुरी

देश, धर्म व दयानन्द–द्रोही 'वेश-जनों' ने अपने साथ-साथ अन्य आर्यजनों को भी धर्म-द्रोही बनाने हेतु यह एक नया नारा दिया है – 'शुद्धि हटाओ समृद्धि पाओ'। सोनिया, पोप, पादरियों व मौलवियों के इशारों पर नाचते हुए आर्यसमाज को तोड़ने हेतु वेश-जन अब यह भी कहने लगे है कि 'ईसाई और मुसलमानों को शुद्ध किए बिना ही आर्यसमाज का सदस्य बनाना चाहिए।' जिससे कि आर्यसमाज की संख्या भी बढ़ेगी और साख भी।' अपना तथाकथित तर्क देते हुए वे कहते हैं कि, 'उनका भी खून लाल है, उनको भी आपकी तरह भगवान ने बनाया है एवं वे भी आपकी तरह इन्सान हैं।

इसमें दो मत नहीं कि धरती का प्रत्येक ईसाई या मुसलमान ही नहीं अपितु प्रत्येक 'इन्सान' भगवान् के हाथ का ही बनाया हुआ है। क्या ब्रह्मा के समय में राक्षस, शिव देवता के समय में दानव, राम के समय में रावण व योगेश्वर कृष्ण के समय में कंस एवं दुष्ट दुर्योधन भी तो ईश्वर निर्मित ही थे। क्या पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महर्षि दयानन्द को विष व खंजर, गोली से मारने वाले अब्दुल रशीद जैसे लोग ईश्वर निर्मित नहीं थे ? क्या भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, रानी झांसी, मदन लाल ढींगरा आदि क्रान्तिवीरों को तड़पा-तड़पाकर मारने और देश पर अत्याचार करने वाले गोरे अत्याचारी डायर जैसे दरिन्दे मानव के रूप में न थे ? क्या नागालैण्ड व कश्मीर में स्वायत्ता के नाम पर बगावत करने वाले मुस्लिम व ईसाई देशद्रोही लोग इन्सान की शक्ल में हैवान नहीं है ? क्या मुशर्रफ, गिलानी, लादेन और मो० हुसैन जैसे आतंकवादी शक्ल इन्सान की शक्ल के नहीं हैं ? क्या इन सब लोगों को भी अग्निवेश द्वारा बनाई गई झूठी अन्तरंग सभा की सूची की तरह आर्यसमाज में मिला लिया जाए ?

यदि अग्निवेश को उन्हें रखने में शर्म नहीं आयी तो फिर उनकी अपेक्षा कहीं अधिक शुद्ध अपने आर्यों पर ही गुण्डागर्दी से हमला करके सार्वदेशिक पर कब्जा करने में शर्म क्यों नहीं आयी ? बुद्धिमन्द वेश महोदय ! क्या यह सच नहीं है कि उन गो-मांस खाने वाले, चौथे तथा सातवें आसमान पर नकली भगवान् को मानने वाले, बाईबल व कुरान के अनुसार गैर ईसाई व मुसलमानों का कत्ल करने वाले व भारत से गद्दारी करने वाले लोगों को यदि तुम्हें अपनी झूठी सार्वदेशिक अन्तरंग सभा में रखने से तनिक भी संकोच नहीं, तो फिर उनकी अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ दिल्ली कार्यालय से इटली पोप की सहायता से आर्य-जनों को हटाने में क्यों संकोच नहीं हुआ।

आर्य-जन गम्भीरता से विचार करें कि यदि मति भ्रष्ट वेश जनों की बात मानकर बिना शुद्ध किए यूं ही किसी मुसलमान अथवा ईसाई को समाज में प्रविष्ट करना उचित है तो फिर इसका अर्थ यह होगा कि –

१. बिना शुद्ध हुए बाईबल की आज्ञा पर चलने वाले ईसाई 'आर्य सदस्यों द्वारा यज्ञवेदी में गोघृत की आहुति देने के स्थान' पर यीशू के आदेशानुसार गाय के बछड़े को काटकर उसके खून को वेदी पर छिड़कना भी आर्यसमाज को उचित ठहराना होगा।

२. बिना शुद्ध हुए मुसलमान सदस्यों को भी कुरान के अनुसार आर्यसमाज में ईद के अवसर पर गाय की बलि देना भी आर्यसमाज को उचित ठहराना होगा।

३. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों को भी कुरान व बाईबल के अनुसार अनेक स्त्रियों से विवाह करना, पिता को शराब मिलाकर उसके द्वारा पुत्रियों का सन्तान प्राप्त करना तथा किसी भी पत्नी से दिल भर जाने पर उसे कभी भी तलाक देना आर्यसमाज को उचित ठहराना होगा।

४. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों को बाईबल व कुरान के अनुसार हैवन, तथा जन्नत के समान शराब पीना तथा एड्स फैलाने वाले समलैंगिक लौंडे बाजी के कुकर्म को भी आर्यसमाज के द्वारा उचित ठहराना होगा।

५. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों को मोहम्मद व ईसा के आदेश से गैर ईसाई मुसलमानों को कत्ल करने का राक्षसी कार्य भी आर्यसमाज को उचित ठराना होगा तथा स्वयं उनके हाथों मरने हेतु तैयार रहना होगा।

६. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों द्वारा धरती को चपटा, सूर्य को उसके गिर्द चक्कर काटने वाला व आकाश को खम्बों पर खडा रहने वाली अवैज्ञानिक मान्यता को भी आर्यसमाज द्वारा उचित ठहराना होगा।

७. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों की मरने के पश्चात् कब्र खोदने वाली मान्यता को भी आर्यसमाज को उचित ठहराना होगा।

८. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों की सर्वव्यापक निराकार ईश्वर की मान्यता के विरुद्ध चौथे व सातवें आसमान के तख्त पर बैठे हुए खुदा की मान्यता को आर्यसमाज द्वारा उचित ठहराना होगा।

९. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्या औरतों को बुर्के में आने और अपने में बाईबल के अनुसार एडम ईव की सन्तानों अर्थात् भाइयों से बहनों का विवाह करना और एक ही पसली होने की मान्यता को आर्यसमाज द्वारा उचित ठहराना होगा।

१०. बिना शुद्ध हुए ईसाई, मुसलमान सदस्यों द्वारा बाईबल व कुरान के अनुसार कश्मीर व नागालैण्ड के समान गैर ईसाई मुसलमान प्रदेशों को आतंकवाद के द्वारा मुस्लिम ईसाई स्थान बनाना भी आर्यसमाज द्वारा उचित ठहराना होगा।

देश, धर्म व दयानन्द भक्त आर्यो ! क्या आप ऊपर लिखित सब परिणामों को पढ़कर किसी ईसाई, मुसलमान विधर्मी को बिना शुद्ध हुए आर्यसमाज का सदस्य बनाना उचित समझेंगे ? यदि कोई मूर्ख वेश यह कहे कि वे लोग आर्यसमाज में आने पर अपने बाईबल व कुरान को छोडकर वेद के अनुसार ही कार्य करेंगे, तो हम यही कहना चाहेंगे कि इसी का नाम ही तो शुद्धि है। यदि शुद्धि करने में डर नहीं तो फिर 'शुद्धि के नाम से' डर क्यों है ? जैसे कि यदि स्नान करने में डर नहीं तो फिर स्नान करके आइए, ऐसा सुनने में डर क्यों है?

अत्यन्त लज्जा का विषय है कि जो वेश-व्यक्ति इतना पढ़ने लिखने के पश्चात् भी सस्ती लोकैषणा एवं पदलोलुपता के कारण इतना गिर जाए कि वेद व देव दयानन्द के अनुसार लिए हुए संन्यास की ही हत्या करने लगे। देश व धर्म हित में इनका जितना भी विरोध किया जाए उतना ही कम है। आर्यजनों को केवल लच्छेदार उपदेश, आकर्षक वेश एवं मीडिया के मोह को त्यागकर अपना नेता किसी वेद, देश व दयानन्द प्रेमी को ही चुनना चाहिए।

महर्षि दयानन्द के वैदिक आर्य जागें और पंच महायज्ञ, वर्णाश्रम धर्म, गो-सेवा, बिना दहेज विवाह व वानप्रस्थ का अनुष्ठान करें एवं मांस, शराब, धूम्रपान, छुआछूत, परस्पर झगडों का त्याग करके साधना, दान व सेवा हेतु समाज में जाएं और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करके नए आर्य सदस्यों के निर्माण हेतु शुद्धि का चक्र चलाएं। इस कार्य की सफलता हेतु गुरुकुलों व वानपस्थ आश्रमों का उचित सम्मान करें। जीवनदारी प्रचारकों का सत्कार करें व वानप्रस्थ लें।

– पूर्व सैक्शन, ऑफिसर
भारत सरकार

पावरफुल पोजीशन में है आज की स्त्री

गुरुकुल कन्या महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में डीजीपी ने कहा

हरिद्वार। प्रदेश की डीजीपी कंचन चौधरी भट्टाचार्य ने कहा कि नए जमाने में स्त्री केवल पूजा की वस्तु बनकर नहीं रह सकती। बदलते विश्व में उसे समानता की आवश्यकता है। नारी को अवसर मिले तो आगे बढ़कर वह विश्व का भाग्य बदल सकती है। स्त्री को किसी भी सूरत में कमजोर नहीं समझना चाहिए।

प्रदेश की पुलिस महानिदेशक कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव को मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित कर रही थी। उन्होंने कहा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के जिन मुद्दों को छात्राओं ने अपनी नृत्य नाटिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया, उन मुद्दों को छोड़ना नहीं है। उनके खिलाफ लड़कर न्यायिक व्यवस्था बनाने में अहम् सहयोग करना आज की नारी के लिए आवश्यक है।

उन्होंने कहा आज की स्त्री पावरफुल पोजीशन में है। वह सब कुछ बदल सकती है केवल अपने आपको बदलने की आवश्यकता है। नारी को अपने को कम करके नहीं आंकना चाहिए। आज स्त्री और पुरुष दोनों के योगदान से देश चलेगा।

उन्होंने कहा अपने जीवन में उन्होंने केवल साधन सोचे हैं, मेहनत की है। नतीजे के बारे में तो सोचा ही नहीं। उन्होंने कहा कि केवल ईमानदारी के साथ मेहनत करते रहना चाहिए। कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने कहा आज की स्त्री को इतनी ऊंचाइयों तक पहुंचाने का मार्ग स्वामी दयानन्द ने ही प्रशस्त किया था।

उपकुलपति प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने कहा वेदवाणी के अनुरूप आज स्त्री का रूप हमारे सामने उपस्थित है। प्राचार्य डॉ० संगीता विद्यालंकार ने श्रीमती चौधरी के सम्मान में अभिनन्दन पत्र पढ़ा तथा उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

यज्ञोपरान्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। हिमाचली लोकनृत्य, पंजाब का गिद्दा, नारी एक शक्ति पर लोकगीत, सरस्वती वन्दना, बापू का चरखा नाटिका, संस्कृत में शाकुंतल नाटक का प्रसंग, डांडिया, नारी महान एक भाषण, देश के विभाजन के समय का एक नाटक 'बात तब की है' की भावपूर्ण सशक्त प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

समारोह में छात्राओं के अतिरिक्त, एसपी जगतराम जोशी, डा० टीडी वैला, कुलसचिव प्रो० एके चोपड़ा, डीन डॉ० महावीर अग्रवाल, डॉ० राजकुमार रावत, एन०के० ग्रोवर वित्ताधिकारी, शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ० विनोद शर्मा, मंत्री डा० पंकज मदान, वी०के० सिंह, करतार सिंह सम्पदा अधिकारी, जनसम्पर्क अधिकारी डॉ० प्रदीप कुमार जोशी, शिक्षणोत्तर यूनियन के अध्यक्ष विजेन्द्र कुमार, मंत्री रमाशंकर, महावीर यादव, महेन्द्र सिंह नेगी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ० नमिता जोशी तथा छात्रा नीलम यादव ने संयुक्त रूप से किया।

समाज प्रगति कर रहा है अतः फैशन की दौड़ में नग्नता को बुरा न मानें ???

– आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक'

जी हां घिसे-पिटे पुराने विचारों को छोड़ों और जमाने के साथ चलो। कोई औरत यदि फैशन के कारण कम वस्त्रों में अर्धनग्न भी दिखाई दे तो उसे बुरा मत मानो और बुरा मत कहो। घर की बहुओं और बेटियों को फैशन के विरुद्ध शरीर को ढकने वाले वस्त्र पहनने हेतु बाध्य करके न तो स्वयं दुःखी रहो और न ही उन्हें दुःखी करो। यदि अपने पिछड़े हुए विचारों के कारण तुम्हें महिलाओं को वैसा देखना अच्छा नहीं लगता तो घर और सड़क पर नजरें झुकाकर चलना सीखो। यदि दूरदर्शन पर तुम्हारे मनपसन्द कार्यक्रम के बीच में किसी अर्धनग्न महिला या लड़की का विज्ञापन तुम्हें दुःखी करता हो तो उन्हें दुपट्टा ओढ़ने की शिक्षा न देकर स्वयं दूरदर्शन के सैट पर दुपट्टा डालकर देखने का अभ्यास करो। यदि तुम्हें इससे भी शान्ति न मिले तो फिर इन नगरों और ग्रामों को छोड़कर कहीं निर्जन वन में रहने का अभ्यास करो। परन्तु खुदा के वास्ते फैशन की दौड़ में प्रगति पथ पर आगे बढ रही अधिक से अधिक कपड़े उतारने वालियों के मार्ग में बाधा मत बनो। ध्यान दो कि यदि तुम स्वयं अपने परिवार हेतु अंग प्रदर्शन की प्रगति नहीं कर सकते तो कम से कम उन्हें मत रोको।

प्रगति, प्रगति, प्रगति क्या प्रगति का या नए उन्नत समाज का प्रतीक मात्र नग्नता ही है और कुछ विशेषता नहीं ? इतिहास और गवेषक मीडिया तो यह बताता है कि जब तक मनुष्य अनाड़ी, अज्ञानी और असभ्य रहते तब तक अर्धनग्न रहते हैं और जब वे पढ़ लिख कर सभ्य हो जाते हैं तब वे वस्त्र पहनना प्रारम्भ कर देते हैं। इससे तो यही सिद्ध हुआ कि 'नग्नता' प्रगति या विकसित या विकासशीलों की नहीं अपितु घोर पिछड़े हुए असभ्य लोगों की ही पहचान है। हम अनेक सोचने व विवाद में पड़ने की अपेक्षा बिल्कुल साधारण दृष्टि से देखें कि कपड़े उतारने में अधिक योग्यता व शक्ति का प्रयोग होता है या पागल की तरह अथवा अबोध बालक की तरह कपड़े उतार कर फेंक देने में। आज भी सड़कों पर भीख मांगने वाले अनपढ़ गंवार लोक कटे-फटे व कम वस्त्रों में गुजारा करते हैं तथा इनसे भी अधिक निम्न स्थिति के बुद्धिहीन पागल लोग तो वैसे ही नंग-धड़ंग पड़े रहते हैं, भले ही वे स्त्रियां हों अथवा पुरुष। हम नित्य अपने परिवारों में देखते हैं कि जब तक बच्चे कम ज्ञान रखते हैं तब तक नंगे ही इधर-उधर घूमते रहते हैं, जैसे ही वे कुछ पढ़ लिख जाते हैं नंगा रहने में शर्म अनुभव करते हैं। न तो वे सब के बीच नहाते हैं और न ही वस्त्र बदलते हैं। बाल्यकाल में यह भी देखा जाता है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियां अधिक लज्जा अनुभव करती हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि लज्जा नारी का स्वाभाविक गुण है। यह और बात है कि हम उन्हें फैशन के नाम पर समझा-बुझाकर बाजुओं और टांगों से कुछ कटे हुए वस्त्र डालकर कुछ नंगा रहने का आदि बना दें। एक बार जब इसी प्रकार के कटे हुए वस्त्र पहने हुए एक बालिका को मैंने कहा कि ओह ! यह क्या तुम्हारे तो कपड़े फटे हुए हैं, इसमें से तो तुम्हारी सारी भुजाएं और टांगे दिखायी देती हैं, तो उसने उत्तर दिया नहीं, मेरी मम्मी कहती हैं कि ये तो फैशन है। एक बात और विचित्र लगती है कि फैशन में औरतें अधिक से अधिक कपड़े उतारती जाती हैं और पुरुष सूट के ऊपर जैकेट और उसके ऊपर टाई व कोट पहनता जाता है ?

मानवता के किस ग्रन्थ में लिखा है कि अधिक नग्न होना ही फेशनेबल या प्रगतिशील होने की मुख्य पहचान है ? आज तक तो देशीय व विदेशी लोगों के द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से यही पढ़ने को मिला है जैसे-जैसे मनुष्य ने प्रगति की वैसे वैसे उसने कपड़े पहनने प्रारम्भ किए। सत्यता तो यह है कि ज्ञानवान होते हुए भी नग्नता का प्रदर्शन करना अधिक सभ्य, अधिक पठित, अधिक विकसित अथवा अधिक फैशनेबल होने की पहचान नहीं अपितु अधिक कामुकता तथा निर्लज्जता की पहचान है। आइए आपको प्रमाण के लिए ले चलते हैं विश्व कामगुरु श्री वात्स्यायन के पास जिनके नाम पर अनेक चलचित्र अंग्रेजी व हिन्दी में बन चुके हैं और अनेक ग्रन्थ भी लिखे जा चुके हैं। धैर्यपूर्वक प्रेम से उठाइए और ध्यान से पढ़िए उनके 'कामसूत्र' सैक्स फार्मूलों को। श्री वात्स्यायन जी अपने इस विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ में नितान्त स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं – 'जो औरत सड़क या चौराहे पर अपने शरीर के वक्षस्थल, उदर, नाभि या जंगा आदि अंगों का प्रदर्शन करते हुए दिखाई दे उसे वैश्या, सेक्स वर्कर समझ लेना चाहिए। क्यों ? नग्नता प्रेमियो ! आपके अति प्रिय विषय के प्रकाशक श्री वात्स्यायन जी ने शरीर के गुप्तांगों के प्रदर्शन को प्रगति-पूर्ण उच्चस्तरीय, सम्पन्न, अधिक शिक्षित अथवा सुशिक्षित नहीं कहा अपितु आचारहीन, चरित्रहीन, वेश्या या रण्डी कहा है। क्या आप चाहेंगे कि अब भी इस झूठ और चरित्र को नष्ट करने वाली तथा औरतों को निर्लज्जता के मार्ग पर चलाकर बलात्कार की घटनाओं को प्रेरणा देने वाली अर्धनग्नता की दौड़ को चालू रखा जाए ? क्या आप चाहेंगे कि इस फैशन की अन्धी बत्तमीज दौड़ में सर्वप्रथम रहने हेतु आप भी अपनी पत्नियों, पुत्रियों या बहनों को नग्न होने दें ? क्या नग्नता या अर्धनग्नता का अन्ध अनुमोदन करने वाले बुद्धिमन्द लोग यह 'चाहेंगे कि चरित्र व गृहशान्ति नाशक इस फैशन की तथाकथित प्रगतिशील दौड़ में विश्व-विजयी बनने हेतु उनकी औरतें या लड़कियां घरों के स्नानागारों को छोड़कर फुटपाथ पर ही स्नान करना शुरू कर दें ? क्या पशुओं के तुल्य और भी कुछ बिना पर्दे के करना ही फैशन व प्रगतिशील तथाकथित झूठे समाज की श्रेष्ठता है ? नग्नता का समर्थन करने वाले कामार्थ में डूबे मीडिया व मि० महेश भट्ट जैसे लोगों को भी हम ऊपर बताए गए कार्यों का निमन्त्रण दे रहे हैं, क्योंकि वे सदा ही औरतों के अधिक से अधिक नग्न रहने की वकालत करते हैं और उसे प्रगति का एक महान् लक्षण भी मानते हैं। क्या वह अपनी माता, पत्नी या बेटी की पूर्ण प्रगति हेतु अपने समक्ष सार्वजनिक रूप से प्राकृतिक रुपेण दिखाना पसन्द करेंगे ? यदि अपनों के लिए ऐसा सुनने में ही लज्जा आती हो तो फिर और महिलाओं के नग्न रहने का समर्थन करना बन्द कर दें। यही आत्मा का धर्म है जो कुछ तुम अपने या अपनों के लिए नहीं चाहते वह व्यवहार तुम औरों के लिए भी मत चाहो।

कुछ तथाकथित बुद्धिमन्द शिक्षित लोग नग्नता का बिना विचार समर्थन करने हेतु ईश्वर द्वारा नग्नपैदा होने वाले नवजात शिशु का उदाहरण देते हैं। ऐसे लोगों का यह तर्क है कि मनुष्य को भगवान् ने मां के गर्भ से नग्न ही पैदा किया है अतः आगे भी नग्न ही रहना चाहिए। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि हमें जन्म से 'बाल' देकर भेजा है अतः बाल 'केश' कभी नहीं कटवाने चाहिए। ऐसा करना वास्तविकता से दूर जाना है। इन शंकाओं का बुद्धि व तर्कपूर्ण यही समाधान है कि मनुष्य संसार के अन्य प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। शेष प्राणी मुख्यरूप से भोगयोनी में हैं और हम कर्मयोनी में सृष्टि के आदि में भगवान् ने हमें वेदज्ञान दिया है जिससे कि हम सब प्रकार की उन्नति कर सकें जो कि पशु-पक्षी नहीं कर सकते, अतः ईश्वर ने मनुष्य को अधूरा व शेष पशुओं को पूरा पैदा किया है। मनुष्य स्वयं अपनी बुद्धि का विकास करके महान् बनें इसलिए भगवान ने जन्म से उसे वस्त्र नहीं दिए, जिसके बनाने की विधि ईश्वरीय वाणी वेद में वर्णित है। परन्तु स्वतः विकास न कर सकने वाले पशु पक्षियों को खाल व पंखों के रूप में सुन्दर वस्त्र दिए हैं। ये वस्त्र आयु के साथ बढ़ते रहते हैं, अतः कभी छोटे नहीं पड़ते। बाल और नाखून भी उन्हें 'अपने लिए' कटवाने नहीं पड़ते, परन्तु जब हम उन पशुओं का प्रयोग करते हैं तो उन्हें कटवा भी देते हैं। जो अज्ञानीजन यह कहते हैं कि बालों को काट देने या वस्त्र पहन लेने से हम अधूरे हो जाते हैं तो बालों के साथ-साथ नाखूनों को भी न काटने वाले 'पशु' उन लोगों की अपेक्षा अधिक पूरे 'श्रेष्ठ' हैं ? क्या पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ प्राणी 'मनुष्य' न होकर कुत्ते व बिल्ली आदि हैं ?

हमारे कहने का यह अभिप्राय है कि वस्त्र न पहनना, नाखून न काटना, केश न काटना या सदा सब कुछ कच्चा ही खाना उन्नत लोगों का लक्षण है अथवा पशुता का ? कोई भी पशु-पक्षी अपने पारिवारिक सम्बन्धों को नहीं जानता अतः वह हर मादा से पत्नी तुल्य ही व्यवहार करता है। परन्तु मनुष्य सभ्यता, शालीनता, रिश्तों की समीपता को जानता है अतः संस्कारों से संयमी होकर हर महिला को पत्नी समान या हर पुरुष को पति समान नहीं भोगता। जो व्यक्ति मनुष्य जन्म पाने पर भी पशुओं के तुल्य नग्न रहना चाहते हैं अथवा अनेक महिलाओं या अनेक पुरुषों से काम भोग चाहते हैं, उनमें पूर्व जन्म की पशुता के संस्कार शेष हैं। क्या ऐसे असभ्य एवं उच्छृंखल लोगों को पशुओं के समान ही कठोर दण्ड से सुधारने की आवश्यकता नहीं ? जिससे कि शेष सभ्य समाज को पतित होने से बचाया जा सके।

इसमें दो मत नहीं कि वस्त्र पहनने की शालीनता तथा परस्पर सम्बन्ध बनाने की मर्यादाओं के टूटने से ही परिवार टूट रहे हैं, समाज का पतन हो रहा है, जिससे बलात्कार व एड्स जैसे जानलेवा रोग बढ़ रहे हैं। अतः सुखी, सभ्य, स्वस्थ, संगठित तथा सुरक्षित रहने हेतु सदा शालीन वस्त्र पहनने एवं संयमी बनने का चलन 'फैशन' अपनाएं। विशेष जानकारी हेतु हमारी पुस्तक **'समाज को बदल डालो'** पढ़ें।

जो कुछ तुम अपने या अपनों के लिए नहीं चाहते वह व्यवहार तुम औरों के लिए भी मत चाहो।

पाखण्ड को दूर कर आर्यसमाज ने देश को खड़ा किया – कौशल

कोटा, १६ अप्रैल। जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल में महिला को सम्मान मिला।

उक्त विचार आर्यसमाज विज्ञान नगर में महिलाओं के कल्याण एवं उत्थान के लिए आयोजित महिला जागृति सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं सांसद रघुवीर सिंह कौशल ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अन्य देशों को देखें तो वह अपने राष्ट्र को पिता तुल्य मानते हैं जबकि भारतमाता को हम मां कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि हमारे देश में मां का स्थान अग्रणी है। उन्होंने यह भी कहा कि प्राचीन भारत में पर्दा प्रथा नहीं थी। विदेशी आक्रान्ताओं के चलते बचाव के लिए महिलाओं को पर्दे का सहारा लेना पड़ा। अपने उद्बोधन में सांसद रघुवीर सिंह कौशल ने कहा कि दयानन्द सरस्वती ने समाज की बीमारी को देखा, जाना और समाज से कुरीतियों व पाखण्ड को दूर करने के लिए आर्यसमाज ने देश को खड़ा किया। उन्होंने यह भी कहा कि महिला जागृति का मतलब अधिकार मांगना नहीं है।

समारोह को सम्बोधित करते हुए समाजसेवी श्रीमती प्रसन्ना भण्डारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अपने कर्तव्यों का ध्यान रखते हुए सेवा का कार्य शुरू किया धीरे धीरे उन्होंने राह पकड़ ली। उन्होंने कहा कि महिला जागी हुई है। फिर भी उन्हें जगाने के लिए पुरुषों को आगे आना पड़ता है। उन्होंने कहा कि हम ज्यादा जाग गए हैं। पहले सास-ससुर नहीं चाहिए थे, अब बच्चे भी नही चाहिए। यही कारण है कि समाज में भ्रूण हत्या बढ़ी है। उन्होंने भरे मंच पर आह्वान किया कि भ्रूण हत्या न करें। उन्हें सौंप दें उनकी झोली उनके स्वागत में मिलेगी। यदि हम ऐसा करते हैं तो भ्रूण हत्या पर नियंत्रण किया जा सकता है।

एडवोकेट श्रीमती कल्पना शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि महिला को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। परिवार का विकास करना चाहिए। लेकिन घर बिगाड़ने के लिए आत्मनिर्भर बनना गलत है। उन्होंने यह भी कहा कि भ्रूण हत्या के लिए पुरुष दोषी है या महिला। यह प्रश्न नहीं होना चाहिए। यह नहीं हो इस पर अंकुश लगे इसके कारणों पर अंकुल लगे।

समारोह को सम्बोधित करते हुए जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या श्रीमती स्नेहलता साहनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि दहेज देश की बड़ी बुराई है। इस पर रोक लगनी चाहिए। लड़कियों को समझदार बनाने के साथ साथ उन्हें संस्कार के साथ अपनी बात रखने की भी शिक्षा देनी चाहिए। अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी अजय सहगल ने कहा कि चिकित्सक, इन्जीनियर या किसी पद पर नौकरी के लिए प्रेरित करने व महिला को शिक्षा देने के लिए स्वामी दयानन्द ने प्रयास किया। आर्यसमाज ने जालन्धर में सबसे पहले पाठशाला खुलवाई। हमें अग्नि देने के लिए पुत्र की आवश्यकता है। आर्यसमाज ने बेटियों को यह अधिकार बेटों को दिए।

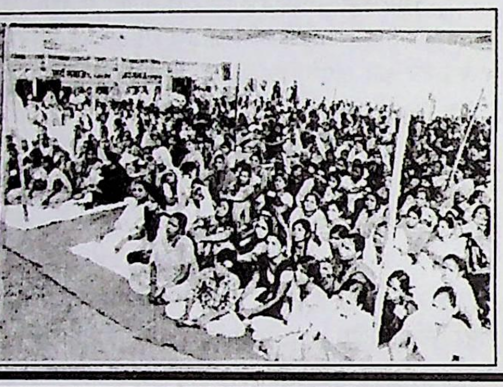
कार्यक्रम के आरम्भ में महिला जागृति सम्मेलन की संयोजिका पूर्व महापौर श्रीमती सुमन श्रृंगी ने कहा कि आर्यसमाज में महिलाओं की जागृति व उत्थान के लिए दयानन्द ने समाज व देश को उत्थान करने के लिए शिक्षा संस्कार से जोड़ा। महिला यदि शिक्षित है तो समाज अच्छे आचरण वाला बन सकता है।

कार्यक्रम के अन्त में समाज सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए समाजसेवी एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत "मनवा अब समझ मेरे भाई...' भजन के साथ श्रीमती स्नेहलता सिंह ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्रीमती अर्पणा पाण्डे एवं जे०एस० दुबे ने किया।

अन्त में संयोजक अर्जुन देव चढ्ढा व प्रधान डॉ० के०एल० दिवाकर ने आभार व्यक्त किया। शान्ति पाठ व जयघोष से कार्यक्रम का समापन किया गया।





पृष्ठ १ का शेष

भारत के संविधान द्वारा ...

ऐसे में आर्यसमाज का मौन रहना उचित नहीं है। उन्होंने जन जन से अपील की कि राष्ट्र की अस्मिता खतरे में है। अतः एक जुट होकर राष्ट्र की रक्षा हेतु राजार्य सभा के ध्वज तले एकत्रित हों। निर्भय होकर वह कहो जो गलत हो रहा है। आज के तथाकथित नेताओं के भरोसे राष्ट्र को छोड़ देना भयंकर भूल सिद्ध होगी। समय की मांग है कि भ्रष्टाचार, व्यभिचार, आतंकवाद, अलगाववाद, अश्लीलता के खिलाफ एक सशक्त अभियान आर्यसमाज चलाए। जनता ने तालियों की गडगड़ाहट से इस विचार का समर्थन किया।

वक्ताओं में स्वामी सुमेधानन्द, श्री स्वामी इन्द्रदेव यति, श्री रघुराज शास्त्री, श्री विमल आर्य, श्री सुदर्शन शर्मा, श्री देवेन्द्र शर्मा, श्री हृदयेश आर्य, श्री आचार्य भगवान् देव चैतन्य, श्री महामण्डलेश्वर महन्त गंगादास जी वैरागी, श्री आचार्य रामानन्द, श्री ऋषि कुमार आर्य प्रमुख थे। सभी वक्ताओं ने अपनी-अपनी ओजस्वी वाणी में राजार्य सभा की आवश्यकता पर बल दिया। सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री विमल आर्य, श्री सुदर्शन शर्मा तथा राजार्य सभा के केन्द्रीय संगठन की ओर से श्री स्वामी इन्द्रदेव यति एवं श्री रघुराज शास्त्री ने प्रभावशाली ढंग से अपने विचार व्यक्त किये। महामण्डलेश्वर श्री महन्त गंगादास वैरागी ने अत्यन्त ओजस्वी वाणी से सारे हिन्दु समुदाय से राजार्य सभा को सफल बनाने को कहा। आर्यसमाज बिलासपुर के युवा एवं होनहार मंत्री श्री सुरेन्द्र पाल बब्बल ने इस आयोजन को सफल करने के लिए दिन रात एक किया। इस अवसर पर वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी उनके पूज्य पिता श्री धर्मदास आर्य का भी भव्य स्वागत किया गया।

इस कार्यक्रम में पूज्य स्वामी इन्द्रदेव यति ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से आर्य जनता को पूर्ण कर्मठता के साथ देश धर्म की रक्षा के लिए कर्मशील बने रहकर देश की राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर नियन्त्रण का मार्गदर्शन दिया।

श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि भारत की राजनीति आज हर प्रकार की बुराइयों से लिप्त होकर एक गन्दा नाला बन चुकी है। इस गन्दगी की सुफाई वही आत्माएं कर सकती हैं जो स्वयं सौ प्रतिशत शुद्ध रहकर निस्वार्थ भाव से सेवा के लिए तैयार हो। उन्होंने भारतीय संविधन के बारे में बोलते हुए कहा कि बेशक यह हमारे देश का मूल दस्तावेज है परन्तु इस संविधान में कई प्रावधान आपस में टकराते नजर आते हैं। इस संविधान में देश को नैतिकता, चरित्र, ईमानदारी, सच्चाई, राष्ट्रभक्ति तथा कर्तव्यपालन के उपदेशों को उचित स्थान ही नहीं दिया गया, बल्कि यह संविधान अधिकारों की वर्षा से देश में वर्ग संघर्ष, लूटखसोट, बेईमानी और स्वार्थवाद को ही बढ़ावा दे रहा है।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार महर्षि दयानन्द जी ने अपने गुरु विरजानन्द, उनके गुरु स्वामी पूर्णानन्द तथा उनके गुरु स्वामी ओमानन्द जी के निर्देश से १८५५ में विदेशी शासन की नींव हिलाने का शुभारम्भ किया था, उसी प्रकार आज का यह सम्मेलन स्वामी इन्द्रदेव यति के राजनीति सम्बन्धित विचारों और चिन्तन से लाभ उठाकर आर्यसमाज को एक नई दिशा दे सकता है। आर्यसमाज किस प्रकार राजनीति के शुद्धिकरण अभियान को प्रारम्भ करे इसके लिए एक गम्भीर विचारशील अभियान चलाया जाना चाहिए।

यह भी निश्चय किया गया कि ४–५ मास बाद एक बड़ा सम्मेलन प्रदेश की राजधानी शिमला में आयोजित किया जाए तथा इसके ४–५ मास बाद एक बहुत बड़ा सम्मेलन पंजाब में जालन्धर में आयोजित किया जाए। इन सम्मेलनों को बहुत समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में

हम कौन थे क्या हो गए, और
क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर ये
समस्याएं सभी।

देश विदेश में रहने वालों आर्यो ! राजार्य सभा को अपना पूर्ण समर्थन दें और इसे एक आन्दोलन का रूप दें। राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान नष्ट हो रहा है। अतः ऐसे में आर्य जन चुप नहीं बैठ सकते। सभी आर्य नर-नारी अपने कर्तव्य को पहचानें और राष्ट्रीय उत्थान में अपनी आहुति दें। आज आर्यसमाज जिस विघठन के दौर से गुजर रहा है उससे बाहर निकलने का भी यही एक माध्यम है। यदि हम राष्ट्र बचाओ अभियान को आन्दोलन का रूप दे दें तो आर्यसमाज में कार्य करने वालों की व्यापक फौज तैयार हो जाएगी।

यह एक ऐसा अभियान होगा जिसमें सभी आर्य नर-नारी, अबाल वृद्ध, उमंग व उत्साह से सब मतभेदों को भुला कर एक मंच पर एकत्रित हो जाएंगे। सचमुच वह दिन स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। उसी दिन राष्ट्र का भविष्य भी तय हो जाएगा। हम एक हैं, एक रहेंगे तथा महर्षि के स्वप्नों को साकार करने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देंगे। प्रभु इस आशय को सफल करे।

स्वामी गोरक्षानन्द जी नहीं रहे

महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्यसमाज और गो–माता के अनन्य भक्त स्वामी गोरक्षानन्द सरस्वती जी की आत्मा ६५ वर्ष की देह का त्याग करके परमपिता परमात्मा की लीला में उस अनन्त यात्रा पर आगे निकल गई जहां से पुनः नए उत्साह और उमंग के साथ वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में आहुतियां दी जा सके।



१७ मई, २००६ को पूज्य स्वामी जी चण्डीगढ़ में मुख्यमन्त्री से भेंट करके गोशाला के लिए भूमि तथा धन सहायता की मांग लेकर सायं ४ बजे जाने वाले थे। परन्तु प्रातः कालीन वेला में ही उन्होंने अन्तिम सांस लेकर शरीर त्याग दिया। वे पिछले लगभग १०–१२ वर्ष से गले में कैंसर रोग से पीड़ित थे। बिना उपचार के वे इस भयंकर बीमारी का इलाज भक्ति भावना के वशीभूत केवलमात्र गो-मूत्र से ही करते रहे। गो-मूत्र के सहारे उन्होंने लम्बी अवधि तक इस भयंकर बीमारी को भी काबू में रखा। २० मई को उनकी स्मृति में एक सत्संग कार्यक्रम उनके सुपुत्र श्री सत्यपाल माना के ग्राम कलहडी, घरोंडा, जिला करनाल (हरियाणा) में आयोजित किया गया। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, उपप्रधान आचार्य यशपाल, श्री प्रज्ञानमुनि, श्री श्याम मोहन मुनि, महाशय रामशरण आर्य, श्री शान्ति प्रकाश, श्री लाजपत राय चौधरी आदि ने उपस्थित होकर इस वीतराग आत्मा के कार्यों और जीवन की चर्चा करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री विमल वधावन ने बताया कि स्वामी गोरक्षानन्द जी सदैव इस सिद्धान्त के पक्षधर रहे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के गोरक्षा सम्बन्धी निर्देशों का क्रियान्वयन करने के लिए दोनों मार्गों पर चलना पड़ता है। भक्ति भावना के आधार पर गोमाता की जय ही नही अपितु पालन पोषण, सेवा के द्वारा गोमाता के दूध आदि प्रसाद का सेवन करके अपने शरीर और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने का कार्य करना चाहिए। दूसरा मार्ग है गो-रक्षा का – जिसके अपने क्षत्रियत्व का सदुपयोग करते हुए गो-हत्या करने वालों के खिलाफ खुली हिंसात्मक और कानूनी कार्यवाही करने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। स्वामी गोरक्षानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा की गोशाला में भी लम्बे समय तक अपनी सेवाएं अर्पित की थी।

स्वामी गोरक्षानन्द जी का सम्पन्न परिवार है जिसमें उनकी चार विवाहित पुत्रियां तथा एक पुत्र है। उनके एक अन्य पुत्र का देहावसान युवा अवस्था में ही कुछ वर्ष पूर्व हो गया था। उनकी ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती उर्मिता आर्या एक विदुषी के नाते करनाल की आर्यसमाजों में विशेष रूप से प्रयासरत रहती हैं। □

पृष्ठ १ का शेष

बिजनौर में गोहत्या की घटनाओं के विरुद्ध आन्दोलन

लेकिन ऋषियों के इस ज्ञान की जानकारी आम जनता को है ही नहीं। अतः गो-संवर्द्धन, संरक्षण एवं इसके शोध के लिए सहायता उपलब्ध कराकर देश की आर्थिक व्यवस्था को निश्चित ही उन्नत किया जा सकता है और यह तभी सम्भव होगा जब गो-धन से प्राप्त होने वाले लाभों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाई जाए। इसके लिए प्रत्येक देशवासी के साथ-साथ सरकार, मिडिया एवं अन्य सभी का सहयोग भी अपेक्षित है।

जिस प्रकार स्वामी रामदेव ने वेद ज्ञान की एक धारा योग और प्राणायाम से राष्ट्र/विश्व के जन-जन को स्वस्थ बनाने का संकल्प लिया है और उसके परिणाम भी परिलक्षित हो रहे हैं, ठीक उसी प्रकार वेद ज्ञान की ही यह धारा गो-पंचगव्य से अनेक प्रकार के उत्पाद तैयार कर यदि इसे भारतीय अर्थव्यवस्था से जोड़ दिया जाए तो निश्चय ही भारत को आर्थिक रूप से सम्पन्न किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने जिला पुलिस अधीक्षक तथा सहायक अधीक्षक से भेंट करके उन्हें आर्य जनता की देश व्यापी भावनाओं से अवगत करवाते हुए तुरन्त कार्यवाही की मांग की है।

श्री जयनारायण अरुण ने बताया कि उसी दिन पुलिस अधीक्षक द्वारा कई पुलिस टोलियां बनाकर इस गिरोह पर शिकंजा कसने की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी है। कई स्थानों पर छापे मारे गए हैं। श्री जयनारायण अरुण जिला पत्रकार संगठन के अध्यक्ष भी हैं।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन ने उन्हें कहा कि यदि प्रशासन १०–१२ दिन के भीतर कोई ठोस उपाय नहीं करता तो आर्यसमाज के द्वारा उग्र आन्दोलन छेड़ा जाएगा। बिजनौर जिले की आर्यसमाजों की एक आपात बैठक भी बुलाई गई है जिससे आन्दोलन की रूपरेखा निर्धारित हो सके।

देर से प्राप्त समाचार के अनुसार श्री जयनारायण अरुण एवं श्री भारतभूषण त्रिपाठी ने फोन पर सभा मन्त्री को बताया कि बिजनोर जिला पुलिस ने इस प्रकरण में ६ दोषी पुलिसकर्मियों को निलम्बित कर दिया है। अभी आगे भी कार्यवाही जारी है। □

पृष्ठ १ का शेष

हरिद्वार गुरुकुल में कोई गबन नहीं

श्री सुदर्शन शर्मा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान तथा पंजाब सभा के प्रधान हैं। आपके औद्योगिक प्रतिष्ठान करोड़ो – अरबों रुपए के लेन–देन से संचालित हैं। ऐसे व्यक्तित्व पर १८ लाख का भ्रूण आरोप घटिया मानसिकता का प्रतीक हैं।

हरिद्वार की निचली अदालत के नोटिस जारी करने के आदेश को जिला न्यायालय में चुनौती दी गई है और जिला न्यायालय ने निचली अदालत के उक्त आदेश को स्थगित भी कर दिया है।

इस निराधार मुकदमें की खबरों का सहारा लेकर अग्निवेश तथा उसके समर्थक अपनी घटिया मानसिकता के कारण दुष्प्रचार में लीन हैं। आर्यजन ऐसे दुष्प्रचार से प्रभावित न हो। विगत वर्ष के खातों की पूर्ण विवरण रिपोर्ट अदालत में प्रस्तुत कर दी गई है।

Licence No. U(C) 93/2003-05
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 28-05-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2003-05 in NDPS on 25/26-05-2006

जीवन के निर्माण में वेद और अग्निहोत्र आवश्यक – डॉ० देव शर्मा वेदालंकार

कोटा १४ अप्रैल। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र ने भरत मिलाप के समय महात्मा भरत से पूछा कि अयोध्या में वेद सफल है। महात्मा भरत ने उत्तर दिया 'हां'। वेद अग्निहोत्र से सफल होता है। श्रीरामचन्द्रजी ने अपने जीवन को यज्ञ से सफल बनाया व्यक्ति के जीवन का निर्माण में या एवं वेद के स्वाध्याय से होता है, पति-पत्नी के माधुर्य जीवन जीने के लिए घर में यज्ञ एवं वेद का स्वाध्याय आवश्यक है अग्निहोत्र की ऊपर उठती अग्नि विद्यार्थियों को उन्नति का पाठ पढाती है। उक्त वचन डॉ० वेद शर्मा वेदालंकार दिल्ली ने आर्यसमाज विज्ञान नगर के वार्षिक अधिवेशन में कहे।

संयोजक अर्जुनदेव चढ्ढा ने बताया कि तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव का प्रारम्भ पं० बिरधीचन्द के पौरोहित्य में देवयज्ञ से हुआ। आपने अपने प्रवचन में कहा कि महर्षि सरस्वती ने हमें ईश्वर से सद्बुद्धि, तेज, बल, आत्म शक्ति, मन की शुद्धि, सन्तोष, सहन-शक्ति सहित ईश्वर के नियमों के पालन की शक्ति की प्रार्थना वेद के माध्यम से बताई है।

पं० भूपेन्द्र सिंह जी, स्वामी देवानन्द सरस्वती तथा आर्यमाता रूकमणी देवी ने अपने विद्वतापूर्ण विचार व्यक्त किए।

प्रारम्भ में डॉ० के०एल० दिवाकर, प्रधान, महेन्द्र रस्तौगी, उपप्रधान, आर्यसमाज विज्ञान नगर, रामप्रसाद याज्ञिक प्रधान, हाडौती क्षेत्रीय वेद प्रचार समिति, कैलाश बाहेती, मंत्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, अरविन्द पाण्डेय, प्रधान सतीश वरिष्ठ उपमंत्री राकेश चढ्डा, कोषाध्यक्ष सुमेश कुमार गांधीद्व दिनेश शर्मा, अंनिल दुबे ने आमंत्रित विद्वानों एवं अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। बड़ी संख्या में आर्यजन, माता बहनों ने विद्वानों के विचारों का आनन्द लिया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री जे०एस० दुबे ने किया तथा प्रधान डॉ० के०एल० दिवाकर ने सभी का आभार व्यक्त किया। शांति पाठ एवं जयघोष से प्रथम दिन के प्रथम सत्र का समापन हुआ।



प्रतिष्ठा में







प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २ रुपये

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक ६ | १८ जून से २४ जून, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | ज्ये०कृ०७
भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा के निमन्त्रण पर पाकिस्तान सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री खलील-उर-रहमान रामदेय भारत की ३-दिवसीय यात्रा पर

भारत-पाकिस्तान का बंटवारा एक बदनसीबी थी

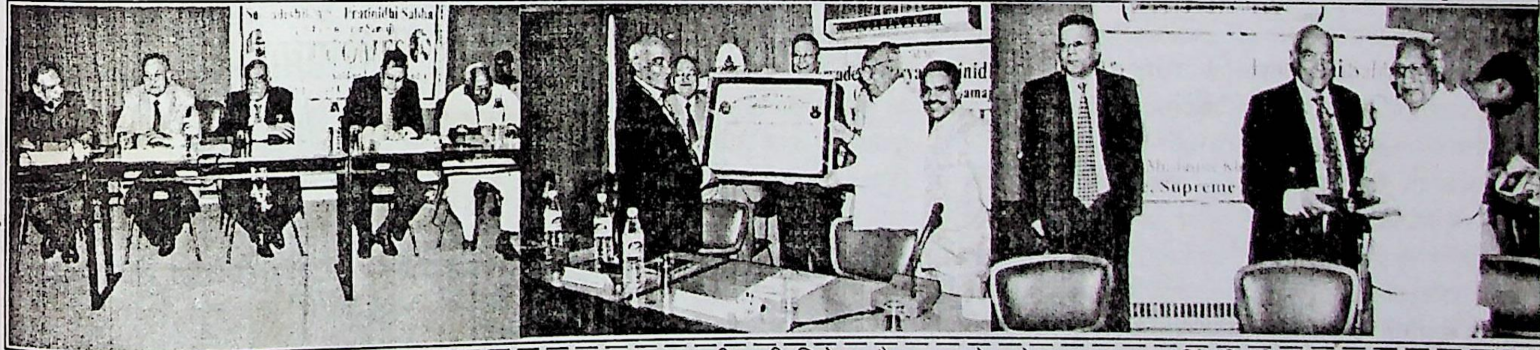
दोनों देशों की जनता में मेल-मिलाप ही दीवारें तोड़ेगा

आज मैं जो कुछ भी हूं, अपने पिता को आर्यसमाज द्वारा दी गई शिक्षा के कारण ही हूं – न्यायमूर्ति खलील-उर-रहमान रामदेय

पाकिस्तान सर्वोच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष निमन्त्रण पर तीन दिन की यात्रा पर भारत पधारे। इस तीन-दिवसीय यात्रा में उनके कार्यक्रम भिन्न-भिन्न स्थानों पर सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार निर्धारित किए गए थे।

न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी अपने जीवन के उत्थान का सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज को देने में क्षणिक भी संकोच महसूस नहीं करते। आपके पिता श्री मौहम्मद सिद्धिकी ने पंजाब के नवांशहर स्थित आर्य स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। पिता के मानस पटल पर आर्यसमाज की शिक्षण व्यवस्था रूपी सेवा की इतनी गहरी छाप पड़ी कि उन्होंने अपनी सन्तानों के मस्तिष्क में यह कूट–कूट कर भर दिया कि आर्यसमाज के मानवतावादी दृष्टिकोण की सर्वोच्चता यह है कि आर्यसमाज के अधिकारियों ने कभी मुझसे यह नहीं कहा कि यह विद्यालय तो आर्यसमाजियों के धन से चलता है फिर इसमें एक मुसलमान के बच्चे को शिक्षा हम क्यों दें। बस इस मूक सेवा की श्री मौ० सिद्धिकी जी पर इतनी अमिट छाप पड़ी कि उनके मन में यह धारणा बन गई कि यदि आर्यसमाज न होता तो वे शिक्षा के नर्सरी, प्राइमरी और मिडिल स्तर को आधार बना कर उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाते।

शेष पृष्ठ ५ पर



१. स्वागत समारोह में बाएं से दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री विजेन्द्र जैन, समारोह के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री डी०पी० वधवा, मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय, न्यायमूर्ति डॉ० एम०के० शर्मा, सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल। २. मुख्य अतिथि श्री खलील-उर-रहमान रामदेय को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए। ३. श्री खलील-उर-रहमान रामदेय को गीता एवं सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां भेंट करते हुए।

सदाचार और चरित्र की सुन्दरता से ही विश्वशान्ति सम्भव - डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम



भारत के राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम से भेंटवार्ता का कार्यक्रम निर्धारित होते ही आर्यसमाज रानीबाग में चल रहे वैचारिक क्रान्ति शिविर के आदिवासी बच्चों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। २५ मई, २००६ का वह दिन आदिवासी बालकों की स्मृति में चिरस्थायी बना रहेगा। सायं ५ बजे निर्धारित समय के कुछ देर बाद ही राष्ट्रपति भवन के सुन्दर सुसज्जित ऐतिहासिक सभागार में इन आदिवासी बच्चों को मिलने के लिए महामहिम राष्ट्रपति जी बड़े उत्साह से पधारे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री वेदव्रत मेहता तथा महामन्त्रिणी माता प्रेमलता शास्त्री का परिचय दिया। इससे पूर्व ब्रह्मचारी अर्जुन आर्य ने राष्ट्रपति जी को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट किया और ब्रह्मचारिणी कल्पना आर्या ने ओ३म् का एक स्मृति चिह्न भेंट किया। दयानन्द सेवाश्रम संघ तथा शिविर का संक्षिप्त परिचय भी सभामंत्री ने प्रस्तुत किया।

शेष पृष्ठ ४ पर

सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान स्वामी सत्यम जी नहीं रहे



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान एवं वर्तमान उप–प्रधान स्वामी सत्यम जी का दुःखद देहावसान ६ जून (शुक्रवार) को मैसूर (कर्नाटक) में हो गया। संन्यास आश्रम में प्रवेश से पूर्व श्री सत्यपाल शर्मा के नाम से सुप्रसिद्ध स्वामी जी वैदिक धर्म के मर्मज्ञ विद्वान थे। ईश्वर भक्ति से ओतप्रोत स्वामी सत्यम जी की लेखनी प्रभावशाली थी। वे अंग्रेजी में लेख लिखकर इण्टरनेट पर धर्म प्रचार का कार्य बड़े शौक से स्वयं किया करते थे। स्वामी जी ने कई वर्ष अमेरिका की विभिन्न आर्यसमाजों के माध्यम से भी वैदिक धर्म प्रचार का कार्य किया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वामी जी की आत्मा को सद्गति प्राप्त हो। कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डॉ० राधाकृष्ण वर्मा ने बताया कि स्वामी जी की स्मृति में सभा का आयोजन आर्यसमाज बैंगलोर में किया गया।

समय का सदुपयोग करने से ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है – किरण बेदी

२५-वें वनवासी वैचारिक ान्ति शिविर में आज आदिवासी ।विरार्थियों को सम्बोधित करने ; लिए विशेष रूप से दिल्ली की ोहाड जेल प्रमुख इन्सपेक्टर ानरल श्रीमती किरणबेदी को प्रवचन के लिए आमन्त्रित किया गया।

माता प्रेमलता शास्त्री जी ने उनके स्वागत में बोलते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से समाज में नारी शिक्षा का सूत्र पैदा हुआ जिसके परिणाम स्वरूप ही आज की नारियां उच्च पदों पर विराजमान हैं। इसी प्रकार अपने पुलिस विभाग में क्रान्ति मचाने वाली श्रीमती किरण बेदी पहली महिला है जिसने अपने कर्मों, इमानदारी, राष्ट्रभक्ति, सच्चाई के बल पर कई कीर्तिमान स्थापित किए।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि बहन किरण बेदी ने सच्चे मायने में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सुधारवाद अभियान को पुलिस विभाग तथा अब जेल में लागू कर के दिखाया है।

उन्होंने कहा कि किरण बेदी न केवल सरकार की पुलिस अधिकारी हैं अपितु वे सच्चे मायने में परमात्मा की पुलिस अधिकारी स्वयं को साबित कर चुकी हैं।

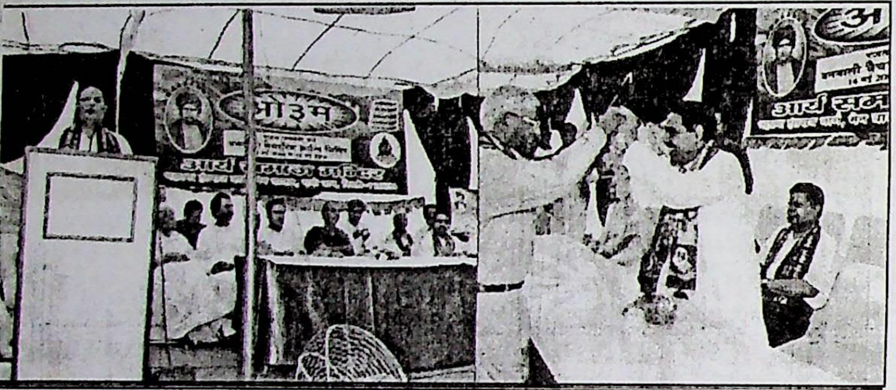
श्री विमल आर्य ने कहा आत्मा की इस अनन्त यात्रा के बीच में केवल मानव जीवन ही एक ऐसा जीवन है जहां सुधार करके स्वयं को निखारने के प्रचुर अवसर उपलब्ध हैं। परन्तु सच्चे मार्ग दर्शकों के अभाव में व्यक्ति आज स्वयं में सुधार लाने के लिए प्रवृत नहीं हो पाता। उसमें सच्चाई की रक्षा हेतु संघर्ष करने की हिम्मत नहीं रहती और इसीलिए आज हर व्यक्ति समझौतावादी हो जाता है।

शेष पृष्ठ ८ पर

१५-दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर का समापन

अखिल भारतीय दयानन्द ावाश्रम संघ के निर्देशन एवं ार्यसमाज रानीबाग के ायोजकत्व में आयोजित १५ देवसीय वनवासी वैचारिक क्रान्ति ।ोविर का रजत जयन्ती समारोह पूर्ण करने के लिए इन युवक युवतियों ने इस अवसर पर संकल्प लिया कि अपने अपने क्षेत्र में जनजाति एवं वनवासियों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा केन्द्र खोलेंगे।

ज्ञातव्य हो कि दयानन्द सेवाश्रम संघ के निर्देश में भारत के १५ से अधिक राज्यों में इस समय ६० से अधिक सेवा केन्द्र, संस्कार केन्द्र, बालबाड़ियां, विद्यालय, छात्रावास, लघु उद्योग, विकास केन्द्र, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र आदि चल रहे हैं।



शिविर के समापन समारोह में उद्बोधन देते हुए सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा। सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य का स्वगात करते हुए।

विवार २८ मई २००६ को ो०डी०ए० ग्राऊण्ड रानीबाग में र्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस समारोह के संयोजक ोगिन्द्र खट्टर ने बताया कि ारत भर के १८० शिविरार्थियों ो इस शिविर में भाग लिया। ा०प्र०, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, असम, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैण्ड, उड़ीसा, राजस्थान आदि प्रान्तों के युवक युवतियों ने इस शिविर ों शिक्षा, संस्कार, सामाजिक यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, धर्म, ाधारण ज्ञान सम्बन्धी अनेक वेषयों को सीख॥ जन जागरण एवं सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य

शिविर का समापन समारोह डी०डी०ए० ग्राऊण्ड रानीबाग में आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्र के तथा दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के हजारों आर्यजनों ने भाग लिया।

रजत जयन्ती समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुदर्शन शर्मा, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस शिविर की सराहना करते हुए कहा कि इसी प्रकार हम देश का कोना कोना शिक्षित कर पायेंगे। उन्होंने शिविर में अपनी और से ३१ हजार रु० का सात्विक सहयोग माता जी को प्रदान किया।

इस पूरे समारोह के मुख्य निर्देशक माता प्रेमलता शास्त्री जी का सभी रानीबाग के कार्यकर्ताओं ने पुष्पहार एवं शाल से भारी सम्मान किया। इस अवसर पर विशेष सहयोग श्री सुदर्शन नारंग, श्री यज्ञदत्त आर्य, श्री विनय नारंग, श्री दिनेश शर्मा, श्री अशोक कालड़ा, श्री सुनील गुप्ता, श्री धर्मपाल गुप्ता आदि लोगों का रहा। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री जोगिन्द्र खट्टर ने किया तथा अन्त में धन्यवाद ज्ञापन संघ प्रधान श्री वेदव्रत मेहता जी ने किया। □

हिमाचल सभा का साधारण अधिवेशन

२५ जून को

सार्वदेशिक न्याय सभा के पर्यवेक्षक देवेन्द्र शर्मा एवं प्रेम भारद्वाज

सार्वदेशिक न्याय सभा के निर्णय दिनांक १८–४–२००६ के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का साधारण अधिवेशन आगामी २५ जून (रविवार) को स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में आहूत किया गया है। यह अधिवेशन सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक श्री देवेन्द्र शर्मा एवं श्री प्रेम भारद्वाज की उपस्थिति में होगा।

दिल्ली की आर्यसमाजों के सहयोग से तैयार विशेषांक का विमोचन



आर्य प्रान्तीय महिला सभा दिल्ली की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला दीक्षित की अध्यक्षता में दिल्ली की आर्यसमाजों के विज्ञापनों से सुसज्जित एक विशेषांक के विमोचन (४ जून) पर लिया गया चित्र। चित्र में बाएं से सर्वश्री- पतराम त्यागी, चौ० लक्ष्मीचन्द, आनन्द चौहान, विशम्बर नाथ अरोड़ा, वैद्य इन्द्रदेव, प्रि० चन्द्रदेव, विमल वधावन आर्य, कृष्णगोपाल दीवान, मुंशीराम सेठी, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, वेदव्रत शर्मा, हंसराज चोपड़ा।

श्री खलील-उर-रहमान रामदेय का मुरादनगर में स्वागत

पाकिस्तान सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री खलील–उर–रहमान रामदेय जी को अपने बीच पाकर आर्य जनता आनन्द विभोर हो उठी। दिल्ली से हरिद्वार सड़क मार्ग से जाते हुए श्री खलील रामदेय का स्वागत गाजियाबाद आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में मुरादनगर पब्लिक स्कूल के समक्ष किया गया। इस स्वागत समारोह में श्री नरेन्द्र कुमार आर्य, श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री राजेन्द्र सिंह आर्य, मुंशी त्रिलोक चन्द, श्री गोपीचन्द्र वर्मा, श्री दामोदर आर्य, श्री नरेश चन्द्र त्यागी, श्री आलोक नाथ शर्मा, श्री सुरेन्द्र पाल आदि एवं मुसलमान समुदाय के गणमान्य अनेक महानुभावों ने श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी का स्वागत किया। □



श्री रामकृष्ण मित्तल अस्वस्थ

श्री रामकृष्ण मित्तल आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में १६५१ से सहयोग दे रहे हैं। उनका ७० वर्ष की आयु में कूल्हा टूट गया है जिससे वे चल फिर नही सकते। उनकी सहायता के लिए सेविंग वैंग CBS0304000103783920 किसी CBS पंजाब नेशनल बैंक या माडल टाउन लुधियाना 144002 P N Bank CBS में जमा करें। ओ३म् वेद पढ़ो सुबह ४ बजे सैनिक डॉ० योद्धा बनो।

वर्तमान पता – रामकृष्ण मित्तल, आर्यसमाज, बक्षी नगर, जम्मू – १८०००१

सम्पादकीय

दुनियां की कोई ताकत सत्यार्थ प्रकाश का एक शब्द नहीं बदल सकती

एक अग्निवेश नहीं, समस्त पशुवृत्तियों का मुकाबला करने में सक्षम हैं सच्चे आ



अमृतसर में अग्निवेश ने एक ऐसा षड्यन्त्रकारी वक्तव्य दिया कि वह 'सत्यार्थ प्रकाश' में परिवर्तन करने के लिए तैयार हैं जिससे उन अंशों को हटा दिया जाएगा जो सिख गुरुओं के विरुद्ध हैं। इस षड्यन्त्र की वास्तविकता बारीकी से समझने की आवश्यकता है। अग्निवेश उर्फ श्यामराव, वैदिक धर्मद्रोही, कम्युनिस्ट, स्वार्थी, अवसरवादी और आर्यसमाज के लिए घातक सौ जन्म लेने पर भी इतनी योग्यता वाला और बलशाली नहीं बन सकता कि वह सत्यार्थ प्रकाश जैसे दुनियां के एक महानतम ग्रन्थ में एक शब्द या एक अक्षर का भी बदलाव कर सके।

१. परमपिता परमात्मा तो घोर से घोर कलयुग में भी पूर्ण ताकतवर रहते हैं।

२. कर्म के अनुसार फल देने की व्यवस्था को कलयुग भी बदल नहीं सकता।

परम ईश्वर भक्त, निस्वार्थी जन-सेवक, उच्चकोटि के योगी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मन, वचन और कर्म का प्रमाण पत्र आज हमारे भाषण, लेख या पुस्तकें मात्र नहीं है, उनकी महान् योग्यता का फल तो परमात्मा ने इस छोटी सी बात से ही दे दिया कि उनकी निर्मल बुद्धि से निकले साधारण दिखने वाले शब्दों से मिल कर बना पावन ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लाखों, करोड़ों व्यक्तियों के जीवन उद्धार का माध्यम बन गया। सूर्य की शक्ति से अपनी तुलना करने वाला वह ब्रिटिश साम्राज्य केवल सत्यार्थ प्रकाश के स्वराज्य बिगुल से बोखला उठा और वेदों की धरती खाली करके भाग खड़ा हुआ।

अंग्रेजों के पिछलग्गू और अवशेष के समान अग्निवेश जैसे और भी कई पशुवृत्ति वाले लोग मानववेश में घूमते नजर आ जाएंगे। परन्तु जानवरों की क्या औकात है कि सत्यार्थ प्रकाश जैसी योग्यता बनाने के लिए १०० कदमों में से मात्र एक कदम भी उठा सके। जानवरों का इलाज डंडा ही होता है और कुछ नहीं।

दिल्ली के स्वर्गीय लक्ष्मण दास जी अपने व्यक्तिगत व्यापार में से लाखों रुपये की धनराशि प्रतिवर्ष सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन पर व्यय करते थे तथा जितनी लागत छपाई पर आती थी उससे आधी कीमत पर सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य ऋषिकृत ग्रन्थों को जनता के लिए उपलब्ध करवाना ही उनके लिए ईश्वर पूजा के समान था। वे खुद कहा करते थे कि ईश्वर की वाणी वेद है और महर्षि दयानन्द वेद के प्रकाण्ड पण्डित थे। अतः उनके मुंह से निकला एक-एक शब्द वैदिक धर्म की स्थापना में ही सहायक होगा। इसलिए उनके ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार ही ईश्वर भक्ति है। इस सुन्दर भावना को उनके देहावसान के बाद उनके सुपुत्र भाई वीरेन्द्र आर्य ने भी संस्कार रूप में धारण किया और ग्रन्थों के प्रकाशन तथा आधी कीमत पर उपलब्धि का कार्य जारी रहा।

जनवरी, २००६ में ही अमृतसर शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की तरफ से एक कानूनी नोटिस भेज कर उन्हें सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तन की मांग की जिसके न करने पर कानूनी कार्यवाही की धमकी दी। श्री वीरेन्द्र आर्य तथा उनके सहयोगी श्री जगदीश सेठी जी ने अन्ततः जब यह समस्या मेरे सामने रखी तो मैं तत्काल इस चिन्तन में लग गया। समस्त सिख गुरुओं का सारा इतिहास मैंने पुनः पढ़ डाला। मुझे उनके जीवन के संघर्षों और महर्षि दयानन्द की विचारधारा में कहीं कोई बहुत बड़ा फर्क नजर नहीं आया। दसों गुरु साहिबान मेरी श्रद्धा के पात्र उसी तरह से थे जैसे महर्षि दयानन्द और अन्य राष्ट्रवादी और सच्चे धार्मिक महान आत्माएं। फर्क केवल अध्याय की... महर्षि दयानन्द जी एक उत्तम दिव्य योगी थे अतः उनके शब्द देश-काल- परिस्थितियों से भी ऊपर थे।

महर्षि ने जब ११वें सम्मुल्लास में वैदिक धर्म के स्थान पर उपजी विभिन्न शाखाओं पर चिन्तन किया तो स्वाभाविक था यह विचार आना कि एक सर्वमान्य वैदिक धर्म के नाम पर आज सैकड़ों मत–पन्थ–सम्प्रदाय क्यों ? बस इसी क्यों के उत्तर में वे ढूंढने लग गए कि गलती किसी और कहां हुई ? महर्षि दयानन्द जी ने गुरु नानक देव जी एवं परम योद्धा गुरु गोविन्द देव जी महाराज की प्रशंसा में जो शब्द लिखे उनको पढ़कर आज सिख भाई प्रसन्न न हो और यह देखकर परेशान हो कि 'बखेडा तो उनके अनुयायियों ने किया' इससे स्पष्ट झलकता है कि विचार स्वतनत्रता में इनका विश्वास नहीं है।

मैंने स्वयं उसी कानूनी नोटिस का जवाब कई बार सोच–समझ कर दिया और यह स्पष्ट कर दिया कि सत्यार्थ प्रकाश की रचना १८७३ ई० में महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा हुई थी। आज १३० वर्षों के बीतने पर यह महान् ग्रन्थ एक विशाल इतिहास के रूप में स्थापित हो चुका है। इसमें कोई एक आदमी क्या सारी दुनिया मिलकर भी परिवर्तन नहीं कर सकती। नोटिस का जवाब मैंने कई आर्य नेताओं और कानूनविदों को पढ़वाया। सबने उस भाषा और कानूनी तर्क पर सन्तोष व्यक्त किया।

इस प्रकार नोटिस के जवाब से कानूनी मार्ग बन्द सा हो चुका था परन्तु अग्निवेश के एक वक्तव्य से आर्यसमाज और सिक्खों में कहीं षड्यन्त्रकारी टकराव पाकिस्तान या अमेरिका की शह पर पैदा करने का प्रयास तो नहीं शुरू हो गया। कम्युनिस्ट और माओवादियों का यह सदैव प्रयास रहता है कि गृह युद्ध चलता रहे।

परन्तु आज आर्यसमाज और सिक्ख समाज के प्रबुद्ध महानुभाव वास्तविकता को समझ चुके हैं। आज पंजाब शान्ति के मार्ग पर है और अग्निवेश अपनी विनाशकारी अग्नि मशाल वहां भी लेकर पहुंच गया है। पंजाब के गुरु भक्तों का वैदिक धर्म प्रेम भाव बढ़ रहा है। अमन कायम है। आतंकवाद मर चुका है परन्तु अग्निवेश अभी जिन्दा है। सावधान ! आज केवल लंगड़े, लूले, अन्धे, गूंगे, तोतले लोगों को ही अग्निवेश एक सहारा नजर आ सकता है जो बार-बार ऐसे षड्यन्त्र आर्यसमाज मे भी करने का प्रयास कर रहे हैं जिससे अग्निवेश का आर्यसमाज में एक अच्छा स्थान और सम्म कायम किया जा सके। इन भी सावधान !

ऐसे समय में उन आत्मा को सुदृढ़तापूर्वक एक मह संकल्प करना चाहिए जो अप शारीरिक सुख की, घर अं रसोई की सुविधाओं से ऊ उठकर देश-धर्म पर मरने के लि तैयार हैं।

हम एक जन्म तो क्या सौ-स जन्मों तक भी स्वयं पशुवृत्ति शिकार नहीं होंगे और पशुवृत्ति को कुचलना ही हमारा सर्वोच्च धर्म, सर्वोच्च ईश्वर भक्ति औ सर्वोच्च मानवता है।

पाठको के पत्र

माननीय श्री विमल वधावन आर्य जी,

सादर नमस्ते।

राजार्य सभा का प्रथम प्रान्तीय सम्मेलन का समाचार पढ़क बहुत हर्ष हुआ। आर्यों के लिए एक वैदिक धर्म प्रचार के लिए तथ देश की गन्दी राजनीति में सुधार के लिए एक राजनैतिक मंच क आवश्यकता तो पूरी हो गई लेकिन अब जरूरत है इसको सभ लोगों द्वारा तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग। यदि सभी आर्यसमाज लोग इकट्ठे होकर एक राजनैतिक मंच के नीचे आ गए तो बहुत बड़ा काम होगा। क्योंकि राजसत्ता के बिना धर्म प्रचार नहीं ह सकता। जब देश की लड़ाई लड़ी जा रही थी तो अखबार एवं मीडिया आर्यसमाज की गतिविधियों व कार्यक्रमों को विस्तार रूप से छापते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है अखबार में चोरी-डकैती हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार की खबरें ही प्रमुखता से छपती हैं अच्छे विचार या तो छपते नहीं यदि कोई छापता है तो बहुत छोटे से रूप में जिससे समाज में अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन राजनेताओं की खबर प्रमुखता से छापा जाता है। आशा है आप इस राजनैतिक संगठन को तन मन धन से पूर्ण सहयोग देंगे।

आर्यसमाज के लिए संघर्ष करते रहो हम सब आपके साथ हैं।

धन्यवाद

– रामदेव प्रसाद, नोएडा, गो०बुद्धनगर

माननीय श्री विमल आर्य जी

आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को बचाने के लिए पूर्ण संघर्ष कर रहे हैं। आप हिम्मत न हारें। राजस्थान की पूरी आर्यसमाजें आपके साथ हैं। अन्तिम विजय सत्य की होती है। सत्यमेव जयते। मा शेष्य पराजितः।

आप पूरे भारत में घूमें व तमाम आर्यसमाजों को जगाएं। श्री सुदर्शन शर्मा जी सुयोग्य व अनुभवी हैं। उनको सार्वदेशिक सभा का कार्यकारी प्रधान बनाया यह अच्छी बात है। आर्यों के वेश में छद्म अनार्य घूम रहे हैं। उनसे आर्यसमाज की रक्षा करनी है।

– रामाचार्य मत्री आर्यसमाज फतेहपुर, शेखावाटी, सीकर

गढ़वाल में आर्य महासम्मेलन

उत्तरांचल के गढ़वाल क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आर्यसमाज चोपड़ा कोट – थलीशैण (पौडी गढ़वाल) में आर्य महासम्मेलन का आयोजन २४ एवं २५ जून, २००६ (शनिवार – रविवार) को किया जा रहा है। सम्मेलन स्थल राजकीय इण्टर कालेज थलीसैण है।

उम्मेदसिंह विशारद, ६४११५१२०१६

पृष्ठ १ का शेष

सदाचार और चरित्र की सुन्दरता से ही विश्वशान्ति सम्भव

अधिक से अधिक समय पढ़ाई में लगाया। घर-घर अखबार बांटें। भारत में 14 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा 2007 से लागू होगी। - महामहिम राष्ट्रपति

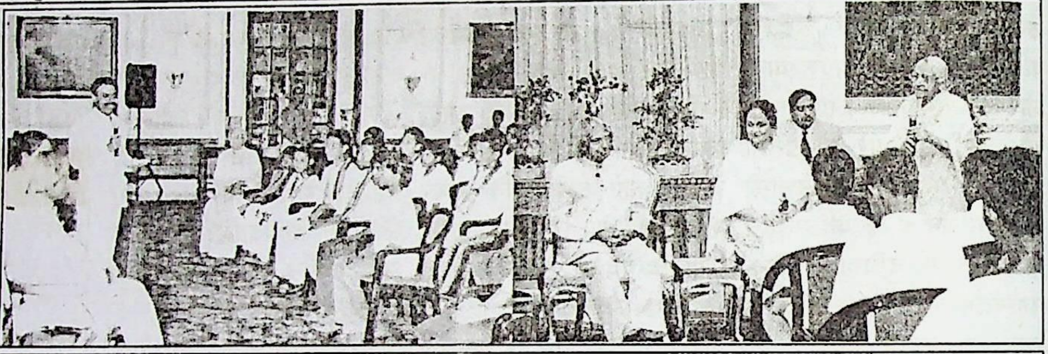
माता प्रेमलता शास्त्री ने राष्ट्रपति जी का अभिनन्दन (क)रते हुए कहा कि आप जैसे उच्चकोटि के वैज्ञानिक (त)था सच्चे और सरल हृदय के राष्ट्रभक्त महात्मा जब (दे)श के सर्वोच्च पद पर आसीन हैं तो महर्षि दयानन्द



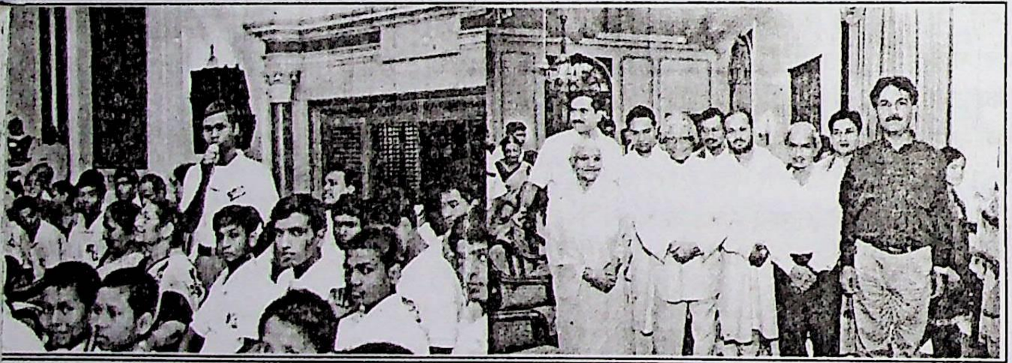
राष्ट्रपति डॉ० एपी०जे० अब्दुल कलाम को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट करते हुए ब्रह्मचारिणी कल्पना। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, दयानन्द सेवाश्रम संघ की मन्त्रिणी माता (प्रे)मलता शास्त्री, प्रधान श्री वेदव्रत मेहता से भेंट करते हुए राष्ट्रपति जी।

(स)रस्वती जी का लगभग १३० वर्ष पुराना वह स्वप्न (अ)वश्य साकार होना चाहिए जिसमें उन्होंने १४ वर्ष से (क)म आयु के बच्चों को शिक्षा न दिलाना माता पिता के (लि)ए दण्डनीय अपराध के योग्य माना है। वेदव्रत मेहता (त)था आर्यसमाज रानीबाग के मन्त्री श्री जोगिन्द्र खट्टर (ने) राष्ट्रपति जी को वैदिक साहित्य भेंट किया।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने बच्चों को सच्चाई और (स)दाचारी के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए पहले (अं)ग्रेजी में तथा उसके उपरान्त हिन्दी में निम्न संकल्प (क)रवाया –



सम्बोधन करते हुए सभामन्त्री श्री विमल वधावन आर्य तथा माता प्रेमलता शास्त्री जी।



(रा)ष्ट्रपति जी से प्रश्न उत्तर करते हुए आदिवासी बच्चे, शिविर संचालकों के साथ राष्ट्रपति जी का चित्र।

Rightousness

(W)here there is righteousness in the heart
(T)here is beauty in the character.
(W)hen there is beauty in the character,
(T)here is harmony in the home.
(W)hen there is harmony in the home,
(T)here is an order in the nation
(W)hen there is order in the nation.
(T)here is peace in the world.

सदाचार

जब दिल में सदाचार स्थापित हो,
चरित्र में सुन्दरता आ जाती है।।

जब चरित्र में सुन्दरता स्थापित हो।
घर में एकता आ जाती है।।

जब घर में एकता स्थापित हो।
तो राष्ट्र में व्यवस्था आ जाती है।।

जब राष्ट्र में व्यवस्था हो।
तो सारे विश्व में शान्ति स्थापित हो जाती है।।

इस संकल्प के बाद राष्ट्रपति जी ने बच्चों से कई सवाल किए जिनका उत्तर बच्चो ने दिया। बच्चों ने भी अनेक सवाल राष्ट्रपति जी से किए। राष्ट्रपति डॉ० कलाम ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में ऊंचा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत, ईमानदारी, सच्चाई और शिक्षा की परम आवश्यकता है। राष्ट्रपति जी ने आगे कहा कि २०२० तक समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षित कर विकसित राष्ट्र के रूप में भारत को पुनः विश्व गुरु का दर्जा दिलाना है। उन्होंने कहा आप बच्चों में से ही कल के डॉक्टर, इन्जीनियर, नेता, शिक्षक आदि बनेंगे। इसलिए आपको सत्यता और ईमानदारी अपनाना जरूरी है।

शिविरार्थी बच्चों ने राष्ट्रपति जी से बड़े रोचक प्रश्न किए जैसे आप बचपन में कितने घण्टे पढ़ते थे और कितने घण्टे खेलते थे। डॉ० अब्दुल कलाम जी ने उत्तर में बताया कि वे प्रातः ४ बजे उठकर अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। अधिक से अधिक समय पढ़ाई में बड़े रुचिपूर्वक बिताते थे। प्रातः २–३ घण्टे घर-घर अखबार बांटने में भी लगाते थे।

आपको बचपन में कितनी बार मां से मार पड़ी, इसके उत्तर में राष्ट्रपति जी ने निःसंकोच कहा पढ़ाई के कारण तो कभी नहीं पड़ी परन्तु एक–दो बार शरारते करने पर पड़ी थी।

आप गरीबी में पढ़े तो क्या राष्ट्रपति बनने के बाद आपका ध्यान उन गरीब बच्चों की ओर नहीं जाता जो गरीब होने के कारण पढ़ नहीं पाते ? इस प्रश्न के उत्तर में राष्ट्रपति जी ने कहा कि २००७ से एक ऐसा कानून लागू होने वाला है जिसमें १४ वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान बनाया गया है।

एक बच्चे ने पूछा कि जब आप ८वीं कक्षा में थे तो क्या राष्ट्रपति बनने का विचार आपके मन में आया था? इसके उत्तर में राष्ट्रपति जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि मेरा ध्यान केवल पढ़ाई में लगा रहता था पढ़ाई के अलावा में कुछ विचार नहीं करता था।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के लिए आर्यसमाज रानी बाग द्वारा आयोजित यह भेंट वार्ता धर्माचार्यो के आचार्य दयासागर, आचार्य आनन्द, आचार्य पंचम एवं आचार्य जीववर्द्धन के वेद मन्त्रों के द्वारा ही शुरू की गई और वेद मन्त्र से ही समापन किया गया।

शिविर संयोजक श्री जोगेन्द्र खट्टर के निर्देशन में चले इस भेंट वार्ता में समाज के वरिष्ठ माता प्रेमलता जी, श्री वेदव्रत मेहता, श्री विमल आर्य, श्री धर्मपाल गुप्ता, श्री यज्ञदत्त आर्य सहित अन्य लोगों ने भी भेंट की।

श्री विजय सिंह विजय नहीं रहे

आर्य जगत के गौरव, मूर्धन्य विद्वान महोपदेशक का जन्म १३ नवम्बर १९२५ को स्थान आर्यसमाज कौकेरा (मथुरा) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम में हुई उसके उपरान्त जयपुर में शास्त्रीय संगीत शिक्षा प्राप्त थी। सन् १९४२ के आन्दोलन में आजादी की लड़ाई में जेल गए। उसके उपरान्त सारे भारत की आर्यसमाजों में वैदिक मिशनरी का कार्य किया। प्रथम में मथुरा माण्डलिक सभा का गठन, उसके उपरान्त मुम्बई सभा में, उपरान्त मध्य भारत एवं विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभाओं में निरन्तर ३० वर्ष तक प्रचार कार्य किया। दिनांक १७ मई बुधवार सायं ६ बजे हृदयगति रूक जाने से देहावसान हो गया। अन्तिम संस्कार वैदिक रीति व राजकीय मान-सम्मान के साथ, आचार्य स्वदेश के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। आर्य समाज की बड़ी क्षति हुई है इस क्षति की पूर्ति असम्भव है। प्रतिदिन प्रातः सायं दोनों समय यज्ञ होता रहा। २८ मई रविवार को यज्ञ का समापन शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ। □

पृष्ठ १ का शेष

भारत-पाकिस्तान का बंटवारा...

बाद में श्री मौ० सिद्दिकी जी श्री पाकिस्तान के ख्यातिप्राप्त न्यायाधीश बनें। पिता ने अपनी सन्तानों के दिमाग में यह बात भी पक्के रूप में स्थापित कर दी कि यदि वे शिक्षा प्राप्त न कर पाते तो आज उनकी सन्तानें भी अशिक्षित ही रह जातीं। शिक्षा रूपी ऋण को महसूस करने की यह परम्परा दूसरी पीढ़ी में भी बलवती होती चली गई। जिसका परिणाम यह निकला कि कुछ माह पूर्व न्यायमूर्ति श्री रामदेय जी जब अपने परिजनों सहित पंजाब भ्रमण पर थे तो अपने पूज्य पिता श्री मौ० सिद्दिकी जी की शिक्षा-स्थली और क्रीडा-स्थली नवाशहर स्थित आर्य स्कूल को देखने पहुंचे तो कई बार भावुक हो गए। आर्यसमाज नवांशहर के प्रधान श्री प्रेम भारद्वाज जी ने इस घटना का उल्लेख जब सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य से किया तो तत्काल आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास को उजागर करने की सुन्दर योजना बनकर तैयार हो गई।

सभामन्त्री श्री विमल वधावन ने दूरभाष पर पाकिस्तान में श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी से सम्पर्क किया। १ जून २००६ की सायंकालीन वेला में श्री रामदेय इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे तो श्री विमल वधावन आर्य ने कई आर्यजनों के साथ उनका स्वागत किया।

१ जून को इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर के सभागार में श्री रामदेय जी के लिए स्वागत समारोह एवं रात्रि भोज का आयोजन किया गया जिसमें भारत के सुविख्यात न्यायविदों तथा समाजसेवी आर्य नेताओं ने भाग लिया।

स्वागत समारोह की अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री डी०पी० वधवा ने की तथा संचालन श्री विमल वधावन आर्य ने किया। समारोह का शुभारम्भ आर्यसमाज रानीबाग गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मन्त्रों से किया गया।

दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री विजेन्द्र जैन ने न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान के स्वागत में बोलते हुए कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय साहब का स्वागत और उन्हें अपने आमन्त्रण पर भारत बुलाना इस बात का प्रतीक है कि फिजाएं बदल रही है, लोगों की धड़कने बदल रही है। उन्होंने अपने कराची-लाहौर दौरे की स्मृतियों का उल्लेख करते हुए बताया कि दोनों मुल्कों की जनता में परस्पर एक भावनात्मक सम्बन्ध है। जनता के सम्बन्ध अच्छे होने से तरक्की के अवसर पैदा होंगे नहीं तो दोनों देशों के लिए तकलीफें बढ़ेंगी।

न्यायमूर्ति श्री विजेन्द्र जैन ने कहा कि हिन्दू सभ्यता समझने में तक्षशिला और मोहन जोदड़ों की खोज से काफी सहायता मिलती है। उन्हें देखने के लिए हमें पाकिस्तान जाना पड़ता है जबकि आज पाकिस्तान से चलकर श्री खलील-उर-रहमान साहब गुरुकुल कांगड़ी में हिन्दू सभ्यता को देखने आए हैं। हमें केवल इतिहास ने बांटा है, सांस्कृतिक रूप से हम आज भी एक हैं। उन्होंने न्यायमूर्ति श्री खलील रामदेय जी की इस आर्यसमाज यात्रा को एतिहासिक बताया।

दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ० एम०के० शर्मा ने श्री खलील रामदेय जी का स्वागत करते हुए कहा कि हम जब भी पाकिस्तान गए वहां के लोगों ने हमारे साथ सदैव ऐसा बर्ताव किया जैसे हम उनके सगे सम्बन्धी हैं। हमारे बीच में सहयोग की कई सम्भावनाएं हैं। कानूनविदों में भी परस्पर तालमेल बढ़ना चाहिए जिससे हम परस्पर कई ज्ञानवर्धक व्यवस्थाओं से लाभ उठा सकते हैं।

डॉ० एम०के० शर्मा ने बताया कि भारत में चैक निरादर होने के हजारों लाखों मुकदमें प्रतिवर्ष अदालतों में आते हैं जबकि पाकिस्तान में इनकी संख्या नगण्य है। इसका कारण है कि चैक देकर उसके भुगतान की व्यवस्था न कर पाना पाकिस्तानी कानूनों के अनुसार [illegible] है जिससे डरकर ऐसे अपराध नगण्य होते हैं। इस प्रकार ज्ञान के आदान प्रदान से दोनों देशों को लाभ होगा।

न्यायमूर्ति श्री जे०पी० सिंह ने कहा कि मेरा स्वयं का जन्म एबराबाद (पाकिस्तान) का है। बेशक विभाजन के कारण दो देश बन गए परन्तु जनता के मन एक होने चाहिए, परस्पर सम्बन्ध बढ़ने चाहिएं।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल ने कहा कि भारत-पाकिस्तान का बंटवारा हमारी बदनसीबी थी, भविष्य में अगर यह दोनों देश मिल जाए तो खुशनसीबी होगी। उन्होंने पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एवं स्वामी रामतीर्थ जी के जीवन का उल्लेख किया जो अंग्रेजों द्वारा भारत में दूसरे नम्बर पर बनाए गए पंजाब विश्वविद्यालय में प्रोफेसर लगे थे। पं० गुरुदत्त प्रथम भारतीय प्रोफेसर नियुक्त किए गए परन्तु उन्होंने वैदिक धर्म के कार्यों की खातिर उस समय की २५०/- रुपये प्रतिमाह की नौकरी को ठुकरा दिया।

श्री रामफल बंसल जी ने ख्वाजा दिल मौहम्मद द्वारा किया गया गीता का अनुवाद मुख्य अतिथि श्री खलील उर रहमान रामदेय जी को भेंट किया।

दिल्ली उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री अमरजीत सिह चण्डोक तथा सचिव श्री कीर्ति उप्पल ने भी मुख्य अतिथि के स्वागत में उदबोधन दिया।

न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी का शाल द्वारा माता प्रेमलता शास्त्री एवं श्रीमती शोभा शर्मा ने स्वागत किया। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, उपमन्त्री चौ० लक्ष्मीचन्द, श्री हंसराज चोपड़ा जी ने सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य साहित्य भेंट किया। श्री रामफल बंसल एवं न्यायमूर्ति डॉ० एम०के० शर्मा ने सार्वदेशिक सभा की ओर से बृहद अभिनन्दन-पत्र मुख्य अतिथि को प्रदान किया।

न्यायमूर्ति श्री खलील रामदेय जी ने कहा कि मुझे समझ नहीं आता कि जिन हालात में से हम लोग गुजरे हैं वे पैदा क्यों हुए? उन्होंने कहा कि मैं महसूस करता हूं कि शायद पाकिस्तान के अन्दर लोग एक दूसरे से इतना प्यार न करते हों जितना भारत के लोगों से। इसी प्रकार भारतवासियों के मन में भी पाकिस्तानियों के लिए प्रेम है। चण्डीगढ़ में पिछले वर्ष क्रिकेट मैच में पाकिस्तान के हजारों लोगों को भारतीयों ने अपने घरों में ठहराया। जब हम ऐसी बातें सुनते हैं तो वही प्रश्न बार-बार उठता है कि फिर यह विभाजन हुआ क्यों था? परस्पर जनता का भाईचारा लगातार बढ़ने से जरूर भविष्य अच्छा होगा।

श्री खलील रामदेय जी ने इतिहास को जाने-पहचाने सिद्धान्त रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा कि कुछ बदसलूकियां हुई तो कुछ लोग घरो से निकाले गए या निकल गए, फिर समाज से बाहर हो गए, वे वापस नहीं आ सके। परन्तु आज शिक्षा के कारण विचारों की स्वतन्त्रता ने जोर दिखाया। हमें यह समझना चाहिए कि आदमी की मूल सोच उसकी आत्मा में कोई फर्क नहीं है यहां तक कि सब धर्मों का मूल सोच भी एक ही है। जिन्दगी कुछ करने के लिए है तो जवाबदेही भी अवश्य होगी। उसी जवाबदेही से आगे का रास्ता तय होगा। हमारा जन्म किसी विशेष मकसद से हुआ है, केवल मौज लेने के लिए नहीं। हर किए की सजा या इनाम अवश्य मिलेगा। चाहे कोई उसे जहन्नम, नरक कहे या जन्नत और स्वर्ग। हमारा जीवन एक बड़ी यात्रा का छोटा सा हिस्सा है।

उन्होंने कहा कि किसी मजहब के मूल में अत्याचार, ज्यादती या गला काटने की सीख नहीं है। हर शख्स एक अच्छा अन्सान बने यही सबका पैगाम है।

श्री खलील-उर-रहमान रामदेय ने महसूस किया कि अब सरहद के दोनों तरफ लोगों में परस्पर प्यार बढ़ रहा है, यह मेल-मिलाप बढ़ता रहे, सरकारें प्रयास करती रहें। मैंने इसका नाम एम०एम०रोड रखा है। मनमोहन-मुशर्रफ रोड। उन्होंने कहा कि हम तो एकता के स्वयं प्रतीक हैं। मेरे नाम में रहमान है तो राम भी है।

मेरे पिता को आर्यसमाज ने शिक्षा दी इसलिए मैं विशेष रूप से आर्यसमाज के प्रति ऋणी हूं। नवांशहर में आर्य स्कूल में मेरे पिता की शिक्षा हुई, उन्होंने हमारे दिमाग में बिठा दिया कि आर्यसमाज की शिक्षा सेवा के कारण ही हम पढ़ सके। आज हम जो कुछ भी है अपने पिता को आर्यसमाज द्वारा दी गई शिक्षा के कारण ही हैं।

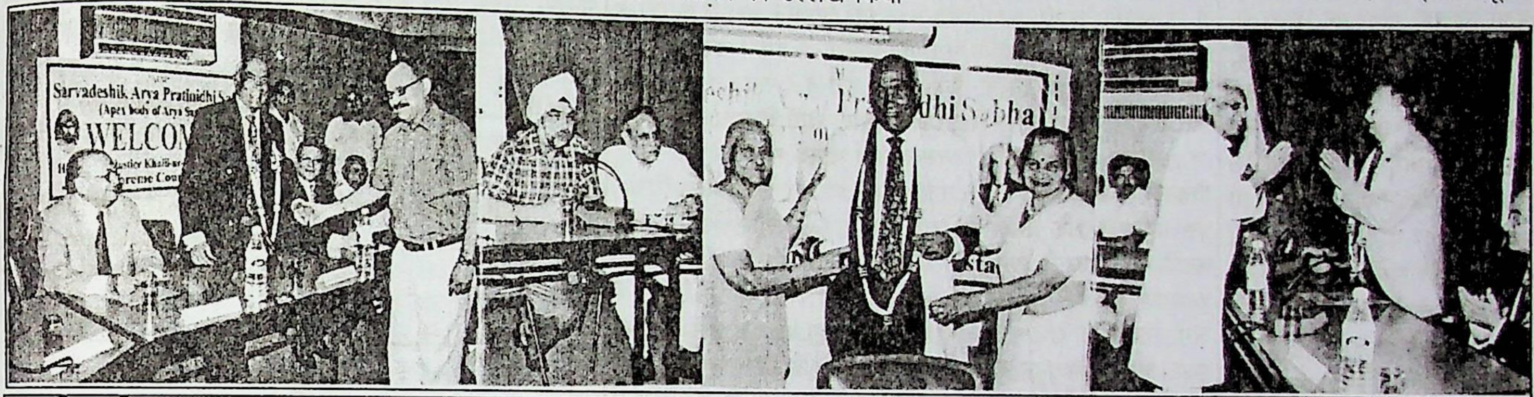
उन्होंने बड़ी सदभावनापूर्वक कहा कि मेरे पिता अक्सर यह कहा करते थे कि आर्यसमाज के लोगों ने यह कभी नहीं कहा कि हम स्कूल चलाते हैं आर्यसमाजियों के धन से, इसमें मुसलमान को शिक्षा क्यों दें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री हरबन्स लाल कोहली ने कहा कि भारत पाकिस्तान के बीच वीसा समाप्त करने के लिए आपको प्रयास करने चाहिए। इसके उत्तर में श्री खलील रामदेय ने कहा कि जनता का दबाव यदि इसी प्रकार बढ़ता रहे तो यह काम अपने आप ही हो जाएगा।

स्वागत समारोह के समापन में न्यायमूर्ति श्री डी०पी० वधवा ने कहा कि विभाजन से पहले का जमाना कुछ और ही था उसका आनन्द अलग था। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने आज जो नई पहल की है भारत-पाकिस्तान की जनता के सम्बन्धों को सुधारने की दिशा में यह एक ऐतिहासिक कार्य होगा।

शान्ति पाठ के साथ स्वागत समारोह समाप्त हुआ और पश्चात समस्त उपस्थित महानुभावों ने रात्रिभोज का आनन्द लिया।

गणमान्य आर्यजनों में अन्य प्रमुख थे श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर, सर्वश्री अजय भल्ला, डॉ० दयानन्द लीखा, सुभाष आर्य, अतुल बढेरा एडवोकेट, बुद्धिराजा एडवोकेट, कवल नयन शर्मा, गोपाल आर्य तथा हंसराज चोपड़ा इत्यादि।



श्री खलील-उर-रहमान रामदेय का स्वागत करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय बार एशोसियेशन के सचिव श्री कीर्ति उप्पल तथा उद्‌बोधन देते हुए अध्यक्ष श्री अमरजीत सिंह चंडोक। श्री खलील-उर-रहमान रामदेय का स्वागत शाल ओढ़ाकर करते हुए माता प्रेमलता शास्त्री एवं श्रीमती शोभा शर्मा, न्यायमूर्ति श्री डी०पी० वधवा का स्वागत करते हुए सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा।

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में पाक के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय का दिल्ली, मुरादनगर, मेरठ, मुजफ्फरनगर तथा हरिद्वार में स्वागत। दिल्ली उच्च न्यायालय का दौरा। विस्तृत समाचार अगले अंक में। – सम्पादक

आर्यसमाज रायला का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रायला का दिनांक १३ से १५ मई, २००६ तक द्वितीय वार्षिकोत्सव कई महत्वपूर्ण सम्मेलनों के साथ सम्पन्न हुआ। इस भव्य समारोह में कई ख्यातिप्राप्त विद्वानों, संन्यासियों एवं भजनोपदेशकों ने अपने अपने विचार व्याख्यानों एवं साज सज्जायुक्त गीतों भजनों के माध्यम से व्यक्त किए। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ डॉ० सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। समारोह के प्रथम दिन शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक सम्मेलन हुआ जिसके वार्ता का विषय था आधुनिक शिक्षा में वैदिक संस्कृति की उपयोगिता। इसमें स्थानीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की भी भारी संख्या में उपस्थिति रही। अध्यक्षता स्थानीय प्रिंसिपल श्री भंवरलाल पारीक ने की। रात्रिकालीन सत्र में वेद सम्मेलन हुआ जिसका विषय था ईश्वरीय ज्ञान वेद की नित्यता एवं ईश्वर उपासना में अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से हानियां। द्वितीय दिन महिला सम्मेलन के नाम रहा विषय था कन्या भ्रूण हत्या एवं नारी उत्पीड़न निषेध तथा रात्रि कालीन सत्र में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन जिसका विषय रहा शहीदों का स्मरण तथा हमारी जिम्मेदारियां जिसमें देश भक्तिपूर्ण ओजस्वी व्याख्यान एवं गीत भजनों की प्रस्तुति रही। वक्ताओं में स्वामी रामानन्द की ऋषि उद्यान अजमेर, वेदपाठी श्री भवदेव जी शास्त्री, पं० भूपेन्द्र सिंह जी भजनोपदेशक राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर, पं० नरेश दत्त जी आर्य भजनोपदेशक बिजनौर मय मण्डली, ब्र० नन्दकिशोर जी, ब्र० जगबन्धु छत्तीसगढ़ इनके अलावा समारोह में आर्य श्रेष्ठि श्री रतिराम जी सिलीगुडी श्री जयदेव जी आर्य संस्थापक एवं संचालक डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल भीलवाड़ा, श्री विजय कुमार जी शर्मा प्रधान नगर आर्यसमाज भीलवाड़ा आर्यसमाज शाहपुरा, आर्यसमाज शास्त्री नगर भीलवाड़ा, डोटरीया विजयनगर, सरवाड़, चांपानेरी के कई सदस्यगण तथा आसपास के कई लोगों ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया। ☐

बौद्धिक एवं शारीरिक शक्ति संचय प्रशिक्षण शिविर

महर्षि दयानन्द की पवित्र जन्मभूमि टंकारा में उपदेशक विद्यालय के ४०वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में १७ जुलाई, २००६ से आचार्य वेदव्रत (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य वीर दल) की अध्यक्षता में बौद्धिक एवं शारीरिक शक्ति संचय प्रशिक्षण शिविर निःशुल्क आयोजित किया जा रहा है। शिविर शनिवार ८ जुलाई से सोमवार १७ जुलाई तक प्रान्तीय स्तर पर किया जा रहा है।

शारीरिक शक्ति के अभाव में मानसिक शक्ति का अभाव होता है। अतः विभिन्न प्रकार के दुष्प्रभावों से बचने के लिए एवं दिव्य गुणों को लाने के लिए आप इस शिविर में अवश्य भाग लें।

क्या गाय को मारकर ही भूख मिटती है?

– डॉ० (श्रीमती) अनिला सिंह आर्या

धरती पर आते ही प्राणी को पहली अनुभूति जो होती है वह है भूख। भूख जिसके लिए कहा जाता है कि भूख न देखे बासी भात, भूख में तो गूलर भी पकवान लगता है और भूखे भजन न होई गोपाला ये ले अपनी कण्ठी माला। पेट में उठती क्षुधाग्नि आदमी से जो ना कराए वह थोड़ा है क्योंकि भूख की दुनिया में ईमान बदल जाते है समस्त जगत में जितने भी क्रियाकलाप होते हैं वे सब पेट की खातिर होते हैं और दूसरी आवश्यकताओं का स्थान रोटी के पश्चात् आता है।

असभ्य या अविकसित सभ्यता का मानव मांसाहारी था परन्तु विकास के बढ़ते कदमों ने उसे शाकाहारी बनाने का काम किया। इस प्रकार हिंसक मानव अहिंसक बन गया। उसे ज्ञान हो गया कि धरती पर उत्पन्न पशु-पक्षी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसका कल्याण करते हैं तो वह उनके संरक्षण एवं संवर्धन की कोशिश में लग गया। इसी कड़ी में वह गो संरक्षण संवर्धन की ओर अधिक सजग हुआ। भारतीय कानून के तहत जिनकी हत्या अपराध घोषित है उनमें गाय प्रमुख रूप से है। १८५७ को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ाई का आरम्भ कारतूसों में लगी गाय की चर्बी लगी होने के कारण हुआ था जिन्हें मुंह से खोलना होता था।

भारतीय संस्कृति में गो पालन धर्म के साथ जुड़ा है तभी तो इसे गऊमाता कहा जाता है। आज निस्संदेह विज्ञान ने माना है कि गाय से प्राप्त प्रत्येक वस्तु अमृत है व अद्वितीय औषधि है। इसके द्वारा पर्यावरण ही नहीं धरती की उर्वरता में भी वृद्धि होती है। परन्तु एक सम्प्रदाय द्वारा सदैव गोहत्या समय–समय होती रहती है। शायद इसके पीछे मानसिक रूप से गैर-कानूनी कार्य करके एक वर्ग के जनसमूह की धार्मिक आस्था पर प्रहार करके प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। दूसरा कारण गैरकानूनी कृत्य को अन्जाम देकर अपना व्यापार करके कमाने का उद्देश्य होता है। परन्तु वे ऐसा क्यों करते हैं जबकि उन्हें जानकारी है कि यह संगीन अपराध की श्रेणी में आता है। एक पहलू यह भी है कि पुलिस को ले देकर यह कत्लेआम निर्बाध गति से चलता रहता है। चलता रहता है के प्रवाह में १८४ गायों को एक साथ कत्ल धौलाना थाने के सालेपुर कोटला गांव में किया गया और शासन मौन धारण किए रहा। परन्तु धीरे धीरे लावा ज्वालामुखी से निकलने लगा तो विधानसभा में भी आवाज उठी परन्तु कानूनी कार्यवाही को सही रूप प्रदान नहीं किया गया तो हिन्दू संगठनों द्वारा बैठकों में इस क्रूर कर्म की निन्दा की गई और दोषियों के प्रति रोष प्रकट किया गया। प्रशासन की ढील से भाजपा ने कदम उठाया शांतिपूर्ण तरीके से हवन करने का परन्तु मार पीट, जाम, प्रदर्शन, गिरफ्तारी जैसी कार्यवाही हो गयी।

बात यह नहीं है कि हिन्दू गाय को पूजते हैं तथा श्रद्धा का भाव रखते हैं इससे भी बढ़कर आज विज्ञान ने माना है कि गाय मानव जाति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। इसका दूध, गोबर, मूत्र स्वास्थ्य के लिए तथा अनेक गम्भीर रोगों के लिए उत्तम है। इसका दूध अमृत है गोबर एंटीसेप्टिक है तो मूत्र कैंसर जैसी बीमारी में उत्तम औषधि है। अर्थात् समस्त प्राणी मात्र के लिए हितकारी है।

वर्तमान में परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध हो रहा है कि मांस खाने से शरीर अनेक रोगों का घर हो जाता है जबकि अनाज, दाल, घी, दूध, दही, फल, सब्जी भूख शान्त करने के अलावा पौष्टिकता भी प्रदान करते हैं।

मूक पशु तो प्रतिकार कर नहीं सकते परन्तु उनकी कराहट चीत्कार एक दिन जरूर रंग लाती है। जरा सोचिए ! हम जीने के लिए खा रहे हैं या खाने के लिए जी रहे हैं।

प्रवेश प्रारम्भ

(१)

देश विदेश में वैदिक धर्म को प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए यहां दो वर्ष का पाठ्यक्रम रखा गया है, जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के साथ साथ उनके लघु ग्रन्थों को भी पढ़ाया जाता है, इसके अतिरिक्त वेद, निरूक्त, व्याकरण, दर्शनादि का अध्ययन कराया जाता है।

व्याख्यान कला को विशेष रूप से निखारा जाता है जिससे आधुनिक युग में वैदिक धर्म की महत्ता को जन जन में प्रचारित किया जा सके।

प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने वाले छात्र को 'धर्मशास्त्री' और द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने वाले छात्र को 'धर्माचार्य' की उपाधि प्रदान की जाती है।

छात्र का भोजन, निवास एवं अध्ययनादि का समस्त व्यय संस्थान करता है। प्रवेश योग्यता कम से कम हाई स्कूल एवं संस्कृत मध्यमा उत्तीर्ण छात्र प्रवेश ले सकते हैं।

प्रार्थना पत्र के साथ अपनी योगयता के प्रमाण-पत्र की छाया प्रति के साथ प्रेषित करें।

विशेष : श्री साधना आश्रम में जो महानुभाव साधना करना चाहते हैं उनके स्वागत के लिए हम सब उत्सुक हैं। विद्वान् पेंशनर को प्राथमिकता दी जाती है।

सम्पर्क करें - आचार्य डॉ० सत्यप्रिय शास्त्री वेदशिरोमणि
वैदिक विद्यापीठ, श्री साधना आश्रम
समीप मोदी भवन, बृजघाट - २४५२०५
उत्तर प्रदेश

(२)

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा में नवीन सत्र २००६–०७ के लिए बालकों का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। उत्तम जलवायु अनुशासित वातावरण, समुचित पाठ्यक्रम यहां की अपनी विशेषता है।

अंग्रेजी, गणित, विज्ञान तथा संस्कृत के अध्ययन की विशेष व्यवस्था है। स्थान सीमित। सम्पर्क करें।

प्रवेश ३० जून तक।

पाठ्यक्रम : कक्षा १ से ८ तक उत्तर प्रदेश शासन
कक्षा ६ से १२ तक उ०प्र० संस्कृत मा० शिक्षा परिषद्, लखनऊ

सम्पर्क सूत्र - आचार्य राजदेव शास्त्री
संचालक/आचार्य आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा, जिला औरैया
दूरभाष : ०५६८१ - २३६०४३

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मन्दिर गिरिहिण्डा, शेखपुरा, बिहार

प्रधान : श्री दर्शन कुमार शास्त्री
मन्त्री : श्री सुखदेव प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रामचन्द्र आर्य

आर्यसमाज छोटी सादड़ी, चितौड़गढ़

प्रधान : श्री अरविन्द कुमार आर्य
मन्त्री : श्री विनयचंद पचोरी
कोषाध्यक्ष : श्री ललित कुमार पंवार

आर्यसमाज हल्द्वानी

प्रधान : श्री पृथ्वीराज खुल्लर
मंत्री : श्री बसन्त बंसल
कोषाध्यक्ष : श्री अनुज कान्त

संस्कृत व्याकरणाचार्य की आवश्यकता

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा, राजकोट – ३६३६५० गुजरात के लिए संस्कृत प्राच्य व्याकरण को पढ़ाने के लिए एक व्याकरणाचार्य की आवश्यकता है। कृपया अपना आवेदन पत्र आचार्य विद्यादेव, प्राचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा, जिला राजकोट, गुंजरात – ३६३६५० को भिजवाने की कृपा करें।

दूरभाष नं० [illegible] २८७७५६ एवं चलभाष नं० ०९८९५८७७५६

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थल ई टीवी राजस्थान पर

आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ऋषिवर के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली के ऊपर ई टीवी राजस्थान ने एक बड़ा ही भव्य कार्यक्रम अपने स्थायी फीचर 'एक खबर खास नजर' में दिनांक ८ मई २००६ को अपने 'प्राइम टाइम' में सायं ८.३० पर प्रस्तुत किया। 'मौत का रहस्य' शीर्षक से प्रसारित इस कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द को विष दिए जाने से संबन्धित षड्यन्त्र की जानकारी देते हुए चैनल ने इन पंक्तियों के लेखक के साक्षात्कार के साथ महर्षि जी के उदयपुर प्रवास, उस समय महर्षि जी द्वारा किए गए कार्यों तथा श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा इस जीर्ण शीर्ण भवन के कायाकल्प किए जाने को बड़ी गम्भीरता व सुन्दरता के साथ उकेरा। ऐसा प्रतीत होता था कि संवाददाता ने न्यास की गतिविधियों को आत्मसात कर लिया था। न्यास की भव्य चित्रदीर्घा इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में छायी रही। इस कार्यक्रम के अन्त में श्री रामसिंह आर्य, जोधपुर का साक्षात्कार था। उन्होंने ऋषि जीवन के सभी अधिकृत विद्वानों व स्थापित तथ्यों के विरुद्ध नन्हीं जान के अपमान सम्बन्धी घटना को मिथ्या बताया, वह समझ नहीं आया।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष,
चलभाष : ९३१४२३५१०१

झारखण्ड में धर्म प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के तत्वावधान में दिनांक ८, ९ एवं १० मई को वदहीडा एवं ११, १२ एवं १३ मई को धनबाद में आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव बड़े धूम–धाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान् पं० उमाकान्त शास्त्री महोपदेशक बिहार पटना, बहन धर्मरक्षिता एवं पं० उपेन्द्र कुमार आर्य चंडीगढ़ आदि विद्वानों के भजन एवे वेदोपदेश हुए। हजारों की संख्या में नर नारी उपस्थित होते थे। इस प्रचार का प्रभाव आस–पास के ग्रामीण इलाके में काफी अच्छा पड़ा। अनेक व्यक्तियों का यज्ञोपवीत संस्कार पं० उमाकान्त शास्त्री जी ने करवाया।

– इन्द्रदेव शास्त्री, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत

महर्षि दयानन्द विद्यालय एक छोटा सा 'विद्या का उपवन' दिन प्रतिदिन अपनी सुगन्धि से भरपूर सुगन्ध को दूर दूर तक प्रसारित कर रहा है। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारे विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। सभी विद्यार्थियों ने सभी विषयों में बहुत अच्छे अंक प्राप्त किए। सभी का विवरण देना सम्भव नहीं है। विषयानुसार अधिकतम अंक इस प्रकार रहे –



गणित – ९९,
विज्ञान – ९१,
सामाजिक विज्ञान – ९२,
अंग्रेजी – ८७,
हिन्दी–७८,
संस्कृत–९४।

हमारे विद्यालय के प्रबन्ध समिति के सदस्यगण, प्रधानाचार्य, अध्यापक वर्ग व विद्यार्थीगण, सभी का सतत् परिश्रम सफल रहा। परिणाम देखकर, सुनकर विद्यालय में एक प्रसन्नता का माहौल था। सभी एक दूसरे को मिष्ठान खिला कर बधाई दे रहे थे। बीते समय के कठिन परिश्रम को भूल कर भावी सपनों की कल्पनाएं संजो रहे थे।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि चेयरमैन श्री जगदीश आर्य, श्री देवप्रकाश पाहवा, श्री दयानन्द मदान जी की देख रेख में यह विद्यालय निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहे, उनका आशीर्वाद हम सब पर बना रहे। विद्यालय के सभी सदस्यों को बहुत–बहुत शुभकामनाओं के साथ बधाई देते हुए यही आशा करती हूं कि आगामी वर्षों में इससे भी अच्छा परिणाम रहे।

– विभा पुरी, प्रिंसिपल

गोहत्या के विरोध में प्रस्ताव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद गाजियाबाद की आज प्रकाशवीर शास्त्री भवन, बृजघाट में सम्पन्न विशाल धार्मिक सभा गत ११–१२ मई की रात्रि में १८४ गोओं की धौलाना क्षेत्र के साल्हेपुर कोटला गांव में की गयी हत्या की कठोरतम शब्दों में निन्दा करती है। शासन और प्रशासन की भी इस बात के लिए भर्त्सना करती है कि आज तक गो–हत्यारों को गिरफ्तार नहीं किया गया बल्कि उल्टें गो भक्तों का ही उत्पीड़न किया जा रहा है। सभा में सरकार से मांग की गयी कि –

१. ११–१२ मई २००६ की रात्रि को धौलाना क्षेत्र के साल्हेपुर गोटला गांव में १८४ गायों के हत्यारों को अविलम्ब गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध कठोर कानूनी कार्यवाही की जाए।

२. इन हत्याओं के विरुद्ध आवाज उठाने वाले गो–भक्तों का उत्पीड़न बन्द किया जाए तथा उन्हें जेल से तुरन्त रिहा किया जाए।

३. जनपद में आए दिन कहीं न कहीं हो रही गो हत्या पर प्रशासन द्वारा सख्ती से यह सुनिश्चित किया जाए कि भविष्य में गो वंश की हत्या न होने पाए। ताकि आर्यों/हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं से कोई खिलवाड़ न कर सके और क्षेत्र में साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित हो।

उपरोक्त तथ्यों को लेकर दिनांक ८–६–२००६ को १० बजे समस्त जनपद के आर्यों की ओर से जिलाधिकारी महोदय को एक ज्ञापन भी दिया गया।

– माया प्रकाश, मंत्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा,
गाजियाबाद

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2003-05
Licensed to Post Without Pre-payment

पृष्ठ २ का शेष

समय का सदुपयोग करने से ही ...

शिविरार्थियों को अपना विशेष प्रवचन देते हुए श्रीमती किरण बेदी ने कहा कि हर बीज की अपनी एक प्रकृति होती है उसे उसी प्रकृति तथा हालात के अनुसार फल उत्पन्न करना होता है। उसी प्रकार हमें भी वर्तमान परिस्थितियों और योग्यताओं के दृष्टिगत केवल यही विचार करते रहना चाहिए कि हम बिना आलस्य, बिना प्रमाद, बिना मूर्खता के किस प्रकार अपने समय का सदुपयोग करके अपने कर्म सुन्दर, सभ्य और प्रेरणादायक बना सकते हैं जिससे भावी समाज भी हमारे कर्मों से प्रेरणा ले सके।

उन्होंने कहा कि समय का सदुपयोग जो व्यक्ति समय पर नहीं कर पाता वह आगे चलकर पछताने के अलावा कुछ नहीं कर पाता। ऐसे व्यक्ति स्वयं भी निराश होते हैं, अपने परिवार को निराश करते हैं। दूषित कर्मों में शामिल होकर सारे समाज को परेशान करते हैं।

श्रीमती किरण बेदी ने अपने उद्बोधन में बच्चों को महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मैं स्वयं अपनी आत्मा की शुद्धि इन्हीं मन्त्रों विशेष रूप से गायत्री मन्त्र तथा हवन से करती हूं।



तिहाड़ जेल की इंस्पेक्टर जनरल किरण बेदी का स्वागत उद्बोधन करते हुए श्री विमल वधावन आर्य, मंचासीन माता प्रेमलता शास्त्री, श्री वेदव्रत मेहता, श्री दयासागर, श्री जोगिन्द्र खट्टर। किरण बेदी का स्वागत करते हुए रानीबाग के आर्यजन।

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्कालयाध्यक्ष (12/99)
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

शोक समाचार



आर्यसमाज विक्रमनगर के मंत्री श्री वेदव्रत जी की पूजनीया माता श्रीमती विशन देवी जी का देहावसान दिनांक २० मई, २००६ को दिल्ली में हो गया।

वे ८६ वर्ष की थीं। उनका जन्म अविभाजित पंजाब के जिला मुजफ्फरगढ़ (अब पाकिस्तान) में हुआ था।

पूज्य माता जी अपने पीछे सुपुत्र श्री वेदव्रत जी, पुत्रवधु श्रीमती चन्द्रकान्ता आर्या, दो पौत्र श्री प्रणव जी, श्री अवनीश जी तथा सुपुत्री श्रीमती सुषमता चौधरी को छोड़ गई है, ये सभी आर्यसमाज के प्रचार में कार्यरत हैं।

माता जी ने समूचे परिवार में आर्यसमाज की भावनाओं को स्थापित करने का प्रयास सदैव अपने व्यक्तिगत जीवन और आचरण से किया।

उनकी प्रेरणाएं परिवार में ही नहीं अपितु सारे समाज में व्याप्त हैं।

श्री वेदव्रत जी के पिता स्व० श्री लालचन्द जी भी हैदराबाद सत्याग्रह में स्वतन्त्रता सेनानी रहे हैं। □

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

ओ३म्



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक ८ | ३० जुलाई से ५ अगस्त, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | श्रा०शु०५

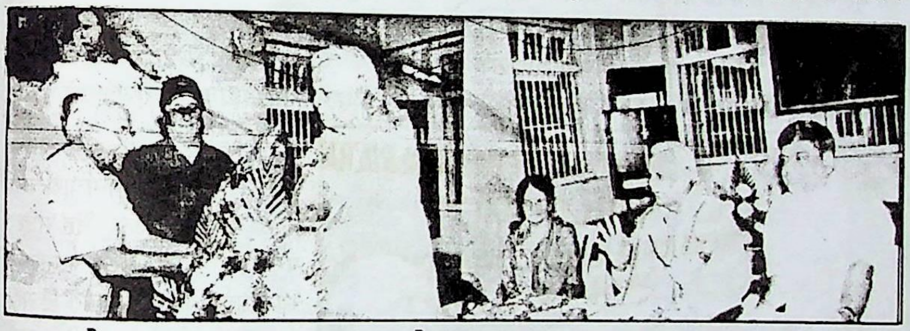
भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह का मुम्बई में स्वागत

प्रधान पद के अधिकारों का नहीं कर्त्तव्यों का पालक - मिठाई लाल सिंह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनियुक्त प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी का मुम्बई की आर्यसमाजों की ओर से अभिनन्दन किया गया। इस स्वागत समारोह में मुम्बई की विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं कर्मठ सदस्य श्रीमती शिवराजवती आर्या, सभामन्त्री श्री अरुण अबरोल, डॉ० तुलसीराम वांगियां, श्री विश्वभूषण आर्य, श्री लद्धाभाई पटेल श्री चन्द्रभूषण गिरोत्रा, श्री भद्रसेन छाबड़ा सहित अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था के प्रधान पद पर आने के बाद मुझे महसूस हुआ कि मुझे पदाधिकारी नहीं पद के कर्त्तव्यों का पालक बनना चाहिए। सार्वदेशिक सभा प्रधान पद के कर्त्तव्य महान हैं मैं प्रयास करूगा कि समूचे आर्य जगत को प्रेम पूर्वक साथ लेकर कार्यो का सम्पादन किया जाए।



26 से 29 अक्तूबर को मुज्जफ्फरनगर (उ०प्र०) में होगा विशाल आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग बैठक १५ जून को कानपुर में सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने की।

इस बैठक में प्रमुख रूप से सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री देवरत्न आर्य (सेवानिवृत कैप्टन) को कई अनियमितताओं के कारण प्रधान पद से हटाए जाने का स्वागत किया गया। सभा की उपप्रधाना डॉ० आशारानी राय ने कहा कि अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव के विरुद्ध समूचे आर्य जगत को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनियुक्त प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी एवं मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करना चाहिए। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक में यह विचार सर्वसम्मति से पारित हुआ।

श्री अरविन्द आर्य एवं सभा मन्त्री श्री चन्द्रकिरण शर्मा जी ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश २६ से २६ अक्टूबर, २००६ की तिथियों में एक विशाल आर्य महासम्मेलन पश्चिम उत्तर प्रदेश के मुज्जफरनगर जिले में आयोजित करेगी।

शेष पृष्ठ ८ पर

सार्वदेशिक न्याय सभा के सदस्य श्री वेद प्रकाश गोयल की धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला देवी का देहावसान



सार्वदेशिक न्याय सभा के सम्माननीय सदस्य श्री वेदप्रकाश गोयल की धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला देवी गोयल का दुखद देहावसान उनके निवास स्थान पर दिनाक १३ जुलाई को प्रातः ४ बजे हो गया। उनका अन्तिम संस्कार आर्यसमाज लोधी रोड द्वारा संचालित निगम बोध घाट पर वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। श्रीमती निर्मला देवी ७६ वर्ष की थीं वे विगत लम्बे समय से रोगग्रस्त थीं। स्व० श्रीमती निर्मला देवी जी के चार विवाहित सुपुत्र तथा दो विवाहित सुप्रत्रिया हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह तथा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने श्री वेदप्रकाश गोयल जी को सान्त्वना देते हुए परमात्मा से प्रार्थना की है कि दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान हो। सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी ने भी श्री गोयल को सान्त्वना संदेश भेजा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विरुद्ध षड्यन्त्रों से सावधान

कुछ लोग अपने स्वार्थो की पूर्ति हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय अलग-अलग स्थानों के पते देकर प्रचारित करते रहते हैं। आर्य जनता की सूचनार्थ निवेदन है अग्निवेश के कुकृत्यों के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय निम्न पते पर चलाया जा रहा है -

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक प्रैस, १४८८, पटौदी हाउस, (आर्य अनाथालय के पास) दरियागंज, नई दिल्ली-२, फोन एवं फैक्स - ०११ - २३२७०५०७

कुछ स्वार्थी तत्व सार्वदेशिक सभा के नाम पर धन बटोरने का कार्य भी कर रहे हैं जिसमें पूर्व प्रधान श्री देवरत्न आर्य (सेवानिवृत कैप्टन) के नाम का भी दुरुपयोग लगातार किया जा रहा है, जिन्हें घोर अनियमितताओं और सभा विरोधी विशेष रूप से अग्निवेश मोहवश षड्यन्त्रों के कारण सार्वदेशिक न्याय सभा ने अपने आदेश दिनांक २६ जून, २००६ के द्वारा प्रधान पद से हटा दिया था। इसी प्रकार अन्य प्रान्तीय सभाओं के प्रधानों के नाम भी उनकी स्वीकृति के बिना ही नही अपितु बार-२ विरोध के बावजूद भी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के नाम पर धन बटोरने के लिए प्रयोग किए जा रहे है। इस सारे पाखण्ड और षडयन्त्र का जल्द ही आर्य जनता के समक्ष घड़ा फूटेगा। पूरे आर्य जगत में आग लगी हो और चोर-२ मौसेरे भाई की तरह महासम्मेलन नाम देकर खाने-पीने, मौज मस्ती के आयोजन पर जुटे हैं जिसमें इनके मन की परिकल्पनाएं यहां तक जा पहुंची कि आगामी आर्य महासम्मेलन में अग्निवेश जी को उचित स्थान व सम्मान दिया जाएगा। आर्य जनता विद्वान, कार्यकर्त्ता, पदाधिकारी एवं प्रान्तीय सभाएं इन सब कलाकारियों से सावधान रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को वर्तमान संकट से निकालने के लिए इस स्वार्थी मण्डली के पास कोई योजना नही है। तीसरी सार्वदेशिक सभा के गठन का इनका मनसूबा लम्बे समय से बन्धा हुआ है। समूचा आर्य जगत अपनी समस्त भावनाओं को संकट पर एकाग्र करते हुए तन, मन, धन से सहयोग करे।

भवदीय

मिठाई लाल सिंह	सुदर्शन शर्मा	विमल आर्य	जगदीश आर्य
सभा प्रधान	कार्यकारी प्रधान	सभामन्त्री	कोषाध्यक्ष

ओ३म् और अल्लाह में कोई अन्तर नहीं
धर्म मिलाता है, बांटता नहीं
आपसी मेल-मिलाप से रिश्ते सुधरेंगे

न अपना धर्म छोड़ो, न दूसरों का छेड़ो
दिमाग को छोड़कर दिल से बात की जाए
हर समस्या का कारण तंगदिली है

उपरोक्त शीर्षक विभिन्न राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रों से एकत्रित किए गए हैं जो पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी की भारत यात्रा के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों से उद्धृत किए गए थे। न्यायमूर्ति श्री खलील-उर-रहमान रामदेय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य जी के निमन्त्रण पर तीन-दिवसीय भारत यात्रा पर पधारे थे।

हरिद्वार स्थित ऐतिहासिक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में पहुंचते ही श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी उत्साह से भाव विभारे हो उठे। भारत-पाक सम्बन्धों पर एक गोष्ठी तथा प्रेस क्लब हरिद्वार द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रांगण में आयोजित संवाददाता सम्मेलन उनके मुख्य कार्यक्रम थे। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य एद कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार, श्री वेदव्रत शर्मा, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री आदि के साथ श्री रामदेय जी स्वामी रामदेव जी के द्वारा स्थापित पतंजलि योग धाम को भी देखने गए।

गंगा न मुसलमान को न हिन्दू को दखती है न जातपात न ऊंच नीच को देखती है वो तो जिन्दगी का पैगाम हर शख्स को देती रहती है व उसके बदले में कुछ नहीं मांगती है। इसका मकसद बहना है और वह सदियों से बहती जा रही है। इसके इस पानी में एक ज़िन्दगी है जो बहती जा रही है। इसके जल से कहीं फल, फसले व फूल उगते हैं। यही इसके जल का पैगाम है। यह कहना है पाकिस्तान उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश खुलील-उर-रहमान रामदेय का। वे यहां गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्रबन्धन सभागार में अपने सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि दोनों मुल्कों के बीच बढ़ी बुराइयों का मुख्य कारण आपसी समन्वय व मेलजोल न होना रहा है।

उन्होंने कहा कि वे कोई राजनेता व धार्मिक प्रचारक नहीं हैं। उनका मानना है कि कोई भी धर्म आपस में बैर रखना नहीं सिखाता है परन्तु आज लोग धर्म के नाम पर उनके मूल को भूल अहंकार में जी रहे हैं परन्तु सभी धर्मो का मूल उद्देश्य अहंकार को मिटाना व आपसी भाईचारा बढ़ाना है। हम सब लोगों की यह कोशिश होनी चाहिए कि हम सभी एक दूसरे के धर्म पर कोई इतराज न करें। धर्म कोई भी हो सभी का मत है कि एक साथ मिलकर रहना व इन्सान को एक अच्छा इन्सान बनाना। आपसी मेलजोल बढ़ने से दोनों देशों में काफी समन्वय बढ़ा है। इससे आपसी गलत फहमियां भी काफी हद तक दूर हुई हैं जिससे दोनों देशों के बीच चल रहे विवादों को खत्म करने में काफी मदद मिलेगी। दुनिया में अगर इन्सानियत को बढ़ाना है तो हमें न अपना धर्म छोड़ों न दूसरे के धर्म को छेड़ो का मूलमंत्र अपनाना होगा। इससे पूर्व सभागार में पहुंचने पर वैदिक मन्त्रोचरणों के बीच ही रामदेय का स्वागत किया गया। अपने सम्बोधन में आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री ने कहा कि आर्यसमाज के पावन हाऊस गुरुकुल की स्थापना का मूल स्थान लाहौर में है, हमारा आपसे भावनात्मक रिश्ता है जो सभी रिश्तों से बढ़ा है आपका अपने इस परिवार में स्वागत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि भारत व पाकिस्तान दो भाई व हम दोनों भारत माता की सन्तानें हैं। हमें इन्सानियत से प्रेम है विश्वविद्यालय ने सदैव मानवता के हित में कार्य किए हैं और आज भी इसी ओर अग्रसर है। उन्होंने बताया कि श्री रामदेय के पिता व चाचा ने १६१६ में नवां शहर पंजाब में आर्यसमाज के विद्यालय में शिक्षण ग्रहण की थी जिसके चलते आज भी श्री रामदेय के जीवन पर आर्यसमाज का गहरा प्रभाव है।

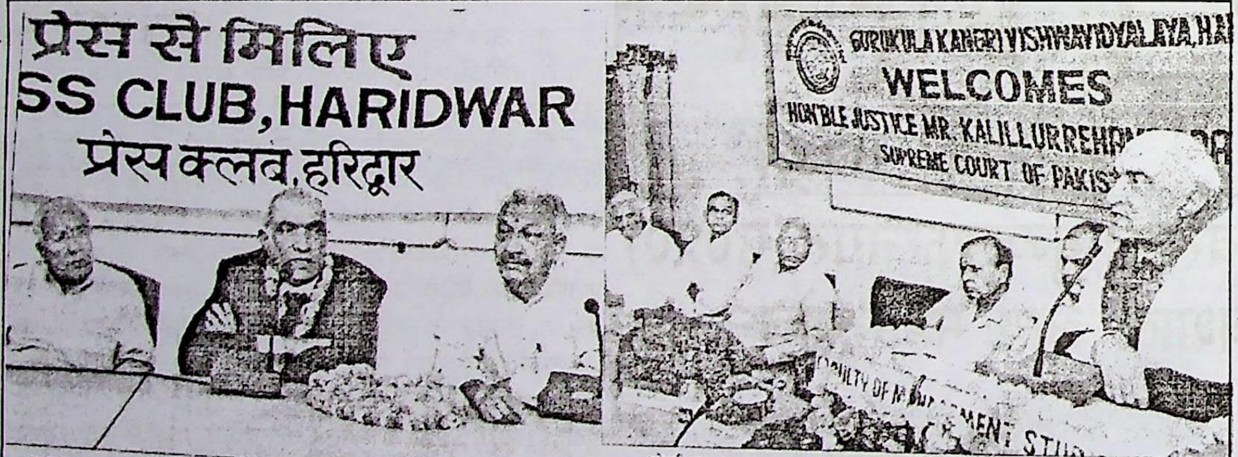
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि महोदय से प्रश्न किया कि भारत पाकिस्तान सम्बन्धों में जितनी अच्छी पहल और जितने अधिक कदम भारत सरकार और भारतवासियों की ओर से उठाए जा रहे हैं क्या वैसी भावनाएं पाकिस्तान में भी हैं ? जितना स्वागत हम पाकिस्तान से आने वाले विद्वानों का करते हैं क्या भारतीय विद्वानों, दार्शनिकों, चिन्तकों, समाज सेवियों का उतना स्वागत पाकिस्तान में होगा।

उन्होंने कहा कि मेल-मिलाप का मार्ग दो तरफा हो तभी सफलता प्राप्त होगी। हम मित्रता का हाथ बढ़ाएं और दूसरी तरफ से नफरत भरे वार हो तो मित्रता नहीं हो पाएगी। आप पाकिस्तानी आवाम में यह सन्देश अवश्य पहुंचाएं।

इन भावनाओं के मध्य श्री खलील-उर-रहमान रामदेय जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपना एक विशाल शिष्ट मण्डल लेकर पाकिस्तान आने का निमन्त्रण दिया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने भी अपने विचार रखे तथा बी०एच०ई०एल० हरिद्वार के ई०डी०मि० खान, गुरुकुल फार्मेसी के प्रबन्धक श्री राजकुमार रावत, जनसम्पर्क अधिकारी डॉ० प्रदीप जोशी व शिक्षकेत्तर कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री बिजेन्द्र सिंह सहित प्रमुख लोगों ने माला पहनाकर श्री रामदेय जी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में एस०पी० वर्मा प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय, आचार्य बालकिशन दिव्य योग मन्दिर, डॉ० जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालयाध्यक्ष, समाज सेवी श्री गिरधारी लाल चंद्रवानी, श्री देवराज आर्य सदस्य शिष्ट परिषद सहित नगर के प्रमुख बुद्धिजीवी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ० महावीर अग्रवाल डीन प्राच्य संकाय ने किया व कुलसचिव डॉ० ए०के० चोपड़ा ने उपस्थित अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए श्री रामदेय जी का विश्वविद्यालय में आने पर स्वागत किया।



दोस्ती का हाथ : [illegible]

माता प्रेमलता शास्त्री जी का नया पता

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की मन्त्राणी माता प्रेमलता शास्त्री जी ने अपना निवास रानीबाग से बदल कर राजौरी गार्डन में ले लिया है। दयानन्द सेवाश्रम संघ तथा आर्यसमाज के सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओं आदि की सूचनार्थ माता प्रेमलता जी का परिवर्तित पता एवं दूरभाष इस प्रकार है – **माता प्रेमलता शास्त्री क्यू-६, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली, दूरभाष - ०११ - २५४३२८४४, २५४३२८४५ मोबाईल ६३१३६७२३४४**

आर्यसमाज रानीबाग गुरुकुल में प्रातः ६ बजे से दोपहर २ बजे तक ०११-२७०१५८७४

– विमल आर्य, सभा मन्त्री

पाकिस्तान से श्री लक्ष्मण आर्य भारत पधारे

पाकिस्तान की धरती पर हिन्दुओं की गतिविधियां बहुत शिथिल अवस्था में है क्योंकि वहां के कानूनों एवं सामाजिक व्यवस्थाओं में कट्टरतावाद की जडे अधिक मजबूत है। फिर भी कहीं कहीं आर्यसमाज की विचारधारा भी कार्य करती नजर आ जाती है।

पाकिस्तान से भारत पधारे श्री लक्ष्मण आर्य ने वहां की गतिविधियों की जानकारी सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल आर्य को दी। श्री लक्ष्मण आर्य ने बताया कि वे सिंध प्रान्त में आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु एक छोटा सा विद्यालय भी चलाते हैं। उनकी गतिविधियां एवं विचार चर्चाओं में अक्सर पढ़े लिखे मुस्लमान भी शामिल होते हैं।

श्री लक्ष्मण आर्य हरिद्वार में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय तथा अन्य धार्मिक स्थलों को देखने के लिए गए। उन्होंने अजमेर के परोपकारिणी सभा भवन को भी देखा। उसके पश्चात् कुछ दिन जोधपुर में अपने परिचितों के साथ बिता कर वे पाकिस्तान प्रस्थान कर गए।

अग्निवेश के अग्निबाणों से आर्य जनता आहत

आर्य उप-सभा भरतपुर द्वारा कड़ा निन्दा प्रस्ताव

श्री गुरु अर्जुनदेव जी की चौथी शताब्दी (शहीदी) पर शिरोमणि कमेटी की ओर से सेमीनार में भाषण करते हुए अग्निवेश ने १० जून, २००६ के अपने उद्बोधन में यह कहकर कि आर्यसमाज के मुखिया के नाते 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ दोबारा संशोधन करके छापा जाएगा और सब धर्म महान् है और सब ग्रन्थ पवित्र हैं, कहकर सभी विद्वानों को विस्मित कर दिया है और साथ-साथ यह भी कहना कि सत्यार्थ प्रकाश में गुरु नानक देव जी के बारे में घोर आपत्तिजनक शब्द लिखे गए हैं तथा अन्य महापुरुषों पर ऐसा ही प्रत्यारोप है, कहकर वाह–वाह लूटी है। यह सब बातें अग्निवेश को सत्ता के वैभव के सहारे मिला सार्वदेशिक सभा भवन के कब्जे की कृतज्ञता लगती है। ऐसी अनर्गल भाषा का प्रयोग सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने हेतु प्रलाप ही होगा जिससे सत्ता के वैभव के टापू पर बैठकर सदा सदा मंचासीन रहे। अग्निवेश को सत्ता की चासनी अधिक सुस्वादु लग गयी है कि वे आज सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन की बात करने लगे हैं यदि कहीं और बड़ा प्रलोभन दे दिया गया अथवा कोई स्वादु व्यंजन दिया गया तो उन्हें यह कहने में भी कोई परहेज नहीं होगा कि वेदों में भी परिवर्तन आवश्यक है। लगता है कि वे सत्ता के शंकराचार्य बनकर हर वर्ग के साथ घिनौना खेल खेलना चाहते हैं। यह सब कहीं इटेलियन सरकार का सरोकार होना लगता है अथवा सरदारों के ग्यारहवें गुरु बनने की कही काल्पनिक इच्छा है। हुतात्माओं को अपमानित करने का दुस्साहस किया जा रहा है। इस देश को ऐसे ही मीर जाफिर काफिरों ने एवं जयचन्द जैसे गद्दारों ने ही हजारों, वर्ष पराधीन रखकर रसातल में पहुंचाया है। आज आवश्यकता है कि अग्निवेश आत्मलोचन करे। यदि सत्य आत्मलोचन होगा तो पता लगेगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो कुछ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है वह आरोप प्रत्यारोप न होकर सत्य और असत्य को लिखा है यही कारण है कि सत्य सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक होता है। यदि किसी प्रयोजनवश सत्य को असत्य बताने का कुयत्न हुआ तो आने वाला समय पथभ्रष्ट होकर जब कभी असलियत को जानेगा अग्निवेश दुराचरण के कटघरे में होंगे। आज अग्निवेश स्वार्थी राजनेताओं और पाखण्डी धार्मिक नेताओं की भाषा को बोलकर बौखला रहे हैं। यदि सभी पद प्रतिष्ठता व्यक्ति श्रेष्ठ होंगे सभी धार्मिक नेता अच्छे होंगे तो फिर राष्ट्रपति मुशर्रफ और तालिबान, लादेन जैसे लोग भी अनुकरणीय होंगे। याद रखें कि श्रेष्ठता आधार वैदिक सिद्धान्त ही है जिसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगीराज कृष्ण, महर्षि कपिल, कणाद, विश्वामित्र, भारद्वाज, व्यास जैमिनी, पर्यन्त ऋषियों ने अनुकरण किया यही कारण है कि एक अरब छयानवें करोड़ आठ लाख तिरेपन हजार एक सौ सात वर्ष बाद भी कोई भी मूर्धन्य विद्वान! (विश्व में) वेदों में संशोधन करने की नहीं सोच सका है क्योंकि वेद अपौरुषेय है, ईश्वरकृत है, श्रुति है, अमृतवाणी है और पूर्ण है उसी को आधार मानकर सत्यार्थ प्रकाश की रचना हुई है तो वह कैसे अपूर्ण हो सकता है।

आज मंचों से लफ्फेबाजी की भाषा बोलकर सस्ती लोकप्रियता कुछ दिन को प्राप्त की जा सकती है। सत्य तो नींव का पत्थर होता है उस बात को याद करें अग्निवेश जो ऋषि ने महाराजा मेवाड से कही थी कि राजन तेरे राज्य की तो सीमा है मैं एक दौड़ में पार कर जाऊंगा परन्तु परमात्मा का राज्य तो अनन्त है अतः ईश्वर की आज्ञा है कि मैं सत्य के पथ पर चलूं और दूसरों को चलने की प्रेरणा दूं।

सारे विश्व में गायत्री महामंत्र का भी यही संदेश है कि हम सत्यपथ पर अग्रसर हों।

• जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा भरतपुर अग्निवेश के कथन के विरोध में निन्दा प्रस्ताव पारित करती है और महर्षि देव दयानन्द की उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा को सम्बल प्रदान कर अधिकृत करती है कि ऐसे भगवाधारी अग्निवेश को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से पदच्युत हेतु राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन कर सभी को सजग कर धर्म आर संस्कृति को पथभ्रष्ट न होने दें यही श्रेष्ठ मार्ग है।

– गजेन्द्र सिंह आर्य,
वैदिक प्रवक्ता
जिला उपप्रतिनिधि सभा, भरतपुर □

आर्य उपसभा गाजियाबाद द्वारा पारित निन्दा प्रस्ताव

आर्य समाज मंदिर राजनगर, गाजियाबाद में दिनांक ६ जुलाई, २००६ को आयोजित आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद के वार्षिक साधारण अधिवेशन में प्रो० रतन सिंह द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर अमृतसर में श्री गुरु अर्जुनदेव जी के शहीदी–समागम के अवसर पर अग्निवेश द्वारा की गई घोषणा – कि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ अब संशोधन कर दोबारा छपवाया जायेगा। इस ग्रन्थ को छापने हेतु शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी से परामर्श किया जाएगा। समाचार को जो अनेक समाचार-पत्रों में भी छपा है, सुनकर उपस्थित जिले भर के आर्य प्रतिनिधियों ने भारी रोष प्रकट किया और अग्निवेश द्वारा दिए गए वक्तव्य की भर्त्सना की। साथ ही सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव भी पारित किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन का प्रयास सहन नहीं होगा और उसका डटकर विरोध किया जाएगा। वैसे भी अग्निवेश का आर्यसमाज का मुखिया होना विवादित है, उच्च न्यायालय में केस लम्बित है। अतः आर्यसमाज की ओर से घोषणा का अधिकार उन्हें नहीं है।

– माया प्रकाश त्यागी, मंत्री

आर्य जगत के वरिष्ठ नेता श्री भगवती प्रसाद गुप्त को भाव भीनी श्रद्धांजलि

आर्य जगत ने कर्मठ नेता खो दिया

– मिठाई लाल सिंह, प्रधान सार्वदेशिक सभा



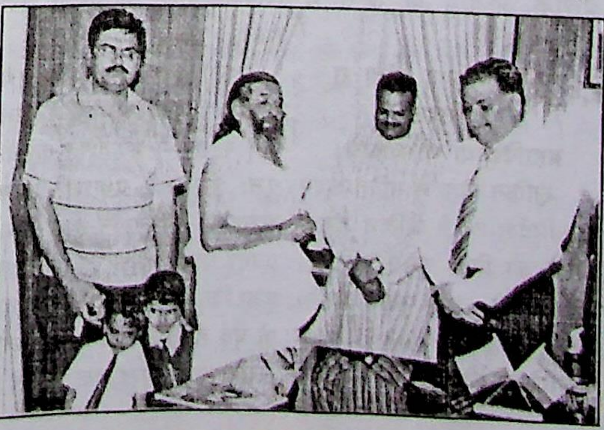
आर्य जगत के वरिष्ठ नेता, आर्य समाज वाशी के संरक्षक मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा वार्षणेय सभा मुम्बई निष्ठान व्यापारी संघ के भू०पू० प्रधान अन्य संस्थाओं से जुडे श्री भगवतीप्रसाद गुप्त का १७ जुलाई, २००६ को प्रातः ५ बजे निधन हो गया। वे ६२ वर्ष के थे। उनकी श्रद्धांजलि सभा का आर्य समाज वाशी में १६ जुलाई, २००६ को आयोजन किया गया। इस सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जो पिछले ५१ वर्षो से उने सहयोगी रह के अतरिक्त मुम्बई के सभी आर्यसमाजों, विभिन्न संस्थाओं के सदस्य आर्य जगत के सन्यासी, विद्वान एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। श्री गुप्त के परिवार में पुत्र, पुत्रियां, पुत्रवधू, पौत्र, पौत्रियां पूरा परिवार एवं भारी संख्या में सम्बन्धी जन उपस्थित थे।

आर्यसमाज का तलमाला हाल खचाखच भरा था। श्रद्धांजलि सभा में सर्वश्री स्वामी संकल्पानन्द, डॉ० सोमदेव शास्त्री, श्री मिठाईलाल सिंह, आर्यसमाज काकड़वाड़ी के मंत्री श्री राजेन्द्र नाथ पांडे, सांताक्रुज के प्रधान श्री विश्वभूषण आर्य, घाटकोपर से लघाभाई

शेष पृष्ठ ८ पर

जीवन प्रभात पांडिचेरी के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं विशेष रूप से आर्यसमाज ग्रेटर ह्यूस्टन के तन, मन, धन रूपी त्रिकोणात्मक सहयोग से आर्यसमाज गांधीधाम के नियन्त्रण मे जीवन प्रभात पांडिचेरी की गतिविधियां निरन्तर प्रगति के पथ पर है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य एवं उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य समय समय पर पांडिचेरी दौरे करके इन कार्यों को गति प्रदान करते रहते हैं। श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने अपना जीवन पूर्ण रूपेण इस प्रकल्प को आहूत कर रखा है।



विगत माह श्री वाचोनिधि आर्य ने पांडिचेरी दौरा किया। इस वक्त वहां ११ बच्चों का पूर्ण पालन पोषण एक किराए के मकान में किया जा रहा है। श्री आर्य तपस्वी सुखदेव एवं श्री वाचोनिधि आर्य ने इन बच्चों को लेकर पांडिचेरी के राज्यपाल श्री मदन मोहन लखेरा जी से भेंट की तथा उन्हें आश्रय की प्रगति से अवगत कराते हुए उन्हें कुछ माह के उपरान्त शिलान्यास समारोह में पधारने का अनुरोध किया जिसे राज्यपाल महोदय ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। पांडिचेरी के राज्यपाल जी का स्थानान्तरण अब असम के राजयपाल पद पर हो गया है। □

अथ ब्रह्म विद्या ज्ञानार्थ

– सोहनलाल शारदा

'तथास्तु'

महर्षि दयानन्दजी महाराज ने यह शब्द तब कहे थे जब गुरुवर विरजानन्दजी महाराज से अपनी शिक्षा वेदार्थ ज्ञान का समापन कर विदाई हेतु कुछ लौंग, जो गुरुवर की अतिप्रिय वस्तु थी, भेंट किया। तभी इसे सुन गुरुवर महर्षि विरजानन्दजी आशीर्वादरूपी आदेश देते हैं कि –

'हे दयानन्द ! मैं तो तुमसे तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूं। तुम निश्चयतापूर्वक प्रतिज्ञा करो कि जितने भी समय पर्यन्त शरीरपात यानी परलोक गमन नहीं होगा तब तक इस आर्यावर्त्त राष्ट्र में आर्ष ग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे। इसलिए मनुष्य कृत ग्रन्थों में परमेश्वर व ऋषियों, महर्षियों की निन्दा है। और ऋषि, महर्षिकृत ग्रन्थों में ऐसी कोई बात ही नहीं है। इस कसौटी को हाथ से नहीं छोड़कर अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन और वैदिक धर्म के मण्डन यानी स्थापना करने में अपने प्राण तक अर्पण कर दोगे।'

महर्षि ने इसके उत्तर में अति श्रद्धान्वित हो नतमस्तक कर उपर्युक्त शब्द उच्चारित किए थे कि – 'तथास्तु'

बस इस छोटे से सूत्र रूप शब्द ने क्या कर दिखाया जो सर्वविदित ही है। इसी हेतु सर्वप्रथम मथुरा से प्रस्थान कर आगरा में पदार्पण किया।

आगरा प्रवास के समय यहां कुछ विशेष भक्तों के आग्रह से कार्तिक मास में श्रीमद् भगवद्गीता की कथा प्रारम्भ की जो नित्य दो घण्टा रात्रि में चलती थी। यह कथा दीपावली पश्चात् एक मास पर्यन्त चलती रही।

इस कथा का असर यह रहा कि जनसाधारण इस प्रकार के प्रवचनों से प्रभुभक्ति यानी निराकार ब्रह्म की उपासना का विचार प्रस्फुटित हो गया। अतः भक्तजनों के हितार्थ यहां सेठ रूपलाल अग्रवाल के सहयोग से ब्रह्मयज्ञान्तर्गत् सन्ध्या की पुस्तक लिखकर प्रकाशित की।

इस पुस्तक के अन्त में लक्ष्मी सूक्त था। इसके प्रकाशन में सेठ रूपलाल का डेढ़ हजार रुपये व्यय हुआ था। और पुस्तकें तीस हजार के लगभग छपाई थी। मूल्य एक आना प्रति पुस्तक से बेची गई थी। यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई थी कि इसको सभी जन बाल-वृद्ध पढते पढ़ाते व कार्यरूप में परिणित करते थे।

श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक लिखते हैं कि यह पुस्तक प्रयत्न करने पर भी अब प्राप्त नहीं हो सकी। यह इसलिए भी सन्ध्या का प्रकाशित करना आवश्यक हो गया कि यहां गीता में जो प्रत्येक अध्याय के अन्त में संकल्प है कि –

'श्रीमद् भगवद् गीता सू उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे।

लेकिन गीता में भक्ति करने का निर्देश तो है लेकिन इसके करने की विधि इसमें नहीं है। इस कमी को पूरा करना आवश्यक जान यह पुस्तक प्रकाशित की। इसमें व पंच महायज्ञ विधि में प्रथम में वर्णन है कि –

'तत्रादौ ब्रह्म यज्ञान्तर्गत सन्ध्या विधानम् प्रोच्यते।'

इसके बाद आगे गंगा के क्षेत्र में सर्वत्र घूमते हुए निराकार ब्रह्म की पूजा यानी अर्चना, वन्दना का ही प्रचार करते हुए पुस्तकें हाथ से लिखकर व पढ़ाकर लोगों में निराकार के पूजा, सत्कार यज्ञ करने का प्रचार सन् १८७३ यानी पूरे १२ वर्ष पर्यन्त करने के पश्चात् ही अपने सद्वैदिक उपदेशों को लेखबद्ध करने का प्रयास शुरू हुआ।

इसी क्रम में सर्वप्रथम पंच महायज्ञ विधि का ही लेखन सन् १८७४ में प्रकाशित कराके पुनः सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण का लेखन हुआ। इस प्रकार प्रचार करने का फल यह हुआ कि आर्यसमाज की स्थापना के पूर्व ही वैदिक धर्मी जनों की संख्या एक लाख तक हो गई। ऐसा इतिहास में लिखा है।

इस प्रकार इस ब्रह्म विद्या के प्रचारार्थ ही अपने विचार देते हुए 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में वेदोत्पत्ति विषय विचार में वर्णन करते हैं कि –

किसी बालक को एकान्त में वा वनवासी जनों को जिनमें ईश्वर ने स्वाभाविक ज्ञान दिया है। लेकिन ऐसे जनों को भी बिना उपदेश के वा पढ़ाने के बिना यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। स्वाभाविक ज्ञानमात्र से विद्या की प्राप्ति नहीं हो सकती।

यह स्वाभाविक ज्ञान धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष विद्या का साधन स्वतन्त्रता से कभी भी नहीं हो सकता।

इसके लिए ही उस निराकार ब्रह्म ईश्वर ने मानवमात्र के कल्याणार्थ वेदों की रचना यानी चार ऋषियों के हृदय में उनके पूर्व जन्म के कर्म अत्युत्तम होने से प्रकट किया। इनसे महर्षि ब्रह्मा ने पढ़ा। पुनः महर्षि ब्रह्मा ने इस ब्रह्म विद्या का उपदेश साधारण अन्य जनों को दिया। इस प्रकार यह ब्रह्म विद्या पीढ़ी दर पीढ़ी महाभारत के कालपर्यन्त चलती रही।

इस महाभारत काल के पश्चात् यह विद्या पांच हजार वर्ष पश्चात् पुनः मानवमात्र के कल्याणार्थ महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव से शुरु हुई।

इन्होंने महान् कष्ट उठाकर भारी उग्र तप धारण कर जिसके लिए स्वयम् लिखते हैं कि –

मैं तप्त रेणु में तपा हूं। बर्फ में गला हूं। वर्षा की बौछारे इस दिगम्बर शरीर पर झेली हैं। और कई बार निराहार भी सोया हूं। मुझे जहर तक भी खिलाया गया है।

यह सब कष्ट गुरु आज्ञानुसार ब्रह्म विद्या प्रचारार्थ सहन कर हमें मार्ग दिखला गए।

अतः हमारा यह ही कर्त्तव्य है कि – हम हमारे समाजों में नई पीढ़ी को आर्य बनाने हेतु उन्हें प्रथम में सन्ध्या पढ़ावे। इससे ही शुद्ध उच्चारण होगा। और विधि भी पंच महायज्ञ विधि, संस्कारविधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश से मिलकर पढ़ावे। इसलिए कि ये सब ग्रन्थ महर्षिकृत हैं।

मैं ऋग्वेद से लेकर उत्तर व पूर्व मीमांसा पर्यन्त करीब तीन हजार ग्रन्थों को प्रमाण भाग में मानता हूं।

अतः महर्षि कृत सभी ग्रन्थ वेदानुकूल प्रमाण माने गए हैं। जहां कुछ भेद दृष्टिगोचर होता है। वहां अन्तिम अधिक लाभ हेतु संशोधन हुआ है। जैसे पूर्व में २८ नियम, फिर संशोधन से १० नियम बनें। ऐसे ही प्रथम उपस्थान में चार मंत्र पुनः संशोधन से ५ मंत्र संस्कार विधि में लिखे। प्रथम लक्ष्मी सूक्त था। आगे उसे निरस्त किया गया। अतः सर्वग्रन्थ मिलाकर पढ़कर नई पीढ़ी को आर्य बनाना है। इसी दृढ़ निश्चय के साथ।

– शाहपुरा भीलवाड़ा, राजस्थान।

बेहतर जीना सिखा दिया

– खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द ने इन्सानों को, बेहतर जीना सिखा दिया।
खोल के बन्द स्रोतों को, पुनः वेदामृत पीना सिखा दिया।।

पड़ा हुआ था वह, अज्ञान, अविद्या के अन्धेरे में,
घूम रहा था वह, ठग, धूर्त, पाखण्डियों के डेरे में।
आलसी, कर्महीन बना हुआ था, पड़ा भाग्य के फेरे में,
मृत्यु जीवन जी रहा था, वहम, निराशाओं के घेरे में,
वेद सूर्य को चमका, अज्ञान-पाखण्ड के अन्धकार को मिटा दिया
महर्षि दयानन्द ने ....

कुप्रथाएं व कुरीतियों से जकड़ित, हिन्दू समाज बना था बेसहारा,
अछूत, अनाथ, विधवाएं रो रही थीं, नर्क बना था जीवन सारा,
असत्य का ही ताण्डव नृत्य था, सत्य छिपा था मारा-मारा,
वर्णाश्रम, पंच महायज्ञ सब लुप्त ही थे, अधर्म से धर्म था हारा,
अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश रच कर, हमें वैदिक सन्मार्ग दिखा दिया।
महर्षि दयानन्द ने ....

अब हम करें वेदों का प्रचार, घर-घर हो पंचमहायज्ञों का संचार,
आचरण से बरते संयम व सदाचार और करे परस्पर सद्व्यवहार,
योग के दस यम-नियमों को, सभी अपने जीवन में लेवें उतार,
वैदिक शिक्षाओं पर चलकर, करे प्राणी मात्र से स्नेह व प्यार,
तभी हम बन सकेंगे 'खुशहाल' चलेंगे उस राह पर जो महर्षि ने दिखा दिया।
महर्षि दयानन्द ने ....

– १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता - ७००००७

द्वितीय समुल्लास की वर्तमान समय में उपादेयता

अपने परिवार की रक्षा के लिए माता पिता द्वितीय सम्मुलास अवश्य पढ़े

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर विश्व के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि करा दी. सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक ही एक मात्र ऐसी पुस्तक है जो मनुष्य की सुप्त प्रायः बुद्धि को जाग्रत कर देती है उसे विवेकशील बना देती है। मनुष्य सत्य व असत्य को समझने लगता है।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रत्येक विषय क्रमवार व अत्यन्त महत्व का है। सृष्टि का रचने वाला परमेश्वर है अतः सर्व प्रथम उस का वर्णन है तत्पश्चात् सृष्टि में जीव व जीवों में श्रेष्ठ जन्म मानव का है और मानव हेतु शिक्षा आवश्यक है बिना शिक्षा के मनुष्य अज्ञानी व पशु समान है वेद ज्ञान का स्रोत है। ऋषियों ने वेद ज्ञान की शिक्षा हेतु उपदेश किया उसी शिक्षा से मानव का निर्माण होता है शिक्षा कैसी हो, शिक्षक कैसा हो, शिक्षार्थी की विशेषताएं आदि। इन सबका ज्ञान होना आवश्यक है। दूसरा सम्मुल्लास शिक्षा का है।

आज जबकि आधुनिकता की होड़ में एक स्पर्धा बढ़ रही है। अध्यात्म को छोड प्रत्येक व्यक्ति भौतिकवाद की ओर भाग रहा है। श्रेष्ठ व विद्वान भी भौतिकवाद से बच नही पाते! आज टीवी पर अर्द्धनग्न अंग प्रदर्शन अश्लील व भौड़े गाने, नृत्य व कथानकों का प्रदर्शन इससे आने वाली पीढ़ियां मानव मूल्यों को भूलकर भ्रष्टाचार, पाशविकता, लूटमार, चोरी, हत्या व जघन्य अपराधों की दुनियां में कदम रख रही हैं। आज अधिकांश जन केवल धन को ही महत्व देने लगे हैं उनके मन में सगे सम्बन्धी भी धन के आगे कुछ नहीं हैं। आज की चका- चौंध सुन्दर व भव्य निवास मादकता व वासना के साधन ही सब कुछ हैं, ईश्वर को भूल जाता है और उसे अथाह धन मिलने पर भी शान्ति नहीं मिलती। आज उस प्राचीनतम वैदिक शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है।

भौतिकवाद व उससे बढ़ती अशान्ति का उपाय वैदिक संस्कार व शिक्षा से ही सम्भव है शिक्षा का उपदेश माता के गर्भ से ही आरम्भ हो जाता है, द्वितीय समुल्लास में दर्शन है 'माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व मध्य और पश्चात मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध, रुक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शान्ति 'आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करे वैसे घृत दुग्ध, मिस्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें।

द्वितीय समुल्लास में माता को बालक के लिए उत्तम शिक्षक माना है वह माता ही तो थी जिन्होंने सुसंस्कारों से सन्तानों को इतना ओजस्वी, तेजस्वी विद्यावान बलवान बनाया शिवाजी, महाराणा प्रताप, राम व कृष्ण, जितने भी महापुरुष हुए उनके निर्माण में माताओं का ही हाथ था।

अब बात यहां आती है कि आज की इस दयनीय स्थिति का जिम्मेवार कौन है समाज, माता पिता या शिक्षक। तीनों का ही समाज के निर्माण में विशेष हाथ होता है और तीनों का कार्य होता है श्रेष्ठ शिक्षा का उपदेश करना। जब तक अच्छी शिक्षा रहती है तब तक व्यक्ति समाज व राष्ट्र श्रेष्ठ रहते हैं।

जब तक वैदिक शिक्षा थी राष्ट्र का गौरव पूरे विश्व में था और जब शिक्षा अवैदिक हुई सब कुछ उलट पुलट हो गया। आज जो शिक्षा है वह मानव मूल्यों के अनुरूप नहीं है क्योंकि आज मानव के चरित्र का निर्माण नहीं किया जाता है अपितु भौतिकवाद की शिक्षा दी है। धन हड़पने, धन संग्रह करने, आलस्य, प्रमाद के साधन जुटाने व वासना आदि प्रसंग मात्र को ही जीवन का उद्देश्य मान लिया जाता है। यही कारण है कि पूरी पृथ्वी पर जहां आध्यात्म ज्ञान नहीं है अपितु भौतिकवाद की शिक्षा दी गई वहां हत्या, राहजनी, कामुकता, पाशविकता पनप रही है। माता-पिता, पुत्र-पुत्री जैसे पवित्र सम्बन्ध भी किवदंती बन चुके हैं।

भारत में मैकाले ने पाश्चात्य संस्कृति का बीज बोकर ऐसी नई पीढ़ी को जन्म दे दिया है जिनकी नसों में मद्यपान, कामुकता, धन का दुरुपयोग व भ्रष्टाचार जैसे दुष्कर्म ही मुख्य विषय भरे हैं।

आज इलैक्ट्रानिक मीडिया का भरपूर दुरुपयोग हो रहा है। समाचार पत्र व पत्रिकाएं तब तक अधूरे समझे जाते हैं जब तक उनमें स्त्रियों के अर्द्धनग्न चित्रों का प्रदर्शन नहीं होता। सिनेमा में आज की पीढ़ी को धूम्रपान, मद्यपान, कामुकता व आधुनिकता से परिपूर्ण प्रमाद के साधनों का दुरुपयोग की शिक्षा मिलती है।

शेष पृष्ठ ६ पर

ईश्वर ध्यान की रगड़ से ग्रहीत होता है

– ओमप्रकाश आर्य

इस विश्व में ईश्वर का विषय निगूढ़तम है। उसके नाम पर अनेक मत, पंथ, सम्प्रदाय व विचारधाराएं हैं। उसे प्राप्त करने या दर्शन करने के लिए लोग न जाने कहां–कहां भटकते फिरते हैं, फिर भी नहीं जान पाते। उसका दर्शन या ग्रहण कहां होगा ? छान्दोग्योपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

ओं अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तमिन्यदन्वेष्टव्यं तद्वाव विजिज्ञा सितव्यामिति।।

अर्थात् यह शरीर ब्रह्म की नगरी है – ब्रह्मपुर है, इसमें एक 'दहर' अर्थात् छोटा सा कमल के सदृश हृदय रूपी मंदिर है, इस छोटे से हृदय–मन्दिर में छोटा सा हृदयाकाश है, उस आकाश के भीतर जो छिपा है, उसे खोजना चाहिए, उसे जानना चाहिए।' उपनिषद् के ऋषि कहते हैं कि वह ईश्वर इसी शरीर में खोजने योग्य है, किसी को बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है। न ही वह बाह्यजगत् में मिल सकता है। यह शरीर ब्रह्म (ईश्वर) की नगरी है, ब्रह्मपुर है। इस ब्रह्मपुर में कमल के समान छोटा–सा हृदय रूपी मन्दिर है। इस हृदय मन्दिर में छोटा–सा हृदयाकाश है। उस हृदय के आकाश में वह ईश्वर ग्रहण किया जा सकता है। वहीं उसका साक्षात्कार होता है।

स्पष्ट है कि ईश्वर को अपने ही अन्दर ढूंढा जा सकता है बाहर नहीं। विडम्बना यह है कि मनुष्य उसे अपने अन्दर न ढूंढकर बाहर ढूंढता है, फिर वह उसे कैसे प्राप्त कर सकता है। जो वस्तु अन्दर मिलनी है उसे बाहर ढूंढना निरर्थक है। वह **ईश्वर** इस हृदयाकाश में कहां ग्रहीत होगा, इस पर प्रकाश डालते हुए कठोपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्ये आत्मनि तिष्ठति। ईशानो भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते।।

अर्थात् आत्मा के मध्य में परमात्मा बैठा है। कैसे ? 'अंगुष्ठमात्र' – अर्थात् अंगूठे जितना। वही भूत और भविष्यत् का स्वामी है। उसे जानकर फिर मनुष्य को ग्लानि नहीं होती।' इस ब्रह्मपुरी के हृदयाकाश में ही आत्मा भी रहता है। अर्थात् शरीर में आत्मा का स्थान हृदय–प्रदेश है। इसी आत्मा में वह परमात्मा समाया हुआ है। आत्मा अति सूक्ष्म है। परमात्मा उससे भी सूक्ष्म है। आत्मा के अन्दर कैसे समा सकता है ?

इसका उत्तर यह है कि उस व्यापक परमेश्वर का हम हृदय के अन्दर थोड़ा सा ही जान पाते हैं। थोड़ा–सा ही जानकर उसके व्यापकत्व का, आनन्द का अनुमान लगा सकते हैं कि वह कैसा है। जिस प्रकार एक बालक अपने पिता की अंगुली पकड़कर बड़े आराम से आनन्द के साथ कहीं भी चला जाता है। उसे कोई भय नहीं लगता।

वह अंगुली पकड़कर अपने को यह समझता है कि उसने अपने पूरे पिता को पकड़ रखा है। ठीक इसी तरह हम अंगुष्ठमात्र उस ईश्वर को हृदय के अन्दर जानकर उसके आनन्दस्वरूप का अनुभव कर सकते हैं।

ईश्वर हृदय के अन्दर ही ग्रहीत हो सकता है, अन्यत्र नहीं, क्योंकि वहीं पर आत्मा है। इस पर प्रकाश डालते हुए श्वेताश्वतरोपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

'अणोरणीयान्महतो महीयानात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः।

अर्थात् 'वह परमात्मा अणु से अणु है।, महान से महान है, वह जीवमात्र की हृदयरूपी गुफा में छिपा हुआ है।'

उस गुफा में उसे ढूंढो। वहीं उसकी प्राप्ति होगी। इससे स्पष्ट हो गया कि ईश्वर को हृदय के अतिरिक्त अन्यत्र ढूंढना व्यर्थ है, क्योंकि वहां वह ग्रहीत ही नहीं हो सकेगा।

हृदय में आत्मा है, आत्मा में परमात्मा है। बस आत्मा के माध्यम से उसे जानो। आत्मा के अन्दर वह कैसे ग्रहीत होगा ? श्वेताश्वतरोपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

स्वदेध्मरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम्।
ध्याननिर्मथनाभ्यासाद्देवं पश्येन्निगूढ़वत्।।

अर्थात् 'अपने देह को नीचे की ओर प्रणव को ऊपर की अरणि बनाकर ध्यान की रगड़ के अभ्यास से बार–बार करने से छिपी हुई आग की भंति जीव तथा ईश्वर की ज्योति को देखें।'

ऋषि कहते हैं कि ईश्वर की ज्योति को देखने के लिए ध्यान का अभ्यास करो। खूब ध्यान करो। बार बार करो। उस ध्यान में प्रणव अर्थात् 'ओ३म्' से रगड़ो। इसी शरीर में वह प्राप्त होगा। जिस प्रकार अरणि नामक लकड़ी को नीचे ऊपर करके रगड़ने से अग्नि पैदा हो जाती है। उसी प्रकार शरीर को एक अरणि मान लो और ओ३म् जप को दूसरी अरणि। शरीर रूपी अरणि को ओ३म् की अरणि से रगड़ना है यह रगड़ क्या है –

ध्यान है। ध्यान के लिए सर्वोत्तम स्थान कहां है ? सामवेद कहता है –

शेष पृष्ठ ६ पर

जीवनप्रभात गांधीधाम के १६२ बच्चों ने सौराष्ट्र यात्रा की

आर्यसमाज गांधीधाम संचालित जीवनप्रभात के कारण भूकम्प में निराधार हुए १६२ बच्चों को आश्रय दिया गया है। इन बच्चों का जीवनप्रभात में निःशुल्क जाति–पांति एवं बिना धर्म भेदभाव के अपने बच्चों जैसा लालन पालन हो रहा है। हर माता–पिता अपने बच्चों को छुट्टियों में घुमाता है। ये बच्चे घूमने से वंचित न रहे इसी भावना से बच्चों को हर वर्ष अच्छे दर्शनीय ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा करवायी जाती है।

इस वर्ष बच्चों को चार दिन के लिए सौराष्ट्र दर्शन कराने ले जाया गया। यात्रा में बच्चों ने सौराष्ट्र के विविध ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों को देखकर उनकी विशेषताओं को जाना।

बच्चों ने जामनगर, द्वारका, बेटद्वारका, पोरबंदर, सोमनाथ, जूनागढ़, सासणगीर जैसे दर्शनीय स्थानों के प्राकृतिक सौदर्य को करीब से देखा एवं जाना।

यात्रा के दौरान मार्ग में बच्चों का स्वागत, अल्पाहार व भोजन व्यवस्था आर्यसमाज व अन्य सेवाभावी संस्थाओं द्वारा की गयी। जूनागढ़ रेन्ज के डी०आई०जी० श्री मोहनकुमार झा बच्चों को मिलकर खुश हुए व बच्चों को आशीर्वाद दिया। यात्रा में बच्चे प्रफुल्लित नजर आये व उनको बहुत मजा आया।



जीवनप्रभात के बच्चों को इससे पहले भी दिल्ली, गांधीनगर, माउन्ट आबू आदि स्थानों की यात्रा करवायी गई है।

– वाचोनिधि आर्य, महामंत्री

चुनाव समाचार

आर्यसमाज सोहन गंज, सब्जी मण्डी, दिल्ली

प्रधान	:	श्री सुभाष चन्द्र सर्राफ
मन्त्री	:	श्री विनय भाटिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री आत्मा राम जिजौरिया

आर्यसमाज श्यामपुर, पश्चिमी चम्पारण

प्रधान	:	श्री जगन्नाथ आर्य
मन्त्री	:	श्री राजेश्वर जिज्ञासु
कोषाध्यक्ष	:	श्री नन्दलाल प्रसाद

आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली

प्रधान	:	श्री शिव कुमार मदान
मन्त्री	:	श्री जयपाल गर्ग
कोषाध्यक्ष	:	श्री विजय कुमार गुलाटी

आर्य उपप्रतिनिधि सभा पीलीभीत

प्रधान	:	श्री कृष्ण कुमार शास्त्री
मन्त्री	:	श्री डॉ० सत्येन्द्र कुमार
कोषाध्यक्ष	:	श्री मोहल लाल आर्य

आर्यसमाज बैजनाथपारा, रायपुर

प्रधान	:	श्री दयाराम वर्मा
मन्त्री	:	श्री लालाराम शर्मा
कोषाध्यक्ष	:	श्री विकास अंजनकर

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद

प्रधान	:	श्री नरेन्द्र कुमार आर्य
मंत्री	:	श्री माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष	:	श्री राजेन्द्र सिंह आर्य

आचार्य चैतन्य जी को 'साहित्य सागर' पुरस्कार



सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता एवं वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवान देव 'चैतन्य' जी को 'अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर' की ओर से उनके द्वारा राजभाषा हिन्दी एवं साहित्य के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए 'साहित्य सागर' की मानद सम्मानोपाधि से अलंकत किया गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य जी की लगभग पच्चीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा इन्हें अब तक लगभग बीस राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है। मानवीय संवेदनाओं को उद्‌बुद्ध करते हुए वैदिक प्रवक्ता के रूप में आचार्य जी अत्यधिक लोकप्रिय एवं ख्यातिप्राप्त है तथा नेपाल और भारत वर्ष के लगभग सभी प्रान्तों में ये सफलतम प्रचार कार्य कर चुके हैं। हाल ही में आचार्य जी ने अपनी भूमि समर्पित करके "वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम) की स्थापना की है तथा आश्रम की ओर से एक मासिक पत्रिका 'वैदिक वशिष्ठ पत्रिका' का प्रकाशन भी किया जा रहा है। – **अखिलेश भारतीय**, प्रधान सम्पादक, वैदिक वशिष्ठ पत्रिका

पृष्ठ ५ का शेष

ईश्वर ध्यान की रगड़ से ग्रहीत होता है

उपहरे गिरीणां संगमें च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत्।। २/३/६

अर्थात् 'पर्वतों के प्रान्त में और नदियों के संगम में ध्यान प्रज्ञा से मेधावी बन जाता है। ब्रह्मज्ञान में कुशल हो जाता है।'

ध्यान का सर्वोत्तम स्थान पर्वतीय स्थल है, नदियों का किनारा है। इन स्थलों पर सहजता से ध्यान लग जाता है। ईश्वर का ध्यान प्राकृतिक स्थानों पर सरलता से होता है क्योंकि वहां का वातावरण शान्त, मधुर, सुखद और पवित्र होता है। ऐसे स्थल पर ध्यान के लिए जाना चाहिए। अन्य स्थल शोर शराबे से भरे होने के कारण ध्यान के लिए उपयुक्त नहीं होते। यदि ऐसा संभव न हो तो कम से कम ध्यान करने का स्थान, कमरा शान्त होना ही चाहिए और समय निकालकर कभी कभी उपर्युक्त स्थलों पर भी जाना चाहिए।

ध्यान के अलावा ईश्वर की अनुभूति का दूसरा कोई उपाय या मार्ग नहीं है।

– आर्यसमाज रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)

पृष्ठ ५ का शेष

अपने परिवार की रक्षा के लिए ...

होना यह चाहिए कि मकाल की इस शिक्षा पर अंकुश लगना चाहिए तथा जो हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति है और वेद की शिक्षा है उसके अनुरूप पठन पाठन हो तथा आज की विकसित विज्ञान का गुरुकुल की शिक्षा के साथ समावेश हो ऐसे विद्यार्थी ही आगे बढ़कर समाज व राष्ट्र का गौरव बढ़ाने वाले होंगे। उन्नति के मार्ग पर चलेंगे और चलाएंगे।

जैसा कि आज की शिक्षा है जहां न अध्यात्म है न चरित्र निर्माण का महत्व ऐसे वातावरण में एम०ए०, पी०एच०डी० व प्रथम श्रेणी के अधिकारी, मंत्री, सांसद तक भ्रष्टाचार व अपराधों में लिप्त पाए जाते है। यह कोई शिक्षा नहीं शिक्षा वही है जिससे व्यक्ति समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है।

आज भी हम महर्षि दयानन्द को समझ नहीं पा रहे हैं। महर्षि ने कृण्वन्तों विश्वमार्यम का स्वप्न देखा था विश्व को श्रेष्ठतम भी बनाया जा सकता है जब शिक्षा वेद ज्ञान, वैदिक, संस्कृति से परिपूर्ण हो वैदिक शिक्षा मानव को सम्प्रदायों में नहीं बांटती जातियों में नहीं तोड़ती वर्गो में नहीं बांटती जहां पूरी पृथ्वी ही एक कुटुम्ब है एक देश है कोई मत भेद नहीं आज हमें वैदिक शिक्षा जिसका महर्षि ने वर्णन किया है की ओर ध्यान देना चाहिए।

स्वामी अग्निवेश द्वारा किया जा रहा एक दुष्प्रयास : सत्यार्थ प्रकाशन के पुनर्लेखन, संशोधन तथा टिप्पणी लेखन की तैयारी

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

गुरु अर्जुन देव जी के ४००वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में अमृतसर में आयोजित एक सिख संगत मे बोलते हुए वर्ल्ड कौंसिल ऑफ आर्यसमाज के स्वयं भू प्रधान स्वामी अग्निवेश ने घोषणा की है कि वे शीघ्र ही सिख विद्वानों के साथ बैठक करेंगे और एक किताब (सत्यार्थ प्रकाश) में आए आपत्तिजनक अंशों को हटवाएंगे। यह समाचार 'दैनिक ट्रिब्यून' में संजय बम्ब्रू की रिपोर्ट के आधार पर ११ जून के अंक में छापा गया। चंड़ीगढ से प्रकाशित पंजाबी दैनिक 'दि स्पोक्समैन' के ११ जून के अंक में प्रथम पृष्ठ पर जो समाचार छपा है उसका सारांश इस प्रकार है –

आर्यसमाज के नेता होने के कारण वे (स्वामी अग्निवेश) यह वायदा करते हैं कि शीघ्र ही सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के दोबारा प्रकाशित किए जाने से पहले शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी से उचित सुझाव मांगे जाएंगे। (याद रहे कि सत्यार्थ प्रकाश में गुरु नानक देव जी के सम्बन्ध में घोर अपशब्द लिखे हुए हैं।) (उक्त पत्र का ११ जून का अंक)।

स्वामी अग्निवेश ने इस व्याख्यान में हिन्दू तथा हिन्दुत्व पर भी अपना निशाना साधा और इनकी कटु आलोचना की।

स्वामी अग्निवेश द्वारा सत्यार्थ प्रकाश संशोधन के (बाद में वे बदल गए और 'ट्रिब्यून' तथा 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में नेताओं की परम्परा का अनुसरण करते हुए कहा कि उनका आशय सत्यार्थ प्रकाश में आए ऐसे आपत्तिजनक स्थलों पर फुटनोट (पाद टिप्पणी) लिखना था।) इस विचार का परिणाम दूसरे दिन 'स्पोक्समैन' में छपे आदि धर्म समाज के एक नेता श्री सी०एल० चुम्बर के बयान के रूप में देखा गया जब उन्होंने मांग की कि सत्यार्थ प्रकाश पर स्थायी रूप से प्रतिबन्ध लगे। (उक्त पत्र के ११ जून के अंक का ११वां पृष्ठ) उन्होंने अपने वक्तव्य में इस पुस्तक (सत्यार्थ प्रकाश) पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगाने की मांग की। साथ ही कहा कि इस पुस्तक में गुरु नानक के अतिरिक्त भक्त कबीर, ईसाई, बौद्ध तथा मुसलमानों के विरोध में भी काफी कुछ आपत्तिजनक शब्द लिखे गए हैं। इस व्यक्ति ने आगे कहा कि सत्यार्थ प्रकाश में समाज को जातियों तथा वर्गों में बांटने वाली मनुस्मृति के १५० से अधिक प्रमाण दिए गए हैं। स्वामी अग्निवेश भी मनुस्मृति के विरोध में बहुत अनर्गल कह चुके हैं।

ऐसा लगता है कि स्वामी अग्निवेश ने सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन/टिप्पणी लेखन का यह गैर जिम्मेदाराना वक्तव्य देकर सोए सांप को जगा दिया है। उन्हें प्रथम तो यह ज्ञात होना चाहिए कि सत्यार्थ प्रकाश एक कालजयी ग्रन्थ है जो विश्व की २२ भाषाओं में अनूदित होकर लाखों की संख्या में पाठकों के सामने जा चुका है।

किसी भी मत सम्प्रदाय या धर्म का मान्य ग्रन्थ जब कालजयी ग्रन्थों की श्रेणी में आ जाता है, तब उस पर भाष्य, टीका या व्याख्या भले ही कोई लिखे, किन्तु उसके किसी भी अंश को (चाहे कितना ही आपत्तिजनक हो) आप मूलग्रन्थ से पृथक् नहीं कर सकते। क्या उक्त स्वामी जी में यह साहस है कि वे कुरान या बाइबिल के किसी आपत्तिजनक समझे जाने वाले किसी अंश को उससे पृथक् करने या आपत्तिजनक समझे गए अंश का संशोधन, पुनर्लेखन या उस पर टिप्पणी देने की मांग करेंगे। सैमेटिक मजहबों के मान्य ग्रन्थों की बात रहने दें। क्या उनमें इतना साहस है कि वे तुलसीदास रचित रामचरित मानस में नारी की निन्दा की चौपाई – 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी, को हटाने की बात करें तथा गीता प्रैस गोरखपुर को सुझाव दें कि वे इस चौपाई को अपने संस्करणों से हटा दें या आपत्तिजनक माने जाने की टिप्पणी अपने प्रकाशनों में दे दें।

सत्यार्थ प्रकाश कोई आज का ग्रन्थ नहीं है। इसकी रचना हुए १३० वर्ष हो चुके हैं। सत्यार्थ प्रकाश के खण्डनात्मक समुल्लासों पर आपत्ति तथा आक्षेप किए जाने का सिलसिला भी कोई नया नहीं है। आर्यसमाज के ये स्वयंभू नेता इन जानकारियों से अनभिज्ञ हैं। सत्यार्थ प्रकाश पर पौराणिकों द्वारा किए गए आक्षेपों का सिलसिला उन्नीसवीं शताब्दी में ज्वालाप्रसाद मिश्र के ग्रन्थ दयानन्द तिमिर भास्कर से प्रारम्भ हुआ जो अखिलानन्द, कालूराम तथा माधवाचार्य से होता हुआ प्रेमाचार्य, वीराचार्य तक, आज दिन तक चलता रहा है।

जैनियों के प्रवक्ता स्वामी कर्मानन्द, पं० जुगल किशोर मुखत्यार तथा अजीत कुमार शास्त्री ने इस ग्रन्थ का खण्डन किया।

ईसाई, मुसलमानों, सिखों यहां तक कि कबीर पंथियों तक ने सत्यार्थ प्रकाश के खण्डनात्मक अंशों की कटु आलोचना करने में कोई कसर नहीं रखी। दूर क्यों जाएं – आर्यसमाज का गढ़ समझे जाने वाले रोहतक के समीप के गांव करौंधा में डेरा डाले कबीर पंथी साधु रामपाल आज सत्यार्थ प्रकाश और उसके लेखक के खिलाफ जहर उगल रहा है। दृष्टव्य एक दैनिक पत्र में विज्ञापन के रूप में प्रकाशित लेख आर्यसमाज के प्रवर्तक श्री दयानन्द सरस्वती की जन्मपत्री। उस स्वामी जी को साहस दिखाकर स्वामी दयानन्द तथा सत्यार्थ प्रकाश के निन्दक इस कथित साधु के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

हमारा निवेदन है कि शास्त्र कोटि का सम्मान प्राप्त सत्यार्थ प्रकाश के कथ्य पर वाद विवाद होना कोई नई बात नहीं है। क्षमा करें – शिरोमणि कमेटी के समक्ष दिए गए सत्यार्थ प्रकाश के पुनर्लेखन या उसमें संशोधन के सुझाव को देने वाले महानुभाव को क्या सत्यार्थ प्रकाश में प्रतिपादित विषयों का तथ्यात्मक ज्ञान भी है। हमें तो इसमें शक है कि वे अमुक–अमुक समुल्लासों में प्रतिपादित विषयों का खुलासा करने की भी सामर्थ्य रखते हैं। सिख धर्म का मर्म जानने वाले आर्यसमाज के दो विद्वान थे – १. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, २. स्वामी अमृतानन्द जी (ताराचन्द वानप्रस्थी)। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने अपनी पुस्तकों, आर्य सिद्धान्तों तथा सिख गुरु, सिख और यज्ञोपवीत तथा सिख अते गऊ में उन सब भ्रांतियों का निराकरण कर दिया है जो सत्यार्थ प्रकाश के सिख मत समालोचना प्रकरण को लेकर उठाई गई हैं। स्वामी अमृतानन्द जी ने सिख पंथ पर इतना लिखा कि उसके मुकाबले कोई क्या लिखेगा। उनके ग्रन्थ है –

१. प्रमुख सिख विद्वानों में पांच प्रश्न, २. गुरुमत सार, ३. सिख गुरु और यज्ञोपवीत, ४. गुरुग्रन्थ साहब की आत्मकथा, ५. बिला शुबा नवीन सिख हिन्दू नहीं, ६. सिख गुरुओं का सच्चा दर्शन, ७. खालसा ज्ञान प्रकाश आदि। अब इनसे बढ़कर स्वामी अग्निवेश की दृष्टि में कौन सा विद्वान् है जो सत्यार्थ प्रकाश में आई सिख मत की समीक्षा पर टिप्पणी लिखने की योग्यता रखता हो। सत्यार्थ प्रकाश के उपयुक्त अंशों पर टिप्पणी लिखने का काम अतीत में हो चुका है। इसके पहले कि स्वामी जी कोई नया कदम अपनी संस्था 'वर्ल्ड कौंसिल आफ आर्यसमाज' (यह कौन सी संस्था है ? आर्यसमाज की किसी सभा या संगठन का नाम अंग्रेजी भाषा में नहीं है – लेखक) के तत्वावधान में उठाएं, वे स्वामी वेदानन्द तीर्थ, पं० युधिष्ठिर मीमांसक तथा पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती जैसे सत्यार्थ प्रकाश के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा लिखी गई व्याख्यात्मक टिप्पणियों पर नजर अवश्य डाल लें।

सच तो यह है कि सत्यार्थ प्रकाश का पुनर्लेखन (न सही टिप्पणी लिखने) की बात चलकर स्वामी अग्निवेश ने एक पिण्डोरा बॉक्स खोल दिया। आज वे शिरोमणि अकाली दल से सत्यार्थ प्रकाश में किए जाने योग्य संशोधनों की जानकारी लेंगे तो क्या वे इसी प्रकार पौराणिकों, जैनियों, बौद्धों, चार्वाकों, अद्वैत वेदान्तियों, शैवों, वैष्णवों, कबीर पंथियों, दादू पंथियों, बल्लभ मत वालों, चक्राकितों, स्वामी नारायण मत वालों ब्राह्मणों आदि ये भी महर्षि के ग्रन्थ के संशोधन के सुझाव लेंगे ? सच तो यह है कि यह उनका दुस्साहस मात्र है। सत्यार्थ प्रकाश की एक–एक पक्ति शाश्वत सत्य का उद्घाटन करती है। इसमें लिखे वाक्य आर्ष कोटि के हैं, उनमें तरमीम (संशोधन) या तरदीद (खण्डन) करना बेमानी है। समझदार सिखों ने आर्य धर्म का मर्म पहचाना था। इनमें प्रमुख थे – शहीद भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह, जिन्होंने 'हमारे गुरु सा हबान वेदों के पौरों थे', जैसा अद्भुत ग्रन्थ लिखकर गुरुओं की शिक्षा को वेदज्ञान से समन्वित किया।

इसी श्रेणी में बाबा भाई अर्जुन सिंह तथा छज्जूसिंह थे जिन्होंने अंग्रेजी में स्वामी दयानन्द के उत्कृष्ट जीवन चरित लिखे, आर्यसमाज के नियमों की विद्वतापूर्ण व्याख्या लिखी तथा अन्य दर्जनों ग्रन्थ लिखकर अंग्रेजी साहित्य की अभिवृद्धि की। आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आकर प्रथम आर्य धर्म अपनाने तथा बाद में स्वार्थवश आर्यसमाज से पृथक होकर उसकी निन्दा करने वाले भाई जवाहर सिंह तथा ज्ञानी दित्तसिंह के क्रियाक्लाप से वर्ल्ड कौंसिल के ये स्वयंभू अध्यक्ष जी परिचित हैं या नहीं ? सच तो यह है कि सिखों और हिन्दुओं में पृथकता के बीज बोना अंग्रेजों की एकसोची समझी चाल थी, जिसमें मैकालिफ जैसे धूर्त अंग्रेज का षड्यन्त्र काम कर रहा था और इसमें उसे सफलता भी मिली।

सच तो यह है कि मात्र सिख संगत में प्रशंसा बटोरने के लिए स्वामी अग्निवेश द्वारा उठाया गया यह कदम मधुमक्खियों के छत्ते को छेड़ने जैसा है। शायद स्वामी जी को पता होगा कि सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती का काम सिंध की मुस्लिम लीग की सरकार (उस समय सिंध में मुस्लिम लीग की सरकार थी जिसके मुख्य मन्त्री थे अंग्रेजों के पिट्ठू सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला) ने किया था जिसका उत्तर महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में सत्याग्रह कर दिया गया। बाद में भोपाल के नवाब ने भी ऐसा दुस्साहसपूर्ण कार्यवाही की जिसका मुंहतोड़ जवाब आर्यसमाज ने दिया। अभी कल की बात है जम्मू कश्मीर के दिवंगत मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला ने अपने राज्य के पुस्तकालयों से सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां हटाने का आदेश दिया था। तब हमारे नेता लाला रामगोपाल शालवाले के समझाने से शेख ने अपना यह प्रतिगामी कदम पीछे ले लिया था। अब खुद आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश इस चिंगारी को हवा दे रहे हैं। 'ट्रिब्यून' तथा 'दि स्पोक्समैन' में छपे उक्त समाचारों का प्रतिवाद करने से पहले आर्यसमाज स्वामी अग्निवेश से जानना चाहता है कि १० जून को अमृतसर सिख संगत में उन्होंने वास्तव में क्या कहा था ? क्या उनके वक्तव्य की गलत रिपोर्टिंग की गई, तो क्यों ? संवाददाताओं को क्या पड़ी थी कि वे वक्ता के आशय के विरुद्ध लिखते। क्या उन्होंने नहीं कहा था कि सत्यार्थ प्रकाश का पुनर्लेखन कराया जाएगा और इसके पहले शिरोमणि कमेटी से उचित सुझाव मांगेंगे। क्या उनके इस भाषण का टेप रिकार्ड कराया गया था ? यदि हो तो उसे प्रस्तुत किया जाए। 'ट्रिब्यून' को भेजे गए अपने सफाई के बयान में स्वामी जी ने उनके इस गैरजिम्मेदाराना बयान के आलोचकों को ...... (फादर कमल बुल्के के शब्दकोष में इसका अर्थ बदमाश और पाजी कहा गया है) कहा है। अर्थात् स्वामी जी की इस मनमानी कार्यवाही का विरोध करने वाले लोग बादमाश और पाजी हैं। खैर, **त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पयते।** अच्छा होता सत्यार्थ प्रकाश पर कोई टिप्पणी करने से पहले तथाकथित World Council of Arya Samaj के ये स्वयंभू प्रधान आर्यसमाज के विद्वत्मंडल से भी परामर्श करते। उन्हें आर्यसमाज ने कब अधिकार दिया था कि वे सिखों को ऐसा आश्वासन दें।

– ८/४२३, नन्दन वन, जोधपुर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2003-05
Licensed to Post Without Pre-payment

पृष्ठ ३ का शेष

आर्य जगत के वरिष्ठ नेता श्री भगवती प्रसाद गुप्त को भाव-भीनी श्रद्धांजलि

पटेल, चेंबूर से पं० ईश्वर मित्र, श्री गुलजारी लाल जी, आर्यसमाज वाशी से डॉ० जिलेसिंह, श्री भारत भूषण शारदा, महिला समाज वाशी की श्रीमती विद्योत्मा बांगिया, वार्षणेय सभा से श्री विनोदकुमार आदि ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कई सज्जन श्रद्धांजलि देते समय भावुक हो गए, तो कई समयाभाव के कारण श्रद्धांजलि देने से वंचित रह गए। कई लोगों ने उन्हें चलता फिरता आर्यसमाज कहा तो किसी ने आर्यसमाज का स्तम्भ अथवा मुम्बई समाज के पांच प्यारों में से एक कहा। सबने उनकी हृदय उदारता, आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के प्रेरक, उत्साही व श्वेत वस्त्रधारी संन्यासी की संज्ञा दी। स्वामी मंधानन्द द्वारा शोक सन्देश पढ़कर सुनाया गया।

इस अवसर पर पं० किशन लाल शास्त्री एवं कुमार योगेश आर्य ने भक्ति गीत प्रस्तुत किए। सभा के संचालक एवं आर्यसमाज वाशी के प्रधान डॉ० तुलसीराम बांगिया ने आदरणीय श्री भगवतीप्रसाद गुप्त को श्रद्धांजलि अर्पित करते समय उनके आर्यसमाज वाशी की स्थापना से लेकर मुम्बई की आर्य समाजों में अग्रगण्य बनाने में बड़ा योगदान बताया। उनके निधन से जहां आर्य जगत ने वरिष्ठ नेता खो दिया है, वहां आर्यसमाज ने अपना संरक्षक, प्रेरक, समाज सुधारक खो दिया है।

उनके व्यक्तिगत गुणों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने न केवल स्वयं अपितु पूरे परिवार को आर्यसमाज के सिद्धान्तों से ओतप्रोत किया।

परिवार के सदस्यों ने बाबू जी की भरसक सेवा की तथा आर्यसमाज वाशी के सदस्य उनके पुत्र श्री राजकुमार गुप्त को आधुनिक श्रवणकुमार मानते हैं।

ज्ञात हो कि उनके पश्चात् से उनके पुत्र श्री राजकुमार गुप्त आर्यसमाज वाशी के मंत्री, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष के पद पर आसीन है। दूसरे पुत्र श्री चंद्रगुप्त आर्य समाज सान्ताक्रुज के भूतपूर्व प्रधान रहे तथा पत्नी श्रीमती यशवाला आर्या महिला आर्य समाज सांताक्रुज की संचालिका का पद भार संभाले है। वे दोनों अच्छे लेखक हैं तथा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में काफी कार्य कर रहे हैं। उनकी पुत्रियां आर्यसमाज अलीगढ़ चंदौसी व विवेक विहार दिल्ली में आर्यसमाज का कार्य कर रही हैं।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के पुरोहित पं० विजयपाल शास्त्री जी ने श्रद्धांजलि अर्पित की तथा रसम पगड़ी की प्रक्रिया सम्पन्न की। गायत्री मंत्र, मौन एवं शान्ति पाठ के बाद सभा समप्त हुई।

– **तुलसीराम बांगिया,**
प्रधान, आर्यसमाज वाशी

प्रतिष्ठा में
10150 पुस्कालयाध्यक्ष (12/99)
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

पृष्ठ १ का शेष

26 से 29 अक्तूबर को ...



इस सम्मे[illegible] बनाने के लिए सभा के अधिकारियों ने सारे उत्तर प्र[illegible]गृति अभियान प्रारम्भ कर दिया है। मुज्जफरनग[illegible] आसपास के अन्य जिलों में आर्य महासम्मेलन [illegible] लिए बैठकों का दौर प्रारम्भ कर दिया गया है।

विस्तृत सूचनाएं अगले अंकों में दी जाएगी। इस बीच सभा प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने समस्त उत्तर प्रदेश की जिला सभाओं एवं आर्यसमाजों का आह्वान किया है कि अधिक से अधिक संख्या में आर्यसमाज के अनुयायियों को लेकर इस आर्य महासम्मेलन में लेकर पहुंचने के कार्यक्रम बनाए तथा कार्यक्रमों की पूर्व सूचना अवश्य दें।

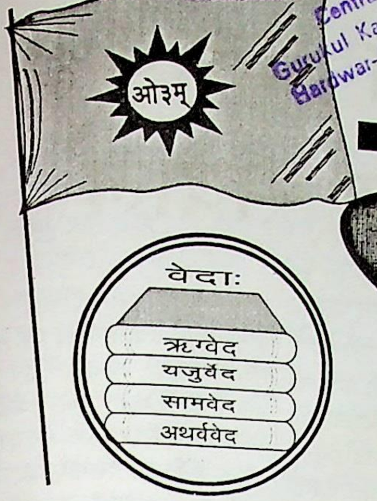
जयनारायण अरुण (प्रधान, ६४१२२१७०१८),
डॉ० आशारानी राय (उपप्रधाना, ९८३८६६८८४६),
चन्द्रकिरन शर्मा (मन्त्री, ०१२३२–२४६०२६),
अरविन्द कुमार आर्य (कोषाध्यक्ष, ६४१२२१२३४४)

पत्र व्यवहार –
श्री अरविन्द कुमार आर्य,
आर्यसमाज बुढाना, जिला मुज्जफरनगर, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये



सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक ६ | १३ अगस्त से १६ अगस्त, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | श्रा०कृ०५

भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक न्याय सभा सर्वाधिकार सम्पन्न

तीसरी सार्वदेशिक सभा का गठन कुछ षड्यन्त्रकारियों का एक वर्ष पुराना स्वप्न

पद और धन की लालसा में अन्धे बने हैं कुछ कथित आर्य

सार्वदेशिक न्याय सभा की पांच सदस्यीय पीठ द्वारा गहन विचार-विमर्श एवं सार्वदेशिक सभा की नियमावली तथा न्याय सभा के नियमों के अन्तर्गत ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान श्री देवरत्न आर्य (सेवानिवृत कैप्टन) को अनेक गम्भीर अनियमितताओं एवं नियम विरोधी कार्यों के लगातार किए जाने के कारण प्रधान पद से हटाने का आदेश दिया गया। इस विषय को लेकर अन्तरंग सभा के बहुमत सदस्य सहमत थे परन्तु दो चार माननीय सदस्यों ने सम्भवतः नियमों की जानकारी न होने कारण यह प्रश्न उठाया कि न्याय सभा को प्रधान पद से किसी व्यक्ति को हटाने का अधिकार नहीं है।

इस सम्बन्ध में न्याय सभा के वर्णित अधिकारों का नियम संख्या ६ इस प्रकार है। कृपया अवलोकन करें –

"६. सार्वदेशिक न्याय सभा के मौलिक अधिकार क्षेत्र के विषय

(क) निम्नलिखित विषय **एकमात्र सार्वदेशिक न्याय सभा के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे** और **निर्णयार्थ उसके समक्ष प्रस्तुत होंगे।**

(१) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यों वा अधिकारियों के अथवा सदस्यों और अधिकारियों के पारस्परिक समस्त झगडे और विवाद जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मामलों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध रखते हो।"

यह उपरोक्त नियम अपने आप में स्पष्ट भाषा के साथ विवाद निपटारे के लिए सार्वदेशिक न्याय सभा को अधिकृत करता है। अतः न्याय सभा की अधिकारिता पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लगाया जा सकता।

दूसरी बात है गुण दोष के आधार पर निर्णय उचित है या अनुचित।

सार्वदेशिक न्याय सभा के समक्ष श्री देवरत्न आर्य के विरुद्ध हिमाचल सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक अन्तरंग के सदस्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती तथा हिमाचल सभा के मन्त्री श्री हृदयेश आर्य की याचिका प्रस्तुत हुई।

सार्वदेशिक न्याय सभा के पांच सदस्यों की पीठ में स्वयं अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी के अतिरिक्त, दो सेवानिवृत सेशन जज श्री पी०आर० अग्रवाल तथा श्री एस०पी० सिंह चौधरी तथा दो अधिवक्ता श्री वेदप्रकाश गोयल तथा श्री प्रदीप जी शामिल थे।

न्याय सभा की इस पीठ ने समस्त तथ्यों पर जो निर्णय दिया उसमें दोष निकालने की हिम्मत किसी में नहीं आ रही। केवल अधिकारिता को लेकर शोर मचाया जा रहा है। जबकि उपरोक्त नियम अधिकार को भी स्पष्ट करते हैं।

शेष पृष्ठ ७ पर

जीवन प्रभात गांधीधाम अनाथालय नहीं, सनाथालय है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य का दिल्ली की अग्रणीय आर्यसमाज राजौरी गार्डन में स्वागत किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि वैदिक जीवन में स्वाध्याय, साधना और सत्संग ही जीवनचर्या के मुख्य कार्य हैं। स्वाध्याय और साधना से जो तप का फल प्राप्त होता है उसे सत्संग द्वारा जनता की सेवा में ही अर्पित करना चाहिए। स्वाध्याय और साधना से स्वार्थ नहीं अपितु परोपकार की भावना का उदय होता है। इन विचारों के आधार पर अपना जीवन यापन करते हुए हमें आर्यसमाज के अन्तर्गत जब समाज सेवा का अवसर मिला है तो उसे एक ईश्वरीय दायित्व समझ कर निभाना चाहिए।

हमने सदैव आर्यसमाज का एक महान ईश्वरीय दायित्व समझ कर निभाया है।

शेष पृष्ठ ७ पर

गुपचुप समझौते क्यों ?

अग्निवेश के साथ गुपचुप समझौते के षड्यन्त्र का पर्दाफाश होते ही श्री देवरत्न आर्य बौखला उठे। श्री वेदप्रकाश श्रोत्रीय को लिखे पत्र ने उनकी षड्यन्त्रकारी और अस्वस्थ मानसिकता को जनता के सामने खोलकर रख दिया था।

इस बौखलाहट में ही श्री देवरत्न आर्य ने सभामन्त्री श्री विमल वधावन द्वारा अग्निवेश के विरुद्ध विगत १ वर्ष से भी अधिक समय से चल रहे संघर्ष में बाधाएं उत्पन्न करनी प्रारम्भ कर दीं। जो आपत्तिया अग्निवेश द्वारा की जा रही थीं वही अब श्री देवरत्न की भी आपत्तियां बन गईं।

प्रान्तीय सभाओं में गुटबाजी फैलानी प्रारम्भ कर दी।

अग्निवेश से समझौता करना ही था तो गुपचुप क्यों? ... महापंचायत रूपी जन सभा बुलाते तब पता चलता जनता की भावनाएं क्या कहती है। आप महासम्मेलन के नाम पर जनता को बेवकूफ बनाने वाले महानुभाव अपनी आत्मिक स्थिति को टटोल कर देखें। मन में बसे हों षड्यन्त्र और सम्मेलनों के नाम पर धन इकट्ठा करने की लालसा शायद सांसारिक दृष्टि में सफल हो जाए ... आत्मा–परमात्मा की तरंगें ... ■

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

मुजफ्फरनगर (२६ से २६ अक्तूबर, २००६) के लिए बैठकें

१३ अगस्त, २००६ (रविवार)

स्थान : आर्य समाज बुढ़ाना गेट, मेरठ प्रातः १० बजे

२७ अगस्त, २००६ (रविवार)

स्थान : आर्य समाज बुढ़ाना गेट, मेरठ प्रातः १० बजे

अधिक से अधिक संख्या में पश्चिम उत्तर प्रदेश के आर्यजन इन बैठकों में पहुंचें। – **जयनारायण अरुण** (प्रधान, ९४१२२१७०१८),
डॉ० आशारानी राय (उपप्रधाना, ९८३७८६६८८४६),
चन्द्रकिरन शर्मा (मन्त्री, ०१२३२–२४६०२६),
अरविन्द कुमार आर्य (कोषाध्यक्ष, ९४१२२१२३४४)

पत्र व्यवहार – श्री अरविन्द कुमार आर्य, आर्यसमाज बुढ़ाना, जिला मुज्जफरनगर, उत्तर प्रदेश

आर्यसमाज का सतत पतनशील नेतृत्व : तथाकथित नए नेतृत्व से कुछ सवाल

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज में सार्वदेशिक नेतृत्व का उदय हुआ जब १९०८ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दिल्ली में स्थापना हुई। इसके प्रथम प्रधान अजमेर के पं० बंशीधर शर्मा थे। एक वर्ष बाद सभा का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द के हाथों में आया। साथ ही महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस सभा को संगठित तथा सुदृढ़ करने में बहुत बड़ा योगदान दिया। १९२६ में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान नया बाजार के सेठ रघुमल के जिस भवन में हुआ उसे कालान्तर में बलिदान भवन के नाम से नवाजा गया जो वर्षों तक इस सभा का कार्यालय रहा। पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह के पश्चात् आसफ अली रोड़ का एक भवन खरीदा गया। दयानन्द भवन के नाम से यह सार्वदेशिक सभा का कार्यालय बनाया गया। सार्वदेशिक सभा का विगत नेतृत्व प्रभावशाली, समर्पित व्यक्तित्व वाले सिद्धान्तनिष्ठ पुरुषों का था। मैंने १९५८ से लेकर आज तक के सभा के अध्यक्षों के कार्यों तथा प्रवृत्तियों को काफी करीब होकर देखा है। स्वामी अभेदानन्द तथा स्वामी ध्रुवानन्द जैसे दूरदर्शी महात्माओं ने यदि इस सभा का सूत्र संचालन किया तो बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट, डॉ० दुःखनराम (पटना), सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास तथा लाला रामगोपाल जैसे दूरदृष्टि वाले, नेताओं ने सभा का सुचारु संचालन किया। यह मानना उचित नहीं होगा लाला रामगोपाल (स्वामी आनन्द बोध) के अवसान के पश्चात् आर्यसमाज के सार्वदेशिक नेतृत्व को ग्रहण लग गया। तब से वह निरन्तर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। पतन का यह प्रवाह कब खत्म होगा, कोई नहीं जानता।

आर्यसमाज के इतिहास में वह दिन काला दिन कहा जाएगा जब कुछ महत्वाकांक्षी लोगों ने शाहे वक्त (समकालीन सरकार) की मदद लेकर, पुलिस की सुरक्षा की ओट में दयानन्द भवन पर बलात् अधिकार कर लिया और पुरानी व्यवस्था को तोड़-फोड़ कर नष्ट कर दिया। आर्यसमाज ने प्रजातांत्रिक विधान को तो उसी दिन से स्वीकार कर लिया था, जब उसका मुम्बई में जात कर्म संस्कार हुआ था। प्रजातंत्र व्यवस्था के अपने गुण दोष हैं। इसका चमत्कार मैंने १९५८–५९ देखा जब गुटबाजी (जो प्रजातंत्र की अनिवार्य बुराई है) के कारण पं० नरेन्द्र, पं० प्रकाशवीर शास्त्री तथा लाला रामगोपाल जैसे तेजस्वी तथा समर्थ नेतृत्व के धनी पुरुष सामान्य जनों से पराजित हो गए। इसे यही समर्पित करूं। मैं कह रहा था कि जिस आर्यसमाज ने कभी शासन और सत्ता का मुंह नहीं जोया वह सत्ता के शीर्षस्थ लोगों का आश्रय लेकर आर्यसमाज की सर्वोच्च सत्ता के केन्द्र पर काबिज हो जाए, इससे बढ़कर ट्रेजडी और क्या हो सकती थी ? और सत्ता के शीर्ष पर भी वह महिला आसीन है जो आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के बारे में कुछ भी नहीं जानती। साफ साफ कहूं तो जिन महात्मा गांधी ने १९२४ में 'यंग इण्डिया' में लेख लिखकर आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द को असहिष्णु तथा कट्टरपंथी बताया था, उन्हीं की नामलेवा तथाकथित धर्म निरपेक्ष कांग्रेस सरकार की बैसाखी का सहारा लेकर आर्यसमाज के इस कथित नए और प्रगतिशील नेतृत्व ने दयानन्द भवन द्वार पर दस्तक दी।

इतिहास गवाह है कि आर्यसमाज ने न तो विदेशी गोरी सरकार से कभी सहायता ली और न स्वदेशी सरकार की कृपा की आकांक्षा की। तथापि आर्यसमाज के तेजस्वी व्यक्तित्व से खौफ खाने वाले उन क्षुद्र कांग्रेसियों ने निश्चय ही बगलें बजाई होंगी जब दयानन्द भवन पर उनके मित्रों का कब्जा हो गया। केन्द्रीय सरकार के एक मंत्री ने तो यहां तक कहा बताते हैं कि अब आर्यसमाज को सच्चे अर्थों में हम सैकुलर बनाएंगे। उनकी समझ में श्रद्धानन्द, नारायण स्वामी, अभेदानन्द और ध्रुवानन्द के नेतृत्व वाली आर्यसमाज नितान्त साम्प्रदायिक थी। अब हम बलात् काबिज नेतृत्व से कुछ सवाल पूछने की धृष्टता करें। प्रारम्भ में वह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए कि आर्यसमाज की कार्य योजना (एजेण्डा) स्वामी दयानन्द के समय से ही निश्चित है। इसमें किसी प्रकार की न्यूनाधिकता की आवश्यकता नहीं है। आर्यसमाज के छठे नियम में उल्लिखित संसार का उपकार करना आर्यसमाज का घोषित उद्देश्य है। इसके प्रचार आर्यसमाज का एकमेव कार्यक्रम है, उद्देश्य है, एजेण्डा है। सम–सामयिक समस्याएं आती हैं और आर्यसमाज उनके प्रति अपनी सन्तुलित नीति बनाकर तदनुकूल आचरण भी करता है। अतः नेता विशेष द्वारा घोषित सप्त सूत्री कार्यक्रम को आर्यसमाज का सार्वभौम कार्यक्रम घोषित करना अनधिकार चेष्टा है। विगत में भी शास्त्रार्थ, ग्रन्थ लेखन, प्रकाशन, हिन्दू संगठन, शुद्धि, वेद प्रचार आदि के सघन कार्यक्रम बनाकर क्रियान्वित किए गए हैं। सवाल इतना ही है कि क्या इस सप्त सूत्री कार्यक्रम को आर्यसमाज का अधिकृत अनुमोदन प्राप्त है क्या इसे दीर्घ विचार के पश्चात् आर्यसमाज ने सर्वानुमति से स्वीकार किया है ? यदि नहीं तो इसका महत्व क्या है ?

यदि साफ कहूं तो कथित नेतृत्व वेद प्रचार, आर्ष ज्ञान के उद्धार, ऋषियों की विरासत की पुष्टि, पंच महायज्ञों तथा वर्णाश्रम विधान को सुदृढ़ता प्रदान करने की अपेक्षा लोक प्रचलित नारों के बहाव में बहकर आर्यसमाज के मूल मन्तव्यों को दरकिनार कर बैठा है। जिन लोगों ने, जैसा कि कहा जाता है वैदिक कर्मकाण्ड में आस्था रखने वालों को 'संध्या हवन कम्पनी' कहकर उपहास का पात्र बनाया, उनसे आर्यसमाज के उक्त आधारभूत मन्तव्यों को क्रियान्वित करने की आशा रखना दुराशा मात्र है। सच तो यह है कि आज के ये नेता मूल तथा गौण में अन्तर करना भूल गए। आचार्य विश्वश्रवा अपनी हास्य व्यंग्य की शैली में कहा करते थे – अब वेद प्रचार की चिंता किसे है, अब तो हर समाज में होमियोपैथी की डिस्पेंसरियां खुल रही हैं, स्त्रियों के लिए सिलाई क्लास चलाए जाते हैं। अब यदि अस्पताल खोल कर दो चार, दस बीस जनों के लिए चिकित्सा सुविधा पैदा करना या अनाथ विधवाओं को रोजगार देने के लिए सिलाई सिखाना ही आर्यसमाज का काम रह गया तब तो वेद और आर्ष ग्रन्थों का प्रचार कराने के लिए हम क्या किराए पर लोगों को बुलाएंगे ? कुछ काम सरकार के करने के हैं। इनमें लोगों को शिक्षा तथा चिकित्सा साथ ही रोजगार दिलाने के काम सरकार के हैं। ये काम [illegible] भी हालत में आल इण्डिया मेडिकल साइन्स इन्स्टीट्यूट दिल्ली या पी०जी०आई० चण्डीगढ़ जैसा चिकित्सा संस्थान नहीं खोल सकती तो ये छोटे मोटे अस्पताल चलाने में क्या तुक है ? अगर हम यही सब करते रहे तो वेद प्रचार दायित्व किसे सौंपेंगे ? वस्तुतः दयानन्द का कार्यक्रम ही हमारा प्रधान एजेण्डा है।

स्वामी दयानन्द ने भी अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में सार्वजनिक हित के दो आन्दोलन चलाए थे – (१) हिन्दी का प्रचार तथा (२) गौवध का निवारण। पूछा जा सकता है कि इस नए सप्त सूत्री कार्यक्रम में इन्हें शामिल क्यों नहीं किया गया ? आज तो इन पर अमल करने कराने की सर्वाधिक आवश्यकता है। समग्रतः हम कहना चाहते हैं कि आर्यसमाज का यदि कोई नया एजेण्डा बने भी तो उसमें हमारे संन्यासियों, विद्वानों, साहित्यकारों, प्रबुद्धजनों की सलाह को सर्वोपरि स्थान मिलना चाहिए। एक व्यक्ति की सनक (whim) को सबकी स्वीकृति न समझा जाए। शराब को निरुत्साहित करना जरूरी है तो साथ ही मांसाहार का चलन बंद होना चाहिए। (क्रमशः)

आर्य संन्यासी स्व० स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी की द्वितीय पुण्य तिथि पर देवयज्ञ एवं सुरमयी भजन संध्या का आयोजन

उदयपुर, २३–७–२००६ को गुलाब बाग स्थित श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नवलखा महल परिसर में स्थित यज्ञशाला में आर्य संन्यासी स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की द्वितीय पुण्य तिथि मनाई गई।

सायंकाल न्यास के तत्वावधान व नगर परिषद् उदयपुर के सौजन्य से न्यास के 'आर्यन्स समूह' द्वारा भक्ति संध्या का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसकी अध्यक्षता चित्तौड़गढ से पधारे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने की तथा कार्यक्रम का प्रस्तुतिकरण व संचालन श्री अशोक आर्य ने किया।

नगर परिषद् के अध्यक्ष श्री रवीन्द्र श्रीमाली ने स्वामी जी को श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि उनका जीवन सादगी पूर्ण था। आपका सबसे अत्मीयतापूर्ण एवं अपनत्व का सम्बन्ध था। जयपुर के श्री एम०एल० गोयल ने स्मरण कराया कि उदयपुर में डी०ए०वी० विद्यालय की नींव आपके प्रथम सात्विक दान १ लाख रुपये से रखी गई। आदरणीय वेदप्रताप जी वैदिक ने कहा कि आप जैसा संन्यासी आज तक आर्य जगत में नहीं हुआ। वे अपने कृतित्व से आर्य जगत् में सदैव स्मरणीय एवं प्रेरणा के स्रोत रहेंगे। सत्यार्थ प्रकाश १९वीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचना–स्थल को, इस जीर्ण शीर्ण नवलखा महल को, जिसको उन्होंने पुत्रवत् गोद लिया था, अपनी त्याग, तपस्या एवं समस्त सामर्थ्य से विश्व में अमर बना दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे स्वामी ओमानन्द [illegible] का छोटा बालक जो तीन रुपये मासिक छात्रवृति पाता था, वह अपने परिश्रम, अनुशासन एवं अर्थ व्यवस्था में शून्य से शिखर तक पहुंचा और करोड़पति से फकीर अर्थात् अपना सब कुछ नवलखा महल को अर्पित कर संन्यासी स्वामी तत्वबोध हो गया। इसका समस्त श्रेय महान् समाज सुधारक महर्षि देव दयानन्द को जाता है जिन्होंने वेद ज्ञान को जन जन तक पहुंचाने के लिए कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना इसी नवलखा महल में की। इसी सत्यार्थ प्रकाश के सत्य से प्रकाशित हो श्री हनुमान प्रसाद चौधरी ने अपना पौराणिक बाना उतार फेंका और स्वामी तत्वबोध बन शेष जीवन ऋषि कार्यों को करने में समर्पित कर दिया।

विशेष अतिथि डॉ० वेद प्रताप 'वैदिक' ने इस के लिए १० करोड़ रुपये के साहित्य से न्यास बनाकर वेद धर्म को घर–घर पहुंचाने का संकल्प आर्यो से लिया। सन् २००८ तक सवा लाख बच्चों को बाल सत्यार्थ प्रकाश के सदस्य बनाने का संकल्प भी दोहराया गया। न्यास के 'आर्यन्स' सदृश्य प्रकल्प को आगे बढ़ाने हेतु, न्यासी श्री सुरेश अग्रवाल, ने न्यास को ११०००/– रुपये का सात्विक दान प्रदान किया।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष

आर्यसमाज मन्दिर, सरस्वती विहार, दिल्ली का निर्वाचन

प्रधान : श्री भजन प्रकाश आर्य

मन्त्री : श्री चन्द्रभान गुप्ता

कोषाध्यक्ष : श्री विनय भूषण [illegible]

हम किन इच्छाओं की कामना कर रहे हैं

– स्वामी आर्य तपस्वी सुखदेव, वैदिक प्रवक्ता

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम। आयु, प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम। महयं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

इस विश्व में सब प्रकार के जगत में सात तत्व काम कर रहे हैं। सब जगत में सात लोक – पृथ्वी लोक, वायु लोक, इन्द्र लोक, नक्षत्र लोक, चन्द्र लोक, ब्रह्म लोक, आदित्य लोक।

इसी प्रकार से सात भूमिया हैं। सात प्रकार की सृष्टि है। प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात प्रकार की धातुएं हैं। ये सात रस्सियां हैं जिन से यह विश्व उस काल रूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है।

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः ....। .... तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।

– *अथर्व १६/५३/१*

काल की महाशक्ति से जुड़ कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएं चक्र की तरह घूम रही हैं। यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है। तुच्छ प्राणी, असंख्य वर्षो की आयु वाले बहुत से सोर मण्डल भी जीर्ण होकर इस अनन्तकाल में लीन हो गए और कभी न जीर्ण होने वाला यह कालदेव आज भी अपनी उतनी और उसी शक्ति से इस अनन्तकाल में लीन हो गए और कभी न जीर्ण होने वाला यह कालदेव आज भी अपनी उतनी और उसी शक्ति से इस विश्व ब्रह्माण्ड को खींच रहा है।

संसार की महान् आत्माओ! सदा याद रखे कि इस महावेगवान अश्व की शक्ति से वे बच सकते हैं जो ज्ञानी हैं। जो समय को पहचानते हैं और जिनकी दृष्टि इन सबको हिलानेवाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है अर्थात् जो क्रान्तदर्शी है, जो भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं।

जो काल के महत्व को नहीं जानते, वे अज्ञानी, चंचल, प्रमादी, आलसी, पथभ्रष्ट और ठोकरे खाने वाले हैं और कालरथ के नीचे यूं ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं। इसीलिए काल नाम मृत्यु कहलाने लग गया।

हम सभी को उस महाशक्ति वाले, महावेग वाले काल रूपी घोड़े की ठोकरे खाने से बचने का पुरुषार्थ करना है। ऐसा करके हम अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं। हम सभी पल का सदुपयोग करें और सदा ऊंची विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्तव्य निश्चय करें।

इस संसार में आकर प्राणी अज्ञानतावश संसार को चमक दमक वाला मानकर संसार को व संसार के पदार्थों को अपनी आत्मा का भाग मानकर इनमें लिप्त हो जाता है और इसे छोड़ना नहीं चाहता।

जैसे इस विश्व में सात तत्व, सात भुवन, सात सृष्टियां, सात भूमियां, सात प्राणी, सात प्रकार का ज्ञान, सप्त रश्मियां कामकर रही हैं उसी प्रकार से प्राणी में हर पल सात इच्छाएं प्रेरित कर रही हैं जो इस प्रकार है :–

१. बहुत दिन जीने की इच्छा।
२. स्त्री, पुत्र, रति, शोभा, श्रृंगार की इच्छा।
३. खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने, मकान, गृहस्थी, वाग-बगीचे, खेत तथा पशुओं की इच्छा।
४. यश और मान आदि की इच्छा।
५. विद्या, ज्ञान, विज्ञान और जानकारी की इच्छा।
६. अपने साथ कोई अन्याय न करे अर्थात् न्याय की इच्छा।
७. बार–बार जन्म मरण के दुःख से छूटकर मोक्ष प्राप्ति की इच्छा।

ये सात इच्छाएं प्राणी में सदा रहती हैं और इन्हें प्राप्त करने में विचलित करती रहती हैं। किन्तु वेदों के ज्ञान द्वारा भली प्रकार से जाना जा सकता है कि परमात्मा के सिद्धान्त अनुसार वह प्राणी सदा सुखी, शान्त, प्रसन्न, आनन्दमयी, निर्भीक, परोपकारी, दयावान रह सकता है जो अपनी इच्छाओं को अपने भीतर जानने का प्रयास करता है।

You are the most richest on this earth when you seek happiness in conscious"

When a person runs into the worldly affairs he/she can never be happy peaceful or contented. He/She is treated the beggar.

क्या हम इन इच्छाओं में लिप्त होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं ? जन्मो–जन्मान्तरों के उत्तम कोटि के कर्म करने पर उत्तम कोटि के कर्म करने पर उत्तम कोटि का शरीर धारण करने वाला कर्म योनि का चोला प्राप्त होता है। जिसमें मन, बुद्धि, चित्त, ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां, पांच भौतिक तत्व, महत्व, अहंकार तत्व प्राप्त होता है। महत्व के द्वारा हमें आन्तरिक संसार का आभास होता है। अहंकार तत्व के द्वारा हमें अपनी सत्ता की अनुभूति होती है। आन्तरिक संसार में हमारा सम्बन्ध केवल परमात्मा के साथ रहता है और ज्ञान होता है कि हम परमात्मा की व्यवस्था के अधीन पल रहे हैं और हमारा विकास हो रहा है, किन्तु अहंकार तत्व के द्वारा अपनी सत्ता की अनुभूति होने पर चमक दमक वाले संसार में बन्ध कर सत्य ज्ञान छूट जाता है और अज्ञानता के संसार में बन्ध जाते हैं और अधिक जीने की कामना कर बैठते हैं जो हमारे दुःख का कारण बन जाता है। आइए थोड़ी देर के लिए मान ले, यह संसार रूपी सड़क दूर दूर तक बड़ी चौड़ी व सुन्दर है। कड़ाके की ठण्ड है। मैं सड़क पर नंगा पड़ा हूं। कोई मदद करने वाला दिखाई नहीं दे रहा है। कुछ दूरी पर एक नया रेशमी कम्बल पड़ा है। कड़ाके की ठण्ड के कारण पूरा शरीर कांप रहा है। कम्बल को उठाकर जिस्म को ढक लेता हूं। बहुत आराम सुख मिल रहा है। कम्बल छोड़ने का मन बिल्कुल नहीं करता। चिन्तन करें, कब तक चिपटे रहेंगे ? भोगा न मुक्ता, वयमेव मुक्ता, न तो सदा के लिए भोग करने वाला रह सकता है, भोग पदार्थ रह सकते हैं किन्तु काल रूपी घोड़ा तो नहीं छोड़ेगा।

अहंकार तत्व के द्वारा मन में दूसरा विचार भी विचलित कर सकता है कि कम्बल नया है, रेशमी है। शरीर को सुख देने वाला है, किन्तु मैं इसका स्वामी नहीं हूं। यह मेरा नहीं है। इसी विचार को लेकर प्राणी संसार में नंगा आया और नंगा ही चला गया। क्या बिना कर्म किए संसार में कर्म योनि चोला प्राप्त करने के भागी बन पाएंगे ? कर्म तो करना ही पड़ेगा। कर्म वह उत्तम कहलाता है जो स्वयं को भी सुख व आनन्द दे और दूसरों को भी सुख व आनन्द दें। आपने परमात्मा के भेंट किए हुए ज्ञान रूपी कम्बल को शरीर में धारण तो कर लिया किन्तु उसे अपनी आत्मा का भाग मानकर स्वार्थवश स्वयं उससे चिपके रहें किन्तु दूसरो के लिए कुछ नहीं किया। इसलिए उत्तम चिन्तन व इच्छा ऐसी जाग्रत हो जो सर्व कल्याणकारी व परोपकारी हो अर्थात् मैं इस संसार में नंगा आया था, परमात्मा के ज्ञान रूपी कंबल को प्राप्त किया, धारण किया, उसे लेकर दूसरों के शरीर में धारण कराकर संसार से विदा होवूं तो अमरत्व का, आनन्द का भागी बन पाऊंगा।

परमात्मा ने यह संसार हम सभी के लिए बनाया है। संसार के पदार्थ भी हम सभी के लिए बनाए हैं। अच्छे लगने पर भोग करने का अधिकार हमें है किन्तु उन्हें आत्मा का भाग मानकर उनसे चिपट जाना, छोड़ना नहीं, यह हम सभी के लिए दुःख और चिन्ताओं का कारण बन जाता है। परमात्मा ने कभी नहीं कहा कि मुझे प्राप्त करने के लिए घर छोड़ दो, नौकरी छोड़ दो, बीवी बच्चे छोड़ दो, जंगलों में जाओ, आग पर नंगे पांव चलो, पर्वत पहाड़ो पर रहो। परमात्मा ने हमें पूर्ण अधिकार घर में रहने का, पत्नी के साथ रहने का, बच्चे पैदा करने का, धर्मानुसार खूब धन कमाने का जो भी कार्य करने में सुख आनन्द मिलता है, सब कुछ करो, किन्तु उन सभी पदार्थो में लिप्त मत होओ।

स्वाध्यायशील प्राणी सदा युक्त मना भवति अर्थात् चंचल मन को एकाग्रचित, संकल्पशील, शान्त, बुद्धिमान्, अपराधीन, अर्थो की सिद्धि वाला, इन्द्रिय संयमी, एकरामता को प्राप्त करने वाला, त्रैकालिक बुद्धि को प्राप्त करने वाला, यश की प्राप्ति करने वाला अर्थात सदा चाहता है कि तन न रहे, धन न रहे, बस अमर हो जाऊ इसके लिए सब कुछ दाव पर लगा देता है और इससे बढ़कर लोकपरिपाक अर्थात् तीन ऐषणाओं में लोकेषणा पर विजय प्राप्त करना चाहता है। संसार का अटूट नियम है, जो ज्ञान प्राप्त करने में और कर्म करने में पूर्ण होता है अर्थात् परिश्रमी व पुरुषार्थी होता है, वह ज्ञान व कर्म शून्य का भोक्ता होता है। ज्ञानयुक्त सात्विक कर्म करने से ज्ञानयुक्त मानव शरीर बनता है और शरीर बनने पर छह प्रकार के गुणों की अनुभूति कर पाता है – १. ज्ञान, २. प्रयत्न, ३. इच्छा, ४. द्वेष, ५. सुख, ६. दुःख। इन गुणों की अनुभूति होने पर दुःख कोई नहीं चाहता और केवल सुख की प्राप्ति करना चाहता है। संसार में आने पर, चमक दमक वाले संसार को देखकर, सांसारिक पदार्थों को देखकर, प्राप्त कर उन्हें आत्मा का भाग मानकर उनमें लिप्त हो जाता है। उन्हें सुख मान बैठता है और छोड़ना नहीं चाहता। परमात्मा से सदा कामना करता है। परमात्मा ! जन्मो जन्मान्तरों के अच्छे कर्म करने पर मुझे सुन्दर चोला मिला। उसे पाकर जीवन पर्यन्त सुख भोगता रहा, सुन्दर पत्नी मिली, योग्य सुपुत्र, सन्तान मिली, खूब धन मिला। बस प्रभु यही कामना है कि हर जन्म ऐसा चोला व आनन्द प्राप्त करता रहूं।

अधिक ज्ञान की प्राप्ति हुई, सांसारिक पदार्थो का भोग करने दुःख अनुभूत होने पर वैराग्य, त्याग की भावना जाग्रत हुई। ईश्वरकृत पुस्तकों का खूब स्वाध्याय किया। सांसारिक कल्याण, परोपकार की भावना से सेवा करने पर खूब सांसारिक यश, कीर्ति चारों ओर फैलने लगी।

बस प्रभु से केवल और केवल ऋषि चोला प्राप्त करने की भावना प्रबल रूप धारण करने लगी।

मोक्ष अर्थात सुख का स्वरूप दो प्रकार का है। दुःखो से छूटना पहला स्वरूप है। सुख, आनन्द शान्ति प्राप्त करना दूसरा स्वरूप है। मुझे जीवन में किसी प्रकार का दुःख न हो और मैं ज्ञानयुक्त होकर संसार का और अपने आप का रसास्वादन सदैव करता रहूं। दूसरा सुख व आनन्द – मुझे जीवन में किसी प्रकार का दुःख न हो और मैं परमेश्वर को प्राप्त करके अर्थात परमात्मा के गुणों व शक्ति की अनुभूति प्राप्त करके उन गुणों का रसास्वादन करता रहूं। प्रकृति बन्धन में रहकर सच्चे आनन्द की अनुभूति सम्भव नहीं है। प्रकृति बन्धन से छूटने पर और परमेश्वर के बन्धन में बन्धने पर ही यह लक्ष्य सम्भव है।

हे प्रभु ! सासारिक पदार्थों का भोग करने पर, दुःख नजर आने पर, वैराग्य, विरक्ति, त्याग करने पर, चंचल मन को एकाग्रचित करने पर, समाधि लगाने पर, शरीर से अज्ञान के पर्दे को हटाने पर, प्रभु की शक्ति व गुणों की अनुभूति होने पर सच्चे सुख, शान्ति, प्रसन्नता, दया, परोपकार की भावना जाग्रत होने पर जान पाया कि मेरे जीवन की वास्तविक इच्छा क्या है ?

– जीवन प्रभात ट्रस्ट
३७६, द्वितीय मेन रोड
महावीर नगर, लासपेट
पांडिचेरी – ६०५००८
मो० – ०६३४४४–४४८१६
घर – ०४१३ – २२३७३१६

तप का सार क्या है ?

– आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'

कहते हैं कि एक बार समस्त देवता लोग परमात्मा के पास गए तथा हताश और निराश होकर बैठ गए। परमात्मा उनकी इस स्थिति को देखकर बड़े हैरान हुए और पूछा कि आप लोग इस प्रकार दुःखी क्यों हो? देवता बोले कि भगवान बात ही कुछ ऐसी है। परमात्मा ने पुनः कहा कि साफ–साफ बताओ कि बात क्या है? अब देवता लोग बोले कि भगवन क्या बताएं हम लोग असुरों से हार गए हैं। देवताओं के इस उत्तर को सुनकर परमात्मा को और भी अधिक हैरानी हुई और बोले कि तुम देवता होते हुए असुरों से हार गए यह तो बहुत शर्म की बात है। उन्होंने देवताओं से पूछा तुम लोगों ने इसके कारण पर चिन्तन किया है क्या? देवता बोले कि यदि कारण का पता चल जाता तो हम कुछ निवारण भी कर लेते। कारण जानने ही तो हम लोग आपकी शरण में आए हैं। परमात्मा ने कहा कि मैं जान गया कि तुम लोग देवता होते हुए भी असुरों से क्यों हार गए हो। देवताओं ने कहा कि कृपा करके हमें भी बताएं। परमात्मा बोले तुम इसलिए असुरों से हार गए हो क्योंकि तुम लोगों ने वह कर्म ही छोड़ दिया है जिससे तुम्हारे भीतर दिव्यता का सृजन हो सकता। भगवन हमें वह कर्म बताने की कृपा करें देवताओं ने विनय की। परमात्मा बोले कि तुम लोगों ने क्रियायोग को त्याग दिया है इसलिए तुम असुरों से हार गए हो। ज्यों ही तुम लोग क्रियायोग का अनुष्ठान करोगे, असुर तुम्हें कदापि हरा नहीं पाएंगे।

देवत्व और असुरत्व की भावनाएं निरन्तर हमारे भीतर क्रमशः चली रहती है। यदि व्यक्ति जागरूक है तो वह देवत्व की भावनाओं को प्रबल बना सकता है मगर यदि वह जागरूक नहीं है तो असुरत्व की भावनाओं से उसकी हार हो जाना निश्चित है। आज हम देखते हैं कि असुरत्व की भावनाओं से उसकी हार हो जाना निश्चित है। आज हम देखते हैं कि असुरत्व की भावना प्रत्येक चरित्र में प्रबल होती चली जा रही है और देवत्व का ह्रास होता चला जा रहा है। ऐसा लगता है मानो हर स्थान पर देवत्व हार रहा है। वास्तव में वह देवत्व की हार नहीं है ल्कि क्योंकि देवत्व के गुण ही नहीं रहे, इसलिए हारना स्वाभाविक है। इसीलिए परमात्मा ने देवताओं से कहा कि तुम लोगों ने क्रियायोग को त्याग दिया है इसलिए तुम लोग असफल हो रहे हो। विजय के लिए हमें क्रियायोग को अपनाना होगा। यह क्रिया योग वास्तव में है क्या? योगदर्शन के रचयिता महामना पतंजलि जी का कथन है – तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः। अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान क्रियायोग हैं। इस क्रियायोग में सबसे पहले तप आया है। तप किसी प्रकार का दिखावा या आडम्बर मात्र नहीं है बल्कि तप को व्यावहारिकता के साथ जोड़ने की जरूरत है। तप क्या है इस सम्बन्ध में व्यास भाष्य में कहा गया है –

तपो द्वन्द्वसहनम्। द्वन्द्वाश्च जिघित्सा पिपासे, शीतोष्णे, स्थानासने काष्ठमौनाकारमौने च। व्रतानि चैषां यथायोगं कृच्छ्रचान्द्रायण-सान्तपनादीनि।

अर्थात् भूख प्यास, सर्दी–गर्मी, स्थान–आसन और काष्ठमौन–आकार मौनादि द्वन्द्वों को सहना और कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रतों का शक्ति के अनुसार अनुष्ठान करना तप कहलाता है। परन्तु व्यासमुनि जी ने इन तपों के विषय में सावधान भी किया है कि इनका अनुष्ठान अपनी शक्ति के अनुसार ही करना चाहिए। अन्यथा शक्ति का अतिक्रमण करने से धातुओं में वैषम्य हो जाता है और अनेक रोगों से शरीर दूषित हो जाता है। इसलिए हमारा कहना है कि हम तप के भाव को समझकर उसका कार्यान्वयन इस प्रकार से करें ताकि उसका आम जीवन में उपयोग हो सके।

चाणक्य जी का कथन है – **तपः सार इन्द्रिय निग्रहः**। अर्थात अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को संयमित करने का नाम ही तप है। चाणक्य जी के कथन में बहुत ही व्यावहारिक सत्य छिपा हुआ है। वास्तव में सुख और दुःख का आधार हमारी इन्द्रियों पर ही निर्भर करता है इसलिए अपनी इन्द्रियों को पापाचार की ओर न जाने देना ही तप है ऐसा चाणक्य जी का कहना है। काम, क्रोध, लोभ, अहंकार और मोह आदि ही दुःख का कारण हैं तथा ये समस्त ऐषणाएं इन्द्रियों का सहारा लेकर ही प्रश्रय पाती हैं इसलिए अपनी इन्द्रियों को सही दिशा की ओर मोड़ना ही तप है।

तप का सबसे व्यावहारिक और अनुपम भाव हमें धर्मराज युधिष्ठिर जी के उस कथन से मिलता है जो उन्होने उस समय कहे थे जब यक्ष उनकी परीक्षा ले रहे थे। बहुत प्रसिद्ध कहानी है कि जब पाण्डव लोग अपने वनवास का समय बिता रहे थे तो एक बार उन्हें जंगल में बहुत अधिक प्यास लगी। नकुल ने एक पेड़ पर चढकर देखा की कुछ दूरी पर एक तालाब है अतः वह वहां पानी लेने के लिए गया। पानी भरने से पहले जब वह अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी पीने लगा तो आकाशवाणी हुई कि पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो अन्यथा उत्तर दिए बिना ही यदि जल ग्रहण करोगे तो तुम्हारी मौत हो जाएगी। नकुल को इतनी अधिक प्यास लगी हुई थी कि उसने आकाशवाणी की और कोई ध्यान नहीं दिया और आगे बढ़कर पानी पी लिया। पानी पीते ही उसकी मृत्यु हो गई। जब बहुत देर तक नकुल जल लेकर नहीं लौटा तो पाण्डवों को चिन्ता होने लगी तथा उन्होंने सहदेव को भेजा। सहदेव ने जाते ही नकुल को मृत देखा तो उसे अत्यधिक आश्चर्य और दुःख हुआ। उसे अत्यधिक प्यास लगी हुई थी इसलिए उसने सोचा कि पहले मैं पानी पी लूं। वह ज्यों ही पानी पीने लगा उसे भी आवाज सुनाई दी कि पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो फिर पानी पीना। यदि मेरे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना पानी पीओगे तो तुम्हारी दशा भी अपने भाई जैसे हो जाएगी। सहदेव ने उस आकाशवाणी को महत्व दिए बिना ही पानी पी लिया और कहते हैं कि उसकी भी मृत्यु हो गई। इधर जब सहदेव भी नहीं लौटा तो पाण्डवों की परेशानी और अधिक बढ़ गई। अन्ततः क्रमशः अर्जुन और भीम जल लेने के लिए गए मगर उन्होंने भी आकाशवाणी की ओर ध्यान दिए बिना जल ग्रहण किया और मृत्यु का ग्रास बने।

अब धर्मराज युधिष्ठिर स्वयं जल लेने तथा अपने भाइयों का पता लगाने के लिए गए। ज्यों ही वे सरोवर के पास पहुंचे तो अपने भाइयों की दशा देखकर बहुत दुःखी हुए। उन्होंने इधर–उधर देखा मगर कोई दिखाई नही दिया। भाइयों के शरीरों को देखा जिनपर किसी प्रकार का कोई घाव आदि नहीं था। यह रहस्य उनकी समझ में नही आ रहा था। वे चिन्तामग्न ही थे कि तभी आकाशवाणी हुई कि हे युधिष्ठिर तुम्हारे भाइयों ने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है इसलिए वे इस दशा को प्राप्त हुए हैं। मैं इस सरोवर का स्वामी हूं तुम भी यदि मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए बिना पानी पीओगे तो तुम भी अपने इन भाइयों की ही गति को प्राप्त हो जाओगे। युधिष्ठिर चिन्तनशील व्यक्ति थे इसलिए उन्होंने तुरन्त उस अज्ञात यक्ष को अपने प्रश्न पूछने के लिए कहा। यक्ष ने धर्मराज से बहुत से प्रश्न पूछे तथा उन्होंने उनके सटीक और सारगर्भित उत्तर दिए। यक्ष ने एक प्रश्न पूछा – **तपः किम् लक्षणम्**? धर्मराज ने इसका उत्तर दिया – **तपः स्वकर्म वर्त्तित्वम्**। यह प्रश्न और उत्तर अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा जीवन से जुडा हुआ है। मेरी दृष्टि में तप की इससे उत्तम व्याख्या हो ही नहीं सकती है। यक्ष का प्रश्न है कि तप का लक्षण क्या है और धर्मराज जी का उत्तर है कि अपने कर्म को ठीक ढंग से करना ही सबसे अच्छा तप है। इस प्रकार तप का सार वास्तव में यही है कि हम जहां भी हैं वहीं पर पूरे मन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करें। बस फिर जीवन की प्रत्येक न्यामत हमारे कदम चूमने लगेगी।

खुद चूम लेती है आकर मंजिल,
इन्सान ही यदि हिम्मत न हारे।

– ८१/एस–४, सुन्दरनगर,
पिन–१७४४०२ (हि०प्र०)

श्री राजसिंह भल्ला की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी का देहावसान



वयोवृद्ध आर्य नेता श्री राजसिंह भल्ला की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी का ८४ वर्ष की आयु में अचानक निधन हो गया। ३१ जुलाई, २००६ (सोमवार) को प्रातः सामान्य दिनचर्या के रूप में प्रातः ४ बजे वे उठीं और स्नानादि के उपरान्त लगभग २ घण्टे अपने आर्य पति श्री राजसिंह भल्ला के साथ वार्तालाप करती रहीं। प्रातः लगभग ८ बजे उन्होंने अन्तिम श्वास ली। ८४ वर्ष की अवस्था में भी उन्होंने संध्या यज्ञ का त्याग नहीं किया। इसीलिए जीवन के अधिकांश समय में पूर्णतः स्वस्थ रहकर गृहस्थ आश्रम को निभाती रहीं।

उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से आर्यसमाज लोधीरोड द्वारा संचालित निगम बोधघाट पर किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन, डॉ० महेश विद्यालंकार, वैद्य इन्द्रदेव, श्री धर्मपाल, श्री रामनाथ सहगल श्री वेदव्रत शर्मा, श्री चन्द्रदेव, श्री लक्ष्मीचन्द, डॉ० रविकान्त आदि सहित सैकड़ों आर्य नेता उपस्थित थे।

श्रीमती सावित्री देवी के पीछे उनके पति श्री राजसिंह भल्ला, तीन विवाहित सुपुत्र सर्वश्री नरेन्द्र, अश्वनी, अरुण तथा दो विवाहित सुपुत्रियां श्रीमती सुषमा एवं सुमेधा हैं।

श्रीमती सावित्री देवी जी की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा का आयोजन १० अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर में किया गया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज उज्जैन

प्रधान — श्री राजेन्द्र व्यास
मन्त्री — श्री ओमप्रकाश यादव
कोषाध्यक्ष — श्री वेदप्रकाश सेण्डो

आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

प्रधान — श्री विश्वभूषण आर्य
महामन्त्री — श्री यशप्रिय आर्य
कोषाध्यक्ष — श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल

आर्यसमाज आयुध निर्माणी, पूर्वी क्षेत्र मुरादनगर

प्रधान — श्री माया प्रकाश त्यागी
मन्त्री — श्री राजकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष — श्री मुनिराज त्यागी

आर्यसमाज भीमगंज मण्डी, कोटा

प्रधान — श्री राम कुमार नागल
मन्त्री — श्री प्रेम नाथ कौशल
कोषाध्यक्ष — श्री अजय कुमार सूद

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, प्रयाग

प्रधान — श्री गौरीशंकर श्रीवास्तव
मन्त्री — आर्य राजेन्द्र कपूर
कोषाध्यक्ष — श्री शंकर प्रसाद

सहारनपुर में नई आर्यसमाज की स्थापना

जनपद सहारनपुर के ग्राम टौली में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा [द्वा]रा आर्यसमाज की स्थापना कर निम्नलिखित निर्वाचन किया गया। दो [दि]न का उत्सव बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें [आ]चार्य राजकिशोर शास्त्री गुरुकुल शादीपुर यमुना नगर, पं० ओमप्रकाश [वर्]मा यमुनानगर, प्रेम मुनि, आजाद सिंह आदि विद्वानों ने वेद प्रचार किया।

प्रधान — श्री संजय कुमार आर्य
मन्त्री — श्री कुलदीप सिंह
कोषाध्यक्ष — श्री धर्मवीर सिंह

आर्य सभासद – सर्वश्री सतपाल सिंह, गौतम कुमार, जनक [सिं]ह, राजेन्द्र सिंह, वीरेन्द्र सिंह, नारायण सिंह एडवोकेट, ओमवीर [सिं]ह, कृष्णपाल सिंह, रमेश कुमार, देवेन्द्र कुमार, सत्य कुमार, सूल्हर [सिं]ह फतेह सिंह।

आर्य पहलवानों की टीम अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती के लिए अफ्रीका रवाना

महर्षि दयानन्द युवा खेल समीति, दिल्ली के तत्वावधान एवं [स]मिति के अध्यक्ष श्री अजीत सिंह शास्त्री के नेतृत्व में आठ सदस्यीय [कु]श्ती दल अफ्रीका रवाना हुआ। यह दल लगभग दस दिन की [अप]नी यात्रा के दौरान जोहनसबर्ग में अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती खेलों में [भा]ग लेगा। विगत कई वर्षो से महर्षि दयानन्द युवा खेल समीति इन [अन्त]र्राष्ट्रीय मैचों में भाग लेकर भारत तथा महर्षि दयानन्द का नाम [रोश]न कर रही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन [जी] ने श्री अजीत सिंह तथा अन्य समस्त सदस्यों को विदेश जाने [से] पूर्व शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत के बाहर जाकर प्रत्येक [व्यक्ति] से सदा प्रेम और सभ्यतापूर्वक व्यवहार करना स्मरण रखें। [आ]पसे आपको मिलने वाला प्रत्येक विदेशी नागरिक अपने मानस [पट]ल पर यह छाप अंकित कर ले कि भारतवासी कितने सभ्य और [अच्]छे होते हैं।

इस कुश्ती टीम में श्री अजीत सिंह, कोच के अतिरिक्त सर्वश्री [सं]दीप, संजीत, नरेन्द्र, किरपाल ग्रोवर, विपिन गोसाई, हरेन्द्र सिंह [त]था रमन शामिल हैं।

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली में झांसी की रानी - महारानी लक्ष्मीबाई के बलिदान दिवस पर

भाव-भीनी श्रद्धांजलि

शहीद–स्मृति चेता समिति एवं आर्यसमाज सरस्वती विहार के संयुक्त तत्वावधान में महारानी लक्ष्मीबाई, गुरु अर्जुन देव जी एवं नलिनीकांत बागची के बलिदान दिवस पर वीर रस कवि गोष्ठी का अयोजन आर्यसमाज मंदिर सरस्वती विहार में किया गया। सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती शोभारानी ने गुरु अर्जुन देव जी के ४००वें बलिदान दिवस पर बतलाया कि देश और धर्म–रक्षा की खातिर गुरु अर्जुन देव जी ने कठोर यातनाएं सहते हुए शहादत प्राप्त की थी। संस्थापक श्री रवि चन्द्र गुप्ता ने नलिनी कान्त बागची के अल्पायु में ही बलिदान की चर्चा करते हुए बताया कि उसने असम व बंगाल के सरकारी गुप्त मार्गो का खुलासा करते हुए 'ज्योग्राफी एंड टोपोग्राफी ऑफ ईस्ट बंगाल एंड असम' पुस्तक लिखी। यह पुस्तक भारतीय क्रंतिवीरों के लिए बड़े महत्व की थी। ब्रिटिश अधिकारी इस पुस्तक के प्रकाशन से अचंभित थे। अतः उन्होंनें वह पुस्तक जब्त कर ली। जब नलिनी कान्त बागची घायल अवस्था में गिरफ्तार कर लिए गए तो उनकी मरणासन अवस्था में भी पुलिस उनसे बयान लेने पर तुली थी। लेकिन बागची ने ऐसी अवस्था में भी पुलिस को फटकारते हुए कहा – 'प्लीज डोन्ट डिस्टर्ब मी, लैट मी डाई पीसफुल्ली'

आर्यसमाज के प्रधान श्री भजन प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में वीर–रस कवि गोष्ठी का आरम्भ श्री महेन्द्र दत्त शर्मा, श्री राकेश राही एवं श्री ओमप्रकाश आदि कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। राष्ट्रीय चेतना के प्रख्यात कवि सारस्वत मोहन मनीषी ने 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी' सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता से काव्य पाठ आरम्भ किया। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी में जब

'आजादी बलिदान मांगती,
रक्त पिया करती है
इसकी संतति मरने पर ही
अधिक जिया करती है।'

कविता का पाठ किया तो वातावरण में देश भक्ति की ऐसी लहर दौड़ी कि सभागार 'वन्देमातरम्' के नारों से गूंज उठा। मंत्री श्री देवीदत्त 'सजल' कवि गोष्ठी का संचालन करते हुए बीच बीच में अपनी फूल झड़ियों से वीर रस का संचार करते रहे। आर्यसमाज के संरक्षक श्री कृष्ण देव एवं मंत्री श्री चन्द्रभान ने बतलाया कि आर्यसमाज सरस्वती विहार ऐसे देशभक्ति पूर्ण आयोजन सदैव से करता रहा है एवं करता रहेगा। श्री भजन पकाश आर्य ने सभी का धन्यवाद किया। ▫

'महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग' के नाम में देरी क्यों ?

दिल्ली नगर निगम ने गत वर्ष अपने प्रस्ताव संख्या ४०५ दिनांक २२–६–२००५ द्वारा अशोक विहार की एक सड़क का नामकरण आर्यसमाज के प्रर्वतक 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' के नाम पर रखने का निर्णय लिया था।

करीब १० माह बीत चुके हैं, परन्तु इस निर्णय को कार्यरूप अभी तक नहीं दिया जा सका। इस कारण अशोक विहार के निवासियों में रोष उत्पन्न हो रहा है। इससे पूर्व कि स्थिति और बिगड़े।

वजीरपुर क्षेत्र के विधायक श्री मांगेराम जी गर्ग के नेतृत्व में आर्यसमाज का एक शिष्ट मण्डल निगम के आयुक्त महोदय श्री ए०के० निगम, आई०ए०एस० से पिछले दिनों मिला। उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया गया कि क्षेत्र की पार्षद श्रीमती प्रेमलता गोयल से इस विषय में कई बार निवेदन किया गया, पर उन्होंने सदा बेरूखी दिखाई।

यह कैसी विडम्बना है कि जिस महापुरुष (हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी) की प्रतिमा नगर निगम भवन के प्रांगण को सुशोभित कर रहीं, उसी महापुरुष के गुरुवर दयानन्द सरस्वती के नाम पर रखे गए मार्ग का उद्घाटन नहीं हो पा रहा है।

आयुक्त महोदय ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि आवश्यक कार्यवाही की जाएगी और शीघ्र ही महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग का उद्घाटन समारोहपूर्वक किया जाएगा।

स्मरण रहे कि इसी प्रकार रानी बाग क्षेत्र में 'महात्मा हंसराज मार्ग' के बारे में कुछ असामाजिक तत्वों ने गड़बड़ की थी'। आर्यजनों के प्रयत्नों के फलस्वरूप दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित जी ने स्वयं स्थिति सम्भालकर 'महात्मा हंसराज मार्ग' को पुनः स्थापित किया था। आशा है कि अशोक विहार में ऐसी स्थिति नहीं आएगी।

– अविनाश कूपर, प्रधान
कुलभूषण साहनी, मन्त्री

शोक सन्देश



आर्यसमाज पश्चिम विहार को यह सूचित करते हुए बड़ा दुःख का अनुभव हो रहा है कि पूज्या आशा माता जी के पति श्री ओम प्रकाश जी आर्य का ११–७–०६ गुरु पूर्णिमा के दिन प्रातः देहावसान हो गया। स्व० ओमप्रकाश जी की पगड़ी रस्म १४–७–०६ सायं ४ बजे से ५ बजे आर्यसमाज पश्चिम विहार में सम्पन्न हुई जिसमें कई विद्वानों ने – आचार्य अखिलेश्वर, डॉ० महेश विद्यालंकार, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, श्रीमती ऊषा शास्त्री, ब्र० सुमेधा आर्या तथा आर्य नेताओं ने अपने श्रद्धासुमन समर्पित किए।

स्व० आर्य जी का जन्म २८ अगस्त १६२३ को लाहौर में एक सम्पन्न, संस्कारी परिवार में हुआ। आप बाल्यकाल से ही शान्त, निर्भीक, सरल हृदय के थे। वेद, यज्ञ एवं महर्षि दयानन्द के आप आजीवन भक्त रहे। आप अधिक से अधिक समय प्रभु भक्ति एवं स्वाध्याय में लगाते थे। इसी का परिणाम प्राणायामपूर्वक स्वेच्छा से शरीर त्यागा।

– राजेन्द्र लाम्बा, मन्त्री

यज्ञप्रेमी, दानवीर, बहुआयामी प्रतिभा के धनी

स्वर्गीय श्री कृष्णलाल सिक्का

– पुरुषोत्तमलाल गुप्त

श्री कृष्णलाल सिक्का का जन्म सन् १९३३ में झंग मधियाना (अब पाकिस्तान) में श्री किराया लाल जी सिक्का के यहां हुआ। आपकी पूज्या माता का नाम श्रीमती पार्वती देवी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा झंग में ही हुई। भारत विभाजन के बाद आप परिवार के साथ दिल्ली आ गए तथा डी०ए०वी० सीनियर सैकेण्डरी स्कूल दरियागंज में शिक्षा ली। तत्पश्चात् बी० कॉम पास करके कुछ वर्ष नौकरी की। नौकरी से सन्तुष्ट न होकर अपने व्यापार कार्य में लग गए। कभी घबराए नहीं और अपनी बहुमुखी प्रतिभा तथा कार्यकुशलता से व्यापार में सफलता प्राप्त की।

सन् १९५८ में आपका शुभ विवाह श्री चमनलाल जी की सुपुत्री कान्ता जी के साथ हुआ। यह परिवार सच्चा वैदिक धर्मी तथा आर्यसमाज के कार्यों में विश्वास रखने बाला था। श्रीमती कान्ता जी सिक्का वैदिक धर्म में आस्था तथा दृढ़ विश्वास रखती थीं। उसका प्रभाव पतिदेव श्री कृष्णलाल सिक्का पर भी पड़ना प्रारम्भ हो गया। श्री कृष्ण लाल सिक्का अब वैदिक धर्म और आर्यसमाज के कार्यों में संलग्न हो गए। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने तथा मूर्धन्य संन्यासियों और विद्वानों के सत्संग से अपने व्यापार के साथ धर्म के कार्यों में और अधिक उत्साह से भाग लेने लगे।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी थे। उनके फार्म में दो तीन दूध देने वाली गाय अवश्य रहती थीं और उनका दूध ही घर में प्रयुक्त होता था।

यज्ञ में बड़ी आस्था थी। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ करके ही प्रातःराश करते थे। घर में यज्ञशाला भी बनवाई हुई थी। उसमें ऋतु के अनुसार उत्तम सामग्री का प्रयोग होता था। जंगपुरा विस्तार से न्यू फ्रैण्ड्स कालोनी में आने के बाद अपनी एच–२ जंगपुरा विस्तार की कोठी को 'यज्ञधाम' का नाम देकर प्रतिदिन यज्ञ, रविवार यज्ञ सत्संग, डिस्पेंसरी, निशुल्क रक्त, यूरिन आदि अनेक प्रकार के टैस्ट होते हैं। धार्मिक गतिविधियां चलती



रहती हैं। वर्ष में ३–४ बार बृहद् यज्ञ भी होते हैं धर्माचार्य की भी व्यवस्था है।

दान देने में सदैव अग्रणी थे। कोई भी सज्जन यज्ञ या यज्ञशाला निर्माण, गरुकुल के बच्चों की पढ़ाई, उत्सव आदि के लिए दान लेने के लिए घर या कार्यालय में आया, कभी खाली हाथ वापस नहीं गया। टी०वी० पर वेदप्रचार, अस्पताल निर्माण, गुरुकुलों के लिए दान तथा बच्चों के लिए विद्यालय खोलने के कार्य में सदैव अग्रणीय रहे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विश्वास रखते थे। इसीलिए श्रीमद्‌दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर जिसके आचार्य श्री हरिदेव जी (स्वामी प्रणवानन्द जी) हैं, में अपना पूर्ण योगदान देकर तथा उससे ३ अन्य गुरुकुलों के कुलपिता के रूप में उत्तरदायित्व संभाले हुए थे।

ग्राम साहसनी जाटान, जिला मुजफ्फरनगर में आर्यसमाज की जगह पर ग्रामवासियों ने कब्जा कर लिया था, क्योंकि उसको कोई संभालने वाला न था। कभी वह आर्यसमाज बहुत प्रसिद्ध थी। वहां पर श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा श्री ओम प्रकाश त्यागी जैसे महान् नेता भी पधार चुके थे। वह स्थान मुकदमा करके वापस तो ले लिया गया, परन्तु उसको बनाने वाला कोई न था। ग्राम वाले कुछ बड़े व्यक्ति श्री सिक्का जी के पास आए, उन्होंने रजिस्ट्री इत्यादि देखकर उस स्थान पर ४० ट्रक मिट्‌टी डलवाकर भूमि को समतल कराकर पहले यज्ञशाला तथा आर्यसमाज के लिए कमरा बनवाकर श्रीमती कान्ता जी सिक्का के नाम से विद्यालय की स्थापना की। पहले विद्यालय को प्राथमिक तक फिर मिडिल तक मान्यता प्राप्त करवा दी। विद्यालय में अध्ययन पब्लिक स्कूल की तरह से है। फीस केवल २०–२५ रुपए ली जाती है। चौथाई बच्चे तो बिना फीस दिए ही पढ़ते हैं। ग्रामवासी उनके इस कार्य से बहुत ही आभार मानते हैं। पीछे वहां आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव हुआ। ट्रैक्टरों पर शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें लगभग ... ट्रैक्टर थे सभी पर ओ३म् ध्वज लहरा रहे थे। श्री सिक्का जी ने धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में भी अत्यधिक कार्य किया है। ... बिरादरी के भी प्रधान रहे। ... वीर हकीकत राय सेवा समिति के प्रधान थे। दक्षिण दिल्ली ... प्रचार सभा के प्रधान थे। उनके महान् कार्यों को देखकर श्रीमद्‌भगवत गीता के १८ अध्याय का एक श्लोक याद ... जाता है – ***यज्ञ दान तपः ... न त्याज्यं कार्यमेव तत्। यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानिमनीषिणाम्॥***

इस प्रकार महान कार्य करते हुए उन्होंने अपनी वृन्दावन यात्रा के दौरान ६ जुलाई, २००६ ... प्राण त्याग दिए। अन्तिम श्वास तक वह शुभ कार्य करते ... जिससे उनको कर्मयोगी भी कहना उचित ही होगा।

थलीसैण चोपड़ाकोट पौड़ी गढ़वाल उत्तरांचल

विशाल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

में २३ से २५ जून, २००६ तक सम्मेलन हुआ, विशाल शोभायात्रा के उपरान्त, यज्ञ के ब्रह्मा पं० वेदवसु शास्त्री थे। ध्वजारोहण स्वामी योगानन्द जी द्वारा हुआ। सम्पूर्ण उत्तरांचल से कई हजार स्त्री पुरुषों ने भाग लेकर और अलग अलग दिवस उपस्थिति देकर तीनों दिन सत्संग का लाभ उठाया और अनेक सामाजिक बुराइंया पशुबलि, जातिपांति भेद, शराब व अन्धविश्वास खत्म करने हेतु उत्तरांचल के अपने अपने क्षेत्र में आर्यसमाजें खोलने की घोषणा की।

इस अवसर पर स्वामी योगानन्द, स्वामी विवेकानन्द, डॉ० रमेशचन्द पोखरियाल पूर्व वित्तमंत्री, श्री गणेश गोदियाल क्षेत्रीय विधायक, श्री धर्मपाल शास्त्री, श्री विनय विद्यालंकार, श्री गबरसिंह राणा पशुबलि निरोधक, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून, श्री सुरेन्द्रलाल आर्य प्रधान गढ़वाल उपप्रतिनिधि सभा, के सन्देशात्मक उपदेश हुए। श्री पं० उम्मेदसिंह विशारद, श्री बच्चीराम आर्य व देशबन्धु जी के भजनोपदेश हुए। इस अवसर पर श्री गंगा प्रसाद सौमय, पंचेताराम आर्य, श्री मोतीलाल, श्री गजेन्द्र सत्यवादी, श्री धनीराम, मनवरसिंह, लालचन्द्र, सुरेशचन्द्र, बलवीर सिंह, वानप्रस्थी छम्मीलाल, ग्राम प्रधान थलीसैण एस०डी०एम० थलीसैण, सैकड़ों महिला कार्यकर्ता तथा अनेकों समाज सेवक, उपस्थित थे। प्रधान सोहनलाल सूबेदार मेजर जी ने बहुत सुन्दर रहने की व भोजन की व्यवस्था की थी, इस कार्यक्रम के आयोजक श्री पं० उम्मेदसिंह विशारद एवं सोहनलाल जी थे और मुख्य संयोजक पं० उम्मेदसिंह विशारद देहरादून जी थे। □

आर्यसमाज नोएडा महिला समाज की मंत्रिणी को मातृ शोक

दुःखद समाचार है कि आर्यसमाज नोएडा महिला समाज की मंत्रिणी श्रीमती ओमवती गुप्ता जी की पूज्या माता श्रीमती सरुपरानी धर्मपत्नी श्री मोतीलाल जी आर्य जिला अलीगढ़ का गत माह स्वर्गवास हो गया। आप बड़ी ही धार्मिक थीं।

हम सभी आर्यसमाज नोएडा की ओर से शोक संतप्त परिवार के लिए हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सदगति प्रदान करें।

राजकोट में विद्यालय का उद्‌घाटन

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग हाथीखाना राजकोट द्वारा संचालित 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यालय' का उद्‌घाटन दिनांक १२/६/०६ सोमवार को सुबह ६.३० बजे बृहत यज्ञ के साथ हुआ। जिसमें यजमानश्री, आचार्यश्री, शिक्षको, बालकों और उनके माता पिता सभी यज्ञोपवीत धारण करके यज्ञ सम्पन्न किया।

यज्ञोपरान्त सभी को पुष्पों एवं अक्षत से आशीर्वाद दिया। परिचय कराया और शिक्षकों ने सभी बच्चों को कुमकुम तिलक किया तथा आचार्यश्री ने सभी को मिठाई अपने हाथों से दिया। शांतिपाठ के बाद सभी बच्चों को अपने अपने कक्षा में सानन्द गए।

श्री मंत्री जी, प्रमुख जी, उपप्रमुख श्री प्रवीण भाई ठाकर, श्री पोपट भाई चौहाण प्रमुख श्री भरत भाई सोनी, मनोहर सिंह परमार, महेश भाई चारोलिया और हरेश भाई अदिया आदि सभी मंत्री श्री रणजीत सिंह परमार भी उपस्थित थे। □

पाठकों के पत्र

आदरणीय श्रीमान जी

सादर नमस्ते।

सच पूछो तो यह गृहअग्नि उसी दिन भड़क गई थी ... पहली बार कै० देवरत्न को सार्वदेशिक सभा का प्रधान चुना ... था। इस क्लेश को विपक्ष वाले तीन वर्ष तक सहते रहे परन्तु ... पुनः दूसरी बार कै० देवरत्न को ऐसी दशा में प्रधान चुना ... जबकि वह अस्पताल में गम्भीर स्थिति में कष्टमय में थे तब ... विरोध अग्नि और तीव्र हो गई। यह सब आपकी उपस्थिति में हुआ ... यदि कै० देवरत्न को पुनः प्रधान न बनाया होता किसी अन्य ... व्यक्ति को चुना जाता तो यह नौबत न आती जो आज हम ... रहे हैं। अच्छा होता यदि कै० देवरत्न स्वयं ही प्रधान पद को ... देते परन्तु पद का चस्का बहुत बुरा होता है।

– देवराज आर्य

धूम्रपान

धूम्रपान+मद्यपान शत्रु है महान।
इनके पीने से परेशान है कुल जहान।

इनको छोड़ो यदि चाहते हो कल्याण।
आपका हर जगह होगा मान सम्मान।

तुम्हें देख कर बच्चे बन रहे हैं शैतान।
बच्चों को बचाओ खुद बनकर के इन्सान
वेद का सन्देश है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य ...

– देवराज आर्य

एलम (मुज्जफरनगर) में वेद प्रचार सप्ताह

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिला मुज्जफरनगर का छोटा सा गांव एलम के आर्यसमाज द्वारा १४ से १६ अगस्त की तिथियों में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल आर्य मुख्य अतिथि होंगे।

अन्य आमन्त्रित विद्वान् हैं – श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, स्वामी चन्द्रदेव, श्री सत्यपाल शास्त्री, श्री श्याम मुनि, बहन मीरा आर्या, श्री राजवीर आर्य आदि।

श्री जगवीर सिंह, (प्रधान), **श्री उमेर सिंह,** (मन्त्री),
ब्र० प्रतिभा, (संयोजिका)

आर्यसमाज दीवानहाल, चांदनी चौक, दिल्ली

६ अगस्त से १६ अगस्त तक श्रावणी सप्ताह, यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० नेत्रपाल शास्त्री। १६ अगस्त को जन्माष्टमी पर्व पर यज्ञ की पूर्णाहुति। भजन श्री गुलाब सिंह राघव तथा प्रवचन श्री धर्मवीर शास्त्री द्वारा।

हनुमान रोड नई दिल्ली में वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज हनुमान् रोड, नई दिल्ली में वेद प्रचार समारोह ६ अगस्त से १६ अगस्त तक समारोहपूर्वक मनाया जा रह है। भजन श्री पं० राजवीर शास्त्री एवं प्रवचन आचार्य सुभाष चन्द्र शास्त्री द्वारा होंगे। १६ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में छात्र–छात्राओं के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है जिसका विषय है – 'वर्तमान युग में श्रीकृष्ण की नीतियों की उपयोगिता'।

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य के प्रकाशन और विक्रय के कार्य में आर्य प्रकाशन की अपनी एक विशेष पहचान है। श्री तिलक राम कोहली जी के विशेष कष्टदायक प्रयासों से लाखों की संख्या में साहित्य दूर–दूर सम्मेलनों आदि में स्टाल लगाकर विक्रय किया गया।

वैदिक साहित्य की अनेकानेक उपलब्ध पुस्तकों का सूची–पत्र मंगाने के लिए सम्पर्क करें :–

– आर्य प्रकाशन, ८१४, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली - ६

स्व० चन्द्रकांता राजेश्वर स्मृति दिवस सम्पन्न





जीवन सघर्ष को प्रेरणा देने वाले, वैदिक (हिन्दू) धर्म के सजग प्रहरी, आर्यसमाज इन्द्रप्रस्थ, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, अन्तर्जातीय विवाह एवं परावर्तन आदि के यशस्वी रत्न स्व० श्री राजेश्वर जी के प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोग देने वाली धर्मनिष्ठा और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति उनकी सहधर्मिणी स्व० श्रीमती चन्द्रकान्ता जी एक वर्ष पूर्व हम सबको छोड़कर परम तत्व में विलीन हो गई थी। उनकी पुण्य तिथि के अवसर पर रविवार ६ अगस्त, २००६ को आर्यसमाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश, पार्ट–१ में उनकी स्मृति में भक्ति संगीत का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम सायं ४.३० बजे [illegible] से प्रारम्भ हुआ। तदन्तर रेडियो, दूरदर्शन गायिकाएं – माधुरी शर्मा, कीर्ति शर्मा और विधि शर्मा प्रभु भक्ति एवं देशभक्ति के प्रति पूर्णतः समर्पित तीनों बहनों ने अपना भक्ति संगीत प्रस्तुत किया। इसके अनन्तर श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर दिल्ली, श्री रामनाथ सहगल, श्री केदारनाथ साहनी, पूर्व राज्यपाल आदि ने श्री राजेश्वर जी एवं स्व० श्रीमती चन्द्रकांता जी को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य भी उपस्थित थे। श्री विद्या [illegible] मिश्रा जी ने सभा का संयोजन किया।

पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक न्याय सभा सर्वाधिकार सम्पन्न

२ जुलाई की अन्तरंग बैठक में श्री मिठाईलाल सिंह जी को सर्वसम्मति से नियमावली के नियम ३२(ग) के अनुसार प्रधान चुन लिया गया। न्याय सभा के नियम संख्या १६ के अन्तर्गत न्याय सभा अपनी किसी भूल या त्रुटि के लिए पुनर्विचार याचिका पर भी सुनवाई कर सकती है।

श्री देवरत्न आर्य ने समस्त परिस्थितियों पर सम्भवतः विचारोपरान्त ही अपने पत्र दिनांक १८–७–२००६ के द्वारा सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी से यह निवेदन किया कि वे न्याय सभा के आदेश दिनांक २६ जून, २००६ को निरस्त करें। इस सम्बन्ध में न्याय सभा के रजिस्ट्रार श्री भगवान दास ने श्री देवरत्न आर्य को सूचित किया कि वे अपने पत्र पर विचारार्थ सुनवाई के लिए ५ अगस्त, २००६ को दोपहर बाद ४ बजे श्री रामफल बंसल जी से उनके दिल्ली उच्च न्यायालय स्थित चैम्बर में मिलें।

परन्तु श्री देवरत्न आर्य ने अपने एक और पत्र दिनांक २६ जुलाई के द्वारा पुनः यह लिख कर अपनी अनुशासनहीनता को पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान को न्याय सभा के प्रधान द्वारा अपने कार्यालय में बुलाया जाना उनका अपमान है।

वे यह भूल गए कि

(१) सार्वदेशिक न्याय सभा का प्रधान साधारण सभा द्वारा १० वर्ष के लिए चुना जाता है।

(२) उसी न्याय सभा के संरक्षण एवं देखरेख में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव अपने साधारण त्रैवार्षिक अधिवेशन सम्पन्न करती रही है।

(३) उसी न्याय सभा ने उन्हें भी दो बार २००१ तथा २००४ में प्रधान पद पर चुनने की प्रक्रिया पूर्ण की थी।

(४) न्याय सभा के निर्णयों को मानना व क्रियान्वित करना सार्वदेशिक सभा के प्रधान व मन्त्री का ही नहीं, समूचे आर्यजगत का कर्त्तव्य है।

इन परिस्थितियों में सुधिजन विचार करें कि श्री देवरत्न आर्य द्वारा अब भी स्वयं को प्रधान लिखकर प्रचारित करना तथा तीसरी सार्वदेशिक सभा का संचालन करना कुछ षड़यन्त्रकारी लोगों के हाथों की कठपुतली बन कर कार्य करने के समान है। कुछ ऐसे ही महानुभावों ने मई २००५ में (लगभग १ वर्ष पूर्व) आचार्य बलदेव जी के मुख से यह प्रेस वक्तव्य भी जारी करवाया था कि अब तीसरी सार्वदेशिक सभा का गठन होगा। आज एक वर्ष की दौड़धूप के बाद इनका यह स्वप्न साकार हुआ परन्तु इससे आर्यसमाज का कितना लाभ, कितनी हानि हुई यह तो स्पष्ट नजर आ रहा है।

इतना ही नहीं श्री प्रकाश आर्य महू (इन्दौर) को मन्त्री घोषित करके उन्हें भी इस अनुशासनहीनता की जलालत में शामिल करके उनके हस्ताक्षरों से एक प्रार्थना–पत्र भी अदालत में प्रस्तुत करवा दिया है। समूचा आर्य जगत जानता है कि किस प्रकार के तनावपूर्ण संघर्ष के बाद १७ अप्रैल से दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश की प्रतीक्षा हो रही है। परन्तु श्री प्रकाश आर्य की यह प्रार्थना कि श्री विमल वधावन के स्थान पर उन्हें मन्त्री मानते हुए सुनवाई की जाए। अब मुकदमें का निर्णय और जल्दी होगा या देर से यह सब इन षड्यन्त्रकारियों को ज्ञात है परन्तु अपने तुच्छ स्वार्थों मन्त्री पद, कुलाधिपति की दौड़ और सम्मेलन के नाम पर करोड़ों रुपये का दान और अनियन्त्रित खर्चे इनके एजेण्डे के उच्च विषय हैं। □

पृष्ठ १ का शेष

जीवन प्रभात गांधीधाम एक अनाथालय नहीं ...

वर्ष २००१ में जब गुजरात की धरती पर भूकम्प रूप में दैविक प्रकोप हुआ तो हमारी दृष्टि उन आत्माओं की ओर गई जो पूर्णतः बेसहारा होकर अपने भविष्य में [illegible]रा ही अन्धेरा महसूस कर रह थे। परिणामस्वरूप जीवन प्रभात गांधीधाम का उदय हुआ। इसी प्रकार वर्ष २००४ में तमिलनाडू की धरती पर सुनामी प्रकोप के बाद वहां भी जीवन प्रभात पांडिचेरी का शुभारम्भ हो चुका है। जीवन प्रभात आज एक नई अवधारणा बनकर सामने आई। आर्यसमाज उन लोगों के लिए जीवन प्रभात का सन्देश है जो स्वयं को अन्धकार में असहाय, निर्बल, बेसहारा या दिशाहीन समझ रहे है।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य ने कहा कि श्री विमल वधावन के साथ सार्वदेशिक सभा में उप–मन्त्री के रूप में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग देने वाले श्री वाचोनिधि आर्य का उनके सेवा कार्यों के लिए हम अभिनन्दन कर रहे हैं।

श्री वाचोनिधि आर्य ने कहा कि हमने जीवन प्रभात सिद्धान्त के तहत बच्चों को अनाथ समझकर अनाथालय का निर्माण नहीं किया अपितु एक भावनाशील सनाथालय को खड़ा करने का सफल प्रयास किया है। आज लोग हमारे कार्यों की ईमानदारी और निष्ठा को देखकर करोड़ों रुपया दान–अनुदान देने में भी संकोच नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमें आर्यसमाज के नाम से ही सदैव कार्य करना चाहिए। कार्य में निष्ठा, लगन और ईमानदारी हो तो सहायता और साथियों की कभी कमी नहीं रहती।



(१) श्री वाचोनिधि आर्य का शाल द्वारा स्वागत करते हुए - श्रीमती राम चमेली, श्रीमती राज पाण्डे, श्रीमती वेद मदान, श्रीमती शशि प्रभा आर्या। (२) श्री धर्मदेव जी तथा अन्य विद्वानों द्वारा स्वागत, साथ में खड़े हैं - आर्यसमाज के प्रधान श्री जगदीश आर्य एवं मन्त्री श्री दयानन्द मदान।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के विभिन्न पदाधिकारियों, कर्मठ सदस्यों एवं स्त्री आर्य समाज की पदाधिकारिणियों ने श्री वाचोनिधि आर्य का अंगवस्त्र, शाल तथा प्रतीक चिन्ह भेंट करके स्वागत किया। स्वागतकर्त्ताओं में प्रमुख थे श्री दयानन्द मदान, श्रीमती राज पाण्डे, श्रीमती राम चमेली, श्रीमती शशि प्रभा आर्या, श्रीमती वेद मदान, श्री सुदर्शन आहूजा, श्री भूमित वर्मा, श्री सदानन्द मदान, श्री देवप्रकाश पाहवा, श्री जगदीश कपूर आदि। □

पोरटल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2003-05
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 13-08-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2003-05 in NDPS on 10/11-08-2006

तथाकथित सन्त रामपाल दास गिरफ्तार

तथाकथित सन्त रामपाल दास पिछले एक वर्ष से भी अधिक समय से समाचार-पत्रों में अपने बड़े-बड़े विज्ञापन देता था। जिन पर वह लाखों रुपया खर्च करता था। इन विज्ञापनों में वह पहले तो वेदों के बारे में अनर्गल बातें लिखता था। वेद मन्त्रों के वास्तविक अर्थों को ताक में रखकर मनमाने अर्थ करता था, जैसा मैंने पहले भी लिखा था कि यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मन्त्र में आए 'कर्विमनीषी' शब्द का अर्थ वह मनीषी कबीर करता था और कबीर को परमात्मा सिद्ध करता था। महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश तथा दूसरे ग्रन्थों में लिखे गए [illegible] को बड़ा तोड़ मरोड़ [illegible] पर कई प्रकार के लांछ[illegible] था परन्तु अब वह और [illegible] दूसरे महापुरुषों के बारे में [illegible] बातें लिखने लग गया था। अपने आपको भी वह परमात्मा से कम नहीं मानता था।

हरियाणा में करौंथा गांव में उसने एक सतलोक नाम का आश्रम बना रखा है जहां से वह अपनी सभी गतिविधियां चलाता है। वह यह सब क्यों करता है, वह क्या चाहता है, इसका तो अभी तक पता नहीं चला। इतना [illegible]र पता चलता है कि वह एक [illegible] बड़ा तथाकथित सन्त बनना [illegible] है इसलिए वह सब अन्य [illegible] की निन्दा करता है।

उसकी इन करतूतों को करौंथा के आस-पास के गांवों के लोग सहन नहीं कर सके और इससे एक संघर्ष हो गया जिसमें दर्जनों नौजवान लडके घायल हो गए और एक सोनू नाम का नौजवान ग्राम बाघपुर का शहीद हो गया। घायल नौजवानों में अधिकतर नौजवान गांव डीघल के हैं।

इस खूनी संघर्ष के बाद ही प्रशासन की नींद खुली। आश्रम की तलाशी ली गई। कई आपत्तिजनक हथियार और सामान मिला, कई दस्तावेज मिले। अनेक मंगलसूत्र व सोना आदि मिला और कई आपत्तिजनक वस्तुएं भी मिली। तथाकथित सन्त तथा अन्य कई उसके साथी जिन्होंने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाइ, गिरफ्तारी किए गए हैं किन्तु कहा जाता है कि प्रशासनिक लोगों ने अभी तक कोई उचित पग नहीं उठाया, जो उन्हें उठाना चाहिए था।

आर्य बन्धुओं ने तथाकथित सन्त रामपाल दास को कई बार समझाने की कोशिश की परन्तु उसने किसी की भी कोई बात नहीं मानी और अपना अनर्गल प्रलाप बन्द नहीं किया। हमारे देश के लोगों में भेडचाल अधिक है। कई लोग यह जानते हुए भी कि सन्त रामपाल दास हैं एक ढोंगी व्यक्ति है फिर भी वह उसके पास जाते हैं।

कहा जाता है कि वह अपनी गद्दी पर बैठकर दूध से अपने पांव धुलवाता है और फिर उस गन्दे दूध को लोगों को चरणामृत कह कर पिलाया जाता है। अन्ध विश्वासी लोग उस गन्दे दूध को ही पी जाते हैं। आज के शिक्षा के युग में व विज्ञान के युग में भी कई लोग अन्धविश्वासी बने हुए हैं। इसलिए कई चालाक और चुस्त तथाकथित सन्त उनके तन का, मन का, धन का शोषण कर रहे हैं। यह जानकर [illegible] बार दुःख होता है कि [illegible] के विज्ञान के युग में भी कई दुराचारी ढोंगी तथाकथित सन्त, पढ़े लिखे लोगों व महिलाओं को भी अपना शिकार बना रहे हैं। आज बहुत से लोग अपनी घरेलू समस्याओं के कारण मानसिक रोगी बन गए हैं और वह उन समस्याओं के समाधान के लिए भटकते-भटकते इस प्रकार के ढोंगियों के जाल में ऐसे फंस जाते हैं कि फिर जीवन भर निकल नहीं पाते।

ऐसे लोगों से जनता को सावधान रहना चाहिए। बुद्धिमत्ता से काम लेना चाहिए। ऐसे तथाकथित सन्तों के पास नहीं जाना चाहिए। यहां जाने पर वह अपना धन तो बर्बाद करते ही लेते हैं साथ ही अपनी इज्जत भी लुटवा बैठते हैं। लकड़ी की हाण्डी बार बार चूल्हे पर नही चढ़ती। वह केवल एक बार ही चढ़ती है और उसी समय जलकर नष्ट हो जाती है, यही स्थिति तथाकथित सन्त रामपाल की हुई।

— धर्मदेव आर्य

वेद प्रचार सप्ताह तथा प्रचार कार्यक्रमों की धूम

सारे विश्व में रक्षा बन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के बीच श्रावणी सप्ताह का आयोजन धूमधाम से आर्यसमाजों द्वारा किया जा रहा है। समस्त आयोजकों से निवेदन है कि अपने कार्यक्रमों में पधारने वाले विद्वान्, संयासियों, प्रचारकों के उद्‌बोधन सारगर्भित रूप से लेखबद्ध करके सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशनार्थ निम्न पते पर भेजें – सार्वदेशिक प्रेस, १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-२

समाचार के साथ कार्यक्रम का कोई भव्य चित्र तथा विद्वानों, संयासियों आदि के चित्र अवश्य भेजें। इन समाचारों को भेजने में आलस्य न करें। आपके कार्य अन्यों के लिए प्रेरणा होंगे।

– विमल वधावन आर्य मन्त्री







प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9811221083) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
वेबसाईट : http://www.sarvadeshik.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक १० | २७ अगस्त से २ सितम्बर, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | भा०प०शु०३

भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक २० अगस्त (रविवार) को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में सम्पन्न हुई जिसमे संगठनात्मक एकता तथा धर्म प्रचार के विभिन्न आयामों पर विभिन्न प्रान्तों से पधारे प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किए। अन्तरंग बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने की तथा संचालन सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने किया।

बैठक में उपस्थित अन्य महानुभाव थे – सर्वश्री सुदर्शन शर्मा (पंजाब), माता प्रेमलता शास्त्री, डॉ० आशारानी राय (उ०प्र०), वेदव्रत शर्मा (दिल्ली), आ० रामानन्द (हिमाचल) सुबोध चन्द्र (तमिलनाडु), शिवनाथ सिंह आर्य (छत्तीसगढ़), स्वामी सुमेधानन्द जी (हिमाचल), वाचोनिधि आर्य (गुजरात), जगदीश आर्य (दिल्ली), प्रेम भारद्वाज (पंजाब), देवराज आर्य (उत्तरांचल), डॉ० तुलसीराम बांगिया (मुम्बई), देवेन्द्र शर्मा (पंजाब), लक्ष्मी चन्द (उ०प्र०), जयनारायण अरुण (उ०प्र०), अरविन्द्र कुमार (उ०प्र०), डॉ० रविकान्त (दिल्ली) आदि। इन अन्तरंग सदस्यों के अतिरिक्त विशेष आमन्त्रित सदस्य सर्वश्री आर्य तपस्वी सुखदेव (पांडिचेरी), भगत मंगतूराम (हरयाणा), हरबंस लाल कोहली (दिल्ली), अनिल शर्मा (मध्य विदर्भ), डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री (पूर्व मन्त्री, सार्वदेशिक सभा), माया प्रकाश त्यागी (उ०प्र०), वैद्य इन्द्रदेव (दिल्ली), कृष्णा शर्मा (दिल्ली), लक्ष्मण यादव (झारखण्ड), कीर्ति शर्मा, नरेन्द्र आर्य, प्रि० चन्द्रदेव, जय किशन, राजीव भाटिया (दिल्ली), अरुण अब्रोल (मुम्बई), आदि भी उपस्थित थे। बैठक में सर्वसम्मति से संगठनात्मक सुदृढ़ता से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए।

विगत अन्तरंग बैठक दिनांक २ जुलाई की कार्यवाही में श्री मिठाई लाल सिंह जी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान संविधान अनुच्छेद ३१ (ग) के तहत अन्तरंग को प्राप्त अधिकार के तहत चुना गया था। विगत बैठक की कार्यवाही को सम्पुष्ट करते हुए यह प्रस्ताव पारित किया गया कि दिल्ली से प्रकाशित 'आर्य सन्देश' में स्वार्थ वश सार्वदेशिक के नाम पर अन्तरंग बैठकों की मनगढन्त सूचनाएं छापी जा रही हैं उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही का अधिकार सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी को दिया गया। शेष पृष्ठ ७ पर



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह तथा कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा का स्वागत करते हुए दाएं से तमिलनाडु के प्रधान श्री सुबोध चन्द, उ०प्र० के प्रधान श्री जयनारायण अरुण, दिल्ली के उपप्रधान श्री हरवंश लाल कोहली, गुजरात के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य, हरयाणा से भगत मंगतूराम, मध्य विदर्भ के मन्त्री श्री अनिल शर्मा, चौ० लक्ष्मीचन्द, छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री शिवनाथ सिंह।

सच्चाई, ईमानदारी और त्याग को ही सच्ची ईश्वर पूजा

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में एलम ग्राम आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण मे तीन दिवसीय श्रावणी पर्व वेद परायण यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। १४, १५, १६ अगस्त को सम्पन्न हुए इस यज्ञ के ब्रह्मा प० हरपाल शास्त्री थे। समस्त कार्यक्रम का संचालन ब्र० प्रतिभा आर्या ने किया।

समापन समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साथ में पांडिचेरी से पधारे श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने मुख्य प्रवचन के द्वारा धर्म प्रेमी जनता में ईश्वरीय सन्देश की स्थापना करने का सुन्दर प्रयास किया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्यसमाज का पूरा इतिहास पवित्रता, ईमानदारी, सदचरित्र, सदव्यवहार, त्याग और तप से भरा पड़ा है। परन्तु आज दुर्भाग्य से इस समाज मे भी नास्तिकवादी संसार के पंछी घुसपैठ कर चुके है और उनके पीछे असंख्य प्रवेश के इच्छुक खडे हैं जबकि त्याग और ईमानदारी की परम्पराओं वाले लोग आर्यसमाज को छोड चुके हैं या छोडने की तैयारी मे हैं। उन्होंने समस्त आर्य जगत की आत्माओं से निवेदन किया कि पदों की लालसा और धन के मोह को इस पवित्र आर्यसमाज से दूर रखें, नही तो निकट भविष्य में आर्यसमाज का सारा चित्र उल्टा दिखाई देने लगेगा। आर्यसमाज को बचाने का एक ही मार्ग है कि प्रत्येक आर्य व्यक्ति सच्चाई, ईमानदारी और त्याग को ही ईश्वर पूजा समझे। शेष पृष्ठ ७ पर

यज्ञोपवीत संस्कार

अधूरी विद्या अपरिपक्व समय पर जन्मे बालक के समान है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम के अन्तर्गत संचालित गुरुकुल रानी बाग के ब्रह्मचारी बच्चों को प्रतिवर्ष यज्ञोपवीत परिवर्तन (धारण) की प्रेरणा रक्षाबन्धन के अवसर पर श्रावणी पर्व के शुभारम्भ के साथ प्रदान की जाती है। पूर्व की भांति इस वर्ष भी दयानन्द सेवाश्रम की मन्त्रीणी माता प्रेमलता शास्त्री जी के आशीर्वाद एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य के मार्ग दर्शन के साथ समस्त ब्रह्मचारियों को यज्ञोपरान्त यज्ञोपवीत प्रदान किया गया। यज्ञ का संचालन आचार्य श्री आनन्द प्रकाश ने करवाया।

श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि वैदिक परम्पराओं के पीछे वैदिक ज्ञान का मार्गदर्शन भी समाहित है। यज्ञोपवीत के तीन पवित्र धागे त्रैतवाद का प्रतीक हैं। ये कई पवित्र सिद्धान्तों का स्मरण कराते हैं। शेष पृष्ठ ७ पर

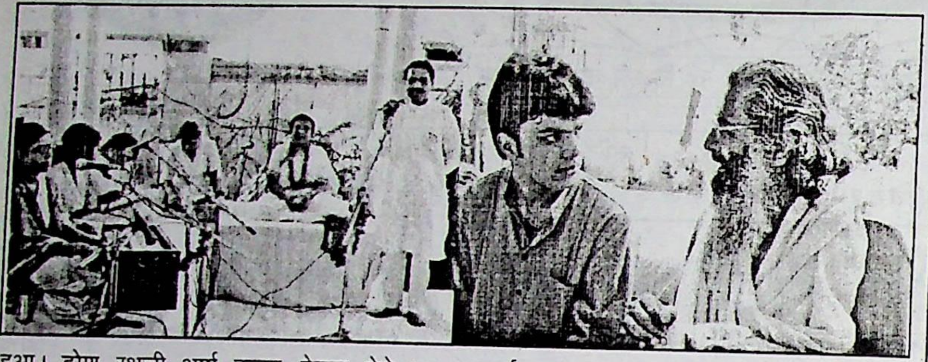
सम्पादक

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

सत्यार्थ प्रकाश जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के मन्त्री माया प्रकाश त्यागी के निज निवास ६/२४२ राजनगर, गाजियाबाद पर १२, १३, १४ अगस्त को सामवेद पारायण यज्ञ आचार्य डॉ० अन्नपूर्णा, देहरादून के ब्रह्मत्व में आयोजित के लिए तथा पुत्र विभोर (जिनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में यह आयोजन हुआ) के बहुमुखी विकास हेतु शुभकामनाएं की गई।

श्री विमल वधावन ने अपने उदबोधन में विभोर को जीवन में केवल सदगुण धारण करने की चिरौड़ी, श्री नरेन्द्र कुमार आर्य हापुड, श्री शान्ति प्रकाश आर्य, श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य, श्री रमेश चन्द्र आर्य, पिलखुवा, श्री विश्व बन्धु आर्य श्रीमती शशि आर्या मोदीनगर, श्री राजकुमार आर्य, श्री नरेश चन्द्र त्यागी, श्री दमोदर



हुआ। द्रोण स्थली आर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून की ब्रह्मचारीणयों ने मन्त्र पाठ किया। आर्य तपस्वी सुखदेव, डॉ० गणेश दत्त शर्मा के प्रवचन बड़े प्रभावी रहे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विमल वधावन आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, प्रो० रतन सिंह एवं डॉ० वेद प्रकाश आर्य, देहरादून ने यज्ञ मण्डप में पहुंचकर आशीर्वाद प्रदान किया। मुख्य यजमान श्री प्रवीण त्यागी व श्रीमती सुमन त्यागी ने ६ घण्टे प्रतिदिन यज्ञवेदी पर बैठकर आहुति प्रदान की तथा तप किया। इनके यशस्वी जीवन प्रेरणा देते हुए सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य प्रेरक साहित्य प्रदान किया। उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश ही आपको जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक होगा।

इस यज्ञ में अनेक दम्पत्ति व परिवारों ने भाग लिया, जिन गणमान्य विशिष्ट अतिथियों ने आशीर्वाद प्रदान किया उनके नाम इस प्रकार हैं – श्री राजपाल त्यागी ग्राम्य विकास मंत्री उ०प्र० सरकार, श्री के०सी० त्यागी पूर्व सांसद, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री जयपाल सिंह आर्य, श्री तेजपाल सिंह आर्य गाजियाबाद, श्री मुन्शी त्रिलोक चन्द श्री राजेन्द्र सिंह आर्य दास आर्य मुरादनगर, श्री सतीश कुमार, श्री रमेश चन्द्र आर्य साहिबाबाद।

श्री सेवाराम त्यागी ने यज्ञ व्यवस्था कुशलतापूर्वक संभाली। आचार्य गुरुवचन शास्त्री व गुरुकुल बरनावा के प्रबन्धक आचार्य जयवीर शास्त्री ने वामदेव – गान प्रस्तुत किया। □

वनवासी वैचारिक क्रान्ति एक महत्वपूर्ण उपलब्धि

दयानन्द सेवाश्रम संघ की सर्वेसर्वा आधारभूत माता प्रेमलता जी के पत्र द्वारा यह जानकर प्रसन्नता हुई कि संघ की ओर से शीघ्र ही एक स्मारिका का प्रकाशन होने जा रहा है। गत चालीस वर्ष से सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में दयानन्द सेवाश्रम संघ वनवासी क्षेत्रों में वनवासियों के धर्म, संस्कृति रक्षा के लिए तत्परतापूर्वक कार्य कर रहा है। इसका कार्यक्षेत्र असम, अरुणाचल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उड़ीसा आदि अनेक प्रान्तों में फैला हुआ है।

देश के कई प्रान्तों में दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से अनेक छात्रावास एवं शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं। इन संस्थाओं में हजारों वनवासी एवं अन्य पिछड़े वर्ग के बालक बालिकाएं अपनी प्राचीन संस्कृति में ढलते हुए जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

इसी प्रकार सैकड़ों बालबाड़ियां भी संघ की प्रेरणा एवं सहयोग पर चली रही हैं। इनमें भी हजारों बालक बालिकाएं अपनी संस्कृति से परिचित हो रही हैं। इसी प्रकार दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से आर्यसमाज रानीबाग में गत पच्चीस वर्ष से मई महीने में १५ दिन की वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर चलता आ रहा है। इस शिविर में भी विभिन्न प्रान्तों के प्रतिवर्ष सैकड़ों युवक युवतियां आकर अपनी प्राचीन संस्कृति का क्रियान्वयन ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। वास्तव में कहा जाए तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यही सार्थक एवं महत्वपूर्ण कार्य है जिसके द्वारा समाज को सीधी प्रेरणा मिल रही है।

शेष पृष्ठ ८ पर

पाठकों के पत्र

श्री मिठाई लाल सिंह जी को बधाई एवं प्रेरणा सन्देश

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका दिनांक ६ जुलाई से १५ जुलाई, २००६ से प्राप्त समाचार सर्वसम्मति से आपका सार्वदेशिक प्रधान चुना जाना आर्य जगत के लिए सुखद समाचार है।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा आप पर बनी रहे। आर्यसमाज, जमालपुर, स्थान भारती आर्य उच्च विद्यालय जमालपुर के अन्तरंग सदस्यों, आर्य सभासदों एवं भारती आर्य उच्च विद्यालय जमालपुर के प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों का हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

भवदीय – **रामचन्द्र प्रसाद यादव**
सचिव, भारती आर्य उच्च विद्यालय, जमालपुर (मुंगेर)

ब्रह्मचारिणी प्रतिभा आर्या



मुझे ही नहीं पूरे क्षेत्रवासियों को साध्वी प्रतिभा आर्या पर गर्व है, जो कई वर्षों से आर्यसमाज एलम (मु०नगर) को एक नई दिशा दे रही हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचयरिणी की दीक्षा लेकर यह दिव्य आत्मा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में तन–मन–धन से जुटी हुई है। स्कूलों/कालेजों में जाकर भी या एवं प्रवचन करती हैं और बच्चों में सुसंस्कारों की प्रेरणा देती हैं तथा लेखन के माध्यम से भी ऋषि देव दयानन्द की ज्योति को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही हैं। इनका पूरा जीवन आर्यसमाज के प्रति पूर्णतया समर्पित है। ऐसी दिव्य आत्माओं से समस्त आर्य भाई-बहनों को शुभ प्रेरणाएं प्राप्त करनी चाहिएं।

– उमेश सिंह (भगत जी)
आर्यसमाज, एलम (मु०नगर) उ०प्र०

देशवासी भारत के स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा लेकर राष्ट्रोत्थान में सहभागी बने - कपिल सिब्बल

आर्य समाज (देहली) दीवान हाल चांदनी चौक दिल्ली में देश के स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हैदराबाद मुंक्ति



आन्दोलन का विजय दिवस और उसमें भाग लेने वाले सत्याग्रहियों का रविवार दिनांक १३ अगस्त २००६ को सम्मान समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह सत्याग्रह आर्यसमाज द्वारा संचालित किया गया था, पूर्ण रूप से धर्मनिरपेक्ष था।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री कपिल सिब्बल (केन्द्रीय मन्त्री, साइंस तथा टैक्नोलॉजी, भारत सरकार) ने अपने उदबोधन में कहा कि आर्यसमाज का भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देशवासियों को इन स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा लेनी चाहिए जिन्होंने निस्स्वार्थ भाव से देश सेवा की और अपना तन, मन और धन देश के अर्पण कर दिया। हमें यह विचार करना चाहिए कि शासक बदलने से ही स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती अपितु वास्तविक स्वतन्त्रता तभी मिलेगी जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति कर सकेगा। आर्यसमाज को इसके लिए सक्रिय प्रयास करना होगा।

इस अवसर पर आर्यसमाज दीवान हाल के मंत्री डॉ० रविकांत ने कहा कि आर्यसमाज सदैव राष्ट्रहित के कार्यों में सजग रहा है। हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन पूर्ण रूप से धर्मनिरपेक्ष आंदोलन था जिसमें आर्य समाजियों के अतिरिक्त अन्य धर्मों के व्यक्तियों ने भी भाग लिया था। इनमें सिख तथा मुस्लिम भाई भी थे। यह सत्याग्रह समग्र राष्ट्र के लिए था। अनेक लोग इसमें शहीद हुए। अन्त में सत्य की विजय हुई तथा हैदराबाद रियासत के तत्कालीन निजाम ने आर्यसमाज की समस्त मांगों को ८ अगस्त १९३९ में स्वीकार कर लिया।

इस अवसर पर उपस्थित स्वतन्त्रता सेनानियों का आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से स्वागत किया गया तथा शहीदों को २ मिनट का मौन रखकर वेद मन्त्रों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई।

इस समारोह में दिल्ली के वरिष्ठ आर्य नेतागण महाशय रामविलास खुराना, प्रि० चंद्रदेव, वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिंह, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री आदित्य आर्य श्री रोशन लाल गुप्ता, चौ० लक्ष्मी चन्द, विभिन्न विद्यालयों से प्रि० वीना अनेजा, प्रि० वीना टंडन, प्रि० सेनल मेहरा तथा अनेक आर्यसमाजों के सदस्य व अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

– **(मेजर) डॉ० रविकान्त**
मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

आर्यसमाज का सतत पतनशील नेतृत्व : तथाकथित नए नेतृत्व से कुछ सवाल

गतांक से आगे

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज और कम्यूनिज्म

ये दो ऐसे ध्रुव हैं जिनमें समन्वय की तलाश करना बेकार है। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित साम्यवाद परमात्मा और जीवात्मा की चेतन सत्ता को समग्रतः नकारता है तथा एक मात्र जड़ तत्व को ही स्वीकारता है। इस मत में सामाजिक विकास को संघर्ष तथा टकराहट की सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यहा साधनों की पवित्रता को कोई महत्व नहीं दिया जाता। हिंसा का सहारा लेकर कथित शोषक वर्ग का विनाश तथा येन केन प्रकारेण शोषित वर्ग (सर्वहारा) की तानाशाही को स्थापित करना साम्यवाद का लक्ष्य है। हिंसापूर्ण बदलाव इन्हें अभीष्ट है। साम्यवादी लोग इतिहास की भौतिकवादी व्यवस्था करते हैं तथा विगत में घटी घटनाओं को Thesis, Anti Thesis तथा Synthesis के दौर से गुजरा बताते हैं। पारिवारिक तथा सामाजिक नैतिक मूल्यों का यह कोई विशेष महत्व नहीं है। विरोधी तथा प्रतिद्वन्द्वी का षड्यन्त्रपूर्वक उन्मूल यहां स्वीकार्य है। लेनिन, स्तालिन, खुश्चोव, माओ आदि के कारनामे प्रत्यक्ष गवाही देते हैं। इनकी खूंरेनी की कथाएं प्रसिद्ध हैं।

जहां तक वैदिक समाजवाद की बात है तथा कम्यूनिज्म के प्रति आर्यसमाज के दृष्टिकोण का सवाल है, म० नारायण स्वामी रचित वैदिक समाजवाद तथा पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के ग्रन्थ कम्यूनिज्म में की गई इसकी विवेचना हमें स्वीकार्य होनी चाहिए। हमारे मित्र डॉ० सुरेन्द्र सिंह कादियाण ने वर्तमान नेतृत्व पर कम्यूनिस्ट होने के आरोप के उत्तर में हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के एक विगत चुनाव में स्वामी रामेश्वरानन्द की भूमिका तथा पं० जगददेव सिंह सिद्धान्ती के कुछ लेखों की चर्चा की है, वह सब तो इतिहास की बात हैं। आज तो कतिपय उत्साही लेखक तथा विचारक स्वामी दयानन्द और कार्लमार्क्स की तुलनात्मक समीक्षा में कलम चला रहे हैं तथा वेदों एवं साम्यवाद के सिद्धान्तों में समानता की तलाश कर रहे हैं। इसे बौद्धिक व्यायाम ही समझना चाहिए। अन्यथा वर्तमान में भारत के साम्यवादी नेता जिस प्रकार आर्य (हिन्दू) आदर्शों का मखौल उड़ा रहे हैं, बड़ी बेशर्मी के साथ भारत की प्राचीन विरासत नैतिक मूल्यों तथा आर्यो के इतिहास और संस्कृति का उपहास करने के साथ साथ आर्य संस्कृति के विद्वेषी सैमेटिक मजहबों की दुर्नीतियों का अन्ध समर्थन कर रहे हैं, वह निश्चय ही निन्दास्पद है। इन कम्युनिस्टों के लिए अर्जुनसिंह द्वारा आर्य इतिहास को विकृत करना मु० फिदा हुसैन द्वारा हिन्दू देवियों के अश्लील चित्र बनाना, कोटा के पादरी द्वारा हिन्दू धर्म की निंदा में लिखी पुस्तक 'हकीकत' का प्रकाशन, यह सब तो ज्ञातव्य है, भुला देने के काबिल है जब कि पादरियों के काले कारनामें तथा मत परिवर्तन के लिए किए जाने वाले उनके षड़यन्त्र उपेक्षणीय हैं। क्या ये तथाकथित नेता कभी हरकिशन सुरजीत, ए०बी० वर्धन तथा वृन्दा करात को भी आर्यसमाज को लेकर सन्तुष्ट (convince) करने का साहस कर सकते हैं ? कम्युनिज्म आर्य सिद्धान्तों का धुर विरोधी है।

साम्यवाद से प्रभावित हमारे इन नवीन नेताओं ने अपने आकाओं से और कुछ सीखा या नहीं, कठोर, कर्कश, हिंसापूर्ण शब्दावली का प्रयोग अवश्य सीख लिया। तभी तो जब यदा कदा आर्यसमाज के मंचों से पूंजीपतियों और शोषकों को मारो, काटो, फांसी पर लटका दो, पेड़ों पर बांध कर जूतों से पीटो जैसे शब्द सुनते हैं तो पूछने का मन होता है कि क्या नारायण स्वामी, आनन्द स्वामी, गंगा प्रसाद उपाध्याय और रामचन्द्र देहलवी भी ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करते थे? क्या उनके शब्दकोश में दलितों, शोषितों और पीड़ितों के लिए क्या इनसे भिन्न शब्द नहीं थे ?

कांग्रेस और आर्यसमाज

मेरा स्पष्ट मत है कि जिस प्रकार आर्यसमाज और कम्यूनिज्म का आंकड़ा नहीं बैठता और धर्म, संस्कृति, भाषा विरोधी साम्यवादियों को आर्यसमाज के निकट लाना सम्भव नही हैं उसी प्रकार कांग्रेस और आर्यसमाज का समीकरण भी बनने वाला नहीं है। यह सच है कि आजादी के पहले के समय में हजारों आर्यसमाजियों ने कांग्रेस और गांधीजी के नेतृत्व में' बड़ी बड़ी कुर्बानियां दीं तथापि उन्हें उचित सम्मान और आदर नहीं मिला। स्वामी श्रद्धानन्द को कांग्रेस के अछूतोद्धार प्रकोष्ठ का अधिष्ठाता बनाया तो उन्हें बजट में स्वीकृत धन राशि नहीं दी गई। उनके द्वारा प्रवत्तित शुद्धि के आन्दोलन की मूल भावना को समझना तो दूर उन्हें इसके लिए तिरस्कृत, अपमानित और प्रताड़ित किया गया। शहीद हो जाने पर भी गांधीजी ने उनके हत्यारे को तो 'भाई' बताया किन्तु स्वामीजी के पुत्र पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति को संवेदना का एक कार्ड तक नहीं भेजा। लाला लाजपत राय तथा भाई परमानन्द जैसे देश भक्त कांग्रेस की मुस्लिमतोषिणी नीति से असंतुष्ट रहे।

आजादी के उपरान्त श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, चौधरी चरणसिंह, पं० नरदेव शास्त्री, पं० नरेन्द्र, पं० विनायकराव विद्यालंकार आदि ने कांग्रेस में कार्य किया किन्तु नेहरू जी के चाटुकारों ने उन्हें कभी सम्मान नहीं दिया। सच तो यह है कि गांधीवादी, नेहरूवादी, इन्दिरा वादी तथा सोनियावादी कांग्रेस में आर्यसमाज को गौरव सम्मान मिलना आकाश कुसुमवते है। न जाने हमारे मित्रों ने सोनिया जी में कौन से भारतीय मूल्यों को पहचाना कि उन्हें अध्यात्म जागरण मंच पर संदेश देने के लिए आहूत किया। जो भारतीय–वैदिक अध्यात्म का क, ख भी नहीं जाने उनसे अध्यात्म जागरण की आशा करना दुराशा मात्र है। यह दूसरी बात है कि उनका सम्पर्क साधकर दयानन्द भवन पर कब्जा तो किया जा सकता है। हमें यह स्पष्ट समझना होगा कि गांधी, नेहरूवादी कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति कभी खत्म होने वाली नहीं है, इसलिए साम्प्रदायिकता पर साफ और बेबाक नजरिया रखने वाले आर्यसमाज से उसका तालमेल होना भी सम्भव नहीं है। सोनिया जी तथा उनके चाटुकार मणिशंकर अय्यर की यदि कोई उपलब्धि है तो यही कि अण्डमान की सेलुलर जेल से सावरकर की प्रशस्ति पट्टिका को हटवाना तथा संसद में लगाए गए उनके चित्र का अनादर करना। गांधीजी ने स्वामी दयानन्द को असहिष्णु बताया, सत्यार्थ प्रकाश को निराशाजनक पुस्तक कहा, तथा हैदराबाद में किए गए आर्यसमाज के सत्याग्रह को असामाजिक, अनावश्यक तथा निजाम को तंग करने वा बताया। यह सिद्ध बात है कि गांधी–नेहरू–सोनियावादी कांग्रेस से आर्यसमाज कभी सदाशयता की आशा नहीं कर सकती। आज भी कांग्रेस में अर्जुन सिंह जैसे हिन्दू विरोधी तत्व मौजूद हैं जिन्होंने पाठ्य पुस्तकों में वेदों में गोमांस भक्षण के अनर्थपूर्ण वाक्य रखे हैं तथा उन्हें हटाने के आग्रह को बेशर्मी के साथ ठुकरा दिया है।

(क्रमशः)

धूल दुर्व्यसनों की झाड़ो तो सही बात बनें।

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

धूल दुर्व्यसनों की झाड़ो तो सही बात बनें।
अविद्या दूर लताडो तो सही बात बनें।।
वृक्ष पाखण्ड का दिन दिन पनपता जा रहा।
मूल से इसको उखाड़ो तो सही बात बनें।
अविद्या दूर लताड़ो तो सही बात बनें।।१।।

हर कोई बैठा है यहां भगवान बन कर।
करतूतें इनकी उखाड़ो तो सही बात बनें।
अविद्या दूर लताड़ो तो सही बात बनें।।२।।

यहां बरसाती मेंढ़क जोर से चिल्ला रहे हैं।
शेर सम तुम दहाड़ो तो सही बात बनें।
अविद्या दूर लताड़ो तो सही बात बनें।।३।।

अकड़कर घूमते हैं वेद और देशद्रोही।
पजामा इनका फाड़ो तो सही बात बनें।
अविद्या दूर लताड़ो तो सही बात बनें।।४।।

कुनबा वैदिक धर्मियों का बारहबाट हो रहा है।
संगठन को न बिगाड़ो तों सही बात बनें।
अविद्या दूर लताड़ो तो सही बात बनें।।५।।

मत मतान्तरों के झंड़े यहां लहरा रहे हैं।
पताका ओम को गाठो तो सही बात बनें।।
अविद्या दूर लताड़ो तो सही बात बनें।।६।।

– हनुमान रोड, नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द की सोच विलक्षण : -

सबको शत प्रतिशत आरक्षण

– देव नारायण भारद्वाज

आपने उस वृद्धा की बात सुनी होगी, जो कठिनाई से अनाज पीसकर अपनी झोंपडी में गुजारा करती थी। कुछ रुपये जोड़जाड़ कर उसने जनम करम में एक अंगूठी बनवायी थी, किन्तु कोई उसे देखकर सराहना ही नहीं करता था। आखिर एक दिन उसने अपनी झोपडी में आग लगा दी और चिल्लाने लगी। ग्रामवासी स्त्री पुरुष आग बुझाने को दौड पड़े। तब वृद्धा अंगूठी वाली अंगुली को निकालकर संकेत करती – इधर बुझाओ – ऊधर बुझाओ। तभी एक व्यक्ति बोल पड़ा – माता जी ! अंगूठी तो बहुत अच्छी है – कब बनवायी। बुढ़िया बोली 'अंगूठी पहले ही देख लेते तो झोपड़ी में आग ही क्यों लगती।' इससे भी अधिक मर्मान्तक स्थिति अपने राष्ट्र की है, जहां सत्तासुख, वैभव-हरण व प्रदर्शन के लिए लोलुप राजनेता राष्ट्र में आग लगाने से नही चूकते हैं। आज आरक्षण के नाम पर यह आग सम्पूर्ण राष्ट्र में बडवानल की भांति फैली हुई है। आज के राजनेताओं के चरित्र का चित्रण यदि आपको करना हो तो दूर जाने की आवश्यकता नहीं, उस साधारण आरक्षी को देख लीलिए, जो चौराहे पर खड़े होकर निकलने वाले वाहनों से पैसा वसूलता है। जब भूसे की ट्राली वाला किसान उसे पैसा देने से मना करके आगे बढ़ जाता है, तो पीछे से एक जलती हुई तीली भुस पर फेंक कर वह आरक्षी अपने पैसे की आग को शान्त कर लेता है।

प्रजातन्त्र में सत्ता के उच्चासन पर पहुंचने के लिए बहुसंख्य प्रजा के समर्थन की आवश्यकता है। इसलिए आरक्षण का प्रलोभन देकर राजनेता अपने दल को सबल व अपनी सत्ता को प्रबल बनाए रखना चाहते हैं। खाली हाथ सत्ता के आसन पर जाने वाला व्यक्ति कुछ ही वर्ष में भर भर वासन स्वर्ण बटोरने लगता है। डॉ० गोपाल बाबू शर्मा ने ठीक ही लिखा है – 'कल तक जिनके पास थी, एक न टूटी खाट, वे नेता बन भोगते आज राजसी ठाट। गैंडों से मोटी अधिक नेताओं की खाल, खुद खुशहाल निहाल हो, देश बने कंगाल।'

भारत स्वतन्त्र होने पर सजग संविधान निर्माताओं ने राष्ट्र के सभी नागरिकों को समानता का अधिकार तो दिया, किन्तु आरक्षण के नाम पर जातीय विभाजन को भी मान्यता प्रदान कर दी। उन्होंने तो यह प्रावधान सीमित काल के लिए किया था, किन्तु आज वे इसकी अवधि को निरन्तर बढ़ाते रहने में ही अपनी भलाई समझते हैं। आर्यसमाज के प्रभाव में जाति पांति का वर्गभेद समाप्तप्राय था, वह फिर से दहाड़ने लगा। विडम्बना यह कि ब्रिटिश काल में सभी चाहते थे कि उनकी जाति को श्रेष्ठ माना जाए, लेकिन आज के स्वतन्त्र युग में मण्डल आयोग को उच्च जातियों की ओर से सैकड़ों आवेदन इस बात के लिए भेजे गए कि उनकी जाति को पिछड़ी जाति में गिना जाए।

आरक्षण की स्थिति कुछ वैसी ही है जैसी उस मूर्छित व्यक्ति की होती है जो समीप बैठे हुए व्यक्ति की बाहों में लुढ़क जाता है और मूर्छा हटने पर बाहों के सुख सहारे को छोडना नहीं चाहता है। भारत में आजकल भोगवादी पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण के फलस्वरूप आवश्यकताए सुरसा के मुख की भांति फैलती जा रही हैं। दूरदर्शन श्रृंखलाओं में दुर्व्यसन–वासनाओं के दृश्यों की भरमार है। 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि', के अनुसार हिसांचार, हत्याचार, अत्याचार, अनाचार और बलात्कार की अति हो रही है। रक्षक भक्षक बन रहे हैं। घर परिवार, गली बाजार, विद्यालय, न्यायालय, चिकित्सालय यहां तक कि अनाथालय – सभी कलंकित हो रहे हैं। अधिकारों व राजनेता इन दुष्कर्मों के सूत्रधार सिद्ध होते हैं। निराकरण के लिए आयोग दर आयोग गठित होते हैं। पर परिणाम वही ढाक के तीन पात। प्रायः विपरीत होता है। नदी पार जाने के लिए विशेषज्ञ ने विभिन्न गहराइयों को नापकर एक औसत निकाला और आबाल वृद्ध सभी को पार जाने की अनुमति दे दी। तभी यह लोगोक्ति बन गयी 'औसत ज्यों का त्यों कुनवा डूबा क्यों।' राष्ट्र की सभी समस्याओं का अब एक ही समाधान बचता है, जो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय व तृतीय समुल्लास में बताया है।

'माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
सभा मध्ये न शोभन्ते हंस मध्ये वको यथा।।'

महामात्य चाणक्य के श्लोकानुसार महर्षि ने कहा है – 'वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण शत्रु हैं जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला। उन्होंने आगे कहा है – विद्या पढने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोश एक दूसरे से दूर होना चाहिए। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा नोकर चाकर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और लड़कों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें, तब तक स्त्री व पुरुष का दर्शन, रूपदर्शन, एकान्तसेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग – इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहे, और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें, जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील स्वभाव, शरीर और आत्मा के बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढा सकें।

महर्षि के उपरोक्त कथन में चरित्र निर्माण का रहस्य निहित है जबकि अग्रिम पंक्तियों में आरक्षण की समस्या का सर्वथा समाधान विहित है। 'पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश दूर ग्राम व नगर रहें। सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिए जाएं, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिए। **कन्यायां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्'** (मनुस्मृति) इसका अभिप्राय यह है कि इसमें राजनियम और जाति-नियम होना चाहिए कि पांचवे अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के, लड़कियों को घर में न रख के पाठशाला में अवश्य भेज देवे। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो। हमारे राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने उस अध्यापक की बात को बहुत महत्व दिया है, जिसने कहा है 'मुझे पांच वर्ष का बच्चा दो। सात वर्ष बाद कोई भगवान् या शैतान भी उस बच्चे को बदल नहीं सकता है। विज्ञान रत्न श्री लक्ष्मण प्रसाद के सम्पादकत्व में प्रकाशित ग्रन्थ 'कर्मयोगी कलाम' (२००६) में आगरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० शान्ति स्वरूप गुप्ता ने 'राष्ट्रपति के कुछ सूत्रों पर आधारित ग्रामीण विकास का एक माडल' शीर्षक लेख में प्रारम्भिक शिक्षा महात्मा गान्धी तथा डॉ० जाकिर हुसेन के विचारों तथा अन्य महान् विचारकों के सुन्दर सम्मिश्रण के आधार पर दी जाएगी। इसमें, नैतिक शिक्षा, शरीर को स्वस्थ रखने की शिक्षा, अनुशासन की शिक्षा, देशभक्ति तथा समाज सेवा की शिक्षा आदि पर बल दिया जाना चाहिए।'

केन्द्रीय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डॉ० दौलत सिंह कोठारी के मत में विद्यालय पाठ्यक्रम का एक गम्भीर दोष है – सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा का अभाव। स्वतन्त्र भारत के पहले शिक्षा मन्त्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने स्कूल कालेजों के पाठ्यक्रम के इस दोष को दूर करने के लिए धार्मिक शिक्षा की अनिवार्यता पर बल देते हुए, उसकी व्यवस्था करने का आदेश दिया था, जो तत्कालीन सचिव प्रो० हुमायुं कबीर के हस्ताक्षरों से प्रथम अक्तूबर १९५५ को शिक्षण संस्थाओं को भेजा गया था। अभी पचास वर्ष बाद २५ मई, २००६ को देश भर से पधारे शिक्षकों की व्याख्यानमाला प्रख्यात राष्ट्रनेत्री सांसद मोहसिना किदवई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें प्रसिद्ध विशेषज्ञ प्राध्यापकों ने पण्डित जवाहरलाल नेहरु, डॉ० राधाकृष्णन और डॉ० जाकिर हुसैन के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि जब तक चरित्र निर्माण पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक कोई राष्ट्र सभ्य नहीं बन सकता है।

तबका शिक्षा मन्त्रालय अब मानव–संसाधन विकास मन्त्रालय है। जैसे इसके नाम में शिक्षा नहीं वैसा ही इसका काम है। धर्म संस्कृति इतिहास की विसंगतियों से पूर्ण पाठ्यक्रम राष्ट्रव्यापी आक्रोश के कारण तो पहले ही बने हुए हैं। अब सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों के अतिरिक्त उच्च शिक्षा में आरक्षण ने राष्ट्र में भयंकर उत्पात खड़ा कर दिया है। प्रारम्भिक पंक्तियों में जिस वृद्धा द्वारा आग लगाने की बात कही गयी है। आग बुझाने के लिए भी वही आगे आई थी। लगाई गई आग यदि बुझाई नहीं जाती है तो वह लगाने वाले को भी जलाकर राख कर देती है। इधर प्रजा–पथ से राष्ट्रपति भवन तक आरक्षण विरोधी दौड़ लगा रहे हैं। उधर आरक्षण समर्थकों को धरना प्रदर्शन आन्दोलन के लिए भड़काया जा रहा है। इनका एक नारा दृष्टव्य है। 'पहले धन धरती बांटो फिर आरक्षण काटो।' एक बार एक अंग्रेज सहपाठी नें अरविन्द से कहा 'आप अपने देश भारत को आधुनिक बना डालने वाले, तरह तरह की सुविधा मुहैया कराने वाले अंग्रेज शासकों के विरोध में क्यों हो गए हैं ? क्यों विप्लकारियों के चक्कर में पड़ते हैं ? अरविन्द ने उत्तर दिया 'विदेशों में देश को जमीन, मैदान, पहाड़, नदी, जंगल माना जाता होगा। हम भारतवासी देश को मात्र भौतिक वस्तु न मानकर इसे 'मां' के समान मानते हैं। इसलिए भारतमाता की जय का नारा लगाते हैं। पहले भी उन्होंने ही इसे बांटने का षड्यन्त्र रचा था, जिन्होंने इसे माता नहीं समझा था। **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या'** (अथर्ववेद) यह भूमि मेरी माता है – मैं इस धरती का पुत्र हूं। के अनुसार कोई पुत्र अपनी माता को काटने–बांटने की बात भला कैसे कर सकता है। पर 'भूखे भजन न होय गोपाला। यह लो अपनी कण्ठी माला। लोकोक्ति को ध्यान में रखते हुए एक सर्वमान्य सन्तुलन बनाने की अपरिहार्यता को महर्षि दयानन्द ने समझा था और इसीलिए अपने सदसूत्र में नगर–ग्राम के हर बच्चे को समतुल्य शिक्षा–साधन प्रदान कर बड़े होकर देशभक्त नागरिक के रूप में क्षमतानुसार देश सेवा से स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करने की बात कही थी।

निष्पक्ष नैसर्गिक न्यायपूर्वक राष्ट्र का कोई भी विशेषज्ञ निर्णय करेगा, तो महर्षि दयानन्द का सूत्र उसका मार्गदर्शन अवश्य करेगा, जैसा कि राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के उपाध्यक्ष व जाने माने वैज्ञानिक डॉ० पी०एम० भार्गव ने सरकार को सुझाव दिया है कि अगले १०–१५ वर्ष में आरक्षण को ५० फीसदी से घटाकर शून्य कर दिया जाए। इसके लिए उन्होंने प्रधानमन्त्री को एक फार्मूला भी पत्र लिखकर सुझाया है। डॉ० भार्गव के अनुसार सरकार के द्वारा ऐसे चार लाख विद्यालय खोले जाये जो केन्द्रीय विद्यालयों व पब्लिक स्कूलों की गुणवत्ता व मानको के अनरूप हों और देश के हर बच्चे को दसवीं तक उत्तम शिक्षा प्राप्त हो, और वह उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु स्वतः सक्षम बन जाए, तथा आरक्षण की आवश्यकता ही न रहे। पत्तों-पत्तों पर पिचकारी से जल छोड़ने पर वृक्ष हरे नहीं होते हैं। जड़ सिंचन से ही उद्यान हरा भरा होता है। महर्षि दयानन्द के इस शत प्रतिशत बाल शिक्षा आरक्षण अभियान से आमूल चूल राष्ट्र उद्यान के प्रमुदित वे प्रफुल्लित होने का पथ प्रशस्त होता है।

– 'वरेण्यम' अवन्तिका प्रथम
रामघाट मार्ग
अलीगढ़, उ०प्र०

शुद्धि समाचार

दिनांक ८ अगस्त २००६ को श्री म. सुबोधचन्द्र आर्य प्रधान तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधि सभा के पौरोहित्य में एस० महमूद सिद्धिकी को शुद्धि किया। उसका नाम बदलकर मोहन रखा गया। फिर उस मोहन का विवाह कु० रेवती से वैदिक पद्धति के अनुसार आर्यसमाज मदुरै में हुआ।

Md. Sidiq s/o N. Shajahan r/o Nidingari Sathamangalam p.o. Kullathoor Tq. Puddkttai dist 622001

लड़की के माता पिता दोनों विवाह में शामिल हुए और कन्यादान भी किया। कु० रेवती भी उसी गांव की है।

श्रावणी पर्व मदुरै में

तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्रावणी उपाकर्म आर्यसमाज मदुरै में हुआ। इसमे सभी आर्यसमाज के सदस्यों ने भाग लिया। आर्यसमाज नेलैथूर, अवणियापुरम, आदिपट्टी डिंडिगल, कुंभकोणम आदि।

श्री म०सुबोधचन्द्र आर्य प्रधान तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधिसभा के तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। श्री एम०एस० रामूर्ती मंत्री आर्यसमाज मदुरै के पौरोहित्य में उपाकर्म का यज्ञ हुआ। बाद में सभा प्रधान उपाकर्म और वेदों की महानता और आर्यो का मुख्य काम वेदों का प्रचार करना इस पर उन्होंने प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में लगभग २०० लोगों ने भाग लिया। दस नई महिलाओं और पांच पुरुषों ने यज्ञोपवीत धारण किया।

५० व्यक्तियों की शुद्धि

तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री म० सुबोधचन्द्र आर्य के तत्वावधान में १० परिवार के ५० लोगों की शुद्धि हुई।

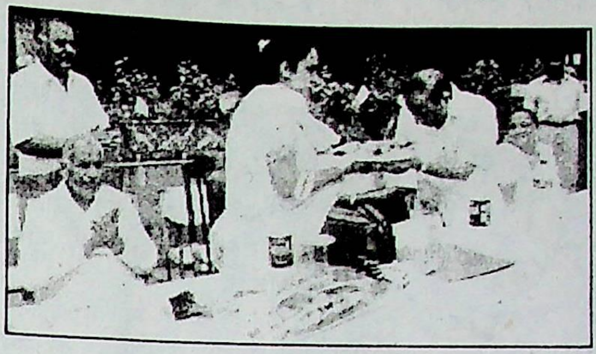
१३ अगस्त २००६ प्रातः ६ बजे पेरुमाल कोईल, कोडैकेनाल, डिंडिगल जिले के आदिवासी की शुद्धि उस गांव के मुखिया की सहायता से उसी गांव में मुरुगन कोईल (मुरुगन मंडिरम्) श्री एस० रामूर्ती जी मंत्री आर्य समाज के पौरोहित्य में यज्ञ और शुद्धि का कार्य सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री सुबोध जी ने सभी लोगों को यज्ञोपवीत दिया और उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। सुबोध जी ने अपने भाषण में देश भर में जो षडयन्त्र चल रहे हैं और भारतीय संस्कृति को मिटाने का षड्यन्त्र चल रहा है। उस पर भी प्रकाश डाला और वेद धर्म की महत्ता पर भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी लोगों के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अल्पाहार की व्यवस्था की गयी।

उस मन्दिर के चारों तरफ ईसाइयों के स्कूल और चर्च थे और दो पादरी अपने ही चर्चो से इस कार्यक्रम को देख रहे थे।

इस कार्यक्रम में आर्यसमाज मदुरै के सदस्य श्री जयराम जी, राजेन्द्र आर्य तथा श्रीमती कनर्का आदि उपस्थित थे।

आर्य अनाथालय में स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

१४ अगस्त। आर्य अनाथालय पटौदी हाउस के दो परिसरों में निवास कर रहे १५०० से अधिक



बालक बालिकाओं ने स्वतन्त्रता की ५६वीं वर्षगांठ पर परिश्रम और प्रतिभा से भारत को विश्व के अग्रणी राष्ट्रों की पंक्ति में पहुंचाने का संकल्प लिया।

दिल्ली की उप–महापौर डॉ० अनीता बब्बर ने पटौदी हाउस में और नगर निगम में सदन के नेता जितेन्द्र कोचर ने देसराज परिसर में गणमान्य जनों की विशाल उपस्थिति में राष्ट्रध्वज फहराया। उन्होंने संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण में आर्य अनाथालय के योगदान की सराहना की।

नई पीढ़ी को देश का भाग्य विधाता बताते हुए उप महापौर ने कहा कि यही बच्चे आने वाले भारत का निर्माण करेंगे। उन्होंने कहा, मुझे इस बात की खुशी है कि आर्य अनाथालय के अन्तर्गत संचालित रानी दत्ता आर्य विद्यालय और चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर में निराश्रित बच्चों को उत्तम शिक्षा के साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है, जिससे वे देश की प्रगति में योगदान कर सकें।

संस्थाकुल के प्रधान पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी ने कहा कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित और देसराज चौधरी जी द्वारा पोषित इस संस्था ने अपने अस्तित्व के ८८ वर्षों में बड़ी संख्या परिवारों को गरीबी रेखा से उबारने में मदद की है।

नगर निगम में सदन के नेता जितेन्द्र कोचर ने देसराज परिसर में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि नई पीढ़ी को संस्कारवान और प्रतिभा सम्पन्न बनाना देश की सर्वोपरि सेवा है।

बच्चों के देशभक्तिपूर्ण तराने ने स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों की याद ताजा कर दी।

रानी दत्ता आर्य विद्यालय के प्रधान ज्ञानेश चौधरी, मैनेजर अचल चौधरी, आर्य कन्या सदन की मंत्री श्रीबाला चौधरी, प्राचार्य विद्यालय गजेन्द्र प्रसाद शर्मा, आर्य अनाथालय के मंत्री वीरेन्द्र पाल रुस्तगी और अधिष्ठाता हमीर सिंह रघुवंशी सहित अनेक गणमान्य व्यक्त उपस्थित थे।

– हमीर सिंह रघुवंशी,
अधिष्ठाता

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज हबीबगंज, लुधियाना
प्रधान : श्री आशानन्द आर्य
मन्त्री : श्री जनकराज भक्त
कोषाध्यक्ष : श्री धर्मपाल भक्त

स्त्री आर्यसमाज बरबीघा (शेखपुरा)
प्रधाना : श्रीमती गीता देवी
मन्त्रिणी : कुमारी अर्चना
कोषाध्यक्षा : श्रीमती राज लक्ष्मी आर्या

आर्यसमाज कृष्ण नगर, नई दिल्ली
प्रधान : श्री विश्म्बरनाथ अरोड़ा
मन्त्री : श्री जगदीश लाल मल्होत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चोपड़ा

आर्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली
प्रधान : श्रीमती भगवती सेठ
मन्त्री : श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री राजवीर शास्त्री

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली
प्रधान : श्री ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री जितेन्द्र खरबन्दा
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र पाल आर्य

आर्यसमाज मालवीय नगर, नई दिल्ली
प्रधान : श्री विमल आनन्द
मन्त्री : श्री वरुण अरोड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री एन०आर० मेहता

आर्यसमाज अशोक नगर, नई दिल्ली
प्रधान : श्री भगवान दास मनचन्दा
मन्त्री : श्री चतुर्भुज अरोड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री सुरेन्द्र वधवा

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, दिल्ली
प्रधान : महात्मा आर्यमुनि
मन्त्री : श्री अनिल कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री कमल कुमार गुप्ता

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, ए ब्लाक, दिल्ली
प्रधान : श्री ओम प्रकाश भावल
मन्त्री : श्री दुर्गा प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री योगेश कुमार गुप्ता

आर्यसमाज सी-१३, हरिनगर, घंटाघर, दिल्ली
प्रधान : श्री केवल कृष्ण कुमरा
मन्त्री : श्री आनन्द प्रकाश वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री ओमदत्त गौतम

शोक समाचार

आचार्य हरिदत्त शास्त्री का स्वर्गवास मंगलवार, दिनांक १५ अगस्त, २००६ को हो गया।

अतः उनकी रस्म पगड़ी (तेरहवीं) रविवार, दिनांक २७ **अगस्त, २००६ को आर्यसमाज मन्दिर, बी-ब्लॉक, सरस्वती विहार, नई दिल्ली में ३ से ५ बजे** तक होगी।

रेल यात्रा बनी धर्म प्रचार यात्रा

जीवन प्रभात पांडिचेरी के लिए विगत लगभग १ वर्ष से श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने अपना जीवन आहूत कर रखा है। विगत



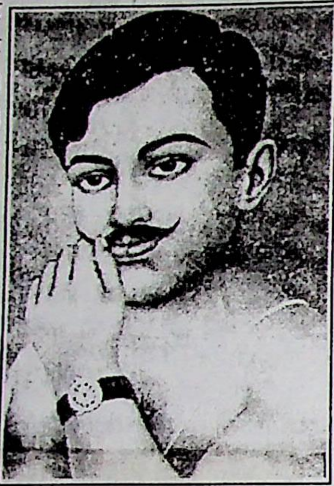
१० अगस्त को दिल्ली तथा उ०प्र० के कुछ विशेष कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए श्री आर्य तपस्वी जी चैन्नई से तमिलनाडू एक्सप्रेस के द्वारा रवाना हुए। ११ अगस्त को प्रातः ७ बजे आन्ध्र प्रदेश के वारंगल स्टेशन पर सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री के०एम० तिरुपति रेड्डी जी तथा उनके कुछ साथियों ने श्री तपस्वी जी का स्वागत करते हुए उन्हें प्रातःराश प्रदान किया। दोपहर २ बजे गाड़ी [illegible] महाराष्ट्र के नागपुर पहुंची तो स्टेशन पर सार्वदेशिक अन्तरंग सभा के सदस्य श्री राव हरीशचन्द्र जी के नेतृत्व में मध्य विदर्भ सभा के मन्त्री श्री अनिल शर्मा, श्री अशोक यादव, श्री वी०एम० दुआ एवं श्री कृष्ण कुमार शास्त्री आदि महानुभावों ने श्री तपस्वी जी को फलाहार प्रदान करके तथा माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

इस प्रकार स्थान–स्थान पर रेल यात्रा में स्वागत समारोह तथा धर्म चर्चा द्वारा उनकी चैन्नई से दिल्ली यात्रा एक धर्म प्रचार यात्रा बन गई। इस धर्म चर्चा में रेल यात्रियों को भी शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ जिन्होंने श्री तपस्वी जी से धर्म चर्चा करके शंका समाधान किया।

चन्द्रशेखर आजाद को भावभीनी श्रद्धांजलि

कोटा, २३ जुलाई। चन्द्रशेखर आजाद के शताब्दी समारोह के मौके पर कोटा की आर्यसमाज ने रविवार को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वतन्त्रता सेनानी आनन्द लक्ष्मण खांडेकर थे जबकि विशिष्ट अतिथि बी०एम० बांठिया थे। अध्यक्षता अर्जुन देव चड्ढा ने की। समारोह की शुरुआत स्नेहलता ने अमर गीत गाकर की।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आनन्द लक्ष्मण खांडकर ने कहा कि देश का मूलस्वरूप खोता जा रहा है। हमें इन देश भक्तों के आदर्शों का अनुकरण करना चाहिए यह बात कब तक हम लोग ऐसे ही करते रहेंगे ? इस पर विचार करने की जरूरत है। आजाद के जीवन में दो बातें सबसे महत्वपूर्ण थी वह हैं संयम और अनुशासन। इन्हीं के बल पर वे इतने महान् पुरुष हुए। भारत ने सामाजिक मूल्यों को खोया है। जीवन उपभोग की ओर बढ़ा है। लोग आजादी के बाद भी भयभीत हैं। वे अपने ही लोगों से डरे हुए हैं। देश में बढ़ते भ्रष्टाचार में भ्रष्टाचार बढा है। देश से स्वदेशी भावना चली गई। विदेशी संस्कृति को अपनाने में लगे हुए हैं। विशिष्ट अतिथि बांठिया ने कहा कि आजाद की श्रद्धांजलि के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया



है। लोग समय निकलने के साथ ही देशभक्तों को भूलने लगे हैं। उन्होंने वोकेशनल स्कूल में आजाद की प्रतिमा को खंडित करने वालों की अब तक गिरफ्तारी नहीं होने पर भी दुःख जताते हुए कहा कि ऐसे देश भक्तों की प्रतिमा को ऐसे स्थान पर ही लगाना चाहिए जहां वे सुरक्षित रह सकें।

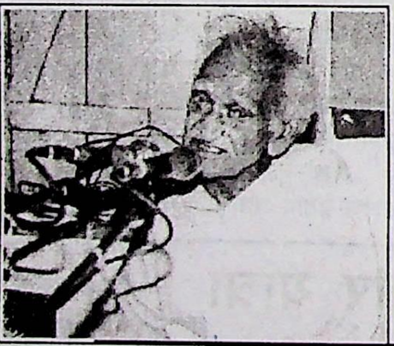
समारोह को संबोधित करते हुए प० रामदेव शर्मा ने कहा कि ऐसे देश भक्त नहीं होते तो आजादी नहीं मिल पाती। उन्होंने कहा कि अगर हाथ जोड़कर आजादी मांगी जाती तो कितने वर्ष लग जाते, यह अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। उन्होंने आजाद के चरित्र का एक संक्षिप्त परिचय दिया और देश के वर्तमान हालात के लिए राजनेताओं को दोषी ठहराया।

अध्यक्षता कर रहे अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि देश को जिन लोगों ने आजादी दिलाई, उनमें अस्सी प्रतिशत से भी ज्यादा आर्यसमाजी थे। युवा पीढ़ी भटक रही है। आर्यसमाज देश का सर्वांगीण विकास करने की सोच रखता है। देश वापस से गुलामी बढ़ रहा है। देश में समानता होनी चाहिए।

समारोह में आर०सी० साहनी ने कहा कि इन देश भक्तों की वजह से हम सब आजादी में सांस ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में नशे की वजह से युवा पीढ़ी भटक रही है। उसको रास्ते पर लाने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन अर्पणा पाण्डे ने किया।

आर्यसमाज मन्दिर बरबीघा (शेखपुरा) में वेद प्रचार सप्ताह

दिनांक ६ अगस्त २००६ से आर्यसमाज मन्दिर बरबीघा (शेखपुरा) में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। जिसमें आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् प्रो० राम प्रवेश जी शास्त्री के द्वारा प्रातःकाल हवन यज्ञ तथा सायं में वेद प्रर विस्तारपूर्वक चर्चा ६ अगस्त ०६ से १३ अगस्त ०६ तक चला। इन्होंने अग्नि पर बोलते हुए कहा कि जीवन में प्रत्येक दिन यज्ञ करना चाहिए। साथ में ये बतलाया कि आज जो लोग नाना प्रकार के बीमारी से ग्रसित हो रहे हैं वह सब यज्ञ से दूर होने का ही परिणाम है। व्यक्ति अग्नि से ही आया है, और अग्नि में मिल जाना है। इस बात को समझाते हुए जीवन भी एक यज्ञ है और इसमें एक एक ग्रास डालते हुए प्रभु पर ध्यान करना ही जीवन की सार्थकता है।



आर्यसमाज के पुराने स्वाध्यायी ६० वर्षीय पं० यदुनन्दन शर्मा ने १४ अगस्त ०६ से १६ अगस्त ०६ कृष्णजन्माष्टमी तक प्रातः सामवेद के अग्नि पर्व पर एवं कठ-उपनिषद के नचिकेता और यमाचार्य पर विस्तार से बोलते हुए लोगों को त्यागमय जीवन जीने का सरल मार्ग वेद के अनुसार चलने का मार्ग बतलाया।

उपदेशों का सार

(इस उपदेश को नित्य पढ़िये एवं अमल में लाइए)

यदि

१. सुखी होना चाहते हो ? तो, सुख देना सीखो।
२. मारना चाहते हो ? तो, ज्ञान व धर्म के शत्रु को मारो।
३. खाना चाहते हो ? तो, बुद्धि के शत्रु को खाओ।
४. छोड़ना चाहते हो ? तो, अहंकार को छोड़ो।
५. देना चाहते हो ? तो, गरीबों को दान दो।
६. जानना चाहते हो ? तो, सत्संग के गुणो को जानो।
७. बोलना चाहते हो ? तो, मीठे वचन ही बोलो।
८. तोलना चाहते हो ? तो, अपने शब्दों को तोलो।
९. बश में करना चाहते हो ? तो, अपनी जुवां को बश में करो।
१०. गिनना चाहते हो ? तो, अपने पापों को गिनो।

दयानन्द सेवाश्रम उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात क्षेत्र में अग्रसर

कानपुर देहात (उ०प्र०) ६ जुलाई। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, दिल्ली के सम्मानित सदस्य तथा मध्य प्रदेश थान्दला



(झाबुआ) सेवाश्रम के संचालक आचार्य दयासागर के कानपुर देहात आगमन पर रनियां के 'विशाल ढाबा' पर एक 'स्वागत संगठन विचार गोष्ठी' का आयोजन महर्षि दयानन्द सेवाश्रम, परसौली के तत्वावधान में किया गया।

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम परसौली के प्रधान डॉ० रमाशंकर शिरोमणि ने बताया कि क्षेत्र में अज्ञानता, अशिक्षा के अतिरिक्त एक सबसे बड़ी चुनौती ईसाई धर्म प्रचार के विरुद्ध लड़ने की है। चूंकि यह क्षेत्र धीरे–धीरे विकसित हो रहा है इसलिए ईसाइयों ने इस क्षेत्र को अपना गढ़ बनाना प्रारम्भ कर दिया है। डॉ० शिरोमणि ने स्थानीय संस्था का परिचय देते हुए बताया कि यह संस्था ५ सितम्बर, २००२ में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामंत्री माता प्रेमलता शास्त्री जी के कर-कमलों द्वारा प्रारम्भ हुई। अब इसके अन्तर्गत माता कमला सूद (दिल्ली) द्वारा प्रायोजित दुर्गा देवी सिलाई शिक्षण केन्द्र, माता रत्नेश (अलीगढ़) द्वारा प्रायोजित, दयानन्द रत्नेश बालवाड़ी कुशलपुर, ईश्वर देवी गुप्ता कन्या बालवाड़ी पतारी इसके अतिरिक्त माता टेलर्स परसौली, तुलसी ग्रामीण स्वास्थ्य संस्थान बिलई, दयानन्द सेवाश्रम डिस्पेन्सरी परसौली आदि संस्थाएं गतिशील हैं।

इस वर्ष २५वें वनवासी वैचारिक क्रांन्ति शिविर दिल्ली में ११ शिविरार्थियों ने सफल भाग लिया। शिविरार्थी भारत के राष्ट्रपति द्वारा आमंत्रित भोज में सम्मिलित हुए तथा महामहिम से प्रश्नोत्तर कर लाभान्वित हुए।

इस अवसर पर मोहम्मदपुर कालेज के प्रवक्ता श्री बाबू यादव ने सेवाश्रम के कार्यक्रमों के लिए अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में रनियां से सर्वश्री रामकृपाल, सुनील आर्य, अजय द्विवेदी, मलखान सिंह, जसवन्त सिह ठेकेदार, डॉ० अग्रवाल तथा बिलई से सर्वश्री शंकर, लाल, श्रीपाल, हरनाम सिंह, श्रीमती भिखनी देवी, पतोरी से शेषनारायण आदि ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन संजय पेण्टर ने किया तथा संस्था के कोषाध्यक्ष जयप्रकाश आर्य ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद दिया।

आर्य वीर दल बंगाल द्वारा चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

प्रान्तीय आर्य वीर दल पं० बंगाल ने जन सामान्य में राष्ट्रीय सम्मान एवं स्व स्वाभिमान को जाग्रत करने के उद्देश्य से २१ मई से २८ मई २००६ तक प्रान्तीय स्तर का भव्य चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जिसमें लगभग ३०० आर्य वीरों को वैदिक संस्कृति, वैदिक संस्कार, वैदिक सैनिक प्रशिक्षण कुशल प्रशिक्षकों द्वारा दिलाया गया जिसका शुभारम्भ २१ मई, ०६ को प्रातःकाल यज्ञीय कार्यवाही के साथ यज्ञ ब्रह्मा आचार्य नरेन्द्र शास्त्री वैदिक प्रवक्ता आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के दिग्दर्शन में यज्ञशाला से स्वाहा स्वाहा की उच्च ध्वनि गुंजायमान होने लगी तथा अधिकांश आर्य वीरों के कंधों पर धवल रूप प्रस्फुटित यज्ञोपवीत दिखाई दे रहे थे। यज्ञोपरान्त श्री स्वामी सुरेन्द्रानन्द एवं श्री स्वामी चेतनानन्द सरस्वती के करकमलों से ध्वजारोहण के साथ शिविर का शुभारम्भ किया गया तथा श्री स्वामी जी ने सभी आर्य वीरों को अनुशासन एवं शिष्टाचार के प्रति संचेष्ट रहने को प्रेरित किया।



पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

संगठनात्मक सुदृढ़ता के लिए सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी को अधिकृत किया गया। उनके साथ यथासमय सहयोग के लिए निम्न महानुभावों की समिति गठित की गई – श्री अरुण अब्रोल (मुम्बई), श्री अरविन्द आर्य (उ०प्र०), श्री लक्ष्मी चन्द (उ०प्र०), स्वामी सुमेधानन्द जी (हिमाचल), श्री वाचोनिधि आर्य (गुजरात), श्री देवराज आर्य (उत्तरांचल), श्री देवेन्द्र शर्मा (पंजाब), वैद्य इन्द्रदेव (दिल्ली), श्री शिवनाथ सिंह आर्य (छत्तीसगढ़)।

अन्तरंग बैठक के अन्त में सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया।

अखिल भारतीय दयानन्द से[...]म संघ के सराहनी[य] कार्यों [के] लिए माता प्रेमलत[ा] शास्त्री जी [का] भी अभिनन्द[न] किया गया।



सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक में दाएं से – दिल्ली की श्रीमती कृष्णा शर्मा, उ०प्र० से डॉ० आशारानीं राय माता प्रेमलता जी का स्वागत करती हुईं, आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी का स्वागत करते हुए सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा उपप्रधान डॉ० तुलसीराम बांगिया, हिमाचल प्रदेश से आचार्य रामानन्द जी।

पृष्ठ १ का शेष

अधूरी विद्या अपरिपक्व समय पर ...

माता, पिता, आचार्य को उच्च सम्मान की प्रेरणा भी हमें इस यज्ञोपवीत से प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि माता प्रेमलता जी आपके लिए माता पिता भी हैं और आचार्य भी हैं। अतः उनके आदेशों और उनकी भावनाओं के अनुसार यहां पूरा समय और ध्यान लगाकर विद्या अध्ययन करना ही आपका सर्वोच्च कर्त्तव्य है।

ब्रह्मचारी यदि बीच में विद्या अध्ययन अधूरा छोड़ दें तो अपरिपक्व समय पर जन्मे बालक के समान पूर्ण स्वस्थ मानसिकता प्राप्त नहीं कर पाएगा।

माता प्रेमलता शास्त्री जी ने ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत का इतिहास समझाते हुए कहा कि प्राचीन समय में भारत के लोग यज्ञोपवीत से ही सम्पूर्ण वैदिक जीवन और परम्पराओं को समझते हैं।

उनका जीवन देश-भक्ति, मातृ–भक्ति और धर्म भक्ति से ओत प्रोत था। विदेशी मुस्लिम शासकों को जब यह रहस्य पता चला तो उन्होंने सबसे अधिक प्रहार यज्ञोपवीत परम्परा को समाप्त करने के लिए ही किए। टनों के हिसाब से यज्ञोपवीत उतरवाए गए। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की कृपा से ही आज यह पवित्र परम्परा बची रह पाई।

इतना ही नहीं बल्कि उनकी कृपा से इस परम्परा में शूद्रों और महिलाओं को भी गौरव से शामिल करवा दिया गया।



सप्ताह में एक दिन प्रचार का संकल्प लेने वाला आजीवन प्रचारक बना

आदरणीया माता जी,

सादर नमस्ते।

सकुशल रहते हुए आप सबकी कुशलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। मेरा परिचय –

मैं अनिल कुमार साहू 'आर्य' (२४ वर्ष) छत्तीसगढ़ राज्य, रायपुर जिला, देवभोग तहसील के ग्राम मुंगझर का रहने वाला वह शिविरार्थी हूं जिसने आपके द्वारा आयोजित अखिल भारतीय वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर रजत जयन्ती समारोह २००६ में भाग लेकर ६५ प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

यह पत्र मैं आपको सूचना देने हेतु लिख रहा हूं। माता जी मैंने शिविर में होने वाले परिचय सम्मेलन में सभी शिविरार्थियों, आचार्यों व आपके मध्य यह घोषणा की थी कि मैं जिस शासकीय हाई स्कूल में विज्ञान शिक्षक के पद पर पदस्थ हूं उस स्कूल में प्रत्येक शनिवार को एक कालखण्ड वेद प्रचार के लिए रखूंगा।

माता जी आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वेद प्रचार में स्कूल के अन्य सभी शिक्षक व प्राचार्य भी मेरा साथ दे रहे हैं। बच्चे तरह–तरह के सवाल मुझसे किया करते हैं और मैं उन सभी सवालों का उत्तर वैसा ही देता हूं जैसे प्राचार्यों ने मेरे सवालों का जवाब शिविर में दिया। हर शनिवार को हमारा स्कूल आपके गुरुकुल की भांति सुशोभित दिखाई देता है। मेरे इस कार्य से बच्चों के पालकों ने काफी प्रशंसा की। कहने लगे – आपके द्वारा दिया जाने वाला संस्कार हम पालक शायद ही दे पाते। अब तो हमें बच्चों में काफी परिवर्तन दिखाई देता है। यह वेद प्रचार अब विद्यालय तक ही नहीं बल्कि समस्त ग्रामवासियों तक हो रहा है। इसके लिए मैं हर माह की अंतिम तारीख को बैठक आहूत करता हूं जिसमें आर्यसमाज मुंगझर के सदस्यों द्वारा स्वल्पाहार का आयोजन भी किया जाता है। इस बैठक में ग्रामवासियों को ईश्वर सम्बन्धित बातें,

शेष पृष्ठ ८ पर

सामयिक विषयों पर लेख

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें।

अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। 'सार्वदेशिक' के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक प्रकाशन, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 23270507
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

– विमल आर्य, सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० ०९८११२२१०८३

पृष्ठ १ का शेष

सच्चाई, ईमानदारी और ...

उन्होंने परिवारों में दूरदर्शन (टी०वी०) के माध्यम से बढ़ रहे भौतिकवादी, असभ्य और अनार्य संस्कारों के प्रति सचेत करते हुए कहा कि टी०वी० के अनैतिक कार्यों का दर्शन एक जन्म ही नहीं कई जन्म पशु योनि में रखने वाला सिद्ध होगा।

इससे अपने परिजनों को दूर रखकर ऋषियों की परम्पराओं, व्यवहारों को अपनाओ।

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने लोभ, मोह, द्वेष, दम्भ को मानवता का सबसे बड़ा शत्रु बताते हुए कहा कि प्रतिदिन एक घण्टा प्रातः और एक घण्टा सायंकाल में ध्यानस्थित रहकर अपनी आत्मा को समझने का प्रयास करो, तभी ईश्वर को समझ कर सुखी समाज का निर्माण कर पाओगे।

...16/2006-08
...o. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सा...क साप्ताहिक 27-08-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2003-05 in NDPS on 24/25-08-2006

पृष्ठ ७ का शेष

सप्ताह में एक दिन प्रचार का संकल्प ...

...श्वर के ... स्वरूप को बताया जाता है।

माता जी जब मैं दिल्ली के शिविर समाप्ति पश्चात् अपने घर वापस आया तो मेरी मां कहने लगी बेटे वहां दिल्ली में सभी चीजों की सुविधा थी या नहीं ? मैंने कहा मां वहां तो मुझे आपकी भी कमी महसूस नहीं हुई क्योंकि हमारी माता जी ने हमें न सिर्फ रोटी, कपड़ा व मकान दिए बल्कि वो सभी संस्कार भी दिए जो कि हर मां का प्रथम कर्तव्य है। सचमुच माता जी आप तो माता यशोदा है और हम बालक आपके कृष्ण समान।

माता जी मैं आपका कर्ज चुका पाऊंगा या नहीं यह तो कहना आसान ही नहीं नामुमकिन है। आपने कहा था कि मुझे तुम सब लोगों से गुरु-दक्षिणा में धन-दौलत नहीं बल्कि वेद का प्रचार चाहिए। माता जी मैं आपका यह कर्ज गुरु दक्षिणा के रूप में पूर्ण करूंगा। माता जी मैं यह सोचकर हैरान रहता हूं कि १५ वर्षों तक हमें किसी न किसी शिक्षक ने पढ़ाया है लेकिन वह ज्ञान हमें नहीं मिला था, जो ज्ञान १५ दिनों में आपके गुरुकुल के आचार्यों ने हमें दिया। आपने तो माता जी यह प्रमाणित ही कर दिया कि शिक्षक का प्रथम कर्तव्य सामाजिक व व्यावहारिक शिक्षा देना है। काश ! इस देश का हर शिक्षक आपके गुरुकुल के आचार्यों की भांति होते तो विकासशील राष्ट्र का निर्माण अभी नहीं वर्षों पूर्व हो चुका होता।

माता जी ! मैंने रामायण व महाभारत किताबों में पढ़ी है और टी०वी० पर देखी है। लेकिन आर्यसमाज रानी बाग में मुझे सचमुच त्रेतायुग व द्वापर युग का परिवेश नजर आया। वहां राम, कृष्ण व अर्जुन जैसे सखा पाकर मैं धन्य हो गया। मुझे अभी भी गुरुकुल के बच्चों की बहुत याद आती है। पता है माता जी मध्य प्रदेश वाले मेरे शिविरार्थी भाई विदाई के समय मुझसे रोते हुए गले मिले। उस समय मैंने महसूस किया कि १५ दिनों के इस शिविर में पाषाण हृदय वाला भी पिघलकर भावुक हो जाएगा। योग साधना में जब सारे शिविरार्थी सन्ध्या करने बैठते थे तब सारे योगिराज श्रीकृष्ण सदृश्य नजर आते थे। सचमुच १५ दिनों के शिविर में प्रशिक्षण पश्चात् सभी में राम व कृष्ण के गुण दिखाई देने लगे।

माता जी उस शिविर में सबसे ज्यादा मैं आपकी दिनचर्या व सक्रियता से प्रभावित हुआ। धर्माचार्य आनन्द प्रकाश जी द्वारा बताया गया धर्म के दस लक्षण व प्रथम महिला आई०पी०एस० किरण बेदी द्वारा बताए गए समय के साथ कर्म की महत्ता, इन सबसे भी मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ।

माता जी, मैंने अवश्य ही पिछले जन्म में कुछ अच्छे कार्य किए थे जिसके कारण मुझे आपके शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला। मैं चाहता हूं जो क्रान्ति आपने मेरे जीवन में लाई है वह क्रान्ति हमारे देवभोग क्षेत्र में लाऊं। इसके लिए मुझे आपके मार्गदर्शन की जरूरत होगी। हमारे आर्यसमाज मुंगझर के सदस्य चाहते हैं कि यहां भी एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाए जिसका शुभारम्भ आपके कर कमलों द्वारा हो। इसकी सूचना आपको दूरभाष या पत्र द्वारा दिया जाएगा। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस सत्र हेतु भी आपके इस शिविरार्थी को आर्यसमाज मुंगझर का प्रधान नियुक्त किया गया है।

अन्त में, आप सभी की खुशियांभरी जीवन व आर्य समाज की प्रगति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपनी लेखनी को विराम देता हूं।

समस्त आचार्यों व गुरुकुल के विद्यार्थियों को मेरा सादर नमस्ते।

'आर्यसमाज अमर रहे।'

आपका कृपाभिलाषी
अनिल कुमार साहू 'आर्य' (शिक्षक)
प्रधान, आर्यसमाज मुंगझर
ग्राम/पोस्ट – मुंगझर, तह० देवभोग
जिला – रायपुर (छत्तीसगढ़)
पिन – ४६३ . ६०

पृष्ठ २ का शेष

वनवासी ... क्रान्ति ...

इस संघ के संचालक एवं प्रेरणास्रोत पहले श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री रहे। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर इसे फैलाया। उनके स्वर्गवास के पीछे माता प्रेमलता जी शास्त्री इस दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामन्त्री बनीं। शास्त्री जी के जाने के पीछे ऐसा लगता था कि अब दयानन्द सेवाश्रम संघ का कार्य भी पिछड़ जाएगा परन्तु हुआ इससे उल्टा। एक महिला होते हुए भी माता प्रेमलता जी ने अहर्निश सारे देश में भ्रमण करके संघ के कार्य को नई ऊंचाइयों पर चढ़ाया। इनके अनथक प्रयास से हजारों वनवासी बन्धुओं के मुख वेदमन्त्रों का उच्चारण हो रहा है। श्री शास्त्री जी एवं माता जी के कार्यों से लगभग २५–३० वर्षों से परिचित हूं। सम्भवतः सन् १९८३ में श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री हमारे निमन्त्रण पर पहली बार उड़ीसा में आए थे। तब से उनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होता गया। शास्त्री जी के जाने के पीछे माता जी से और घनिष्ठता हो गई। उनकी प्रेरणा एवं आर्थिक सहयोग से उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ में कई बालबाड़ियां चल रही हैं। माता जी के कार्यों को देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि बड़ी आयु के कारण चलने में असमर्थ होने पर माता जी युवकों की तरह से कार्य कर रही हैं। भगवान माता जी को दीर्घायु एवं अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करें। संघ की ओर से जो पत्र (स्मारिका) प्रकाशित जा रही है इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

– पू० स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
...ालक गुरुकुल आम सेना, उड़ीसा

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ... रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।
वेबसाईट : http://www.sarvadeshik.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक ११ १७ सितम्बर से २३ सितम्बर, २००६ तक दयानन्दाब्द १८४ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ सम्वत् २०६३ भा०प०कृ०११

भारत में वार्षिक १०० रुपये तथा आजीवन ८०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर



महासम्मेलन का कार्य संगठनात्मक एकता होता है विभाजन नहीं

"जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जन मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के इस निर्देश पर टिप्पणी करते हुए पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी ने अपने ट्रेक्ट "उद्देश्य सर्वस्व" में लिखा कि –

"इस वाक्य के पीछे महर्षि की अदम्य अभिलाषा प्रकट होती है कि वे मनुष्य-मात्र को आर्यसमाज में सम्मिलित करना चाहते थे, प्रत्येक आर्य को, आर्यसमाज को एवं उसके कर्णधारों को उपर्युक्त वाक्य को कसौटी बनाकर अपने को परखना चाहिए कि क्या वास्तव में हम ऐसा आर्य समाज बना सके हैं कि जिसमें सम्मिलित करने के लिए मनुष्य मात्र आमंत्रित किया जा सकें।"

आज आर्यसमाज की दुर्दशा को देखकर हमारा आत्म चिन्तन हमें एक ऐसे अन्धकार में ले जाता है जहां प्रकाश की कोई किरण भी दिखाई नहीं दे रही। परन्तु फिर भी पूर्ण भरोसा है परमपिता परमात्मा पर क्योंकि उन्हें तो पता है कि जो आर्यसमाज आज एक अन्धकारमय गर्त में गिर गया है इसी आर्यसमाज के पास तो उनका अपना मूल ज्ञान है जो उन्होंने मनुष्य मात्र ही नहीं सम्पूर्ण सृष्टि के संचालन के लिए वेद रूप में दिया था। वैसे कुछ लोग इस गर्त में गिरने से बच गए कभी पदाधिकारी नहीं बने और ईश्वर के निर्देशों का पालन करने-करवाने में लगे रहे वे सच्चे ईश्वर प्रतिनिधि सिद्ध हो रहे हैं। कुछ लोग इस गर्त में गिरने के बाद भी छटपटा रहे हैं कि वे कैसे इससे बाहर निकले पदाधिकार वाले अलंकरण उनसे हटें और वे भी ईश्वर के निर्देशों के अनुसार कुछ की सच्ची सेवा करके अपनी आत्मा का उत्थान कर पाएं।

पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी ने महर्षि का भाव ठीक समझा परन्तु आज मनुष्य मात्र को आर्यसमाज में शामिल करने वाली अवस्था के निर्माण की तो कल्पना करना भी दूर की कौड़ी लग रही है। यहां तो अपना जीवन फूंक कर **अहर्निशं सेवामहे** के सिद्धान्त पर चलने वालों के मुंह पर भी कीचड़ मल कर उन्हें कलंकित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि मार्ग की बाधाएं दूर हो।

आर्यसमाज को कुछ लोगों ने ईश्वर वाणी का मार्ग उपलब्ध करवाने वाला महान् आन्दोलन न समझकर केवल कुछ सामाजिक कार्यों को करने की प्रक्रिया में सुख-सुविधाओं मान-सम्मान, नाम और कुछ ने तो धन की लूट से स्वय को सुशोभित करने-कराने वाली एक विशाल संस्था मात्र समझ लिया और लग पड़े एक अच्छा सा समान उद्देश्यों वाला गुट बना कर अपने को बड़ा गुट साबित करने की होड़ में।

विगत एक वर्ष से अधिक समय से हम संघर्षशील है। सब लोग प्रतीक्षा में थे कि कब संघर्ष की समाप्ति होकर आर्यसमाज के गौरव की प्रतिष्ठा हो। अन्ततः १७ अप्रैल को संघर्ष विराम की घण्टी बजी और अब प्रतीक्षा थी केवल न्यायालय के निर्णय की। इस सघर्ष की अवधि में ही महासम्मेलन के विचार उठे। मुम्बई में सम्पन्न बैठक में मैंने स्वयं राजसिंह के नाम का प्रस्ताव किया संयोजक बनने के लिए क्योंकि इस व्यक्ति की महत्वाकांक्षा और अभिलाषाओं की पराकाष्ठा को मैं समझ रहा था। महासम्मेलन का कार्य विशाल स्तर पर आर्यों के समागम का होता है संगठन के निर्माण का होता है, अनुशासंनहीनता, पदों की होड़ या संगठन में दरार डालने का नहीं।

केवल महासम्मेलन के नाम पर नहीं, इसके पीछे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद की महत्वाकांक्षा में एक ऐसे गुट का निर्माण कर दिया गया जो समान उद्देश्यों की नीति के तहत इनका साथ दे सकें। इस महासम्मेलन की प्रथम पूर्व उपलब्धि हुई कि सार्वदेशिक सभा का तीसरा गुट बना खड़ा कर दिया।

इस महासम्मेलन के नाम पर गुटबाजी का दौर अब अग्निवेश से भी दो कदम आगे बढकर प्रारम्भ हो गया है। किसी प्रान्त में प्रधान को कहा जा रहा है कि तुम अपना मन्त्री बदल दो और कहीं मन्त्री को कहा जा रहा है कि तुम अपना प्रधान बदल दो। यह सारा कार्य प्रकाश आर्य ने सम्भाल रखा है। गुजरात में बैठक आयोजित करने के लिए फिर महासम्मेलन की दुहाई दी और प्रधान श्री कल्याण देव जी से यह प्रार्थना भी की गई कि अपने मन्त्री श्री वाचोनिधि को इस बैठक में न बुलाए। क्या वाचोनिधि में कोई बुराई है ? उत्तर मिला – नहीं, वे तो पूरी तरह निष्पक्ष व्यक्ति हैं। फिर न बुलाने की बात का औचित्य। कोई जवाब नही। प्रधान श्री कल्याणदेव जी के सीधे स्पष्ट प्रश्नों ने प्रकाश आर्य को प्रकाशहीन कर दिया। उनके साथ गए श्री भगवानदास जी अग्रवाल को अब भी यदि अपने साथियों की वास्तविकता मालूम न हो तो दो चार प्रान्तों में और साथ घूम लें।

इसी प्रकार मध्य विधर्भ में सभा के मन्त्री श्री अनिल शर्मा को कहा कि आपके प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री जी के स्थान पर कोई नया चुस्त प्रधान ढूंढना चाहिए। क्या अवगुण है श्री सत्यवीर शास्त्री जी में ? कोई ठोस उत्तर नहीं।

इस प्रकार की घटनाए प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य समाजों विशेष रूप से दिल्ली में कई बार सुनने को मिली। इस तरह से हो रहा है एक महा गुट का निर्माण। झारखण्ड में शान्त व्यवस्था के चलते प्रधान श्री लक्ष्मण यादव जी के साथ मन्त्री श्री इन्द्रदेव शास्त्री की जोडी भी इस गुटबाजों को पसन्द नहीं आई। इस प्रान्त में तो जबरदस्ती पूर्व प्रधान श्री देवरत्न आर्य से पत्र भी जारी करवा दिया गया था जिसमें मन्त्री बदल कर दूसरा कोई व्यक्ति घोषित कर दिया।

शेष पृष्ठ ७ पर

सम्पादक

पुरोहित, धर्माचार्य आदि के लिए विवरण आमन्त्रित

गुरुकुलों अथवा उपदेशक विद्यालयों से शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त विभिन्न आर्य सभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं में पुरोहित, धर्माचार्य, भजनोपदेशक आदि के रूप में कार्य करके वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में सहायक बनने के इच्छुक महानुभाव अपने पूर्ण विवरण नाम, पता, फोन नम्बर तथा प्रमाणपत्रों सहित निम्न पते पर भेजे।

पुरोहित प्रकोष्ठ
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
१४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज,
(आर्य अनाथालय के पास)
नई दिल्ली - ११०००२

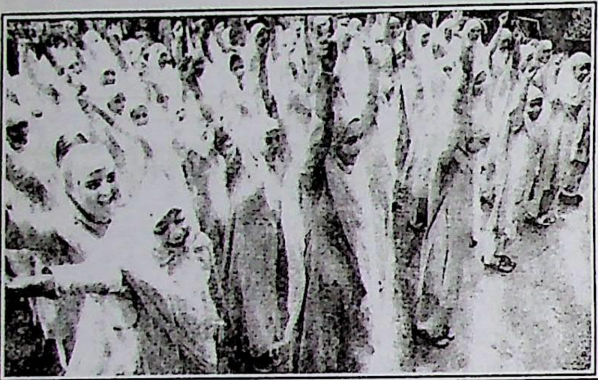
जिन आर्य समाजों अथवा अन्य आर्य संस्थाओं को पुरोहितों आदि की आवश्यकता हो वे भी अपनी आवयकताओं की पूर्ति के लिए सम्पर्क कर सकते है।

– **विमल वधावन आर्य**, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

क्या वन्देमातरम् गान साम्प्रदायिक है? क्या स्वतन्त्रता आन्दोलन की प्रेरणा साम्प्रदायिक हो सकती है?

वन्देमातरम हमारा राष्ट्रीय गान है। इसमें राष्ट्र के समस्त संसाधनों की उन्नति की प्रार्थनाएं शामिल हैं। राष्ट्रवासियों को सुख देने वाली सम्पूर्ण प्रकृति को विभिन्न प्रान्तों के आभूषण की तरह मान कर उसकी वन्दना की गई है।

देश के संसाधन देशवासियों के लिए लाभदायक हैं कि सम्प्रदाय के लिए अधिक या कम नहीं। इस महान् रचना के नाम पर राजनीति करने वालों को देश और उसकी सम्पदा से कवि हृदय वाला प्रेम नहीं है। वे इस देश की सम्पदा को केवल अपनी व्यक्तिगत उन्नति का साधन मानते हैं।



अहमदाबाद (गुजरात) के अन्जुमन–ए–इस्लाम हाई स्कूल की छात्राओं ने वन्देमातरम्! जयन्ती पर वन्देमातरम गान तथा भारत माता की जय के नारों से यह साबित कर दिया कि व्यक्तिगत मत या पंथ से वन्देमातरम् गान का कोई सम्बन्ध नहीं है। वन्देमातरम् समस्त संकीर्णताओं से ऊपर है।

One cannot be the President or Secretary of God

God won't ask what your job title was. He'll ask if you performed your job to the best of your ability, if there was no financial embazzlement on your part, if you have never kept the money belonging to any other person without any reason.

If you are involved in such irregularities, you can't justify yourself before the Almighty & Omniscient God. In that case it is immaterial whether you are the President or Secretary of any great society.

श्री सुदर्शन शर्मा इग्लैण्ड रवाना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा विगत सप्ताह औद्योगिक कार्यों के सम्बन्ध में इग्लैण्ड यात्रा पर गए। जाने से पूर्व गुरुकुल रानीबाग के ब्रह्मचारियों द्वारा मन्त्र पाठ तथा माता प्रेमलता जी के आशीर्वाद सहित उन्हें शुभकामनाएं देकर विदाई दी गई। उनके साथ उनकी धर्म पत्नी भी गई हैं।



आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य छठी बार विदेश प्रचार यात्रा पर

२५ अगस्त २००६, को विमान द्वारा अहमदाबाद से आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी आर्य, दर्शन योग महाविद्यालय, इंग्लैण्ड के लिए प्रस्थान कर गए हैं। आप वहां डेढ़ से दो माह तक विभिन्न नगरों में प्रवचन, शिविर, यज्ञ, सत्संग आदि के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करेंगे। इससे पूर्व आप २००१, ०२, ०४, ०५ वर्ष में इंग्लैण्ड में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गए थे। इन प्रचार यात्राओं में आपने वैदिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ-साथ अनेक नगरों में अल्पकालीन क्रियात्मक योग शिविरों का भी आयोजन किया था। इससे लगभग २० के करीब नगरों में हजारों व्यक्तियों को वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का परिज्ञान हुआ और उन लोगों को हजारों रुपये का साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया। सन् २००४ में आपने दो स्थानों (लैस्टर तथा इल्फर्ड) में आर्य संगठनों की स्थापना की थी और भवन हेतु हजारों पौण्ड की राशि भी संगृहीत कराई थी।

आर्यसमाज विश्व का सर्वोच्च गरिमामय संगठन

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मण्डल के तत्वावधान में वेद प्रचार दिवस श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर की अध्यक्षता में आर्यसमाज गोविन्द पुरी में अत्यन्त समरोहपूर्वक मनाया गया। श्रीमती उषा सूद के संयोजकत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में नवयुवतियों ने भाग लिया। वरिष्ठ आर्य नेत्री श्रीमती सरस्वती नारंग द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसके अनंतर सामवेद मंत्र प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाली बहनों को श्रीमती सुदेश गुप्ता ने वैदिक साहित्य द्वारा पुरस्कृत किया।

वेद सम्मेलन में अध्यक्षता करते हुए श्रीमती शकुंतला आर्य ने कहा कि आर्यसमाज संसार का सबसे ऊंचा सबसे शक्तिशाली और गरिमामय संघठन है। उसी के माध्यम से जब महिला शक्ति जागृत होगी, तभी भारत का गौरव, आर्ष सभ्यता, वैदिक संस्कृति और मानव मूल्य स्थिर रहेंगे।

श्रीमती आर्या ने वंदेमातरम् गान की उपयोगिता बताते हुए कहा कि इस गीत ने सोते हुए देशवासियों को जगाया, जगों हुओं को खड़ा किया और अंग्रेजों के विरुद्ध सारा देश कमर कस कर खड़ा हो गया। परिणामतः गान लिखने के ७० वर्ष बाद देश स्वाधीन हो गया। आज भी इस मंत्र की अत्यन्त आवश्यकता है। आज हमें पूरी शक्ति से गरीबी, अशिक्षा और कुसंस्कारों से लड़ना है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित वंदेमातरम् गान को ७ अगस्त १९०५ को सर्वप्रथम राजनैतिक नारे के रूप में प्रयोग किया गया। आज भी यह गीत हमारे अंदर दृढ़ संकल्प, नई शक्ति और नई प्रेरणा देता रहेगा।

प्रसिद्ध समाज सेविका, पूर्व अध्यक्षा राष्ट्रीय महिला आयोग, श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि महर्षि की शिक्षा से ही राष्ट्र उद्यान पल्लवित एवं पुष्पित हुआ है। आज दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल के कार्यक्रम से समूची गोविन्द की पुरी महक उठी है। संसार के अनेक शिक्षाविदों, विचारकों और राष्ट्रीय नेताओं को महर्षि दयानन्द से प्रेरणा मिली। भारतीय नारी को उच्चासन पर बिठाने का श्रेय भी आर्यसमाज को ही जाता है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद श्रीमती अमृता निकोर ने कहा कि शिक्षा ही मानव जीवन का आधार है। आज स्वार्थान्ध युग में वैदिक शिक्षा ही जातिवाद, नारी शोषण एवं दहेज प्रथा को समाप्त कर सकती है। सभा को श्रीमती उषा शास्त्री तथा सरिता सूद ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर श्रीमती शकुन्तला आर्या ने प्रसिद्ध समाज सेवी बहनों का कविताओं द्वारा स्वागत किया।

अंत में गोविन्द पुरी आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती कमलेश साहनी ने सभी अभ्यागत बहनों का धन्यवाद किया।

– शकुन्तला नांगिया
प्रचार मंत्री मंडल

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का ४०वां स्थापना दिवस

हरियाणा के बहादुरगढ़ स्थान पर स्थित आत्मशुद्धि आश्रम का ४०वां स्थापना दिवस २५ सितम्बर से १ अक्टूबर तक आयोजित किया गया है। समापन समारोह १ अक्टूबर को प्रातः ६ बजे से प्रारम्भ होगा।

दूरभाष : ०६४१६०५४१६५

श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट नहीं रहे

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–१ के पूर्व प्रधान एवं यशस्वी दानवीर आर्य नेता श्री महेन्द्र प्रताप जी के दुःखद देहावसान से दिल्ली के आर्य जनों में शोक की लहर व्याप्त हो गई। भारी संख्या में आर्य जन उनके अन्तिम संस्कार एवं शोक सभा में उपस्थित हुए, जिनमें मुख्य थे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, श्री योगेश मुन्जाल, श्री सुभाष आर्य, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री हर्षवर्धन, दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष श्री बाबूराम शर्मा, श्री विजय कुमार मल्होत्रा संसद सदस्य, श्री जगदीश मुखी, पूर्व मन्त्री, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री आर्य तपस्वी सुखदेव आदि। श्री महेन्द्र प्रताप जी सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य के बहनोई थे।

श्री महेन्द्र प्रताप जी के बाद उनके परिवार में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा आर्या, एक विवाहित सुपुत्र तथा दो विवाहित सुपुत्रियां हैं।

राष्ट्रवादी लेखक श्री भानू प्रताप शुक्ला नहीं रहे

सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी लेखक एवं कई दैनिक समाचार पत्रों के स्तम्भ लेखक श्री भानू प्रताप शुक्ला का आकस्मिक निधन अगस्त के अन्तिम सप्ताह में हो गया। उनका संस्कार आर्यसमाज लोधी रोड द्वारा संचालित निगम बोध घाट पर किया गया।

श्री भानू प्रताप शुक्ला के ओजस्वी लेखों से राष्ट्रवादी जनता अपार उत्साह प्राप्त करती थी। उनके लेख सदैव गम्भीर तर्कों पर आधारित होते हुए भी कभी नीरस नहीं होते थे। उनके निधन से समाचार जगत् ने राष्ट्रवाद का एक प्रहरी खो दिया है।

उनके निधन पर सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी ने अपने शोक सन्देश में उन्हें विलक्षण प्रतिभा का स्वामी बताते हुए दुःख व्यक्त किया है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की है कि ऐसी दिव्य आत्मा पुनः जन्म लेकर राष्ट्र की सेवा के लिए हमारे बीच में आए।

गतांक से आगे

बृहत्तर हिन्दू धर्म और समाज से आर्यसमाज के नाते रिस्ते कैसे हों ?

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

यह यक्ष प्रश्न हमारे सामने है। आर्यसमाज का संस्थापक हिन्दू ब्राह्मण का बेटा था। लाखों लाख आर्यसमाजी हिन्दू परिवारों की सन्तान हैं। हमारे पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध इसी हिन्दू वर्ग से हैं। विभिन्न मसलों पर हमारे बृहत्तर हिन्दू धर्म से मौलिक मतभेद भी हैं, किन्तु वे ऐसे ही हैं जैसा शंकर और रामानुज में था, नानक, कबीर और तुलसीदास में था, देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र (यद्यपि दोनों ब्रह्मसमाजी थे) में था। आर्यसमाज अपनी पूर्ण विचार-स्वतन्त्रता तथा क्रान्तिकारी सामाजिक और धार्मिक विचार-धारा को सुरक्षित रखता हुआ सनातनी हिन्दू समाज से अपने सैद्धान्तिक मतभेदों को डिमडिम घोष के साथ उजागर करता रहेगा तथापि इसी बृहत्तर हिन्दू समाज से हमारी आत्मीयता, नैकट्य और बंधुभाव पूर्व की भांति स्थिर रहेगा। दयानन्द ने मूर्तिपूजा का कटु खण्डन करते हुए भी मन्दिरों को अपना बसेरा बनाया तथा पुजारियों ने उन्हें भोजन कराया। पूना के प्रवचनों में वे पौराणिक मान्यताओं का तीव्रतम खण्डन करते हुए भी सनातनी ब्राह्मण समुदाय को 'मेरे बड़े भाई शास्त्री लोग' का सम्मान देकर पुकारते थे। अन्य मतावलम्बियों के प्रति भी उनके मन में सम्मान का भाव सदा रहा। सर सैयद अहमद उनके निकटतम मित्र थे, लाहौरे के डॉ० रहीम खां उनके मेजबान रहे तथा बरेली के लाट पादरी को उन्होंने 'भक्त स्काट' कहकर प्यार दिया। मौलवी मोहम्मद कासम तथा पादरी हरप्रसाद से हुआ उनका पत्र व्यवहार यह बताता है कि भिन्न मतावलम्बियों के प्रति वे कितना शिष्टाचार तथा सम्मान रखते थे। लाहौर के पादरी फोरमेन तथा अजमेर के मोहम्मद मुरादअली (सम्पादक राजपुताना गजट) उनके प्रशंसक तथा भक्त थे।

विश्व हिन्दू परिषद के नेता अशोक सिंहल तथा प्रवीण भाई तोगडिया से हमारे लाख मतभेद हों, भारत माता को डाइन कहने वाले मौलाना बुखारी और हिन्दू द्वेषी सैयद शहाबुद्दीन की अपेक्षा वे हमारे अधिक निकट हैं, इसमें दो राय नहीं हो सकती। तब प्रश्न यह होता है कि क्या आर्यसमाज बृहत्तर हिन्दू समाज से शत्रुतुल्य व्यवहार करे और उनके आर०एस०एस० विश्व हिन्दू परिषद, भा०ज०पा० आदि संगठनों पर निरन्तर अभिशाप वृष्टि करता रहे जैसा कि हमारे मित्र (स्वामी अग्निवेश तथा डॉ० सुरेन्द्रसिंह कादियाण) करते आ रहे हैं। हमें इतिहास के इस सत्य को नहीं भुलाना चाहिए कि किसी समय आर्यसमाज की ही भांति धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति का उद्घोषक बंगाल का ब्रह्मसमाज न केवल बंगाल में, अपितु सुदूर पंजाब तथा महाराष्ट्र में अपनी जडें जमा चुका था, किन्तु मात्र हिन्दू समाज से दूरी रखने तथा केशव के नेतृत्व में ईसाइयत को परोक्ष रूप में गले लगाने के कारण वह नाम शेष हो गया। यही हाल महाराष्ट्र के प्रार्थना समाज का भी हुआ। आर्यसमाज के लिए यही उचित है कि हमारे इन नए नेताओं की भांति वे हिन्दू नेताओं तथा संस्थाओं के प्रति द्वेष बुद्धि न रखे। उनकी विचारधारा को लाख अस्पृश्य मानते हुए भी हम रोटी बेटी का व्यवहार तो इन्हीं लोगों से करेंगे।

हम तो यहां तक कहने की धृष्टता करेंगे कि मनु के द्वेषी नेता भी जब इस लोक का त्याग करेंगे तो उन्हें मनुप्रोक्त अन्त्येष्टि विधि से ही पंचभूतों में विलीन होना पडेगा, जबतक कि वे अपनी वसीयत में कुछ अन्य बात न लिख दें। अतः यह स्पष्ट है कि आर्यसमाज अपनी सम्पूर्ण क्रान्तिकारी विचारधारा को यथावत रखकर भी बृहत्तर हिन्दू (आर्य) समाज की कल्याण कामना करता रहेगा तथा उसके हित के कार्य करता रहेगा।

सैमेटिक मजहबों के अनुयायियों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो ?

यह एक अन्य सवाल है जो आज एक नई प्रासंगिकता के कारण हमारे समक्ष आया है। लगता है कि हमारे इन कथित नेताओं ने सैमेटिक मजहबों के प्रति अपनी पूर्व की सन्तुलित दृष्टि (जो आर्यसमाज की सर्वसम्मत दृष्टि थी) को त्याग दिया है और उनका पलड़ा इनकी ओर अधिक झुक गया है। अब उन्हे हिन्दू धर्म में दोष ही दोष नजर आते हैं और सामी (ईसाइयत तथा इस्लाम) मजहबों में गुण ही गुण दिखाई देते हैं। तभी तो हमारे ये मित्र किसी जमीयत उल उलेमा (या किसी अन्य) के मजमें में तकरीर करने जाते हैं तो कोई वेद मन्त्र न बोल कर – बिस्मिल्लाहिर्रह-मानुरहीम' का पाठ करते हैं, मानो वेद का कोई मंगल वाक्य उन्हें याद ही नहीं है। अब गोधरा का रेल हत्याकाण्ड उनके लिए कोई मायने नहीं रखता जबकि उसकी प्रतिक्रिया में हुए हिंसाकाण्ड को वे तीस्ता सीतलवाड की तरह एक क्षण के लिए भी नहीं भुलाते। उन्हें गुजरात के विस्थापित मुसलमानों की चिन्ता है किन्तु दशकों से अपन घरों से भगाए कश्मीरी पण्डितों के हक में बोलने में उनके हलक सूखते हैं। वे तोगडिया और नरेन्द्र मोदी को हिटलर की सन्तान कहने में संकोच नहीं करते किन्तु रात दिन हिन्दुओं के कत्ल का फरमान जारी करने वाले सैयद सल्लाहुद्दीन जैसे क्रूर कर्मी की निन्दा के लिए उनके पास शब्दों का अभाव है। वे इस सच्चाई को स्वीकार करने का साहस नहीं रखते कि गुजरात का काण्ड गोधरा की प्रतिक्रिया थी।

पता नहीं, हमारे इन मित्रो में यह बदलाव क्यों और कैसे आया? अब उन्हें अटल बिहारी और आडवाणी की देशभक्ति में शक नजर आने लगा जबकि आग उगलने वाले मुल्ला मौलवी और किसी भी हद तक जाकर वनवासियों और आदिवासियों को ईसा के टोले में लाने वाले पादरी उनकी मित्र मण्डली में आ बैठे। अयोध्या एक विवादित स्थल को नष्ट कर देने पर तो उनका आक्रोश फूट पडा किन्तु आए दिन हिन्दू धर्म स्थलों पर पत्थर फैंकने तथा राजमार्गों पर किसी नौगजे पीर की कृत्रिम दरगाह बनाने तथा इस प्रकार सडका, पुलों तथा अन्य संवेदनशील स्थलों को हथियाने वाले अपराधी वृत्ति वालों को वे दरकिनार कर देते हैं। यहां मैं एक आर्यसमाजी होने के नाते अपना दृष्टिकोण साफ कर दूं। मूर्तिपूजा के प्रति घोर विरक्ति, अनास्था तथा अश्रद्धा रखने के कारण मंदिर संस्कृति में मेरा रत्ती भर विश्वास नहीं है। तथापि किसी भी प्राचीन इमारत को अनावश्यक रूप से तोडने, विकृत करने तथा मिस्मार करने का मैं समर्थन नहीं करता। दयानन्द के जीवन चरित के पाठकों को याद होगा कि फर्रुखाबाद में सड़क के बीच की एक मढिया (छोटा देव मंदिर) को हटाने की चर्चा चली तो कुछ अति उत्साही आर्यसमाजियों ने स्वामी जी से कहा कि वे अपने व्यक्तिगत प्रभाव और परिचय का प्रयोग कर अंग्रेज को इशारा कर दें तो मूर्ति पूजा का यह पाखण्ड (मंदिर) हट जाएगा। महर्षि ने साफ मना कर दिया और कहा कि मैं लोगों के मन मंदिर में बसे जड पदार्थों के प्रति भक्ति भाव को हटाना चाहता हूं और उसके स्थान पर सच्चिदानन्द परमात्मा की अनुभूति जगाना चाहता हूं। ईंट पत्थरों के मंदिरो को हटाना मेरा काम नहीं है। यह काम तो स्वयं बुत शिकन (मूर्तिभंजक) कहलाने में गर्व अनुभव करने वाले मोहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनबी तथा औरंगजेब जैसे मतान्ध मुसलमान शासकों का था जिन्हें गौरवान्वित करने तथा उनके पापों को धोने वाले कांग्रेसी–कम्युनिस्ट इतिहासकारों का टोला (स्व० बी०एन० पाण्डे, रोमिला थापर, रामशरण शर्मा, विपिन चन्द्र आदि) आज भी अर्जुन सिंह का संरक्षण पाकर वैसे ही अनर्थ की सृष्टि कर रहा है।

मैं एक बार पुनः यह स्पष्ट कर दूं कि आर्यसमाजी होने के नाते हमारा मंदिर से न राग है और न विराग। हमें मंदिर बनाने में कोई रुचि नहीं है, हमें वहां जाकर षोडशोपचार विधि से किसी प्रतिमा की पूजा तो करनी नहीं है। हां, ऐतिहासिक तथा गवेषक की दृष्टि से हमने पचासों मंदिरों को देखा है तथा वहां चलने वाले मिथ्याचारों तथा पाखण्डों का भी परिचय पाया है। स्पष्ट है कि हमारे नए नेता कट्टरपन्थी इस्लाम तथा विस्तारवादी ईसाइयत के प्रति अब नरम रवैया रखते हैं। एक उदाहरण तो अभी अभी सामने आया। स्वामी अग्निवेश जी ने ईरान की यात्रा की। पाठकों को याद दिला दूं कि कुछ वर्ष पहले तक ईरान, मिस्र तथा टर्की, ये तीन मुस्लिम देश ऐसे थे जो यूरोप की पाश्चात्य जीवन पद्धति से प्रभावित होकर उन्नत राष्ट्रों की पंक्ति में आ बैठे थे। टर्की के कमालपाशा ने तो सचमुच धार्मिक क्रान्ति की जब उसने इस्लाम तुर्की की राष्ट्रीयता से जोडा और अरबी की अपेक्षा तुर्की जबान को वरीयता दी। इधार ईरान के शाह ने मुसलमान होते हुए भी अपने देश की पुरानी आर्य विरासत को याद किया और स्वयं को आर्यों की सन्तान मान कर खुद को आर्य मिहिर (आर्यों का सूर्य) का दर्जा दिया। यह दूसरी बात है कि परिस्थितिवश कट्टरपन्थी मुसलमानों ने अताउल्ला खौमेनी के आह्वान पर ईरान की बादशाहत को ही खत्म नहीं किया, उसे एक कट्टरपन्थी, मजहबी राष्ट्र के रूप में बदल दिया। अब ईरान में ऐसे ही प्रतिक्रियावादी कट्टरपन्थी मुल्लाओं का बोलबाला है।

अयातुल्ला खौमेनी के कहने से ईरान में क्या क्या अत्याचार नहीं किए गए, यह आज की पीढी को शायद याद न हो। यही वह धर्मान्ध मौलवी था जिसने मुसलमान लेखक सलमान रूश्दी के उपन्यास सेटनिक वर्सेज लिखने पर लेखक का सिर कलम करने का फतवा जारी किया और इस सजा को अंजाम देने वाले के लिए लाखों रुपयों का इनाम घोषित किया। खौमेनी के आदेशों से कितने बेकसूर नागरिक मारे गए, कितनी महिलाओं को जबरन पर्दे की शरण लेनी पडी, उनके सामान्य नागरिक अधिकारों को छीन कर उन्हें पर्दे कर बीबी के रूप में रहने के लिए बाधित किया गया, यह क्रूर कहानी अभी पुरानी नहीं हुई है। उन अत्याचारों की कहानी दिल दहलाने वाली है।

तथापि 'आर्यभूमि' (क्या आज का ईरान सचमुच आर्यभूमि है ?) ईरान में जब स्वामी अग्निवेश गए तो एक सभा में उन्होंने मतान्ध, कट्टरपन्थी अयातुल्ला खौमेनी का गुणगान करने में अपना शब्दकोश को रिक्त कर दिया। (द्रष्टव्य – वैदिक सार्वदेशिक ६–१२ अप्रेल पृ० ६) स्वामी अग्निवेश ने ईरान की राज्य क्रान्ति (यह राज्यक्रान्ति थी या मात्र तख्ता पलट, वस्तुत यह तो ईरान को आधुनिकता की लहर से विमुख कर मध्यकालीन इस्लामी कट्टरवाद की ओर ले जाना था) का पुरोधा अयातुल्ला खौमेनी को बताया और उन्हें नेहरू तथा नासिर की पंक्ति में रखकर गुट निरपेक्ष राजनीति का अगुवा बताया। सवाल यह है कि नेहरू जैसा पन्थ निरपेक्ष नेता यदि ईरानी क्रान्ति का प्रत्यक्षदर्शी होता तो क्या वह इस धर्माधारित प्रतिगामी कदम का समर्थन करता ? सच तो यह है कि जब आपको धर्माधारित राष्ट्र ईरान का प्रशस्तिपाठ करना ही है तो पाकिस्तान तथा बंगला देश जैसे हमारे पडौसी राष्ट्रों की दुर्नीतियों का समर्थन करने या उन पर मौन साधने में आपको क्यों संकोच होगा? ये दोनों भी तो इस्लामी क्रान्ति के ध्वज वाहक हैं।

(क्रमशः)

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

विद् धातु से बना वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है। ज्ञान के बिना प्राणी कोई भी कर्म कर नहीं सकता। इसलिए परम पिता परमेश्वर ने सृष्टि की रचना पूर्व मनुष्यों में वेदरूपी ज्ञान का प्रकाश दे दिया है। सृष्टि पूर्व ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति विद्यमान था क्योंकि ये तीनों अमर और नित्य हैं। ईश्वर प्रदत्त वस्तु आवश्यकता से पूर्व आ जाती है। जैसे सूर्य, चन्द्र, ज्ञान, धरती, वायु एवं जल आदि। १,६७,२६,४६,१११ वर्ष (एक अरब सन्तान्वे करोड उन्तीस लाख उन्चास हजार एक सौ ग्यारह) पहले इस सृष्टि की रचना हुई। सृष्टि के प्रारम्भ में ही ईश्वर ने अंगिरा, आदित्य, अग्नि एवं वायु चार मुक्तात्माओं में ज्ञान (वेद) का प्रकाश कर दिया था।

वेद को श्रुति भी कहा जाता है जिसे श्रावण मास में श्रोता श्रवण कर ज्ञानमय हो जाता है और एक दूसरे को भी ज्ञानी बनाता है।

वेद ईश्वर प्रदत्त सृष्टि संचालन का संविधान है। जैसे शासक संविधान (कानून संहिता) के बिना शासन नहीं कर सकता उसी प्रकार सृष्टि संचालन के लिए वेद रूपी संविधान भी आवश्यक है। ईश्वर के इसी ज्ञान अथवा संविधान का नाम वेद है।

जर्मनी के महाविद्वान् मैक्समूलर ने दुनियां की लाइब्रेरी में वेद को ही सबसे पुरानी पुस्तक कहा है। यों तो कुरान, बाईबिल, इंजिल्स आदि अनेक पुस्तकें धर्मग्रन्थ के रूप में मान्य और ईश्वर प्रदत्त कहलाते हैं परन्तु उनकी मियाद मात्र ढ़ाई हजार साल की ही है। इससे पूर्व पांच हजार साल पहले महाभारत काल वैदिक था। सारे संसार में धृतराष्ट्र का चक्रवर्ती राज्य था। कुरुक्षेत्र में विश्व के अनेक राजाओं ने भाग लिया था। वे भिन्न-भिन्न भाषाओं में बोलते थे। वे वेदपाठी, ज्ञान-विज्ञान, धर्म, राजनीति, मानव के रहने सहने का तौर–तरीका पढ़ाई–लिखाई, गुरु–शिष्य व्यवहार, अतिथि सत्कार, माता–पिता की सेवा, नौका, विमान, शास्त्रास्त्र बनाना, चलाना, राजधर्म, गृहस्थधर्म, शादी-ब्याह, खेती करने की विद्या, मकान बनाने का नाना प्रकार की विधि, चिकित्सा की अद्भुत पद्धति के ज्ञानी थे जिसका साक्षात् प्रमाण 'चरक' और सुश्रुत आदि वैदिक ग्रंथ हैं। नौ लाख वर्ष पूर्व का रामायण काल भी इतिहास रूपी गवाह है। इसी प्रकार न्याय योग सांख्य, वेदान्त, वैशेषिक, मीमांसा, उपनिषदें, गणित, नृत्य, संगीत, खगोल आदि विद्याओं का विशाल भंडार ये वेद हैं। यों कहा जाए की चारों वेदों के बीस हजार मंत्रों में संसार का सारा ज्ञान भरा पड़ा है। उसकी तुलना में ये बीच की 'खुदायी' पुस्तकें करोड़वें हिस्से के बराबर भी नहीं हो सकते। ये पुस्तकें ऋषियों, मुनियों की कृति के सामने रद्दी के खाते में डालने के योग्य हैं, वे ईश्वर कृत कैसे हो सकते हैं ?

मनुष्य को जीवित रहने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की जरूरत है जो ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान के रूप में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में भरपूर समाहित है, उपलब्ध है। वेदों की भाषा संस्कृत नहीं अपितु देववाणी अर्थात् प्राकृत भाषा है। संस्कृत प्राकृत भाषा से और संसार की सभी भाषाएं संस्कृत से निकली हैं। वेदों का हर शब्द यौगिक है। रूढ़ नहीं।

वेदों में नाम, स्थान आदि जो मिलते हैं वे सभी जातिवाचक हैं, व्यक्तिवाचक नहीं अर्थात् गुणवाचक हैं। वेदों में न किसी देश का इतिहास है न भूगोल।

१. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में आवश्यकता से पूर्व आती है।

२. ईश्वरीय ज्ञान पूर्ण होता है, अधूरा नहीं।

३. ईश्वरीय ज्ञान अर्थात् वेद बुद्धिपूर्ण और तर्क संगत होता है।

४. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि नियमों और विज्ञान के अनुकूल होगा।

५. वेदों में किसी देश विशेष का इतिहास या भूगोल नहीं होता।

६. ईश्वरीय ज्ञान संसार के किसी भाषा विशेष में नहीं होता।

७. वेदों में सभी सत्य विद्याओं का ही समावेश होता है।

८. वेद ज्ञान सार्वकालिक और सार्वभौमिक होता है।

वेद ज्ञान ही आदि सृष्टि का ज्ञान है। वेद ही संसार की प्राचीनतम पुस्तक है।

सृष्टिकर्त्ता, ने सभी मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी प्रकार के साधन सृष्टि के आरम्भ में ही उपलब्ध करा दिए हैं। यदि बीच बीच में भी देने का नियम होता तो उनसे पहले वाले प्राणी उस लाभ से लाभान्वित नहीं हो पाते और तब यह ईश्वर का पक्षपात और अन्याय हो जाता जो ईश्वर कभी नहीं करता।

अन्ततः यह सिद्ध है कि वेद ही ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है। ईश्वर प्रदत्त वेदमयी, कल्याणमयी वाणी सदा, सर्वदा एवं सर्वथा सेवनीय है।

निवेदक

देवनारायण भारद्वाज, प्रधान **अयोध्या प्रसाद, मन्त्री**

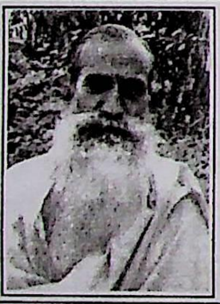
आर्यसमाज आनन्द बाजार दानापुर कैण्ट, पटना

साधुवाद

आर्यसमाज आनन्द बाजार दानापुर कैन्ट बिहार के तत्वावधान में श्रावणी के उपलक्ष्य में वेद प्रचार महोत्सव ६ अगस्त से १६ अगस्त तक आयोजित किया गया। प्रतिदिन विभिन्न परिवारों में भव्य यज्ञ एवं सत्संग के आयोजन करके सैकड़ों गैर-आर्यसमाजी लोगों को वैदिक विचारों से लाभान्वित किया गया। इसी महोत्सव के अवसर पर जारी एक कार्यक्रम विवरण में वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करते हुए यह सुन्दर एवं सारगर्भित लेख भी प्रचारित किया गया। इस पुनीत कार्य के लिए आर्यसमाज आनन्द बाजार के प्रधान श्री देवनारायण प्रसाद एवं मन्त्री श्री अयोध्या प्रसाद सहित समस्त अन्य पदाधिकारी तथा सभासद साधुवाद के पात्र है।

– **विमल वधावन आर्य**, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' एवं सत्यप्रिया जी ने वानप्रस्थ ग्रहण किया




पूज्य आचार्य भगवान देव 'चैतन्य' जी एवं माता सत्यप्रिया जी ने संकल्प लिया था कि आचार्य जी के सेवानिवृत्त होते ही वे वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करेंगे। अपने उस संकल्प को पूर्ण करते हुए परमात्मा की अपार कृपा से हमारे पूज्य आचार्य जी तथा माता जी ने ३१ जुलाई, २००६ को आचार्य जी के केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी के पद की सरकारी सेवा से सेवा-निवृत्त होकर अपना शेष जीवन पूर्णतया साधना, स्वाध्याय तथा वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार और संसार का उपकार करने के लिए समर्पित करते हुए १ अगस्त, २००६ को वानप्रस्थ ग्रहण कर लिया है। पूज्य आचार्य जी अब 'महात्मा चैतन्य मुनि जी' तथा माता सत्यप्रिया जी 'माता सत्यप्रिया यति' के नाम से जाने जाएंगे। उल्लेखनीय है कि आचार्य जी एक प्रतिष्ठित साहित्यकार और हिन्दी सेवी तो हैं ही मगर इसके साथ साथ आर्यजगत् के अत्यधिक लोकप्रिय सैद्धान्तिक विद्वान् एवं लेखक भी हैं। अब तक इनके लगभग चौबीस साहित्यिक एवं आध्यात्मिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। आचार्य जो बीसियों राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्होंने वर्षो 'आर्य वन्दना' पत्रिका का सम्पादन किया तथा अनेक पत्रिकाओं में सम्पादन–सहयोग किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के ये अन्तरंग सदस्य, धर्मार्य सभा के सदस्य तथा प्रतिष्ठित सदस्य रहे हैं। आर्यसमाज और आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न पदों पर रहकर चैतन्य दम्पत्ति ने अभूतपूर्व सेवा की है। वैदिक प्रवक्ता के रूप में इन्होंने नेपाल, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, जम्मू कश्मीर, दिल्ली, चण्डीगढ़, आन्ध्रप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में मानव मूल्यों की स्थापना हेतु सफलतम प्रचार कार्य किया है। हाल ही में इन्होंने अपनी भूमि समर्पित करके 'वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दायनन्द धाम)' की स्थापना की है तथा आश्रम की ओर से एक मासिक 'वैदिक वशिष्ठ पत्रिका' भी प्रकाशित की जा रही है।

– अखिलेश भारतीय,
प्रधान सम्पादक :
वैदिक वशिष्ठ पत्रिका
८१/एस–४, सुन्दरनगर, (हि०प्र०)

शोक समाचार

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० आर्येन्द्र कुमार आर्य, खेतुपुरा (एटा) की पूज्य माताजी श्रीमती रामकुंवरि देवी आर्या का देहावसान ३ जुलाई, २००६ सोमवार को हो गया, वे ६५ वर्ष की थीं। वे वैदिक सिद्धान्तों की मर्मज्ञ एवं निष्ठावान कार्यकर्त्री थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों के अनुसार उन्होंने अपनी सन्तानों का निर्माण किया था।

मुम्बई काकड़वाडी आर्यसमाज के आचार्य पं० नीरज कुमार द्वारा १४ जुलाई २००६ को उनका शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया गया, जिसमें एटा, बदायूं, बुलंदशहर के अनेक आर्य विद्वान् उपस्थित थे।

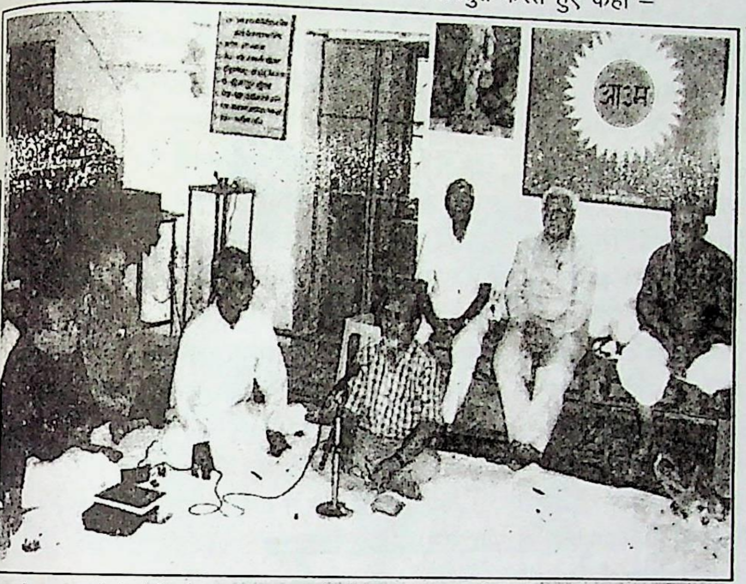
२३ जुलाई, २००६ को आर्यसमाज एटा में एक शोक सभा में वक्ताओं ने उनके कृतित्व को स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

God won't ask the square footage of your house, He'll ask how many people you welcomed into your home.

प्रेरक काव्य संध्या

योगेश्वर श्री कृष्ण का जन्म दिन सोल्लास सम्पन्न

आर्यसमाज भीमगंज मण्डी, कोटा जं० सभागार में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम प्रातः ८.३० से वैदिक यज्ञ मन्त्री श्री प्रेमनाथ कौशल के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम संयोजक श्री राजेन्द्र आर्य ने बताया कि यज्ञ के पश्चात् विभिन्न वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के चरित्र पर प्रकाश डाला तथा श्री गेदा लाल शर्मा, राजेन्द्र आर्य व योगेन्द्र आर्य तथा दो बालकों अभिषेक व



अलंकृत आर्य ने वैदिक भजन प्रस्तुत किए।

इसी क्रम में सायं ४ बजे 'स्वतन्त्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' तथा आर्य समाज के पूर्व प्रधान व प्रसिद्ध कवि श्री रमेश चन्द्र गुप्ता को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से 'वाग्विदांवर' पुरस्कार से सम्मानित करने के उपलक्ष्य में 'काव्य–संध्या' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री राजेन्द्र आर्य ने किया व सर्वप्रथम आर्यसमाज के प्रधान श्री रामकुमार नांगल, व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० दया कृष्ण विजय व डॉ० नगेन्द्र सक्सेना ने शाल व श्रीफल भेंटकर श्री रमेश चन्द्र गुप्ता का सम्मान किया व संयोजक श्री राजेन्द्र आर्य ने गुप्ता जी के जीवन पर आधारित काव्य मय सम्मान-पत्र पढ़ने के उपरान्त गुप्ता जी को भेंट किया।

इसके पश्चात् काव्य गोष्ठी श्री वीरेन्द्र विद्यार्थी के संचालन में प्रारम्भ हुई। जिसमें कावे महेन्द्र कुमार शर्मा ने आध्यात्मिक रचना प्रस्तुत करते हुए कहा –

'जीवन एक महाभारत है,
इसमें रामायण को ढूंढो।
चाहों की उर्वशी जहां है,
मन का इन्द्र वहीं पर होगा।'

प्रसिद्ध गजल गायक शरद तैलंग ने जब अपने मधुर स्वर में गाया तो श्रोता भावविभोर होकर ताली बजाने लगे –

'अपनी बातों में असर पैदा कर।
तू समन्दर सा जिगर पैदा कर।।'
बात इकतरफा न बनती है कभी
जो इधर है वह उधर पैदा कर।
मत भरोसे पे रह तू सूरज के
तू नयी रोज सहर पैदा कर।।'

आर्यसमाज के सदस्य व प्रहरी कवि योगेन्द्र आर्य ने परोपकार की भावना से परिपूर्ण कविता सुनाई –

'दनुजता के कदमों को छोटा करो तुम।
दलित दीन के कष्ट, बढ़कर हरो तुम।।'

आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द से प्रभावित प्रसिद्ध कवि रामू भैया ने कहा –

'चाहता हूं यार मैं, भी सर हो जाऊं।
तृप्त होकर भी स्वयं भरपूर हो जाऊं।'

भगवत सिंह 'मयंक' ने यथार्थ के धरातल पर आते हुए सुनाया –

'रहा निरंतर बाधाओं का,
निधड़क आना जाना।
जब भी किया भरोसा हमने,
तभी पड़ा पछताना।।'

आर्यसमाज के सम्मानित सदस्य व कविता के सशक्त हस्ताक्षर श्री इन्द्र बिहारी सक्सेना ने प्रस्तुति दी –

'कान्हा युग में आपके, मात्र एक था कंस।
अब तो यहां अनेक हैं, घूमे बनकर हंस।।
टूट रहे शनैः शनैः रिश्ते और मन।
अन्तहीन लगती है, यह थकन चुभन।।
दिन दहाडे बेच रहे स्वाभिमान को,
जेब में रखे पवित्र संविधान को।
व्यंजनों के नाम पर परोसते घुटन ....।

गजल गायक आर० सी० शर्मा ने मधुर कण्ठ से प्रस्तुति दी –

'आखिरी वक्त में होगा, यही कफन मेरा।
अब मेरे साथ ही जाएगा, यार फन मेरा।
मुल्क की शान में, अच्छी सी गजल पढ़ देना।
क्या पता फिर मिले न मिले वतन मेरा।।

गोष्ठी संचालक वीरेन्द्र विद्यार्थी ने जोश दिलाते हुए गया –

'कल को क्या रोते हो साथी,
वर्तमान में जीना सीखो।
इतिहासों के सीनों पर तुम,
अपनी गाथा सीना सीखो।
रोप दो अंगद पांव वहां पर,
जिसकी मन में ठानी है।
खुद्दारी का खून नहीं,
वह खून नहीं है पानी है।'

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० नगेन्द्र सक्सेना ने योगेश्वर श्रीकृष्ण के विषय में कहा –

'गीता का अद्भुत ज्ञान दिया,
धर्म का मर्म स्थापित किया।
शठम् प्रति शाठ्यम सिखा दिया,
योगेश्वर कहलाए घर घोर।।'

सम्मानित कवि व आर्यसनाज के पूर्व प्रधान रमेश चन्द्र गुप्ता जी मन की भावना व्यक्त करते हुए गाया –

'ध्येय उन्मुख हो सदा जो,
उस चरण को नमन मेरा।
नीड के निर्माण में रत,
बिहग तृण को नमन मेरा।

अध्यक्ष व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० दया कृष्ण विजय ने भी योगेश्वर श्रीकृष्ण के विषय में ही प्रस्तुति देते हुए कहा –

'कौन कर रहा मन के
बंशी वट पर मुरली गायन।
राग गन्ध से दमक उठा है,
श्वासों का वृन्दावन।।'

अन्त में प्रधान राम कुमार नागल ने सभी अतिथियों व श्रोताओं को धन्यवाद दिया व शान्ति पाठ तथा जयघोष के साथ गोष्ठी का समापन हुआ।

– राजेन्द्र कुमार आर्य,
उपमन्त्री

अजमेर में भव्य ऋषि मेला

आयोजन तिथि १७, २८ व २६ अक्टूबर, २००६

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आपके सहयोग से दीपावली के शुभ अवसर पर पुनीत एवं अविस्मरणीय १२२वां ऋषि बलिदान समारोह ऋषि के अवशेषों की पुण्य स्थली आना सागर के रमणीय सुरम्य तट पर स्थित ऋषि उद्यान अजमेर में दिनांक २७, २८ व २६ अक्तूबर २००६ को अपनी परम्परागत भव्यता से आयोजित किया जा रहा है।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ – ऋषि मेले के अवसर पर सनातन वैदिक परम्परा के अनुरूप ऋग्वेद पारायण महायज्ञ २५ अक्तूबर, २००६ से प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति दिनांक २६ अक्तूबर २००६ को प्रातः १० बजे होगी।

वेद गोष्ठी – प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुरूप इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली, अनुसंधान केन्द्र परोपकारिणी सभा एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय उज्जैन के संयुक्त प्रयास से सम्पन्न होने वाली वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के ख्यात नाम लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् अपने शोध पूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेद गोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है **'वेदों में राजनीतिक चिन्तन'** जो विद्वान् गोष्ठी में शोध पत्र प्रेषित करना चाहते हैं वे गोष्ठी संयोजक से सम्पर्क कर सकते हैं।

भव्य कार्यक्रम – इस अवसर पर देश भक्त कु० चांदकरण शारदा वाद विवाद प्रतियोगिता तथा आर्ष गुरुकुल के पवित्र एवं मेधावी ब्रह्मचारियों तथा आर्यवीरों द्वारा अनेक आकर्षक कार्यक्रमों का प्रदर्शन भी किया जाएगा।

सभी आगत अतिथियों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था सभा की ओर से निःशुल्क होगी। अजयमेरू नगरी (अजमेर) में इस समय शीत् ऋतु की शीतलता आरम्भ हो जाती है। अतः कृपया शीत से सुरक्षा हेतु ऋतु अनुकूल वस्त्र एवं उपस्तरण (बिस्तर) साथ लाने का कष्ट करें। जो आगंतुक अतिथि अपनी आवासीय व्यवस्था सुविधा के दृष्टिकोण से होटल में कराना चाहें कृपया वे अपनी आवश्यकताएं अवगत कराते हुए होटल का किराया अग्रिम नकद/चैक/ड्रॉफ्ट/सभा के नाम से भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा सकते हैं।

यजमानों हेतु सुविधा – पावन यज्ञ में यजमान के रूप में धर्मलाभ प्राप्त करने के इच्छुक सज्जन यज्ञ के व्यवस्थापक से संपर्क कर दिनांक व समय अंकित करा लें ताकि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो।

साधना स्वाध्याय सेवा एवं योग द्वारा रोग निवारण शिविर – उच्चस्तरीय साधना के मार्ग दर्शन हेतु पवित्र साधकों हेतु साधना स्वाध्याय एवं सेवा शिविर मेले से पूर्व १५ से २३ अक्तूबर २००६ तक आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप भाग लेकर अपने जीवन में ऋषियों के अनुकूल एक निश्चित आध्यात्मिक दिशा प्राप्त कर सकते हैं।

स्वामी विष्वड्जी द्वारा साधकों को योग प्रशिक्षण द्वारा रोगों के निवारण हेतु उपाय भी बताए जाएंगे।

शेष पृष्ठ ६ पर

ईश्वर की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं

– ओम प्रकाश आर्य

ईश्वर के नाम पर जितनी भ्रान्ति है उतनी किसी के बारे में नहीं है क्योंकि वह इन भौतिक इन्द्रियों का विषय नहीं है। वह इन आंखों से नहीं देखा जा सकता। उसके बारे में हमारे आप्त ऋषि शास्त्रों और उपनिषदों में क्या कहते है ? वेद क्या कहता है ? यही ध्यान देने योग्य है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और ऋषि हैं आप्त। उनके उपदेश प्रामाणिक हैं। तो आइए, ईश्वर की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताओं पर एक दृष्टि डालें। उसके ऊपर प्रकाश डालते हुए यजुर्वेद कहता है–

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रण- मस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्य-
दच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। ४०/८

अर्थात् 'वह ब्रह्म (ईश्वर) शीघ्रकारी, सर्वशक्तिमान, स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर से रहित, छिद्ररहित, नाड़ी आदि के बन्धन से रहित, सदा पवित्र, जो पाप करनेवाला कभी नहीं होता, जो सब ओर से व्याप्त है, जो सर्वज्ञ, सब जीवों के मनों की वृत्तियों को जानने वाला, दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला, अनादि स्वरूप, जन्म-मरण-बुद्धि से रहित, सनातन अनादि स्वरूप, उत्पत्ति और विनाश-रहित, प्रजाओं के लिए वेदद्वारा सब पदार्थों को दिशेषकर बनाता है, वही परमेश्वर उपासना करने योग्य है।' इस मंत्र में ईश्वर की तरह विशेषताओं का उल्लेख है। ये विशेषताएं उसी में घट सकती हैं किसी शरीरधारी में नहीं। इनका चिन्तन-मनन करते हुए हमें उसके स्वरूप पर विचार करना चाहिए। वह ईश्वर कैसा है ? उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए श्वेताश्वतरोपनिषद् कहती है –

अध्यक्ष

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलों निर्गुणश्च।।

अर्थात् वह ईश्वर एक है परन्तु अनेक भूतों में गूढ़ (छेपा हुआ) है, सर्वव्यापी है, सब भूतों (प्राणियों) के अन्तरात्मा तक गया हुआ है। 'कर्म' का वह अध्यक्ष है, वह सब भूतों में है, परन्तु सब भूत उसमें हैं – वह सब भूतों का अधिवास (निवास) है। वह साक्षी है, चेतन है, केवल है, निर्गुण (सत्व, रज, तम से रहित) है।' उपनिषद् के ऋषि ने यहां उसकी दस विशेषताओं का उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि एक ही ईश्वर समस्त जड़–चेतन के अन्दर व्याप्त हो रहा है। वह अति सूक्ष्म है पर चेतन है और सबका स्वामी है। उसकी अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

बिना पावों के गति करता है

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स श्रृणोंत्यकर्णः।
सवेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्त तमाहुरग्रयं पुरुषं महान्तम्।।

श्वेता० ४/१६

अर्थात् 'वह परमेश्वर बिना पांवों के शीघ्र गति करता है, बिना हाथों के झट से पकड लेता है, बिना आंखों के देखता, बिना कानों के सुनता है। जानने योग्य जो कुछ भी है उसे तो वह जानता है परन्तु उसे जाननेवाला कोई नहीं। उसी को आदिम महान् पुरुष कहते हैं।' ऋषि ने यहां उसकी नौ विशेषताओं का उल्लेख किया है। इन पर चिन्तन करने से ज्ञात होता है कि ईश्वर निराकार है जो बिना हाथ-पांव-आंख-कान के सब कुछ करने व देखने–सुनने में समर्थ है। ये विशेषताएं किसी भी शरीरधारी में नहीं घट सकती। उसकी अन्य विशेषताओं का स्पष्टीकरण करते हुए श्वेताश्वतरोपनिषद् कहती है –

अति सूक्ष्म - अणु से अणु

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मा निहितोऽस्य जन्तोः।
तमक्रतुं पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमीशम्।।

अर्थात् 'वह ईश्वर अणु से अणु है, महान् से महान् है, वह जीवमात्र की हृदय रूपी गुफा में छिपा हुआ है। वह कर्म नहीं करता, 'अक्रतु' है। उस परमेश्वर की महिमा को वीतशोक भक्तगण उस विधाता के प्रसाद से ही उसकी कृपा से ही प्राप्त करते हैं।' ऋषि कहते हैं कि वह ईश्वर अति सूक्ष्म है। समस्त प्राणिजगत् के हृदय में समाया हुआ है। भला वह सूक्ष्म ईश्वर साकार कैसे हो सकता है ? किसी स्थान विशेष पर ही कैसे रह सकता है ? वह तो सर्वत्र है। सब कुछ देख रहा है। उपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

हजारों अंगों वाला

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽव्यतिष्ठ- द्दशाङ्गुलम्।। श्वेता०।।

अर्थात् 'वह पुरुष (परमेश्वर) सहस्रों सिरों वाला, सहस्रों आंखों वाला, सहस्रों पांवों वाला है। वह हाथ से ब्रह्माण्ड को सब तरफ से छुए हुए है, फिर भी उसकी दसों अंगुलियां दूर खडी हैं। घेरने से तो दसों अंगुलियां भर जानी चाहिए, परन्तु यह ब्रह्माण्ड उसके लिए इतना तुच्छ है कि इसे घेरकर भी उसके दोनों हाथों की दसों अंगुलियां मानो खाली रह जाती हैं।' ऋषि के कहने का आशय यह है कि वह परमेश्वर सर्वव्यापक है, सारा ब्रह्मांड ही उसमें समाहित है। इसी सर्वव्यापकता के कारण उसे हजारों सिरोंवाला, हजारों आंखोंवाला और हजारों पांवोंवाला कहा है।

आगे उपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

उसके अंग सब दिशाओं में हैं

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽ– क्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।। श्वेता०।।

अर्थात् ' उस परमेश्वर के सब ओर हाथ पैर हैं, सब ओर आंख, सिर, मुख है, सब ओर कान हैं, संसार में सबको घेरकर वह खड़ा है – फिर कहो कौन उससे बचकर किधर से निकल जाएगा ?' इस प्रकार कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां कि ईश्वर विद्यमान न हो। उसकी दृष्टि सब ओर है। उससे कोई नहीं बच सकता। उसकी अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उपनिषद् के ऋषि कहते हैं

उसे सत्य और तप से जाना जा सकता है

तिलेषु तैलं दधिनीव सर्पिरापः स्रोतः स्वरणीषुचाग्निः।
एवमात्मात्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति।।

।। श्वेता० २/१५

अर्थातृ 'जैसे तिलों में तेल, दही में घृत, स्रोतों में जल, अरणियों (लकड़ी) में अग्नि रहती है वैसे ही जीवात्मा में परमात्मा निहित है। वहीं उसका ग्रहण होता है परन्तु वह दीखता सत्य और तप की रगड़ से है।' ईश्वर सूक्ष्म रूप में प्रत्येक पदार्थ के अन्दर विद्यमान है। वह सत्य और तप से जाना जाता है। सारा संसार ही उससे व्याप्त है। उपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

सब तरफ बसा हुआ है

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।। ईश०।।

अर्थात् 'इस जगती में जो जगत् है वह ईश द्वारा बसा हुआ है।' चिन्तन करने पर ज्ञात होगा कि यह संसार प्रभुमय है। वह कण-कण में से देख रहा है। उसकी कोई मूर्ति नहीं होती। ऋषि कहते हैं –

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत्।
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।। श्वेता०।।

अर्थात् 'उस ईश्वर को कोई ऊपर से, इधर-उधर से, बीच से नहीं पकड़ सकता। जिसका नाम 'महद् यश' है, उसकी प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है। उसकी तुलना किसी वस्तु से नहीं की जा सकती। अतएव उसकी कोई मूर्ति नहीं है। उसकी अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए योगदर्शन के ऋषि कहते हैं –

'क्लेशकर्म विपाकाशर्यरपरामृष्टः पुरुषः विशेषः ईश्वरः।

अर्थात् 'क्लेश, कर्म, विपाक और आशयों से अछूता विशेष चेतन तत्त्व ईश्वर है।'

'तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्।'

अर्थात् 'उस ईश्वर में सर्वोत्कृष्ट सर्वज्ञता का बीजमूल विद्यमान रहता है।'

'पूर्वेषामपि गुः+ः कालेनानवच्छेदात्।'

अर्थात् 'वह पहलों का गुरु है, उपदेष्टा है, काल के द्वारा सीमित नहीं है।'

इस प्रकार वह ईश्वर अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश नामक पांचों क्लेशों से पृथक है। वह मनुष्य के समान पाप-पुण्य जैसा कार्य नहीं करता। उसमें कर्मों का विपाक नहीं होता, क्योंकि कर्मफल विपाक के रूप में जीवधारियों को प्राप्त होते हैं। कर्मफल भोगने हेतु संस्कार न होने के कारण उसमें आशय अर्थात् वासना नहीं होती। वह इनसे अछूता है। वह सर्वज्ञ है। भूत, भविष्यत्, वर्तमान सब कालों को यथावत् जानता है। प्राणियों के मन की बातों को भी जान लेता है। वह सबका गुरु है क्योंकि वेदज्ञान के रूप में सबसे पहले वही मानव को ज्ञान प्रदान करता है। इसलिए वह पहला गुरु है। वह समय की सीमा में बंधा हुआ नहीं है। इसी कारण उसको अविनाशी व अनश्वर कहा गया है।

ऐसी अनन्त विशेषताओं वाले उस एक ईश्वर की उपासना करनी चाहिए, अन्य की नहीं।

– आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)

पृष्ठ ५ का शेष

अजमेर में भव्य...

आत्मीय निवेदन – सभी ऋषि भक्तों एवं धर्म प्रेमी महानुभावों से सभा का विनम्र निवेदन है कि इस धार्मिक आयोजन में अधिकाधिक संख्या में पधारकर इस समारोह की भव्यता बढ़ाने में सहयोगी बनकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

यह समारोह आपका अपना समारोह है एवं आयोजित कार्यक्रम भव्य व्यवस्थित एवं आकर्षक हो इस दृष्टिकोण से उदारमन से सभा को आर्थिक सहयोग प्रदान करना आपका नैतिक दायित्व है।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा ८० जी के अंतर्गत दिए गए प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा।

विदेश में निवास कर रहे धर्म प्रेमी सज्जन मुक्त हस्त से स्वदेश में होने वाले इस विशाल समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएं। सभा को भारत शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि प्राप्त करने की छूट प्राप्त है।

धर्म प्रेमी सज्जन इस आयोजन हेतु आर्थिक सहयोग मनीऑर्डर/नगद/बैंक ड्रॉफ्ट/चैक के माध्यम से सभा को भेज सकते हैं।

आपका सहयोग हमारा सम्बल है। आपकी उपस्थिति एवं आशीर्वाद ही आयोजन की सफलता का स्रोत है।

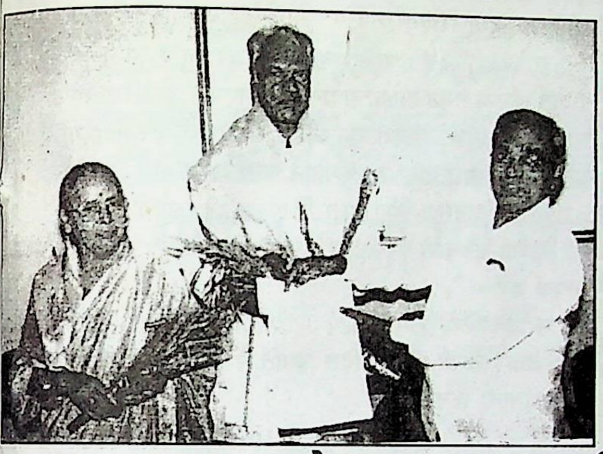
– गजानन्द आर्य, प्रधान
डॉ० धर्मवीर, मन्त्री

महाराष्ट्र राज्य महाकवि कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार से सम्मानित मध्य विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० सत्यवीर शास्त्री

अमरावती। हर साल श्रावण पौर्णिमा को महाराष्ट्र शासन द्वारा 'संस्कृत दिन' मनाया जाता है। इसी दिन संस्कृत में विशेष कार्य करने वाले महाराष्ट्र के सात और अन्य प्रान्त के एक ऐसे आठ विद्वानों को 'पण्डित की उपाधि एवं महाराष्ट्र राज्य महाकवि कालिदास संस्कृत साधना, पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष यह बहुमोल पुरस्कार अमरावती के संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित वेदशास्त्रों के ज्ञाता आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता पं० सत्यवीर शास्त्री को प्राप्त हुआ है।

इस उपलक्ष्य में पं० सत्यवीर शास्त्री इनका सरकार की ओर से भव्य रूप से सहसंचालक, उच्च शिक्षण अमरावती विभाग, अमरावती के प्रशस्त हॉल में श्रावण पौर्णिमा को सपत्नीक स्वागत किया गया और उनको भी डॉ० वी०जी० सोब्रागडे, सहसंचालक उच्च शिक्षण अमरावती के द्वारा, शाल, श्रीफल अभिनन्दन पत्र एवं पुरस्कार की राशि पच्चीस हजार रुपयों का धनाकर्ष प्रदान किया गया।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षा विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान विदर्भ प्रदेश की अध्यक्षा पूर्व प्राचार्या डॉ० माणिक पाटील थी। प्रमुख अतिथि के रूप में अमरावती विद्यापीठ के पूर्व कुल गुरु डां० जामोदे और शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था के रसायन शास्त्र के प्राचार्य डॉ० एम०ए० चिंचोककर, श्री तपेशमित्र प्रधान आर्यसमाज अमरावती एवं नगर के विद्वान् गणमान्य उपस्थित थे।



वेद मंत्रों से कार्यक्रम का आरम्भ होकर शांतिपाठ के साथ समाप्ति की गई। कार्यसंचालन श्री सुभाष सहारे एम०ए० ने किया। पश्चात् सरकार की ओर से सबके लिए अल्पाहार का प्रबंध किया गया था।

पुरस्कार प्राप्त होने से आर्यजगत् में उत्साह की लहर उठी है और छोटे आर्य कार्यकर्ता से लेकर आर्यजगत् के नेता भी टेलीफोन द्वारा पं० सत्यवीर शास्त्री का अभिनन्दन कर रहे हैं।

– पं० रमेश घोडसकर आर्य
प्रधान, आर्यसमाज गाडगेनमा
अमरावती – ४४४६०३

जीवन प्रभात पांडिचेरी के बच्चें पुरस्कृत

जीवन प्रभात – पांडिचेरी के बच्चे खेल कूद प्रतियोगिता में अदम्य उत्साह एवं शक्ति का प्रदर्शन करते हुए अनेक मेडल व पुरस्कारों से सम्मानित हुए

दिनांक २० अगस्त २००६ को महावीर नगर, लासपेट – पांडिचेरी – ८ में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें अनेक विद्यालयों के बच्चों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में जीवन प्रभात – पांडिचेरी के बच्चों को भी आमंत्रित किया गया। इसमें हमारे बच्चों ने बड़े उत्साह व पराक्रम का परिचय देते हुए अनेक खेलों में पुरुस्कार जीते। बच्चों के नाम व खेलों की सूची निम्न प्रकार है –

१. सूर्या : प्रथम पुरस्कार – बनंफन।
२. शिवप्रिया : द्वितीय पुरस्कार – लेमन स्पून – बालिका
३. सतीश कुमार : द्वितीय पुरस्कार – लेमन स्पून – बालक।
४. भाव्या पाण्डेय : द्वितीय पुरस्कार – १०० मीटर रेस – बालिका।
५. श्रवनन : द्वतीय पुरस्कार – १०० मीटर रेस – बालक।

प्रतियोगिता के अन्त में अनेक संस्थाओं ने मिलकर पुरस्कार वितरण का आयोजन किया। उस आयोजन में अनेक गणमान्य व्यक्तियों, नेताओं और मेयर को बुलाया गया। हमारे जीवन प्रभात के स्वामी आर्य तपस्वी जी को वे सभी स्वयं निमन्त्रण देने के लिए आए और मंच पर सम्मानजनक स्थान दिया उनका आशीष वचन भाषण काफी समय तक दूरदर्शन के लिए रिकार्ड किया व पुरस्कार भी उनके हाथों से दिलवाया।

– प्रबन्धक

God won't ask what kind of car you drove. He'll ask how many people you drove who didn't have transportation.

पृष्ठ १ का शेष

महासम्मेलन का कार्य संगठनात्मक एकता होता है विभाजन नहीं

श्री देवरत्न आर्य की यह हरकत झारखण्ड के लोगों ने स्वीकार नहीं की। न्याय सभा को इसी लिए उनका यह पत्र भी रद्द घोषित करना पड़ा।

इसी महासम्मेलन को लक्ष्य रखकर हिमाचल सभा में भी विघटन के प्रयास प्रारम्भ किए गए थे। जिनका न्याय सभा ने निर्णय किया और परिणामतः ऐसी विकृत मानसिकता वाले विघटनकारी कार्यों के लिए श्री देवरत्न को प्रधान पद से हटाने का आदेश भी न्याय सभा को देना पड़ा।

परन्तु प्रधान पद से हटकर भी श्री देवरत्न आर्य को इन गुटबाज लोगों ने आज तक अपने विघटन आंदोलन में महासम्मेलन के नाम पर जोडे रखा है।

लोभ की पराकाष्ठा देखिए। हो सकता है कभी समस्या सुलझ जाए। केवल मूल सार्वदेशिक सभा के नाते हमें कार्य करने का अधिकार न्याय प्रक्रिया से मिल जाए। इन सब बातों पर तीसरे गुट ने विचार मन्थन किया और महासम्मेलन के नाम पर एकत्रित धन बैंक में **"आर्य महासम्मेलन २००६"** के नाम पर खाता खोल कर उसमें जमा किया जाने लगा। क्या "आर्य महासम्मेलन २००६" कोई नई संस्था बनी है ? अगर सार्वदेशिक सभा के नाम पर महासम्मेलन करना ही था और तीसरा गुट बनाना ही था तो खाता सार्वदेशिक सभा के नाम पर खोलने में क्या एतराज था ? मन तो सबसे बड़ा दर्पण है। इस गुट प्रबन्धकों का मन जानता है कि गलत काम तो गलत ही है।

परन्तु दुख यह है कि कुछ प्रान्तीय सभाओं के अधिकारी तथा कुछ प्रतिष्ठित आर्यसमाजी भी इस खेल को नहीं समझ पाए कि **"आर्य महासम्मेलन २००६"** किस दृष्टि से सार्वदेशिक सभा या दिल्ली सभा के अन्तर्गत एक संस्था हो सकती है। यह मात्र एक व्यक्तिगत खाता है। महासम्मेलन की यह दूसरी उपलब्धि है।

महासम्मेलन की तीसरी उपलब्धि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति पद होगा।

गर्त में पड़े आर्य समाज को बाहर निकालने का कोई प्रयत्न नहीं अपितु गर्त में पड़े पड़े कीचड़ को ही जीवनदायिनी औषधि समझ बैठे हैं ये नादान आर्य। एक पवित्र मन से चल रहे संघर्ष को ठेस पहुंचाते हुए इन गुट प्रबन्धकों ने न्याय प्रक्रिया में भी दखल दे मारा। पहले केवल अग्निवेश गुट प्रयास करता था कि लम्बी तारीख पड़े। अब यह महासम्मेलन गुट भी अदालत से गुहार कर रहा है कि अभी निर्णय मत दो पहले तीसरे गुट को मान्यता दो ताकि हम सम्मेलन निर्विघ्न होकर कर सके। हमारे आय–व्यय को कोई देख ही न सके। निर्णय की अभी कोई जल्दी नहीं है।

इन परिस्थितियों में महासम्मेलन गुट की यह चौथी उपलब्धि है कि मुकदमें की अगली तिथि १७ नवम्बर हो गई अर्थात महासम्मेलन से पहले निर्णय न हो और उछल-कूद, खाने-पीने और मौज उडाने का दौर चलता रहे।

महासम्मेलन हमने भी २००२ में हरिद्वार में किया था। २००१ में मुम्बई महासम्मेलन के लिए आर्यों को आमन्त्रण भी **सार्वदेशिक** पत्रिका के माध्यम से ही जारी हुआ था। जिसके लिए मुझे किसी प्रान्त में जाने की जरूरत नहीं पड़ी। आर्यों का समागम तो ऋषि भक्ति से आर्यसमाज के नाम पर खिचा चला आता है। परन्तु आज प्रान्त-प्रान्त की टक्करे मारने पर भी कहीं १० व्यक्ति तो कहीं १५ व्यक्ति मजबूरी में इस महाहसम्मेलन गुट से बात करने को तैयार होते हैं तो वो भी केवल ऋषि भक्ति के वशीभूत। जबरदस्ती प्रान्तों के द्वार खटखटा कर या किसी विशेष व्यक्ति के प्रभाव से आर्यों का समागम बन जाना इस बात का प्रतीक नहीं है कि महर्षि के निर्देशों के अनुसार एक ऐसे आर्यसमाज का गठन हो गया जहां मानव मात्र के लिए द्वार खुले हो।

यह महासम्मेलन संगठनात्मक विध्वंस का इतिहास लिख चुका है।

आइए ! सब मिलकर इस दुर्भाग्यशाली इतिहास के मूक गवाह बन कर तमाशा देखे। अगर यह वाक्य बुरा लगता हो तो विकल्प है – महासम्मेलन गुट के लिए यथासम्भव शुभ प्रेरणाएं दान स्वरूप इन्हें प्रदान करें या इस दुर्भाग्यशाली इतिहास से स्वयं को दूर रखे।

स्वामी रामदेव जी आज के युग में महर्षि के एक महान् अनुयायी के रूप में समझे जा रहे हैं। यदि उनके अन्दर की ऋषि भक्ति उन्हें भी इस दुर्भाग्यशाली इतिहास के दौर में एक आर्यसमाज उद्धारक बनने की प्रेरणा दे पाए तो सम्भव है कि अन्धकारमय गर्त में पड़े आर्यसमाज को कोई प्रकाश की किरण प्राप्त हो जाए। शायद स्वामी दीक्षानन्द जी की टिप्पणी और महर्षि दयानन्द के उपरोक्त निर्देश सबको एक ऐसा मार्ग पुनः दे पाए जिसमें प्रत्येक आर्य नर-नारी, बाल-वृद्ध केवल एक मजबूत सुदृढ़ और अविभाजित आर्यसमाज के साथ मिलकर कोई आचरण कर पाए।

महासम्मेलन के बाद यह विघटन प्रक्रिया सम्भवतः एक नया दौर प्रारम्भ करेगी। समस्त प्रान्तों के अधिकारियों को इस षडयन्त्र को समझना चाहिए, नहीं तो हाथ मलने के अतिरिक्त कुछ शेष न बचेगा। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि समस्त प्रान्तीय सभाओं के प्रमुख अधिकारियों को एक गम्भीर चिन्तनशाला में बैठ कर संस्थागत भविष्य के निर्माण के लिए कोई सर्वमान्य मार्ग निकालना चाहिए। समूचे आर्य जगत में कोई एक या दो निष्पक्ष व्यक्ति तो ढूढ़ें ही जा सकते हैं जिन पर सबको विश्वास हो जिन पर वित्तीय या सैद्धान्तिक अनियमितताओं तथा गुटबाजी का आरोप न हो।

– विमल वधावन आर्य, मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 . सार्वदेशिक साप्ताहिक 17-09-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 14/15-09-2006

वेद व्याख्या को महर्षि दयानन्द का योगदान

डॉ० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति के तत्वाधान में आयोजित वैदिक व्याख्यान माला में ११ सितम्बर (सोमवार) को डॉ० मुहम्मद इसराथल खां द्वारा व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय था – 'वेद व्याख्या को महर्षि दयानन्द का योगदान'। यह व्याख्यान दीनदयाल उपाध्याय कालेज कर्मपुरा, दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्तकालयाध्यक्ष (12/99)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
(उत्तरांचल)
जिला-हरिद्वार

गाजियाबाद का जनपदीय आर्य सम्मेलन ६, ७, ८ अक्टूबर को

गाजियावाद आर्य उप–प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में जनपदीय आर्य महासम्मेलन ६, ७, ८ अक्टूबर को सिहानी गांव (दिल्ली मेरठ रोड) पर आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में पांडिचेरी से श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जय नारायण अरूण तथा कई अन्य पदाधिकारी शामिल होंगे। वैदिक विद्वानों, प्रचारकों तथा भजनोपदेशकों द्वारा वैदिक विचारों का मन्थन विभिन्न सम्मेलनों के माध्यम से प्रस्तुत होगा।

७ अक्टूबर को आयोजित रात्रीकालीन सत्र में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में डॉ० मुहम्मद इस्राईल का प्रेरक उदबोधन होगा।

नरेन्द्र आर्य, प्रधान — माया प्रकाश त्यागी, मन्त्री ०६३१६८०५५०४

God won't ask what your highest salary was. He'll ask if you compromised your character to obtain it.

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रीन पार्क, दिल्ली

प्रधान	: श्री प्रेम सागर तलवार
मन्त्री	: श्री कर्मचन्द नन्दवानी
कोषाध्यक्ष	: श्री आदर्श कपूर

आर्यसमाज कर्णपुरदत्त, फर्रुखाबाद

प्रधान	: श्री उदयपाल सिंह
मन्त्री	: श्री सत्यपाल सिंह
कोषाध्यक्ष	: श्री धर्मपाल सिंह

भव्य ऋषि मेला

ऋषि मेले हेतु स्टॉल का अग्रिम आरक्षण आरम्भ
२७, २८, २६ अक्तूबर २००६ से आरम्भ

ऋषि मेले हेतु स्टॉल का अग्रिम आरक्षण सभा द्वारा आरम्भ किया जा चुका है। अतः सभी व्यवसायी बंधुओं से निवेदन है कि स्टॉल के अग्रिम आरक्षण हेतु सभा द्वारा निर्धारित सहयोग राशि ४००/– (चर सौ रु०) मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/नगद परोपकारिणी सभा को भेजें। पहले प्राप्त राशि के आधार पर क्रमवार स्टॉल का आवंटन किया जाएगा।

स्टॉल हेतु सभा द्वारा सुविधाएं – स्टॉल हेतु २ टेबल, २ कुर्सी, १ दरी और १ टयूब लाइट प्रदान की जाएंगी। अतिरिक्त टेण्ट के सामान हेतु टेण्ट हाउस के स्वामी से संपर्क करना होगा एवं अतिरिक्त सामग्री हेतु देय भुगतान उन्हें करना होगा।

भोजन व्यवस्था सभा द्वारा निःशुल्क की जाएगी।

कृपया समय से पूर्व स्टॉल आरक्षण हेतु निम्न दूरभाष नं० पर सम्पर्क करें –

परोपकारिणी सभा ०१४५ – २४६०१६४, समय १०.३० से ५.३० तक। किसी भी विवादित स्थिति में सभा का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

– मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in* वेबसाइट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये



सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक १२ ८ अक्तूबर से १४ अक्तूबर, २००६ तक दयानन्दाब्द १८४ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ सम्वत् २०६३ अं०कृ०२

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

झूठे उत्साह को चिरस्थायी नहीं बनाया जा सकता

बिना स्वीकृति के आर्य महासम्मेलन हेतु नाम छापना अनैतिक

धन सम्पन्न आर्यों एवं निस्स्वार्थी कार्यकर्त्ताओं की छवि को भुनाने का प्रयास

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम का दुरुपयोग करते हुए उसी सर्वोच्च संगठन को विभाजन के गड्ढे में धकेलने के षड्यन्त्र में अग्रणी राजसिंह, प्रकाश आर्य और कैप्टन देवरत्न की तिगड़ी झूठ और अनैतिकता की कलयुगी शक्ति से सामान्य धर्मप्रेमी जनता को फिलहाल बेशक गुमराह करने में सफल हो जाए परन्तु किसी भी कलयुगी शक्ति में इतनी ताकत नहीं हो सकती कि सत्य का गला घोटकर उसे सदा के लिए दफन कर सके।

झूठ बोल-बोल कर जनता में क्षणिक उत्साह का तमाशा तो दिखाया जा सकता है परन्तु उस उत्साह का दोहन करके अपने स्वार्थों को चिरस्थायी नहीं किया जा सकता। चिरस्थायी तो निःस्वार्थ भाव से किए हुए कर्म ही हो सकते हैं।

विद्वतापूर्ण भाषण देकर जनता को ज्ञान तो प्रदान किया जा सकता है परन्तु जनता के मन में अपने अनुसरण की ज्योति केवल अपने आचरण प्रदर्शन से ही प्रज्ज्वलित की जा सकती है।

कै० देवरत्न की झूठी घोषणाएं पहले भी सुन-सुनकर लोग क्षणिक आनन्द लूटते रहे कि अब आर्यसमाज का भविष्य खूब चमकेगा किन्तु सार्वदेशिक सभा के प्रधान के नाते कार्यालय में वातानुकूलित हाल बनवाने के अतिरिक्त अन्य ठोस उपलब्धी क्या है?

राजसिंह को निकम्मा और मूर्ख कहने वाले व्यक्ति आज धन की लूट में उसके साथी बनकर काम कर रहे हैं।

प्रकाश आर्य ने स्वयं सभा मन्त्री श्री विमल वधावन से कुछ माह पूर्व कहा था कि सपेरा सांप को पालकर उससे कमाई करता है तो क्या आप राजसिंह को नहीं पाल सकते। सभा मन्त्री द्वारा स्पष्ट इन्कार के बाद प्रकाश आर्य ने वही कार्य स्वयं कर दिखाया। परन्तु एक मानव दूसरे मानव के साथ स्वार्थ सिद्धी को चिरस्थायी नहीं बना सकता। आपसी सम्बन्धों और कर्मों का चक्रव्यूह जन्म जन्मातरों तक चलता है।

धीरे-धीरे चारों ओर इस ऐतिहासिक विघटनात्मक महासमर की लपटें दिखाई देने लगेंगी। इनके एक और साथी श्री बलदेव ने पानीपत (हरियाणा) की शिक्षण संस्थाओं से लाखों रुपए की धनराशि सम्मेलन के नाम पर स्वयं को हरियाणा का प्रधान बताकर लूटनी शुरू कर दी। लाखों रुपयों का चूना लगने के बाद पानीपत के अधिकारियों को होश आया कि ये साधू वेश में भी हरियाणा के तथाकथित प्रधान बनकर घूम रहे हैं। सार्वदेशिक न्याय सभा के आदेश से ही यह लूट बन्द हो सकी। हरियाणा सभा के प्रधान श्री भगत मंगतूराम ने भी तुरन्त इस प्रकरण में हस्तक्षेप किया।

दिल्ली में भी विशेष रूप से आर्यसमाजों को झूठा उत्साह दिखाकर या भय के प्रभाव से प्रत्येक समाज को दो-दो लाख रुपया सहयोग देने के लिए विवश किया जा रहा है। यह सुलतानी तरीके चिरस्थायी नहीं हो सकते। दिल्ली की आर्यसमाजों को भी भय में कोई कार्य करने की आवश्यकता नहीं। अनधिकृत और झूठे अधिकारियों को नकार कर दिल्ली सभा के अधिकृत दायरे में ही कार्य करना चाहिए। सार्वदेशिक न्याय सभा के आदेश/निर्देश चिरस्थायी है। स्वार्थी और असामाजिक तत्वों का झूठा उत्साह चिरस्थायी नहीं हो सकता।

सम्मेलन के नाम पर लाखों रुपये बरबाद करके एक के बाद एक तरह-तरह के पोस्टर केवल धन व्यय दिखाने के षड्यन्त्र हैं। इन पोस्टरों में कई निस्स्वार्थी और अच्छी छवी वाले महानुभावों के नाम छाप कर उनकी छवि का नकदीकरण करने का महाषडयन्त्र आर्यसमाज के इतिहास मे पहले कभी नहीं सुना गया। आज तक जितने भी नाम महासम्मेलन के नाम पर छापे गए हैं उनमे से अनेकानेक आर्यजनों, अधिकारियों ने हमसे यह शिकायत की है कि उनके नाम बिना उनकी स्वीकृति, इच्छा के छापे जा रहे हैं। यहां तक कि इस महा... का खुला विरोध करने वालों ... नाम छापने में भी इस स्वार्थ सिद्धकरण मण्डली को कोई परहेज नहीं हुआ।

शेष पृष्ठ ७ पर

आर्यसमाज जातिवाद से ऊपर उठे – भगत मंगतू राम

(पृष्ठ २ पर)

सावधान !

दिल्ली में डेंगू का प्रकोप

दिल्ली तथा आसपास के राज्यों एवं दक्षिण भारत व ... प्रान्त में डेंगू का प्रकोप ... जा रहा है। परन्तु सरकारी तन्त्र अपनी निष्क्रियता को छुपाने की खातिर इसे महामारी घोषित करने से कतरा रहे है। हालांकि महामारी को स्वीकार करते हुए युद्ध स्तर पर इससे लडने के कार्यक्रमों को बनाया जा रहा है। सरकारी को इस विषय का कोई ज्ञान तक भी नहीं है कि डेंगू मच्छर पैदा ही न हो इसके लिए क्या करना चाहिए।

सरकार का कहना है – ... पानी का खुला प्रयोग हो जैसे सामूहिक सार्वजनिक शौचालय, गड्ढों मे, कूलरों आदि में।



... डेंगू की ... यह महामारी ... भयंकर प्रकोप के साथ दिल्ली में लगातार बढ़ रही है कि इसकी चपेट से प्रधानमंत्री निवास पर रहने वाले प्रधानमन्त्री के परिजन भी अछूते नहीं रहे।

समाचार पत्रों का कहना है –

– डेंगू वायरस में दिल्लीवासियों पर बढ़ते प्रकोप का समाचार है।

– डेंगू प्रकोप से दिल्ली का कोई स्थान सुरक्षित नहीं।

– डेंगू से लडने के लिए समस्त सरकारी अस्पतालों में व्यवस्था को एकदम चुस्त बनाने की आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ ७ पर

इलाहाबाद अर्धकुम्भ में विशाल वैदिक धर्म प्रचार शिविर की तैयारियां

(पृष्ठ २ पर)

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी का आपरेशन गांधीधाम में सम्पन्न

जीवन प्रभात पांडिचेरी में अपने जीवन को आहूत करने वाले सच्चे महात्मा श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी की आंखों का आपरेशन आर्यसमाज गांधीधाम के संरक्षण एवं देखरेख में भुज के प्रसिद्ध चिकित्सक द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन ने आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल तथा मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य तथा उनके सहयोगियों द्वारा इस प्रकार आर्यसमाज को समर्पित आत्माओं की सेवा को सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं को कर्त्तव्यनिष्ठ संन्यासियों, विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं की सेवा के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। श्री आर्य तपस्वी जी दो सप्ताह के प्रचार कार्यक्रमों के लिए दिल्ली पधारे हैं तथा १५ अक्तूबर को वे पांडिचेरी में जीवनप्रभात कार्यों को करने में जुट जाएंगे।

साथी हाथ बढ़ाना ....

इलाहाबाद अर्धकुम्भ में विशाल वैदिक धर्म प्रचार शिविर की तैयारियां

इलाहाबाद में आगामी ३ जनवरी से फरवरी प्रथम सप्ताह तक अर्धकुम्भ मेला बडे विशाल स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। इस मेले में वर्षों से आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग (इलाहाबाद) अपना प्रचार कार्यक्रम चलाती आ रही है। गत वर्ष कुछ षड्यन्त्रकारी तत्वों ने आर्यसमाज के प्रचार शिविर को मेले में मुख्य स्थल से बाहर स्थान आवंटित करने के प्रयास किए। सरकारी अधिकारियों के इस भेदभाव पूर्ण व्यवहार के विरुद्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय में रिट याचिका प्रस्तुत की गई जिसमें आर्यसमाज को सफलता मिली तथा आर्यसमाज के शिविर का स्थान मेले के मुख्य स्थलों में निर्धारित हो सका। इस संघर्ष पूर्ण कार्य में उप–प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी तथा मन्त्री श्री आर्य राजेन्द्र कपूर विशेष साधुवाद के पात्र हैं।

आगामी जनवरी माह में लगने वाले अर्धकुम्भ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग ने वैदिक धर्म प्रचार का विशाल प्रचार कार्यक्रम निर्धारित करने की पहल की है। इस शिविर में समूचे विश्व के आर्यजनों का पावन सहयोग एवं कर्मठ भागीदारी आमन्त्रित हैं।

(१) देश विदेश स्थित आर्यसमाजें एवं प्रतिनिधि सभाएं इस विशाल वैदिक शिविर के माध्यम से लघु ट्रेक्ट निःशुल्क वितरण हेतु भेजना निर्धारित करें तथा इसकी सूचना निम्न पतों पर दें।

(२) कर्मठ कार्यकर्त्ता प्रचारक एक माह का अपना कीमती समय यदि इस शिविर हेतु दे सकें और आयोजकों की व्यवस्था में अनुशासन से प्रेमपूर्वक रहकर कार्य कर सकें तो उनके नाम का प्रस्ताव भी निम्न पते पर स्वागत योग्य है।

(३) भ्रमणार्थ आने वाली आर्यो की टोलियां अपने आगमन की पूर्व सूचना से सम्बन्धित पत्र व्यवहार भी आयोजकों से अवश्य करें। बिना पत्र व्यवहार और व्यवस्था की सूचना मिले बिना किसी प्रकार की असुविधा का दोष आयोजकों को न दें।

(४) मेले में प्रचार से सम्बन्धित अन्य कोई सकारात्मक सुझाव तथा अपनी जिम्मेवारी से उसमें सहयोग के सम्बन्ध में भी आपके विचारों का स्वागत है।

*– **आर्य राजेन्द** (कपूर), मन्त्री*
आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग
फोन ०६३३५१–०६५८६
पता – आर्य समाज चौक पान दरीबा, इलाहाबाद
निवास – ६६, सी चक मुण्डेरा इलाहाबाद (उ०प्र०)

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज श्यामपुर कोतराहां (पश्चिम चम्पारण) के तत्वावधान में तथा डॉ० राजेश्वर जिज्ञासु के पौरोहित्य में स्वर्गीया माया देवी (धर्मपत्नी श्री योगेन्द्र यादव) की अन्त्येष्ठि संस्कार एवं शान्ति यज्ञ पूर्णतः वैदिक रीति से उनके निवास स्थान, ग्राम बरगछिया थाना बैरिया, जिला – पश्चिम चम्पारण में दिनांक २६–५–०५ को सम्पन्न हुआ। माया देवी का निधन हृदय गति रुकने से हो गया। वह अत्यन्त सुशील, समाजसेवी एवं कुशल गृहणी थी।

– जगन्नाथ आर्य, प्रधान, आर्यसमाज श्यामपुर कोतराहा, प०चम्पारण

God won't ask how many friends you had. He'll ask how many people to whom you were a friend.

आर्यसमाज जातिवाद से ऊपर उठे

– भगत मंगतू राम

जातिवाद तत्वों से ऊपर उठकर राष्ट्र निर्माण यज्ञ में भाग लेने चाहिए।

संन्यासी के वेश में रहते हुए कुछ लोग अपनी विशेष जाति की पहचान से ऊपर नहीं उठे हैं। आर्यसमाज ऐसे जातिवादी तत्वों को बेनकाब करेगी तथा आर्य समाज के सही स्वरूप को प्रस्तुत करेगी।



भगत मंगतूराम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के नवनियुक्त प्रधान भगत मंगतूराम ने अपने दौरे के दौरान पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने आर्यसमाज के महोपदेशक प्रो० उत्तमचद शरर की स्मृति में एक अखिल भारत स्तरीय पुरस्कार की घोषणा की। जो किसी ऐसे व्यक्ति को मिलेगा जो हिंदी, उर्दू व संस्कृत भाषा में समान रूप से विद्वान हो।

आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से हर जिला में वेद प्रचार मंडल का गठन किया जाएगा तथा शिक्षण संस्थाओं की साधारण सभा में जिला सभी आर्यसमाजों से उनके सदस्यता सूची के आधार पर प्रतिनिधि होंगे जो लोकतांत्रिक ढंग से प्रबन्ध समितियों का गठन करेगी।

इस प्रक्रिया में आर्य प्रतिनिधि सभा का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। उन्होने कहा कि प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान बलदेव सिंह आचार्य द्वारा गठित सभी समितियों को सार्वदेशिक न्याय सभा ने स्थगित कर दिया है।

इस मौके पर बडा बाजार के उपप्रधान [illegible]न्द्र सिंह, आर्य समाज खैल बाजार के मंत्री राजेश आर्य, गाव अहर से धर्मवीर, हवा सिंह व राजेश आर्य, गांव नैन से पाला राम व देवी सिंह, गांव उग्राखेड़ी से सतीश मलिक, अनुप व विकास मलिक, आर्यसमाज देवी मूर्ति कालोनी के प्रधान कंवर अजय सिंह व मंत्री सुभाष आर्य, आर्य समाज सुभाष नगर के प्रधान जयप्रकाश शर्मा व मंत्री चांद सिंह आर्य, जोगेन्द्र सिंह, रणदीप राणा, रूपेश, अजीज, आर्य समाज गढ़ी सिकंदरपुर मौजूद थे।

साभार – दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी

श्री महेन्द्रपाल आर्य नीदरलैण्ड के प्रचार दौरे पर

सुप्रसिद्ध वैदिक एवं राष्ट्रवादी विद्वान् श्री महेन्द्रपाल आर्य तीन मास के वैदिक धर्म प्रचार कार्यक्रम पर नीदरलैण्ड की आर्यसमाजों के निमन्त्रण पर रवाना हो गए। धर्म प्रचार यात्रा के लिए प्रस्थान से पूर्व उनका आर्यसमाज दीवान हाल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य के निमन्त्रण पर विदाई समारोह आयोजित किया गया।

सभा मन्त्री ने कहा कि श्री महेन्द्रपाल आर्य जी का वैदिक सिद्धान्तों के साथ-साथ कुरान पर विशेष अध्ययन है जिससे यूरोप के नीदरलैण्ड देश में उनका दौरा विशेष प्रभावशाली रहेगा। उन्होंने कहा कि वैदिक विद्वानों को कुरान और बाईबल का भी अध्ययन करना चाहिए जिससे उनके प्रवचनों में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके। आज के आधुनिक युग में यह अत्यन्त आवश्यक है।

श्री महेन्द्रपाल आर्य जी के विदाई समारोह में उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण, श्री लक्ष्मीचन्द, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री विमल एडवोकेट (उ०प्र०) आदि सहित कई गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।





पुरोहित, धर्माचार्य आदि के लिए विवरण आमन्त्रित

गुरुकुलों अथवा उपदेशक विद्यालयों से शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त विभिन्न आर्य सभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं में पुरोहित, धर्माचार्य, भजनोपदेशक आदि के रूप में कार्य करके वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में सहायक बनने के इच्छुक महानुभाव अपने पूर्ण विवरण नाम, पता, फोन नम्बर तथा प्रमाणपत्रों सहित निम्न पते पर भेजे।

पुरोहित प्रकोष्ठ
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
१४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज,
(आर्य अनाथालय के पास)
नई दिल्ली - ११०००२

जिन आर्यसमाजों अथवा अन्य आर्य संस्थाओं को पुरोहितों आदि की आवश्यकता हो वे भी अपनी आवयकताओं की पूर्ति के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।

– विमल वधावन आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

श्राद्ध-तर्पण

अत्र पितरो मादयध्वं
यथाभागमावृषायध्वम्।
अमीमदन्त पितरो
यथाभागमावृषयिषत।।

यजु० २/३१

पदार्थ : **हे पितरः** = उत्तम विद्यादान से पालन करने वाले विद्वान माता-पिता ! **अत्र** = हमारे स्थान (गृह) में वास करो। **यथाभागम्** = यथायोग्य पदार्थों को **आवृषायध्वम्**=अच्छी प्रकार जैसे अपनी पसन्द की घास को बैल चरते हैं, वैसे अपनी पसन्द के पदार्थों को आप पाओ और **मादयध्वम्** = आनन्दित हो तथा **आवृषायिषत** = विद्या और धर्म की शिक्षा प्रदान कर **अमीमदन्त** = सबको आनन्दित करो।

भावार्थ : ईश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य लोग माता एवं पिता आदि धार्मिक सज्जनों को समीप आए हुए देखकर उनकी सेवा करें। प्रार्थनापूर्वक कहें कि हे पितरो ! आप लोगों का आना हमारे सौभाग्य का सूचक है। आप हमारे गृह में आओ और वास करो। हम आपके प्रिय पदार्थों यथा योग्य, यथा सामर्थ्य उपस्थित करेंगे जिनसे सत्कार धारण करके विद्यादि शुभ गुणों को प्राप्त करो तथा कृतघ्नता के दोष से सदा दूर रहो।

भावार्थ : ईश्वर आज्ञा देता है कि सब मनुष्यों को पत्नी, पुत्र और नौकर आदि को कहना चाहिए कि तुमको हमारे पितर अर्थात् माता-पिता आदि विद्या के देने वाले व सेवा के योग्य है। जैसे कि इन्होंने बाल्यावस्था व विद्यादान के समय हम पाले हैं, वैसे हम लोगों को भी वे सब काल में सत्कार करने योग्य हैं जिससे हम लोगों के बीच में विद्या का नाश और कृतघ्नता आदि दोष कभी न प्राप्त हों।

भस्मान्त ँ शरीरम्।

यजु० ४०/१५

शरीर का संस्कार (भस्मातम) अर्थात भस्म करने पर्यन्त है दशगात्र, एकादशाह, द्वादशाह, सपिण्डी कर्म, मासिक, वार्षिक, श्राद्ध आदि क्रिया सब असत्य हैं। क्योंकि वेदों में इन कर्मों का विधान नहीं है। मृतक-जीव का सम्बन्ध पूर्व सम्बन्धियों से कुछ भी नहीं रहता। जीव अपने कर्मों के अनुसार जन्म व भोग पाता है। **सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः।** *योगदर्शन, साधन पाद – १३*

अपने किए कर्मों से ही जीव जाति (योनि) आयु और योग प्राप्त करता है। पूर्व सम्बन्धी इसमें कुछ भी सहायक नहीं हो सकते। श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान मरे हुए पितरों (जीवों) को नहीं पहुंचता किन्तु पोप (पंडित) के हाथ, उदर व घर पहुंच जाता है। गोदान की हुई गाय पितरों के पास तो नहीं पहुंचती परन्तु पोप (पंडित) अथवा कसाई के घर पहुंच जाती हैं। प्रथम तो वैतरणी पर गाय पहुंचती ही नहीं, और मान लें, कि पहुंच भी जाय तो भी हाथ तो चिता में जल गया, पूंछ को कैसे पकड़ेगा। **सत्यार्थ प्रकाश /** *११ समु०, गुरुड़ पुराण समीक्षा*

स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्, होमैर्देवान्
यथाविधि।
पितृन् श्राद्धैश्च नृनन्नैर्भूतानि
बलिकर्मणा।

मनु /३ /

पितृन श्राद्धै : माता-पिता अथवा वृद्ध सज्जनों को अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान देकर अच्छे प्रकार तृप्त करना अर्थात जिस-जिस कर्म से उनकी आत्मा तृप्त हो और शरीर स्वस्थ रहे, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करना श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव
च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः
श्यालाः संबन्धिनस्तथा।।

गीता १/३४

अर्जुन ने कुरुक्षेत्र के मैदान में प्रतिपक्ष में खड़े योद्धाओं के रूप में आचार्य, पितर, पुत्र, पितामह, मामा, ससुर, पौत्र, साले व अन्य सम्बन्धियों को देखा।

उपरोक्त वेद, दर्शन, स्मृति व गीता आदि सत्य शास्त्रों से यह ज्ञान प्राप्त होता है कि जीवित माता, पिता व सज्जन वृन्द ही ऐसे पितर हैं जिनकी अन्न, जल, दूध, फल, वस्त्र आदि से सदैव श्रद्धा के साथ जो सेवा करना है वही 'सच्चा श्राद्ध' है। उनका सेवा से सत्कृत अर्थात तृप्त होना ही तर्पण कहलाता है। अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर पितरों द्वारा मार्ग दर्शन व आशीर्वाद हमारी उन्नति व सुख का आधार होता है। मृत्यु को प्राप्त हो चुके पितरों की स्मृति (श्रद्धा से याद करना) ही उनका श्राद्ध है। उनके द्वारा किए श्रेष्ठ कार्यों से प्रेरणा लेकर सदैव सुन्दर कर्म करते रहना ही श्रेयस्कर है, गरुड़ पुराण आदि के अनुसार उनके लिए कुछ भी करना असत्य व भ्रामक है।

संकलन – **माया प्रकाश त्यागी**
मन्त्री, आर्य उप प्रतिनिधि सभा,
जनपद गाजियाबाद

जीवित माता-पिता की सेवा करने में समस्त तीर्थों का समावेश है। – *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

को प्राप्त होकर आप प्रसन्न होइए और अपने अनुभव के आधार पर हमारा मार्ग प्रशस्त कीजिए ताकि हम वृद्धि को प्राप्त हुए अच्छे-अच्छे कामों को करके आनन्दित रहें।

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः
कीलालं परिस्त्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन।।

यजु २/३४

पदार्थ : हे पुत्रादिको ! तुम **मे** = मेरे **पितृन** = पितरों को **ऊर्जाम्** = अनेक प्रकार के उत्तम रस **बहन्ती** = जल **अमृतम्** = औषधिक और मिष्ठान आदि **वय** = दूध **घृतम्** = घी **कीलालम** = उत्तम रीति से तैयार किया भोजन **पटिस्रुतम** = पके फलों को देके तृप्त करो। **स्वधा** : अपनों को

आर्यसमाज खेड़ा अफगान में ध्यान योग शिविर

आर्यसमाज खेड़ा अफगान जनपद सहारनपुर के आठ दिवसीय पातञ्जल ध्यान योग शिविर एवं आर्यसमाज के उत्सव के समापन पर स्वामी अमृतानन्द जी महाराज (मध्य प्रदेश) ने साधकों से अपने जीवन को पवित्र बनाने की अपील की। उन्होंने बताया कि मानव शरीर में ३ प्रकार के तत्व होते हैं। दानव तत्व, मानव तत्त्व, देवत्व। मनुष्य को जीवन में सफलता के लिए दानव तत्त्व को नष्ट करना, मानव तत्व को जगाना जरूरी है। तब ही साधक देवत्व की ओर बढ़ सकता है। स्वामी जी ने बताया कि वासना मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इससे सबके जीवन बरबाद हो रहे हैं। भोग संस्कृति को छोड़कर योग संस्कृति ब्रह्मचर्य को अपनाने पर बल दिया। आर्यसमाज खालापार के प्रधान वेदव्रत गोतम जी ने कहा कि आत्मा को परमात्मा से मिलाने वाला रास्ता केवल पातञ्जल योग शास्त्र ही है। प्रथम यम, अहिंसा को जीवन में अपनाने पर बल दिया। सरकार से योग शिक्षा स्कूलों में अनिवार्य करने की मांग की।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पूर्व मन्त्री आदित्य प्रकाश गुप्त ने कन्या भ्रूण हत्या को सभी से रोकने की अपील की और कहा कि यदि इसी प्रकार जनसंख्या का सन्तुलन बिगड़ता रहा तो समाज के लिए भयंकर खतरा है। सम्पूर्ण देश में गोहत्या और बन्दे मातरम को अनिवार्य करने सम्बन्धी प्रस्ताव रखे जिन्हें सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया, श्री हमेन्द्रदेव व्यायाम शिक्षक ने रोगों के अनुकूल आसन कराकर तथा औषध बताकर सभी साधकों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष महान स्वतन्त्रता सैनानि जसवन्त सिंह आर्य ने नवयुवकों को आवाहन किया कि अपनी ऊर्जा शक्ति को राष्ट्र के उत्थान में लगाएं। कार्यक्रम का संचालन राजेश आर्य और अमित आर्य ने किया। सर्वश्री मामचन्द पथिक, डॉ० ओमप्रकाश वर्मा, सुखपाल आर्य, अंगदसिंह आर्य, साधूराम आर्य, हरी सिंह आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए। आज के यज्ञमान परिवार श्री निरंजन सिंह जी ने देशी घी के हल्वे का प्रसाद बांटा। श्री नरेन्द्र कुमार आर्य ने १०० नैतिक शिक्षा की पुस्तकें बांटी। इसके अतिरिक्त और भी साहित्य बांटा गया। सर्वश्री कंवरपाल आर्य, राजपाल आर्य, राजकुमार, हरीराम आर्य, राजेश कुमार आर्य, वेद भूषण गुप्त, विनोद कुमार आर्य, मा० श्याम सिंह आर्य, रमेश आर्य, नरेश कुमार, सतपाल गुप्ता आदि सैंकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे। श्री श्रवण कुमार आर्य अपना टैन्ट का सामान, गद्दे, बर्तन आदि सब मुफ्त में सहयोग दिया।

अरुणोदय गुरुकुल में वेद प्रचार आयोजन

उत्तर पूर्वांचल के क्षेत्र असम अरुणाचल प्रदेश सीमा। असम प्रान्त के उ० लखीमपुर जिले के अन्तर्गत बन्दरदेवा के अरुणोदय गुरुकुल आश्रम वन्दरदेवा द्वारा ६ अगस्त से रक्षाबन्धन के पावन पर्व से १६ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सम्पूर्ण वेद प्रचार समारोह एवं संस्कृत प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें श्री आचार्य तेजनारायण जी एवं श्री ओंकार शास्त्री ज़ी (स्नातक गुरुकुल प्रभा आश्रम मेरठ) ने यहां के चाय बागा में, बस्ती के ईसाई बन्धुओं के मध्य जाकर प्रतिदिन यज्ञ प्रक्रिया को करते हुए उन बन्धुओं को वेदों कि महत्ता तथा उपादेयता का मार्गदर्शन कराया। जहां आचार्य तेजनारायण जी ने वैदिक ग्रंथ में वर्णित सामान्य रूप में सुख से जीने की कला का वर्णन किया वही श्री ओंकार शास्त्री ने सृष्टि के आदि ग्रंथ वेद को समझने एवं उसमें निहित गूढ़ रहस्य के ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा की आवश्यकता के साथ–साथ वेद के विश्वबन्धुत्व रूपी उपदेशों का उपदेशात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किए। श्री ओम प्रकाश शर्मा जी आर्य ने भी वेद विषयक विचार प्रस्तुत किए। उपरोक्त कार्यक्रम से प्रभावित पांच आदिवासी ईसाई परिवारों ने आर्य धर्म को स्वीकार किए हैं। जिनके गुरुकुल ने शुद्धिकरण के अन्तर्गत शुद्ध कर आर्यसमाज में स्वागत किया। इन सभी कार्यक्रम हेतु मेरठ के आदर्श नगर के श्री देवचन्द जी मरवाहा एवं मेरठ के ही साकेत के डॉ० कु० आदर्श जी ने अपना अमूल्य सहयोग दिया। इन्ही के कारण इस सफल वेद प्रचार समारोह रूपी यज्ञ करने में हमें सफलता प्राप्त हुई। जिससे सम्पूर्ण आश्रम एवं अरुणाचरण

स्याना आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव, शोभायात्रा निकाली

स्याना आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव समारोह के उपलक्ष्य में शुक्रवार को शोभायात्रा का आयोजन धूमधाम के साथ किया गया। वार्षिकोत्सव समारोह के उपलक्ष्य में शोभायात्रा का आयोजन कर जनजागृति लाने का प्रयास किया गया। शोभायात्रा झंगीरी मंडी स्थित ऊं साई मंडप परिसर से प्रारम्भ होकर गढ़ बस स्टैण्ड, मौ० पट्टी डहर, बोवासाही, चौहट्टी बाजार, मेन बाजार व मंडी जवाहरगंज से निकाली गई। शोभायात्रा में नगर के प्रसिद्ध बैंड ने आर्य गीत प्रस्तुत किए। गुरुकुल पूठ के आचार्य धर्मपाल सिंह व स्वामी मामचंद ने डोले पर विराजमान होकर लोगों को आशीर्वाद दिया।

टैगोर पब्लिक स्कूल, सरस्वती शिशु मंदिर, गुरुकुल पूठ एवं गुरुकुल चोटीपुरा समेत जानी मानी संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने आयोजन में भाग लिया। महिला समाज ने आयोजन में प्रमुख भूमिका अदा की। मौ. पट्टी डहर के नवयुवक मंडल एवं सरस्वती शिशु मंदिर समेत कई स्थानों पर पुष्प वर्षा करके शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया। सुरेंद्र रस्तोगी, हरिश्चन्द रस्तोगी, नरेन्द्र रस्तोगी, रीता आर्य, संजय श्रोत्रिय, भागीरथ आर्य, वैद्य रणजीत सिंह आर्य, श्रीमती सुदेश रस्तोगी एवं वेदमित्र आर्य आदि ने सक्रिय भाग लिया।

सऊदी अरब में वेद ज्ञान

— नारायणदत दसोई, मॉरिशस

वेद मौखिक रूप में यूरोप में बहुत पहले पहुंचा था और उसका स्वागत भी वहां बड़े उत्साह से किया गया था। ऐसे में यूरोप के महान् विद्वानों को वेद ने ऐसा मन्त्र मुग्ध किया था कि वहां पर बेशुमार साहित्य उत्पन्न हो गया था। जिन विद्वानों ने वेद ज्ञान से वशीभूत होकर वेद की प्रशंसा की थी, उन में मैक्समूलर, माटरलिंक, रेनु, विहलसन आदि थे।

मैक्समूलर वेद से इतने मन्त्र-मुग्ध हुए थे कि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि भारत ज्ञान का स्रोत है। वेद के सम्बन्ध में माटरलिंक का वही विचार था जो मैक्समूलर का था।

अतः उन्होंने भी बेबाकी से कहा कि शायद ही कोई इस बात का विरोध कर सकता है कि वेद की भारत में मौजूदगी के कारण, भारत ज्ञान का प्रथम स्रोत है। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि वेद-ज्ञान भारत से निकल कर सारे विश्व में फैल गया था। ऐसे में इन देशों का नाम लिया जा सकता है, जहां प्राचीन काल में वेद पहुंचा था — मिस्र, ईरान, चीन, अमेरिका आदि। माटरलिंक कौन थे ? वह रवीन्द्र नाथ ठाकुर के समकालीन थे। रवीन्द्र नाथ ठाकुर की गीतांजलि का भी विश्व में गहरा प्रभाव पड़ा था। गीतांजलि का नॉबल पुरस्कार से पुरस्कृत होने के तुरन्त बाद, फ्रांसीसी में अनुवाद हुआ था। फ्रांस में एक राष्ट्राध्यक्ष जे० क्लेमांसो के पास फ्रांसीसी गीतांजलि थी और जब प्रथम विश्व युद्ध शुरु होने को था तो वह बहुत परेशान हुए थे। ऐसे में अपनी इस परेशानी से राहत पाने के लिए उन्होंने गीतांजलि पढ़ी थी।

इतना ही नहीं, उन्होंने फ्रांस को एक राजकुमारी, जो सरोजिनी नायडू की भांति कवयित्री थीं, जिसे डयूसंस आफ नुआथ का खिताब भी मिला था, चलकर गीतांजलि पढ़ने को कहा था।

जिसने शुरू में ही गीतांजलि का फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद किया था वह आंद्रे जिद थे, जो भारत में एक अपरिचित विद्वान् साहित्यकार न थे। उनको अपनी बेजोड़ साहित्य सेवा के कारण सन् १९४७ में नॉबल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

यहां यह बतलाना अनुचित नहीं होगा कि जब उन्होंने गीतांजलि का फ्रांसीसी में अनुवाद किया था, तब उनको नॉबल पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ था। परन्तु इस कृत्य से यह संकेत मिल जाता था कि साहित्य की दुनियां में वह दूर जाएंगे।

जब उनको सन् १९४७ में वास्तव में नॉबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था तो उपर्युक्त अनुमान सत्य साबित हुआ। वस्तुतः गीतांजलि वेद के सन्देश की संवाहिका तो है ही। इसी प्रकार हजरत मोहम्मद के जन्म से दो हजार वर्ष पूर्व सऊदी अरब में एक कवि हुआ था, जिसको वेद ज्ञात था। उसका नाम लावी था। उसको भी वेद ने मन्त्र-मुग्ध किया था। उसने अपनी एक कविता में कहा कि भारत तुम मेरे लिए आदरणीय हो, क्योंकि परमपिता परमात्मा ने तुम्हारी धरती पर अपना ज्ञान प्रदान किया है।

वह कवि हजरत मोहम्मद से पूर्व दो हजार चार सौ वर्ष हुआ था और अरब की धरती पर विचरण करते थे।

वेद के विषय में उसने यह भी कहा था कि इस ईश्वरीय ग्रन्थ में कैसा पवित्र प्रकाश हमारी आंखों के सामने परमपिता परमेश्वर ने भेजा है, जो उषाकाल की भांति परम उज्ज्वल और कोमल है।

इस प्रकार परमेश्वर ने धरती पर सभी लोगों के लिए धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए अपनी अमूल्य शिक्षा प्रदान की है।

अतः जो ज्ञान भगवान् ने सारी मानवता के हित के लिए वेदों में भेजा है, उसे ग्रहण करो। कारण कि निश्चित रूप से वह ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है।

---

१७ अक्तूबर १२५वीं जयन्ती पर विशेष

गढ़वाल के जाज्वल्यमान नक्षत्र

कर्मवीर जयानन्द भारतीय

— धर्मसिंह शास्त्री, मंत्री, आंचलिक गढ़वाल आर्यसमाज, दिल्ली

किसने सजग किया पीड़ित समाज यहां, कौन वह आर्य वीर त्याग में आनन्द था ?
वैदिक सुधर्म हित ओम् की पताका गहे, कौन फिर गढ़-गिरि शेर सा स्वच्छन्द था ?
देश की पुकार सुन बार बार धाया कौन, कारागार-वास मिला सहा दुःख द्वन्द था ?
प्रेम सुनो, धीर वीर योद्धा के समान वह, भारत का भारतीय लाल जयानन्द था।।

कंटकों से भरे हुए पथ का पथिक बने, जाति को बचाने निज घोर अत्याचार से।
जाति अभिमानियों ने कष्ट दिए ठौर-ठौर, मान गए हार तक विमल विचार से।।
देश की स्वतंत्रता के युद्ध में भी भाग लिया, कारागार-वास मिला प्रेम सरकार से।
आपका धवल यश फैला गढ़ देश में है, शक्ति नहीं लेखनी लिखे जो विस्तार से।।

बान्धवों की दुर्दशा का जाति पड़ी पर-वशा का, क्लेश लेके कौन मिला स्वामी श्रद्धानन्द से ?
वैदिक सुधर्म की सुदीक्षा लेके स्वामी जी से, कौन चला मुक्त होने पाखण्ड के फन्दे से ?
जाति हित कांगड़ी में प्रण कौन ठान रहा, धर्म प्रतिबन्ध के अनेक दुःख द्वन्द से ?
स्वदेश और जाति का हितैषी मित्र आर्यों का, होगा कौन और अतिरिक्त जयानन्द से।।

विकट विशाल शैल द्वार-द्वार घूम कर, पान है कराया ज्ञान वेद भगवान के।
दया धर्म प्रेम युक्त हिंसा से विरक्त किए, भक्त किए भगवान सर्व शक्तिमान के।।
शिक्षा सुधा मधु पान ज्ञान भी कराया तूने, याद रखें आर्य गण गुण गुणवान के।
गढ़वाली आर्य बन्धु आज हैं आभारी बड़े, जयानन्द भारतीय तेरे दयावान के।।

मानव ने मानव को दानव बनाया जहां, दीन किए हीन बलवान मतिमन्द ने।
नष्ट किए धर्म-कर्म छीने अधिकार सभी, जाति प्रतिबन्ध के अनेक दुःख द्वन्द ने।।
दुःखियों का देख दुःख कांपा गिरिराज महा, बापू ने बहाए आंसू और श्रद्धानन्द ने।
तम-परिपूर्ण ऐसे गढ़ में प्रकाश किया, कर में सुधार का ले दीप नेता जयानन्द ने।।

पीड़ित समाज तेरी दुर्दशा विलोक कर, दीन बन्धु भगवान तब दयावान थे।
स्वामी दयानन्द जी ने दया का भण्डार खोल, सत्यसार सौंपे तुझे वेद भगवान थे।
गांधी जी ने स्नेह साथ हाथ था पसारा तुझे, न्याय युक्त अधिकार किए बलवान थे।
हाथ ले सुधार दीप शून्य से सहारा बना, नेता जयानन्द तेरे प्रेम मतिमान थे।।

काल वह एक जब जयानन्द भारतीय, देवों का पुजारी रहा कई परिवार का,
अन्न धन मान आदि लाभ थे अनेक पर, पाना अधिकार था महान प्रभु प्यार का।।
एक प्रभु शक्ति का प्रचार कर घूम घूम, नष्ट किया फैला जो अज्ञान अन्धकार का।
बोध किया सत्य का असत्य खोद-खोद कर, एक भक्ति देखिए बना था सत्य सार का।।

कई बार आजादी के युद्ध में अनेक नेता, जेल भरे ठेल ठेल गौरांग के राज में।
युक्त प्रान्त लाट हेली ऐसे में बुलाया यहां, राज भक्त लोगों ने अनेक साज बाज में।।
लाट को बताया यहां गांधी के सिपाही नहीं, खूब ही सजाई पौड़ी स्वागत के साज में।
गुपत में तिरंगा लिए गांधी का सिपाही एक, वीर जयानन्द चला था स्वागत समाज में।।

शस्त्रधारी सैनिक थे चारों ओर घूम रहे, शेर सा स्वच्छन्द घुसा जनता के ठेल में।
आगे बढ़ा और बढ़ा मंच ही के पास गया, बोलता था लाट जहां स्वागत के मेले में।।
हाथ में तिरंगा उठा नारे भी गुंजार उठे, भाग चला लाट निज साथियों की रेल में।
जनता पुलिस मध्य शेर यहां घेर लिया वीर जयानन्द चला था पौड़ी वाले जेल में।।

विश्व में रहेगा याद सन् बयालीस सदा, भारत स्वतंत्रता का भारी युद्ध काल था।
भीषण दमनचक्र चारों ओर चला पर भारतीय लड़े जब साहस कमाल था।।
श्वेत खादी वस्त्र जटा-धारी हाथ हथकड़ी डाले, घिरा हुआ सैनिकों से उच्च किए भाल था।
जिलाधीश गौरांग (अंग्रेज) के मान को विचूर्ण कर, जेल चला कौन ? प्रेम जयानन्द लाल था।।

वेद का सन्देश लिए टेहरी गढ़वाल में, कौन वह धर्मवीर जा रहा स्वच्छन्द था ?
करने सुधार चला दुःखितों की देख दशा, रोक रहा किसको विरोधियों का द्वन्द था।
गालियों की कौन कहे लाठियों की मार पड़ी, होता नहीं धर्म के प्रचार में जो बन्द था।
विजयी वेद नाद टेहरी में बजाने वाला, वीर वृद्ध सेनानी वह आर्य जयानन्द था।

स्वच्छता सुधार रहे धर्म प्रति प्यार रहे, देश का उद्धार रहे, ईश दयावान हों।
सम अधिकार रहे तम हुआ पार रहे, वैदिक प्रचार रहे, मुक्त अभिमान हों।।
बली गुणवान बनें मूर्ख मतिमान बनें, हीन धनवान बनें दीन बलवान हों।
दूर दुःख द्वन्द रहे, अत्याचार बन्द रहे, जय जयानन्द रहे गढ़ आयुवान हों।।

(जयानन्द गौरवगान से)

जीवनोपयोगी ११ सूत्र

१. अण्डा, मांस, मछली —
मनुष्य का आहार नहीं।
२. बीड़ी, सिगरेट, गुटखा —
टी०वी०, कैंसर का खटका।
३. सुल्फा, भांग, शराब —
जीवन हो जाएगा खराब।
४. जुआ, लाटरी, सट्टा —
इनसे लगे नाम को बट्टा।
५. चोरी, हत्या, भ्रष्टाचार —
चहुं दिश होगा हाहाकार।
६. ईश्वर के सब पुत्र हैं भाई —
छूआछूत फिर कहां से आई।
७. जिस घर में नारी सम्मान —
उस घर का निश्चित उत्थान।
८. जिसने न किया पर उपकार —
उसका जीवन है बेकार।
९. सतसंगति होती सुखदायी —
दुष्ट संग होती दुखदायी।
१०. यज्ञ करो और कराओ —
जलवायु को शुद्ध बनाओ।
११. होई आचरण वेदानुसार —
स्वर्ग बने सारा संसार।

आर्य हमारा नाम है,
सत्य हमारा कर्म।
ओ३म् हमारा देव है,
वेद हमारा धर्म।

गतांक से आगे

हिन्दू और हिन्दुत्व से इतनी ग्लानि क्यों, क्षोभ क्यों ?

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

कभी कभी कुरान टी०वी० से डॉ० जाकिर नामक का प्रवचन सुना है। ये महानुभाव तुलनात्मक धर्म के अच्छे अध्येता हैं। विभिन्न धर्म ग्रन्थों और उनके सिद्धान्तों का उन्हें अच्छा ज्ञान है। वे एक लहजे में वेद, उपनिषद् तथा गीता आदि आर्य शास्त्रों के प्रमाण पते सहित धाराप्रवाह उद्धृत करते हैं। कुरान को उद्धृत करने में तो उन्हें कोई दिक्कत होती ही नहीं। एक प्रसंग में उन्होंने कहा – 'जो हिन्दुस्तान में रहता है, वह हिन्दू है। मजहब (आस्था) से मैं मुसलमान हूं किन्तू हिन्दुस्तान का वासी होने के कारण हिन्दू हूं।' अरब आदि मुसलमानी देशों का भ्रमण करने वाले पुराने पर्यटकों ने कहा था कि इन देशों में जाने वाले सभी हिन्दुस्तानियों को वहां हिन्दू कह कर पुकारा जाता है। हिन्दू का सम्बन्ध हिन्द से है।

व्याख्या करें और उसे परिभाषित करें, यह सर्वमान्य भारतीय को स्वीकार्य नहीं होगा। हमारा तो इस शब्द के प्रति कोई मोह या आकर्षण नहीं है क्योंकि हमारे पास आर्य, आर्यत्व तथा आर्यावर्त जैसे श्रेष्ठ शब्द पहले से ही मौजूद हैं।

तथापि जैसा कि हम कह चुके हैं आर्यसमाज को बृहत्तर हिन्दू समाज से निकटता रखनी ही होगी। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो वह भी ब्रह्मसमाज तथा प्रार्थना समाज की भांति नामशेष हो जाएगा। आर्यसमाज का इतनी दुर्दशा भोगने पर भी यदि अस्तित्व बचा है तो उसका कारण यह है कि हमारे पूर्वजों ने उसे ग्रास रुट (Grass Root) जमीन तक पहुंचा हुआ आन्दोलन बताया था। ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज तथा रामकृष्ण मिशन की भांति वह बचाव करना और हिन्दू तथा हिन्दुत्व को कोसने से क्या लाभ? गत दिन हमने 'हिन्दुत्व–हिन्दू धर्म का अपहरण' शीर्षक लेख (वैदिक सार्वदेशिक ४ – १० मई) पढ़ा। यह आघन्त देत्वमासों तथा छलना पूर्ण, विद्वेषमूलक वाक्यों से भरा है। लेखक को आपत्ति है कि राम के नाम को सत्ता की सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। हमारा निवेदन है कि ऐसी कौन सी राजनैतिक पार्टी है जो सत्ता हथियाने के लिए नए नए नारे या स्वार्थपूर्ण कार्यक्रम नहीं अपनाती। अतः चाहे हम पसन्द करें या न करें, किसी दल को सत्ता तक पहुंचाने के लिए किसी बैसाखी का प्रयोग करने से कैसे रोक सकते हैं ? कांग्रेस धर्म निरपेक्षता की ओट में स्वार्थ सिद्ध करती है, आदि के दोषी हैं तो मऊ, अलीगढ़, वडोदरा तथा डोडा में अत्याचार करने वाले और निर्दोष जनों की हत्या करने वालों को लेखक क्या कहेगा ? हिन्दू हितों की बात करने वालों को हिटलर और मुसोलिनी की पंक्ति में रखने वाला लेखक स्वयं हिन्दू द्वेषी ओबेसी, बुखारी आदि मतान्ध लोगों की श्रेणी में जा बैठता है। क्या उसमें साहस है कि उपर्युक्त घृणित अपराधों के लिए वह मोदी, सिंहल या कटियार को अदालत के कटघरे में ला खड़ा करे। यदि नहीं, तो मात्र अपशब्दों की वर्षा कर लेखक स्वयं की द्वेषपूर्ण घृणित मनोवृत्ति का ही परिचय दे रहा है।

आश्चर्य की बात है कि हैवानियत के पुतलों (?) की इस कथित जमात में वे आडवाणी को ला खडा करते हैं। पता लिए राजी करें। नतीजा सिफर। स्वार्थ के लिए सत्ता के सामने सिर झुकाना नीतिगत नहीं है। यही वांजपेयी जी जब प्रधानमंत्री थे और लखनऊ में आर्यसमाज के मंच से उनका स्वागत अभिनन्दन किया जा रहा था तो यही संन्यासी जी उनका प्रशस्तिपाठ करने वालों की अग्रिम पंक्ति में थे। यह शुद्ध अवसरवाद है, मतलब परस्ती है। केवल टी.वी. के सामने आने, पत्रों में वक्तव्य छपे तथा मेरी ख्याति हो, इसी प्रयोजन से 'त कौन ? मैं खाम खां' वाली कहावत को चरितार्थ करने में क्या तुक है ? मेधा पाटकर का समर्थन कर स्वयं को गुजरात के शत्रुओं की पंक्ति में बिठा लेना कौन सा बुद्धि का कार्य था ? केवल इसलिए कि यह गुजरात नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकास करता है और इनकी राय में मोदी हिटलर और मुसोलिनी है।

'जो हिन्दुस्तान में रहता है, वह हिन्दू है। मजहब (आस्था) से मैं मुसलमान हूं किन्तू हिन्दुस्तान का वासी होने के कारण हिन्दू हूं।' अरब आदि मुसलमानी देशों का भ्रमण करने वाले पुराने पर्यटकों ने कहा था कि इन देशों में जाने वाले सभी हिन्दुस्तानियों को वहां हिन्दू कह कर पुकारा जाता है। हिन्दू का सम्बन्ध हिन्द से है।

हम आर्य स्वयं को यथाशक्य हिन्दू कहलाने या कहने में परहेज करते हैं। यह उचित भी है। जब हमारे पास 'आर्य' जैसा प्राचीन, शास्त्र सम्मत तथा उत्कृष्ट अर्थ का द्योतक शब्द विद्यमान है तो हम परायों द्वारा प्रदत्त शब्द को क्यों ग्रहण करें? तथापि व्यावहारिक दृष्टि से इस शब्द के प्रयोग को हम अनुचित भी नहीं समझते। उसी प्रकार जिस प्रकार भारत, भारतीय जैसे संविधान सम्मत शब्दों के होने पर भी परिस्थितिवश हमें इण्डिया, इण्डियन तथा इण्डियननेस जैसे शब्दों का प्रयोग करने में आपत्ति नहीं होती। अन्ततः इण्डिया और इण्डियन भी संविधान सम्मत हैं। यही स्थिति हिन्दू तथा हिन्दुत्व की है।

हमारे हिन्दुत्ववादी मित्र हिन्दू और हिन्दुत्व के स्थान पर भारत या भारतीय का प्रयोग करें तो शायद ही किसी को आपत्ति हो और यदि होगी भी तो उसे अनुचित कहा जाएगा। तथापि यह भी सत्य है कि आर०एस०एस० और भा०ज०पा० के लोग हिन्दुत्व की चाहे जैसी केवल प्रबुद्ध समाज के कुछ लोगों के बहस मुबाहिसे तथा आध्यात्मिक चर्चाओं तक ही सीमित नहीं रहा। उसने धर्म, समाज और राष्ट्र के सम्मुख दरपेश सवालों और समस्याओं का समाधान तलाशने में कभी देर नहीं की। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में इतना क्रान्तिकारी परिवर्तन करने में कौनसा अन्य आन्दोलन कृतकार्य हुआ है ? तिलक महाराज ने चाहे कैसी ही राष्ट्रीय चेतना जगाई, किन्तु सामाजिक मामलों में संकीर्ण दृष्टि पाने, सुधारवादी तथा दयानन्द के शिष्य महादेव गोविन्द रानडे का पग पर विरोध करने तथा Age of consent बिल को पास कराने में बाधक बनने के कारण वे कट्टरपन्थी, संकीर्ण तथा प्रतिगामी समुदाय के प्रतिनिधि ही बने। समाज सुधार को आजादी पाने तक टाला नहीं जा सकता था जबकि यह सब लिखने का अभिप्राय यह है कि घोर कट्टरवादी तथा मतांध सैमेटिक मजहबी मुल्ला मौलवियों तथा पादरियों की मुलायमसिंह समाजवाद की बात करते हैं, मायावादी मनुस्मृति के एक भी श्लोक का अर्थ न जानते हुए भी मनुवाद को पानी पी पी कर कोसती है। ऐसे में यदि कोई दल राम मन्दिर को अपने एजेण्डे में शामिल करता है तो किसी को आपत्ति क्यों हो ? जनता स्वयं विचार करेगी कि उनके इस एजेण्डे में कितना दम है ? हम राम मंदिर के प्रति आर्यसमाज के दृष्टिकोण को पहले ही बता चुके हैं। हमें मन्दिर मात्र में कोई दिलचस्पी नहीं है।

लेखक ने यह कैसे मान लिया कि हिन्दुत्व के प्रेरणा स्रोत हिटलर और मुसौलिनी हैं। इसी सनक में वे अशोक सिंहल, नरेन्द्र मोदी, तोगड़िया और विनय कटियार को महजबी आतन्कवादी बताने हैं तो यह उनका पूर्वाग्रह ही बोल रहा है। हमारा किसी से लाख सैद्धान्तिक मतभेद हो उसे गाली देने से तो काम नहीं चलेगा। यदि उपर्युक्त कथित लोग महिलाओं और बच्चों की हत्या, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को कुचलने, बलात्कार, आगजनी, लूटपाट नहीं वाजपेयी जी को उन्होंने क्यों बख्श दिया ? सच तो यह है कि सियासत की जिन बुलंदियों को आडवाणी और अटल ने छुआ है उसके नीचे के पायदान तक को छूने में यह लेखक असफल रहा है। इसका कोई यह अर्थ न ले कि हम अमुक व्यक्ति की राजनीति से सहमत हैं या अनुयायी हैं। निवेदन इतना ही है कि सियासत में मकबूलियत हासिल करने के लिए कड़ी तपस्या करनी पड़ती है। उक्त दोनों नेताओं का राजनैतिक सफर तथा उनका सुदीर्घ संसदीय क्रिया–क्लाप ही उनकी ख्याति का कारण है। इन लेखक ने राजनीति में पांव जमाने के लिए जो क्षुद्र टोटके अपनाए, वे तो गुब्बारों की भांति पिचक गए। २००४ के चुनाव में जब वाजपेयी के सामने चुनाव लड़ने का विचार बनाकर भी राम जेठमलानी अपने परिजनों की सही सलाह मानकर अपना नाम वापस लेते हैं तो इन साधु जी को क्या पड़ी थी कि वे अनशन पर बैठकर जेठमलानी को चुनाव लड़ने के

सत्ता हथियाने के लिए कोई क्या करता है, इस पर आपको क्यों आपत्ति है ? सब पार्टियों की अपनी अपनी बौद्धिक नीतियां Strategy होती हैं। यदि कोई पार्टी राम मन्दिर का मुद्दा उठाती है तो यह जनता को तय करना है कि वह इस मुद्दे का साथ दे या न दे। सत्ता हथियाना कौन नहीं चाहता ? लेखक का यह आक्षेप उसका दुराग्रह तथा अज्ञान है कि अमुक पार्टी वालों ने राम को क्रूरता और आक्रमण का प्रतीक बना दिया। राम तो जैसे हैं, वैसे रहेंगे, उन्हें कोई व्यक्ति या दल क्रूर या आक्रामक कैसे बनाएगा ? यह हम कह चुके हैं कि राम को किसी मठ या मंदिर तक सीमित करना हमारा सिद्धान्त कदापि नहीं है तथापि उनके लिए कोई क्या करता है – मन्दिर बनाता है या स्मृति भवन बनाता है, अनाथालय, पुस्तकालय या पान्थशाला बनाता है, यह बनाने वाले की इच्छा है। हमारा इसमें दखल क्यों हो?

(क्रमशः)

स्व० लाला दीवान चन्द जी का १२२वां जन्मदिवस

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में परम दानवीर स्व० लाला दीवान चन्द जी का १२२वां जन्म दिवस समारोह प्रसिद्ध आर्यनेता श्री राजसिंह भल्ला की अध्यक्षता में रविवार दिनांक २४–९–२००६ को मनाया गया।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० योगानन्द शास्त्री (माननीय स्वास्थ्य मंत्री दिल्ली सरकार) ने कहा कि जिन महापुरुषों का दान सत्कार्यों में लगता है वास्तव में वे ही देवता कहलाते हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार एक असहाय, गरीब और अनाथ बालक दीवान चन्द जी ने अपनी अल्पायु में उन्नति की और धन तथा यश दोनों अर्जित किए वह अनुशासन, लगन और सख्त परिश्रम द्वारा ही सम्भव हो पाया। लाला दीवान चन्द जी भी उन महापुरुषों में एक थे। उन्होंने कहा कि लाला दीवान चन्द जी आर्य जगत के स्तम्भ थे, आर्यसमाज दीवान हाल उसकी एक मिसाल है। वे एक आदर्श पुरुष थे और हमें हमेशा एक आदर्श पुरुष की तलाश रहती है जिससे हमारा जीवन भी बदल जाता है। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति तथा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने इस अवसर पर कहा कि आर्यसमाज का कार्य निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। हमें निराशावादी प्रवृत्ति छोड़नी होगी तथा त्याग की भावना को अपनाकर समाज के उत्थान का संकल्प लेना होगा।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र शर्मा ने गत वर्षों में आर्यसमाज दीवान हाल द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करते हुए इस समाज के प्रसिद्ध व्यक्तियों को अपना नमन किया तथा आर्यसमाज दीवान हाल को लाला दीवान चन्द जी की प्रतिष्ठा तथा नाम को उज्ज्वल रखने का श्रेय दिया।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी ने कहा कि इस समाज का निर्माण एक महापुरुष के सात्विक दान से हुआ तथा उद्घाटन भी एक महापुरुष राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन द्वारा किया गया। इसी गरिमा के अनुरूप इस समाज ने अनेक महापुरुष इस देश को दिए हैं।

इस अवसर पर अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। जिनमें श्री अनिल आर्य, महाशय राम विलास खुराना, श्री अभिमन्यु चावला, श्री रोशन लाल गुप्त, प्रि० चन्द्रदेव, वैद्य इन्द्र देव, डी.सी.पी. श्री चन्द्रभान चौधरी, श्री राजपाल सिंह शास्त्री, श्री सुखबीर सैनी, चौ० लक्ष्मी चन्द, श्री राजीव भाटिया, डॉ० मुमुक्षु आर्य इत्यादि प्रमुख थे।

कार्यक्रम का संचालन आर्यसमाज दीवान हाल के मंत्री डॉ० रविकान्त ने किया। डॉ० रविकान्त ने कहा कि लाला दीवान चंद जी ने कन्याओं की शिक्षा और उन्नति पर भी ध्यान दियां। माता सतभ्रावां कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल करोल बाग तथा आर्यसमाज कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल चावड़ी बाजार इनमें प्रमुख हैं।

आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री कृष्ण गोपाल दीवान जी ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया और विभिन्न विद्यालयों को इस शुभ अवसर पर प्रोत्साहन राशि आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से दी गई।



बाएं से दाएं : सर्वश्री कृष्णगोपाल दीवान, देवेन्द्र शर्मा, प्रो० स्वतंत्र कुमार, रामफल बंसल, चौ० लक्ष्मी चन्द, डॉ० रविकान्त (२) मंचस्थ सर्वश्री रामफल बंसल, डॉ० योगानन्द शास्त्री (स्वास्थ्य मन्त्री, दिल्ली सरकार) एवं वैद्य इन्द्रदेव।

उनके सात्विक दान द्वारा अनेक संस्थाएं स्थापित की गईं परन्तु आर्यसमाज दीवान हाल ने उनके यश और कीर्ति की पताका सम्पूर्ण विश्व में अपने जागरूक और समर्पित कार्यकर्ताओं द्वारा फैलाई। यह समाज अनेक आन्दोलनों तथा स्वतन्त्रता सेनानियों की प्रमुख कार्यस्थली रही है। हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, मीनाक्षीपुरम् का धर्म रक्षा महाभियान इसी समाज से संचालित हुए और उनमें विजय भी आर्यसमाज को मिली। सन् १९४७ में देश के विभाजन के समय आए शरणार्थी शिविर भी यहीं लगे। देश के प्रमुख नेतागण, भारत के प्रधानमन्त्री, भारत के राष्ट्रपति, महात्मा गांधी इत्यादि लोग इस समाज में समय–समय पर पधारते रहे हैं। दिल्ली के कई मेयर, विधानसभाओं तथा लोकसभा के सदस्य इस समाज के सदस्य रहे हैं।

समारोह के विशेष अतिथि लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के प्रधान श्री विश्वनाथ जी ने इस अवसर पर कहा कि जो महापुरुष श्रेष्ठ कार्य कर जनता की भलाई करते हैं वे हमेशा अमर रहते हैं और

– (मेजर) डॉ० रविकान्त
(सेवानिवृत्त)
मंत्री, आर्यसमाज दीवान हाल,
दिल्ली

महर्षि दयानन्द विद्यालय राजौरी गार्डन नई दिल्ली में

अध्यापक दिवस सम्पन्न

नई दिल्ली के पश्चिमी क्षेत्र राजौरी गार्डन में स्थित महर्षि दयानन्द विद्यालय, विद्यारूपी पौधा शिक्षा के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन बढ़ता हुआ आसमान छूने की तमन्ना लिए निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष ५ सितम्बर, २००६ के दिन भी विद्यालय में अध्यापक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रत्येक विद्यार्थी अपने अध्यापकों के लिए समर्पण भाव लिए दिखाई दे रहा था।



महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल की प्रबन्ध समिति के सदस्य एवं विद्यालय की अध्यापक/अध्यापिका मण्डल का एक दृश्य।

वैसे तो सम्पूर्ण विद्यालय की शोभा अवर्णनीय थी किन्तु जिस हाल में इस कार्यक्रम का आयोजन था उसकी शोभा देखने योग्य थी। विद्यालय के सभी सदस्य प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दे रहे थे। प्रधानाचार्या श्रीमती विभा पुरी के निर्देशानुसार हास्य एवं व्यंग्य पर काव्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। समाज में व्याप्त अनेक समस्याएं जिनका समाधान हम शिक्षा के माध्यम से ढूंढना चाहते हैं, उन्हीं विषयों पर यह कार्यक्रम आधारित था। सर्वप्रथम श्रीमती सुनीता अग्रवाल की देखरेख में कक्षा छठी की छात्रा कुमारी प्रतिष्ठा नागिया द्वारा 'गुरु वन्दना' से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। तत्पश्चात् कक्षा दसवीं की छात्रा पारुल आहुजा द्वारा शिक्षक दिवस पर अपने विचार प्रस्तुत किए गए। तदन्तर हंसने-हंसाने का कार्यक्रम काव्य सम्मेलन आरम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में कक्षा नवीं से चेतन चौधरी, चेतन शर्मा, कर्ण मोंगा, अंजलि कथूरिया, कक्षा आठवीं से रक्षा रामावत, सातवीं से यतिन रामावत ने भाग लिया। सभी काव्य कृतियां कुछ ना कुछ संदेश देते हुए सभी को हंसी से सराबोर कर रही थीं। उपस्थित लोगों ने इस कार्यक्रम का भरपूर रसस्वादन लिया। उसके बाद विद्यालय के प्रधान श्री जगदीश आर्य, मैनेजर श्री देव प्रकाश पाहवा व सैक्रेटरी श्री दयानन्द मदान व कार्यकारिणी के सभी सदस्यों द्वारा अध्यापक वर्ग का सम्मान प्रतीक स्वरूप उपहार व स्नेहाशीषों द्वारा किया गया। प्रधान जगदीश आर्य जी ने अपने सभी सदस्यों सहित सभी अध्यापकों को आशीर्वचनों द्वारा उनके कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए गुरु व शिष्य परम्परा के विषय में बताते हुए उनके सम्बन्धों को और प्रगाढ़ करने पर बल दिया।

कार्यक्रम के समापन पर किसी कारणवश प्रधानाचार्या की अनुपस्थिति में उपप्रधानाचार्या श्रीमती प्रियानिशी दुग्गल ने सभी विशिष्ट अतिथियों सहित सभी का धन्यवाद किया। मंच संचालिका द्वारा अंत में शान्ति पाठ करवाया गया। सभी ने आनन्दित मन से कार्यक्रम को सराहा व प्रसाद स्वरूप जलपान ग्रहण किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती सुनीता अग्रवाल, श्रीमती संगीता सेठी व श्रीमती अंजली बंसल ने सहयोग किया।

– सुनीता अग्रवाल

विश्व सत्यार्थ संदेश प्रसार योजना से आर्य जगत् में हलचल

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में आयोजित दस लाख रुपये के कुल पुरस्कार वाली उक्त सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय परीक्षण योजना (छात्र–छात्राओं के लिए) के प्रति आर्य जगत् में भारी उत्साह है। अब तक कुल ७ उपकेन्द्र इस योजना के बन चुके हैं जो एक हजार से ज्यादा विद्यार्थियों को इससे जोड़ेंगे। इसके अतिरिक्त तीन हजार विद्यार्थी अब तक इस योजना से जुड़ चुके हैं। अतः विश्वभर के गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं व आर्य समाजों से जुड़े विद्यार्थी समूह से अनुरोध है कि मात्र २५ रुपये देकर योजना के सदस्य बनें और ५००० रुपए तक का पुरस्कार प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करें।

स्वाध्यायशील आर्यों से निवेदन

उक्त योजना में जो सहस्रों उत्तर पुस्तिकाएं प्राप्त होंगी उनके मूल्यांकन से आप हमारा सहयोग करें। आपको न्यास द्वारा प्रेषित मानक उत्तर पुस्तिका के अनुसार मूल्यांकन करना होगा। विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाएं आप तक पहुंचाने व वहां से मंगाने का डांक व्यय न्यास द्वारा वहन किया जावेगा।

कृपया अपने को मूल्यांकनकर्ता के रूप में पंजीकृत करा, इस ठोस रचनात्मक योजना को अपना समर्थन प्रदान करें।

संपर्क सूत्र – अशोक आर्य
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर
राजस्थान (भारत) [illegible]

पृष्ठ १ का शेष

धन सम्पन्न आर्यों एवं निस्स्वार्थी ...

अरे नादान नाम के आर्यों पुलिस और कानून का डर नहीं परन्तु परमपिता परमात्मा से तो डरो। धन सम्पन्न व्यक्तियों के नाम छाप-छाप कर धन की लूट मचा रहे हो, कार्यकर्त्ताओं के नाम छाप-छाप कर निस्स्वार्थ छवियों को भी कलंकित कर रहे हो। और दिखाना चाहते हो कि संगठन की सबसे बड़ी जिम्मेवारी तुम्हारे कंधों पर है। क्या सचमुच इस जिम्मेवारी का निर्वहन इन तौर तरीकों से कर सकोगे। क्या यह परम्पराएं चिरस्थायी हो सकती हैं।

स्व० श्री मोहनलाल मोहित जी की आत्मा भारत में एक विशाल स्तर का वैदिक अनुसंधान केन्द्र देखना चाहती थी। हरिद्वार सम्मेलन (वर्ष २००२) में वे स्वयं अपने भाषण के दौरान इस भावना को व्यक्त करना चाहते थे परन्तु श्री देवरत्न आर्य ने उनके भाषण को स्वयं हस्तक्षेप करके इस तरह विराम लगा दिया जैसे कोई पोल न खुल जाए। उस सम्मेलन में श्री देवरत्न के इस आचरण की बदबू तब आई जब स्वयं मुम्बई वासियों ने उनके धन सम्बन्धी कई अन्य षडयन्त्रों को खुला प्रस्तुत किया। उनके हरिद्वार सम्मेलन में किए गए इस आचरण के कैसेट उपलब्ध हैं।

स्व० श्री मोहनलाल मोहित जी के सुपुत्रों के हाथ-पैर जोड़कर यह लिखवाया जा रहा है कि हमारे पिता द्वारा श्री देवरत्न आर्य को प्रदत्त धन सुरक्षित हाथों में है। धन की कोई लिखित पढ़त हो या न हो परन्तु ईश्वर की व्यवस्था में सब कुछ स्पष्ट है। कौन मरणधर्मा इन तथ्यों से इन्कार कर सकता है कि (१) लगभग ५० लाख रुपये की धनराशिं पहले अजमेर में वैदिक अनुसंधान बनाने के लिए दी गई। (२) श्री देवरत्न के गुमराह करने पर ही वह धन मुम्बई में एक विशाल केन्द्र बनाने के लिए उन्हीं के पास (तथाकथित सुरक्षा में) रख दी गई (३) मुम्बई सम्मेलन में इसी धन राशि के बल पर श्री देवरत्न बड़े (झूठे) उत्साह से इस योजना को प्रस्तुत करते रहे। (४) आज तक वह पैसा उन्हीं के व्यक्तिगत खातों में (तथाकथित सुरक्षा में) पड़ा हुआ है।

क्या समूची आर्य जनता दान के धन की इस कथित सुरक्षा करने वाले आचरण से सहमत है?

क्या स्वयं श्री मोहित जी के सुपुत्रगण अपने पिता के सात्विक दान और भावनाओं को ऐसी निष्क्रिय स्वार्थी सुरक्षा में ही दम तोड़ते रहने में अपनी स्वीकृति प्रदान करेंगे ?

इन तथ्यों से यदि किसी व्यक्ति को इन्कार हो तो हरिद्वार सम्मेलन की कैसेट सुने और इस वर्तमान महागुटबाजी के षड्यन्त्र को समझने का प्रयास करें।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान के नाते दान संग्रह करके भेंट में मिली कार को निजी कार बनाने का अधर्म हर कोई नहीं कर सकता। श्री विमल वधावन से वर्ष २००६ में भी कार मरम्मत का ४० हजार रुपया मांगने की अनैतिकता पर रोक लगाने से ही परस्पर तनाव उत्पन्न हुए और षड्यन्त्रों का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। इन अनियमितताओं और षड्यन्त्रों से मुक्ति के लिए ही सार्वदेशिक सभा को हस्तक्षेप कर यह निर्णय देना पड़ा कि श्री देवरत्न आर्य प्रधान पद के योग्य नहीं हैं। फिर भी पद लिप्सा की मारामारी – एक नया गुट (महाषडयन्त्र) तैयार कर दिखाया। परन्तु यह चिरस्थायी नहीं हो सकता। □

पृष्ठ १ का शेष

दिल्ली में डेंगू का प्रकोप

इस खींचतान के बीच डेंगू के प्रकोप की घटनाएं हजारों की संख्या से ऊपर बढ़ चुकी है।

आर्यसमाज को क्या करना चाहिए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने डेंगू प्रकोप से बचने के लिए दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों को प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सायंकाल न्यूनतम एक-दो घण्टे के यज्ञ सार्वजनिक स्थलों, पार्कों तथा झुग्गी–झोपड़ी बस्तियों में आयोजित करने का आह्वान किया है।

१. इन यज्ञों में गाय के गोबर से बने उपलों को आधार बनाना चाहिए।

२. यज्ञों में विशेष सामग्री जिसमें गूगल, लोबान, नीम की सूखी पत्तियां, गिलोय आदि का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाए।

३. यज्ञों में विधायकों, निगम पार्षदों, सरकारी, स्वास्थ्य अधिकारियों तथा पुलिस अधिकारियों, प्रमुख व्यापारियों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाए। उनसे यह निवेदन किया जाए कि वे सफाई स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत सरकारी खर्च से इन यज्ञों को आयोजित करें।

४. अधिकाधिक आर्यजन यथासम्भव अपने-अपने घरों में नित्य यज्ञ अवश्य करें तथा यज्ञोपरान्त यज्ञ-कुण्ड को घर के विभिन्न कमरों में बारी-बारी से रखे। यज्ञ के धुएं से मच्छर भागते हैं।

सार्वजनिक एवं सामूहिक भोजन जैसे विवाह शादियों का भोजन या होटल रेस्टोरेन्ट आदि में भोजन करना एक दो माह के लिए स्थगित रखे।

God won't ask in what neighbourhood you lived. We'll ask how you treated your neighbours.

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 8-10-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C)93/2006-08 in NDPS on 5/6-10-2006

आर्य वन में योग शिविर

पूज्य स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन में कार्तिक शुक्ल ११ से कार्तिक कृष्णा ४ वि.स. २०६३ तदनुसार २ नवम्बर से ६ नवम्बर, २००६ तक ८ दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें माताएं भी भाग ले सकेंगी। शिविरार्थी १ नवम्बर को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जाएं।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी-सम्बन्ध, ममत्व को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः ४ से रात्रि ९.३० बजे तक रहेगी। जिसमें लगभग ६ घण्टे मौन व्रत का पालन करना अनिवार्य होगा। शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह रोगी न हो, धूम्रपानादि व्यसनों से रहित हो, कम से कम दस कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त हो, हिन्दी भाषा को पढ़-लिख-बोल-समझ सकता हो तथा पूर्ण अनुशासन में चलने वाला हो। इस बार युवा (१५ से ५० वर्ष तक आयु वाले) पठित और नए व्यक्तियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

भोजन शुल्क (शिविर शुल्क) रु० ५००/- निर्धारित किया गया है। आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाएंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाएगी।

शिविर में भाग लेने के इच्छुक सज्जन १५ अक्तूबर से पूर्व अपना विवरण जैसे **नाम, अवस्था, शिक्षा, व्यवसाय** सहित आवेदन पत्र लिखें और स्वीकृति प्राप्त होने पर शिविर शुल्क राशि मनिआर्डर द्वारा ही व्यवस्थापक योग शिविर, आर्य वन के नाम से भेजें और अपना पंजीकरण अवश्य करा लेवें। अन्यथा शिविर में स्थान आरक्षित नहीं माना जाएगा। कृपया चैक या ड्रॉफ्ट न भेजें।

– **ब्र० दिनेश कुमार**, व्यवस्थापक

पत्र व्यवहार का पता
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्य वन, पत्रालय सागपुर
जिला साबरकांठा,
गुजरात – ३८३३०७
(०२७७४) २७७२१७, (०२७७०) २८७४१७
E-mail: darshanyog@icenet.net
web: www.darshanyog.org

निर्वाचन समाचार

आंचलिक गढ़वाल आर्यसमाज, दिल्ली
प्रधान : श्री मोहनलाल जिज्ञासु
मन्त्री : श्री धर्मसिंह शास्त्री
कोषाध्यक्ष : श्री अमरदत्त आर्य

आर्यसमाज, पंचदीप, दिल्ली
प्रधान : श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता
मन्त्री : श्री मनोहर लाल गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री यशपाल आर्य

आर्यसमाज मन्दिर जलालाबाद, शाहजहांपुर
प्रधान : श्री रामेश्वर सिंह आर्य
मन्त्री : श्री कुंवर बहादुर सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रामदास आर्य

ब्रह्मचारी ओमस्वरूपार्य हरियाणा राज्य गोशाला संघ के प्रधान बने

नारनौल, श्री गोपाल गोशाला परिसर में हरियाणा राज्य गोशाला संघ की रविवार को आयोजित बैठक में ब्रह्मचारी ओमस्वरूपार्य को सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाया गया है। बैठक में भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड चैन्नई के अध्यक्ष डॉ० आर०ए० खरब मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता उपायुक्त एम०पी० बंसल ने की। इससे पूर्व गोशाला संघ के प्रधान आचार्य बलदेव नैष्ठिक थे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि देश में करीब ४ हजार गोशालाएं हैं, जिनमें से हरियाणा में करीब २२५ गोशालाएं हैं। उन्होंने कहा कि कुछ गोशालाएं आत्मनिर्भर हैं तथा कुछ आर्थिक रूप से कमजोर हैं। इन कमजोर गौशालाओं की बोर्ड की ओर से मदद कर उन्हें भी आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। श्री बंसल ने कहा कि नारनौल गोशाला प्रधान हरिशचन्द्र बोहरा हरियाणा गोशाला अध्यक्ष ओमस्वरूपार्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बैठक में हरिओम तायल को हरियाणा राज्य गोशाला संघ का महासचिव, हरीशचन्द्र बोहरा-उपाध्यक्ष, आचार्य बलदेव-संरक्षक मनोनीत किया गया। संघ के नवनियुक्त अध्यक्ष ने कहा कि ३ नवम्बर को पानीपत में गोशाला सहयोग सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें निर्धन गोशालाओं को ५ लाख रुपये चारे के लिए बांटे जाएंगे। उन्होंने कहा कि संघ की ओर से बैलों से खेती करने वाले किसानों को, गाय पालने वाले, खेत में गोबर खाद का प्रयोग करने वालों को भी ५१-५१ सौ रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अलावा गायों की नस्ल सुधार पर भी ध्यान दिया जाएगा। इस मौके पर संस्था के अनेक पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9811221083) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.com वेबसाइट : http://www.sarvadeshik.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४५ अंक १३ ५ नवम्बर से ११ नवम्बर, २००६ तक दयानन्दाब्द १८४ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ सम्वत् २०६३ का०पू०
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में

सत्यार्थ प्रकाश और गोरक्षा महासम्मेलन

२-३ दिसम्बर, २००६ को नोएडा में

एक लाख सत्यार्थ प्रकाश तथा गौकरुणानिधि वितरण की क्रान्तिकारी योजना

भारत आज भी एक कृषि प्रधान देश है। भारत की मूल संस्कृति भी इसीलिए कृषि संस्कृति मानी जाती है। कर्मठता, आध्यात्मिकता, ईश्वर भक्ति, ईमानदारी, त्याग भावना, खुद खाने के साथ–साथ हजारों को खिलाने की क्षमता आदि सैकड़ों लक्षण कृषि की परम्पराओं और कृषि आधारित जीवन के ही कारण भारतीय संस्कृति की पहचान बने। कृषि के सभी सिद्धान्त और सूत्र सीधे वैदिक ज्ञान से सम्बन्धित हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गाय माता का मनुष्य के जीवन तथा सीधे कृषि में योगदान को देखते हुए ही गोरक्षा का आह्वान देशवासियों से किया। गोकृषि आदि रक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द जी का मार्गदर्शन चिरस्थायी रहेगा।

भारत की अर्थ व्यवस्था के इस मूल विषय गोरक्षा के साथ–साथ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार की दृष्टि से एक विशाल आर्य महा–सम्मेलन का आयोजन २ और ३ दिसम्बर (शनिवार एवं रविवार) को दिल्ली के निकट नोएडा के सेक्टर ३२ में किया जाएगा। यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में तथा नोएडा, गाजियाबाद के अतिरिक्त निकटवर्ती जिलों की आर्यसमाजों आदि के सहयोग से सम्पन्न किया जाएगा।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी करेंगे। इस सम्मेलन के संयोजक श्री महेन्द्र सिंह आर्य तथा सह- संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य एवं श्री मायाप्रकाश त्यागी होंगे।

श्री महेन्द्र आर्य ने कहा कि समूचे देश से पधारने वाले आर्य जनों का इस सम्मेलन में स्वागत है। इस सम्मेलन में विशेष रूप से एक लाख सत्यार्थ प्रकाश तथा गौकरुणा–निधि पुस्तकों का वितरण न्यूनतम सम्भव कीमत पर करने का भीष्म संकल्प इस महासम्मेलन का एतिहासिक परिचय देगा।

इस सत्यार्थ प्रकाश एवं गोरक्षा महासम्मेलन की तैयारियों के लिए कई कार्यकर्ता बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण, कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार आर्य, उपमन्त्री श्री विमल कुमार एडवोकेट, चौधरी लक्ष्मीचन्द, श्री स्वराज्य चन्द्र (मेरठ), श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा (गाजियाबाद) एवं श्री अशोक आनन्द (नोएडा) आदि के अतिरिक्त सैकड़ों आर्य नेताओं ने इस सम्मेलन को वैदिक धर्म प्रचार एवं आर्यसमाज की संगठनात्मक एकता का उदघोष सिद्ध करने के लिए संकल्प लिए हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने समूचे आर्य जगत के कर्मठ पदाधिकारियों एवं विद्वानों का आह्वान किया है कि इस महासम्मेलन से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार का नया मार्गदर्शन वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थितियों के दृष्टिगत अत्यन्त लाभकारी रहेगा।

शेष पृष्ठ ४ पर

प्रो० इस्राईल खां बने आर्यसमाजी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद गाजियाबाद के तत्वावधान में ३ दिवसीय जनपद स्तर के महासम्मेलन में दूसरे दिन सिहानी क्षेत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत प्रोफेसर इस्राईल खान ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए स्वेच्छा से आर्यसमाज का सदस्य बनने की इच्छा व्यक्त की।

प्रो० इस्राईल खान ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद भाष्य के माध्यम से राष्ट्रीय और मानवीय एकता तथा ईश्वर भक्ति का मार्ग दर्शन दिया है। उन्होंने कहा कि देश एक वृक्ष की तरह है और समस्त नागरिक उसकी शाखा रूप हैं। शाखाओं के वृक्ष से कट जाने पर न वृक्ष का ही महत्व रहता है और न ही शाखाओं का।

प्रो० खान ने सभी आर्यजनों का आहवान करते हुए कहा कि नारी रक्षा तथा गो रक्षा के लिए केवल भाषणों से नहीं होगी। कुछ ठोस कार्यक्रम बनाए जाने चाहिएं जिससे राष्ट्र की हर प्रकार की धरोहर की रक्षा हो सके।

शेष पृष्ठ ४ पर

जॉनसन संजीव शुद्धि संस्कार के बाद बने दीपेन अभिसूर्य



कर्नाटक की राजधानी बंगलौर के एक प्रतिष्ठित चर्च के अध्यक्ष श्री मरियप्पा राजू के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री जॉनसन संजीव कुमार का ८ जुलाई, २००६ को आर्यसमाज मन्दिर इन्द्रानगर के प्रांगण मे आर्य नेता एव विद्वान् श्री सूर्य प्रकाश कुमार के निर्देशन में सम्पन्न हुए यज्ञ मे शुद्धि संस्कार सम्पन्न करवाया गया।

शेष पृष्ठ ४ पर

दिल्ली सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन सार्वदेशिक न्याय सभा की देखरेख में होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक के प्रस्तावों का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व के अधिकारियों द्वारा लगातार उल्लंघन किए जाने तथा विशेष रूप से दिल्ली सभा के तत्कालीन प्रधान श्री राजसिंह आर्य द्वारा खुली अनुशासनहीनताओं के दृष्टिगत सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी के आदेश दिनांक १५.६.२००६ के द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग को भंग करके कार्य संचालनार्थ श्री वैध इन्द्रदेव जी की अध्यक्षता में तदर्थ समीति का गठन किया गया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आगामी त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक की देखरेख में सम्पन्न होगा।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि अपनी आर्य समाज के प्रतिनिधि तथा अन्य विवरण, शुल्क आदि सहित अविलम्ब सभा को भेजने का कष्ट करें।

नरेन्द्र आर्य, महामंत्री, दिल्ली सभा
सभा कार्यालय
आर्य समाज, रमेश नगर ब्लॉक ६,
महर्षि दयानन्द मार्ग, नई दिल्ली–१६
फोन : ६३५०६५६४५६ ६२१३४०२६२८

श्री सुदर्शन शर्मा पुनः ३ वर्ष के लिए कुलाधिपति बने।

गुरूकुल कांगडी विश्व विद्यालय की सीनेट बैठक मे श्री सुदर्शन शर्मा के कुलाधिपति पद पर चयन की पुष्टि सर्वसम्मिति से कर दी गई है। इससे पूर्व दिल्ली, हरियाणा और पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधानों की बैठक में भी श्री सुदर्शन शर्मा के नाम को कुलाधिपति पद के लिए सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री विमल वधावन आर्य ने सीनेट सदस्य के रूप मे बैठक मे भाग लेते हुए यह प्रस्ताव किया कि गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय की ओर से वेदो के प्रकाशन का कार्य यथाशीघ्र सम्पन्न किया जाए क्योंकि अग्निवेश द्वारा सार्वदेशिक सभा तथा समूचे आर्य समाज संगठन मे अव्यवस्था उत्पन्न

शेष पृष्ठ ४ पर

सम्पूर्ण भारतीयता क परिचय वेद है – डॉ० महावीर मीमांसक

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री न्हैया लाल तलरेजा जी ने अपनी ५वीं कृति "वेद के मोती" का ोकार्पण भव्य समारोह पूर्व गृह मन्त्री ी लालकृष्ण आडवाणी जी के निवास र आयोजित किया। ८५१ पृष्ठ के स भव्य ग्रन्थ का लोकार्पण भाजपा ेताओं सर्वश्री जी०पी० माथुर, श्री ालकृष्ण आडवाणी, श्री राजनाथ ेंह एवं श्री केदारनाथ साहनी जी की उपस्थिति में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ० महावीर मीमांसक जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस समारोह में सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफंल बंसल, सभामन्त्री श्री विमल वधावन आर्य तथा दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव भी उपस्थित थे। दिल्ली के सैकड़ों प्रतिष्ठित गणमान्य महानुभावों ने इस वैदिक ग्रन्थ के लोकार्पण के अवसर पर वेद ज्ञान के बारे में जानकारियां प्राप्त करके अपार हर्ष का अनुभव किया।

डॉ० महावीर मीमांसक जी ने कहा कि भारत की सभ्यता, संस्कृतिअस्मिता और यहां तक कि सम्पूर्ण भारतीयता के परिचय का मूलाधार वेद ही है। वेद एक ऐसे समुद्र की तरह है जिसमें समूची सृष्टि का ज्ञान विज्ञान समाहित हो जाता है। कुछ लोग अज्ञानतावश वेद में बहु देवतावाद की अवधारणा को गलत तरीके से समझने लगते हैं। उन्होंने स्पष्ट करके बताया कि परमपिता परमात्मा तो एक ही है जो समूचे ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति है। वेद मन्त्रों में अलग–अलग विषयों को समझाने के लिए उन विषयों को ही देवता कहकर सम्बोधित किया गया है जिससे उस विषय को समझने में श्रद्धा भी उत्पन्न हो।

उन्होंने बताया कि वेद ज्ञान रूपी समुद्र में गोते लगाने वाला ही इन रत्नों के महत्व को जान सकता है। कीचड़ में या गन्दे पानी में गोते लगाने से रत्न प्राप्त नहीं हो सकते।

भाजपा अध्यक्ष श्री रांजनाथ सिंह ने कहा कि चारों वेदों के असंख्य रत्नों में से श्री तलरेजा जी ने १६४ मन्त्र रूपी रत्नों को सजाकर इस पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि वेद ज्ञान समूचे विश्व का मूल और प्राचीनतम ज्ञान है।

ज्ञान की समस्त आधुनिक शाखाओं के विकास में वेद ज्ञान सहायक है। वैदिक गणित के सूत्रों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह सूत्र गणना करने में व्यक्ति को कम्प्यूटर से भी तीव्र बना सकते हैं।

उन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्र में भी वैदिक विचारों को सर्वोपरि बताते हुए कहा कि मन का दायरा बढ़ाने से सुख का दायरा बढ़ता है। ऐसे हजारों आध्यात्मिक सूत्र वेद में मिलते है।

श्री कन्हैया लाल तलरेजा ने कहा कि इस पुस्तक के प्रकाशन का कार्य एक राष्ट्र सेवा की तरह किया गया है। ८५१ पृष्ठ के इस ग्रन्थ का मूल्य ८००/– रुपये है जिस पर २० प्रतिशत छूट रखी गई है। १० से २५ प्रतियां लेने पर छूट ३० प्रतिशत तथा २५ से अधिक प्रतियां लेने पर छूट ४० प्रतिशत की दी जा सकती है। पुस्तक क्रय करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।

राष्ट्रीय चेतना संगठन
पी–६५ पांण्डव नगर
मयूर विहार, फेस – १, नई
दिल्ली–९१,
फोन : ९८१०३०३०३३



''वेद के मोती'' ग्रन्थ के विमोचन समारोह में राष्ट्रीय नेता

वेद, मनुस्मृति, सत्यद्रष्टा महर्षि दयानन्द

– डॉ० कृष्ण लाल

सत्यान्वेषी, सत्यनिष्ठ, सत्यद्रष्टा, सत्यप्रचारक, वेदोद्धारक, समाजसुधारक, आर्यवैदिक धर्मपोषक महर्षि दयानन्द का कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश शोधग्रन्थ की श्रेणी में रखा जाने योग्य अद्वितीय ग्रन्थ है। यह स्वयं तो सत्याधारित है ही, पाठक को भी सत्यनिष्ठ होने की प्रेरणा देता है जिससे मन के आचार विचार की शुद्धि होती है। मनु ने उदारतापूर्वक सत्य के द्वारा मन के शुद्ध होने की बात कही है। जल कितना ही निर्मल, पवित्र हो, वह केवल शरीर को ही शुद्ध कर सकता है। मन तो केवल सत्य (सत्यभाषण, सत्याचरण) से ही शुद्ध हो सकता है –

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति,

मनः सत्येन शुद्ध्यति।।

बालक को शिक्षा देते हुए, उसकी इसी शुद्धि का प्रयत्न किया जाता है। एक प्रसिद्ध उक्ति है –

न हि सत्यात् परो धर्मः

शतपथ ब्राह्मण भी यही उद्घोष करता है – सत्य ही धर्म है, मनुष्य का श्रेष्ठ कर्तव्य है –

यो वै धर्मः सत्यं वै तत्।

अथर्ववेद (१२.१.१) में पृथ्वी को धारण करने वाले तत्त्वों में सर्वप्रथम सत्य का उल्लेख हुआ है। इसीलिए मनु ने उद्घोष किया है कि 'मनु ने किसी के जिस किसी धर्म (कर्तव्य) का उल्लेख किया है, वह पहले ही वेद में उल्लिखित है क्योंकि वेद तो समस्त ज्ञान का भण्डार है।

यः कश्चित् कस्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।

स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।। मनु० २.७

इसी कथन का और अधिक विस्तार करते हुए एक अन्य स्थल पर मनु ने कहा कि 'चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास – इन चारों मनुष्य जीवन के आश्रमों (पड़ावों), तीनों लोकों (पृथ्वी, अंतरिक्ष, आकाश) तथा भूत, वर्तमान, भविष्य – इन तीनों कालों के विषय में सभी तत्त्व वेद से सिद्ध होते हैं।

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।

भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति।। मनु. १२.९७

वेद के इस महत्व को देखते हुए ही महर्षि दयानन्द ने उसे सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ बताया है। जैसे विज्ञान की उक्तियां शाश्वत सत्य का द्योतन करती है उसी प्रकार वेद मन्त्रों में सभी तत्त्व निगूढ़ है। उन्हें गहन अध्ययन द्वारा उन्मीलित करने की आवश्यकता है।

विदेशियों द्वारा विकृत किए जा रहे वैदिक ज्ञानविज्ञान के प्रकाश करो शुद्धकर सर्वसुलभ बनाने के लिए महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का प्रणयन किया और अभिनव, उदात्त, निरुक्तादिशास्त्रसम्मत वेदभाष्य करने को प्रवृत्त हुए। इस भाष्य के द्वारा वे न केवल वेद के विषय में फैलाई गई निराधार भ्रान्तियों के उन्मूलन में समर्थ हुए अपितु वेदों के आधार पर समस्त देश की समस्याओं यथा राज्य, शासन, शिक्षा, युद्धनीति, कृषि के विषय में प्रचुर प्रकाश डाला। सत्यार्थ प्रकाश नामक अद्वितीय ग्रन्थ में तर्क के आधार पर सभी अन्धविश्वासों से पर्दा उठाया। नारी शिक्षा का प्रबल प्रतिपादन कर इन्होंने बाल विवाह का विरोध किया और विधवा विवाह का समर्थन किया। इन्होंने ही सर्वप्रथम अपने देश पर विदेशी शासन का विरोध किया और स्वतन्त्रता- सम्बन्धी देशवासियों के अधिकार की स्थापना की। प्रक्षेपरहित मनु–स्मृति को सर्वलोकोपकारक मानते हुए उसे अपनी मान्यताओं का आधार बनाया। तर्क सबसे बड़ा मार्गदर्शक है। ऐसा मानते हुए वैज्ञानिक आधार पर समीक्षा कर उसका प्रतिपादन किया। इनकी ही प्रेरणा से विद्वानों यथा प्रो० सुरेन्द्र कुमार ने मनुस्मृति के प्रक्षिप्त अंश निकालकर उसके शुद्ध संस्करण का सम्पादन किया है जिससे कि मनुस्मृति के विषय में फैलाये गए मिथ्या प्रवाद दूर हों और सामंजस्य बना रहे। इससे मूल संविधाननिर्माता मनु के निष्पक्ष, उदार (साथ ही कठोर) नियम सम्मुख आते हैं। अनेक विद्वानों ने प्रतिपादित किया है कि मनु के सिद्धान्त इतने व्यापक हैं कि संसार के बहुत से बर्मा, इंडोनेशिया आदि देशों ने अपने जन–व्यवहार के नियम बनाने के लिए मनु का आश्रय लिया है।

– विश्वनीड, ई–६३७
सरस्वती विहार,
दिल्ली – ३४

गतांक से आगे

त्रिशूल दीक्षा पर आपत्ति व्यर्थ

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

'भगवा' नाम को बदनाम करने में तो कांग्रेसी, कम्युनिस्ट और लीगी मनोवृत्ति के मुसलमान पहले ही उधार खाए बैठे थे, अब स्वामी जी भी इसी टोले में आ मिले। वे तो स्वयं भगवा धारी हैं। उन्हें तो भगवाकरण के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए।

हर मतमजहब, पार्टी या संगठन के अपने अपने कर्मकाण्ड होते हैं। आप उनसे सहमत हों या न हों। बंग भंग के जमाने के क्रान्तिकारी लोग काली मंदिर में जाकर, गीता पर हाथ रखकर देशभक्ति की कसम लेते थे। कोई क्रान्तिकारी गीता की पुस्तक को हाथ में लेकर फांसी पर झूल जाता था। मतमजहबों के भी अपने अपने कर्मकाण्ड होते हैं। कोई सुन्नत कर तथा कलमा पढ़कर स्वमत में दीक्षित करते हैं तो कोई बपतिस्मा देकर भोले वनवासी को ईसा की भेड़ों के टोले में शरीक करते हैं। राजनैतिक पार्टियों के भी अपने अपने टोटके हैं। दाण्डी के नमक सत्याग्रह की तवारीख का अ,ब,स न जानने वाले राहुल अपनी माता सहित उसमें शरीक होते हैं तो किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? अमेठी से चुनाव लड़ने वाला कोई नेता (राजीव गांधी) इस नगर के समीपवर्ती जायस ग्राम के जायसी कवि के इतिहास से अनभिज्ञ होने के कारण अपने भाषण में कुछ का कुछ बोल जाता है तो यह उसका अज्ञान ही है। स्वामी अग्निवेश पूछते हैं कि तोगड़िया को यह किसने अधिकार दिया कि वे शिव के त्रिशूल को विकृत कर उसका अपने अनुयायियों में वितरण करें। हम आर्यसमाजियों के लिए तो विष्णु के चक्र, शिव के डमरू या त्रिशूल तथा गजानन के मोदक का कोई महत्व नहीं है किन्तु यदि कोई त्रिशूल को अपने अनुयायियों में वितरण करे तो इसमें किसी को क्या आपत्ति ? यह तो शासन को देखना है कि यह त्रिशूल हथियारों के लिए बनाए गए कानून की धारा का उल्लंघन करता है या नहीं। यदि त्रिशूल बनाना या बेचना व्यापार है तो कांग्रेस सेना दल के लिए गांधी टोपियां सीना तथा चरखे वाला ध्वज बनाना और बेचना भी शुद्ध व्यापार ही है। चुनाव में तो यह व्यापार अधिक चमक जाता है।

'भगवा' नाम को बदनाम करने में तो कांग्रेसी, कम्युनिस्ट और लीगी मनोवृत्ति के मुसलमान पहले ही उधार खाए बैठे थे, अब स्वामी जी भी इसी टोले में आ मिले। वे तो स्वयं भगवा धारी हैं। उन्हें तो भगवाकरण के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए किन्तु आश्चर्य है कि वे भी अर्जुनसिंह, वृन्दा करात, तथा सैयद शहाबुद्दीन की जमात मे शरीक होकर भगवाधारी साधु मण्डली को कोसने लगे। साधु वर्ग में यदि कोई दोष है तो उसका सुधार करें, भगवा का अपहरण कोई क्या करेगा?

यदि गुजरात काण्ड को लेकर स्वामी जी नरेन्द्र मोदी आदि के प्रति अपनी भड़ास निकालना चाहते हैं तो यह दूसरी बात है अन्यथा उनका यह कहना कि हिन्दुत्व घृणा, हिंसा और असहिष्णुता की बुनियाद पर टिका है, कोई मतलब नहीं रखता। इस लेख के छठे बिन्दु में स्वामी जी का विद्वेषमूलक दृष्टिकोण अपने नग्न रूप में आया है।

१. नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के हत्याकाण्ड को यदि गोधरा काण्ड की प्रतिक्रिया बताया तो इसमें गलत क्या था ? निश्चय ही यदि गोधरा में यात्रियों की अमानुषिक हत्या नहीं होती तो उसके बाद के वीभत्स किन्तु प्रतिकार मूलक कार्य नहीं होते। क्रिया से प्रतिक्रिया होती है, यह तो शाश्वत सार्वभौम सिद्धान्त है। आश्चर्य है कि स्वामी जी यू०सी० बैनर्जी की रिपोर्ट पर क्यों चुप हैं, वे भी गोधरा के हत्याकाण्ड को काल्पनिक बताकर यह क्यों नहीं कहते कि उक्त डिब्बे में यात्रा करने वालों ने शुद ही अपने ऊपर तेल छिड़क कर आत्महत्या कर ली थी। लालू यादव तो यही कहते हैं।

२. अल्पसंख्यकों की बढ़ती हुई संख्या को लेकर चिन्ता प्रकट करने वाले लालकृष्ण आडवाणी से यदि उन्हें शिकायत है तो वे खुलकर क्यों नहीं कहते कि आने वाली सदी तक यदि भारत मुस्लिम प्रधान देश बन जाता है तो वे तो इसका स्वागत ही करेंगे। जनगणना में मुसलमानों की आनुपातिक वृद्धि निश्चय ही हिन्दू समाज के लिए चिन्ता का कारण है। अन्ततः भारत तो हिन्दू भारत या आर्यावर्त ही है। उसका इस्लामीकरण स्वामी जी को अभीष्ट होगा, करोडों देशभक्त भारतवासियों को नहीं।

३. जिन लोगों ने विवादित ढ़ांचा गिराया उसको दण्डित करने का काम अदालत का है। स्वामी जी इसके लिए व्यर्थ परेशान क्यों होते हैं ? यह ढांचा कोई इबागत गाह तो था नहीं, तथापि किसी भी इमारत को व्यर्थ में क्षति पहुंचाना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। यहां सरस्वती वंदना के नाम पर धमकाने के लिए तो स्वामी जी ने तोगड़िया मण्डली को बुरा भला कहा, किन्तु वंदेमातरम् में वर्णित भारत माता को डाइन कहने वालों तथा संविधान सम्मत देशभक्ति पूर्ण गीत वंदेमातरम् का बहिष्कार करने वाले देशद्रोहियों की निंदा में उनके पास कोई शब्द नहीं है। हम चाहे सरस्वती पूजा को मानें या न मानें, आर्यसमाजी के लिए तो मूर्तिपूजा पाठ तथा दुराचार (द्रष्टव्य– स्वामी दयानन्द का पूना में प्रदत्त अन्तिम आत्मकथा वाला व्याख्यान) ही है, तथापि यदि हम किसी मंदिर में आरती के समय खड़े होते हैं, गुरुद्वारा में जाते समय सिर को रूमाल से ढक लेते हैं, तो इसमें अनुचित क्या है ? किन्तु यहां भी लीगी मनोवृत्ति वाले लोग यदि विद्यालयों में की जाने वाली सरस्वती पूजा पर नाक भौं सिकोडते हैं तो उन्हें क्या क्षमा किया जा सकता है, कदापि नहीं। सामाजिक अनुशासन में व्यक्ति स्वातन्त्र्य का थोड़ा बलिदान तो करना ही पड़ता है।

इस लेख के उत्तरार्द्ध में स्वामी अग्निवेश ने भी हिन्दुत्व की उसी परिभाषा को मान्यता दी है, उन्होंने भी हिन्दुत्व का उसी भांति गुणगान किया है जैसा भा०ज०पा० के नेता या आर०एस०एस० वाले करते हैं। वे लिखते हैं – 'हिन्दू धर्म एक जीवन शैली है, यह एक सुस्पष्ट संस्कृति है। विनम्रता तथा आतिथ्य सत्कार इसके सामाजिक मूल्यों का अनिवार्य अंग हैं। यही सब तो अटल, आडवाणी तथा सुदर्शन भी कहते हैं, फिर हिन्दू धर्म तथा हिन्दुत्व को कोसने का क्या अर्थ है ?

तथापि बाहरी ताकतों के घातक मनसूबों से सावधान रहना आवश्यक है। स्वामी अग्निवेश ने चाहे वैटिकन में जाकर यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित कर दी, वहां के पुस्तकालय को सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट कर दी, राष्ट्रपति बुश को भी वेदों का अंग्रेजी अनुवाद भेंट कर दिया, किन्तु इससे कुछ होना जाने वाला नहीं है। गत पोप (अब दिवंगत) ने भारत में बोलते समय समस्त ऐशिया को ईसाई बनाने की बात कही थी और वर्तमान पोप ने अभी अभी भारत में धार्मिक स्वतन्त्रता न होने पर खेद प्रकट करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को क्षति पहुंचाने की बात की। राजस्थान की विधान सभा द्वारा पारित धर्मान्तरण प्रतिरोधक बिल के परिप्रेक्ष्य में ही यह टिप्पणी की गई थी। अच्छा होता यदि स्वामी अग्निवेश पोप के इस गैरजिम्मेदाराना बयान पर कुछ कहते तथा पोप के वक्तव्य का समर्थन करने वाले भारत के कतिपय पादरियों द्वारा पोप की हां में हां मिलाने पर आपत्ति करते। बाहरी ताकतों के खतरे की बात काल्पनिक नहीं है जैसा कि स्वामी जी मानते हैं। ओसामा बिन लादेन के प्रशंसक भारत में भी कम नही हैं और बिन लादेन तो साफ कहता है कि ईसाई, यहूदी और हिन्दू हमारे प्रत्यक्ष शत्रु हैं, जिन्हें हमें नेस्तनाबूद करना है। बाहरी हमलों की बात जाने भी दें यहां घर के भीतर बैठे शत्रुओं के मनसूबे कौन कम घातक हैं ? ये हिन्दुओं के धार्मिक जुलूसों पर अपने धर्म स्थानों की छतों से पत्थर, ईंटें और सोडा वाटर की बोतलें फेंकते हैं। कृष्णानन्द राय और अलीगढ़ के ओमप्रकाश गुप्ता को गोली मारने में इन्हें संकोच नहीं होता। अपने कथित धार्मिक प्रवचनों मे जहर उगलते हैं, तभी तो जुमा की नमाज के बाद ही मस्जिदों से निकले ये जुनूनी लोग लूटपाट तथा हत्याकाण्ड में मशगूल हो जाते हैं। हमें बाहरी तथा भीतरी दोनों प्रकार के दुष्टों से लोहा लेना है।

(क्रमशः)

श्री विनय चन्द जी पचोरी नही रहे

आर्यसमाज छोटी सादडी जिला चित्तौडगढ़ (राज०) के मंत्री श्री विनय चन्द का निधन दिनांक २६/६/०६ को हो गया। सभी आर्यबन्धुओं में शोक की लहर छा गई ? आप आर्यसमाज एवं ओंकार माध्यमिक विद्यालय के मंत्री पद पर रहकर ऊंचाईयों तक पहुंचाया। आपने सम्पूर्ण भारत में आर्य अधिवेशनों में भाग लिया। आपका अंत्येष्टि संस्कार वैदिक विधि से श्री मोहन लाल जी आर्य पुरोहित द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

दिनांक ३०/६/०६ रविवार को दैनिक यज्ञ के बाद आर्यसमाज मन्दिर में सभी आर्य बन्धुओं ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी एवं शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

– मंत्री आर्यसमाज छोटी सादडी

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का शताब्दी वर्ष

समस्त जनता जनार्दन को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार, जिसे वीतराग तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती ने सन् १९०७ में भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत, वैदिक साहित्य की रक्षार्थ निःशुल्क शिक्षण हेतु स्थापित किया था, वह १९०७ ई० से निरन्तर उन्हीं सिद्धान्तों का पालन करता हुआ आगामी २००७ में १०० वर्ष पूरे करने जा रहा है। इसी सुअवसर पर संस्था अप्रैल २००७ में भव्य शताब्दी समारोह का आयोजन करने जा रही है। इस समारोह में समस्त संस्था प्रेमी, शिक्षा प्रेमी, समाज प्रेमी, संस्था हितैषी सादर आमंत्रित हैं। इस सुअवसर पर संस्था में पधारकर अपनी मातृ संस्था के दर्शन कर पुण्य का लाभ उठावें।

– डॉ० हरिगोपाल शास्त्री, प्रधानाचार्य

श्री सुदर्शन शर्मा पुनः ३ वर्ष के लिए कुलाधिपति बने।

करने के उपरान्त वेद प्रकाशन का कार्य ठप्प हो गया है। सर्वसम्मति से उनके इस प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।

उन्होंने दूसरा प्रस्ताव रखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से प्रारम्भ हानन अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक उपदेशक महाविद्यालय के प्रकल्प को विश्वविद्यालय की ओर से भी यथासंभव अधिकाधिक सहयोग प्रदान करते हुए बड़े पैमाने पर चलाया जाए। सर्वसम्मिति से यह प्रस्ताव भी स्वीकार हुआ।

सीनेट बैठक के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह तथा श्री सुदर्शन शर्मा का स्वागत किया गया। इस समारोह से मुम्बई सभा के उप–प्रधान डा. तुलसीराम बांगिया भी उपस्थित थे।

आचारहीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते

– डॉ० आशारानी राय



भरुआ सुमेरपुर (हमीरपुर) में आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं प्रवचन कार्यक्रम में बोलते हुए डॉ० आशा रानी राय ने कहा कि आचारहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। आचार हीनं पुनन्तु वेदाः यदि व्यक्ति अपने आचरण नहीं सुधारता और परमात्मा के गुण कीर्तन तो करता है उसका कुछ भी होने वाला नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में दैनिक पंचमहायज्ञ करना चाहिए। माता को सबसे बड़ा देवता बताया।

पहला यज्ञ ब्रह्मयज्ञ नित्य परमात्मा का ध्यान तथा उसके गुण कर्मों के अनुसार अपने को भी बनाने का प्रयत्न करना, दूसरा देव यज्ञ प्राणीमात्र की भलाई के लिए हवन करना, तीसरा सत्कार करना माता, पिता, वृद्ध लोगों की सेवा सत्कार करना, चौथा अतिथि विद्वान धर्मात्मा लोगों के आने पर उनको भोजन खिलाकर यज्ञ योग्य सत्कार कर गृहस्थ धर्मसम्बन्धी चर्चा से लाभ प्राप्त करें, पांचवा अपंग निराश्रित मनुष्यों एवं अन्य जीव धारियों को अपने भोजन से कुछ अंश निकाल कर देना इसी को पंच महायज्ञ तथा पचायतन पूजा कहा जाता है। जीवित माता पिता की तन-मन-धन से सेवा करना वेदों में कर्तव्य बताया गया है। अपना कार्य पूर्ण ईमानदारी से करना सबके साथ अच्छा व्यवहार करना तथा परमात्मा को सर्वत्र जानते हुए उसका ध्यान चिन्तन, ओ३म् का जाप करने से मानसिक शांति मिलती है। तनाव दूर होता है। मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि वह यथाशक्ति गृहस्थाश्रम में इनका अनुष्ठान करता रहे।

उपरोक्त कार्यक्रम स्व० श्री राजाराम आर्य एवं उनके अनुज श्री नन्दकिशोर की पुण्य स्मृति मे किए गए।

स्व० आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी एवं पुत्र श्री हरिकिशोर, हरिशंकर पौत्र संतोष, हरीष, रजनीष एवं उनके परिवार की ओर से सम्पन्न कराया गया। आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल भरुआ सुमेरपुर कार्यकारिणी के समस्त सदस्य विशेष आर्य वीर दल के नवयुवकों का सराहनीय योगदान रहा। समापन दिवस में ऋषि लंगर भण्डारा का आयोजन हुआ जो देर रात मक चलता रहा। कार्यक्रम में स्वामी ब्रह्मानन्द बरेली, डॉ० सुरेश शास्त्री एटा, श्रीकान्त शास्त्री एटा, पं० नरेश निर्मल मुज्फ्फरपुर, लक्ष्मीशंकर द्विवेदी हमीरपुर आदि विद्वानों के प्रवचन हुए।

पृष्ठ १ का शेष

प्रो० इस्राईल खां बने ....

सम्मेलन में आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के मन्त्री विमल वधावन आर्य ने प्रो० इस्राईल खान को विधिवत आर्यसमाज का सदस्य बनाने की घोषणा करते हुए कहा कि आर्यसमाज किसी एक मत, पंथ या सम्प्रदाय के बन्धन में नहीं है अपितु वेद को विश्व शान्ति का महान् ईश्वरीय ग्रन्थ मानकर मानवतावाद रूपी धर्म की स्थापना करना चाहता है। आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य मनुष्यों को ईश्वर की विचारधारा से जोड़ना है।

श्री विमल वधावन ने बताया कि प्रो० इस्राईल खान से उनका परिचय मात्र एक माह पुराना है परन्तु उनके अन्दर विद्यमान महर्षि दयानन्द के प्रति विचारों को देखकर यह स्पष्ट लगता है कि प्रो० इस्राईल खान में पूर्व जन्म के संस्कार अवश्य ही वैदिक सिद्धान्तों से ओतप्रोत रहे हैं। उनके इन्हीं विचारों के कारण आज उन्हें यहां आमन्त्रित करके सम्मान प्रदान किया गया है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि प्रो० इस्राईल खान के महर्षि दयानन्द आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म से सम्बन्धित विचारों का संकलन करके एक अलग ट्रेक्ट रूप में प्रकाशित करने का शीघ्र प्रयास किया जाएगा जिससे वैदिक धर्म का सत्य प्रभाव समाज में स्थापित हो सके।

कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२५वीं जयन्ती समारोह सम्पन्न

१७ अक्तूबर, ०६। आंचलिक गढ़वाल आर्यसमाज दिल्ली के तत्वावधान में गढ़वाल के ज्वाजल्यमान नक्षत्र, वैदिक धर्मावलम्बी, ऋषिभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी देशभक्त, गढ़वाल में आर्यसमाजों के संस्थापक, समाज सुधारक कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२५वीं जयन्ती समाज उपप्रधान श्री गोविन्दराम शास्त्री के निवास स्थान नन्दनगरी, दिल्ली में उनकी अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाई गई।

सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसमें श्री यशपाल कुमार पुरोहित थे। उसके उपरान्त स्व० भारतीय जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने कहा कि जिस प्रकार स्व० भारतीय ने गढ़वाल में सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, अन्धविश्वासों एवं अस्पृश्यता जैसे विषमताओं का सामना किया तथा आर्यसमाज के सार्वभौमिक आन्दोलन को आगे शिखर तक पहुंचाया। वह सदैव प्रेरणादायक एवं चिरस्मरणीय रहेगा। उनके जीवन से हम सबकों प्रेरणा लेनी चाहिए। उनके सामाजिक कार्यों को जारी रखना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वक्ताओं में सर्वश्री हीरासिंह, देवेन्द्र कुमार, रवीन्द्र कुमार, ध्यान सिंह, महेश कुमार, यशपाल सिंह आदि प्रमुख थे।

– धर्मसिंह शास्त्री,
मन्त्री, आर्यसमाज

भ्रूण हत्या करने वालों को फांसी की सजा हो

मोदीनगर। आर्यसमाज गोविंदपुरी के तत्वावधान में आयोजित महिला सम्मेलन में भ्रूण हत्या को अभिशाप बताया गया।

आर्यसमाज मंदिर गोविंदपुरी में आयोजित महिला सम्मेलन में भ्रूण हत्या गोष्ठी पर मुख्य अतिथि अनिला आर्या ने कहा कि वास्तव में भ्रूण हत्या के लिए दोषी लोगों को फांसी देने का हमारे कानून में प्रावधान होना चाहिए तभी भ्रूण हत्याएं रुकेंगी।

महिला उत्थान पर अनिला आर्या ने कहा कि बराबरी की आड़ में महिलाओं को परिवार के टूटने से बचाना चाहिए। यदि परिवार टूट गए तो फिर राष्ट्र ही कहां बचेगा। गिन्नी देवी मोदी महिला डिग्री कॉलेज की प्राचार्या डॉ० रीता बक्शी ने कहा कि भ्रूण हत्या रुकनी चाहिए।

महिला उत्थान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के योगदान विषय पर आयोजित गोष्ठी पर विचार रखा।

पृष्ठ १ का शेष

जॉनसन संजीव शुद्धि संस्कार के बाद..........

श्री जॉनसन ने शुद्धि संस्कार में श्रद्धापूर्वक भाग लेकर यज्ञोपरान्त अपना नाम दीपेन अभिसूर्य स्वीकार किया।

इस शुद्धि का समाचार दूरभाष से श्री सूर्यप्रकाश कुमार ने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य को दिया तो उन्होंने दूरभाष पर श्री दीपेन अभिसूर्य से बात करके उनके वैदिक धर्म प्रवेश पर स्वागत किया तथा उज्ज्वल आत्मिक उत्थान के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करते

श्री दीपेन अभिसूर्य ने अंग्रेजी में एक विस्तृत लेख श्री सार्वदेशिक सभा को भेजा है जिसे प्रचारार्थ बड़ी संख्या में प्रकाशित करके वितरित करने की योजना तैयार की गई है। सभा मन्त्री श्री विमल वधावन के अनुसार इस लेख से वैदिक धर्म तथा इस्लाम और ईसाईयत की समीक्षा करते हुए पाठकों को प्रेरणा प्रभावशाली रूप से प्राप्त होती है कि मतान्तरण के द्वारा किसी को भी अपने मूल वैदिक धर्म से कटकर कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। श्री दीपेन ने आशा व्यक्त की है कि इस लेख के माध्यम से वे स्वयं भी अपने ईसाई मित्रों को मतान्तरण के विरुद्ध प्रेरित करने में सफल होंगे। श्री दीपेन ने शुद्धि से पूर्व ही कुरान, बाईबल तथा अन्य कई धर्मग्रन्थों का अध्ययन विस्तारपूर्वक करके यह निष्कर्ष निकाला है कि सब मतपन्थों का मूल वैदिक धर्म ही है।

इस शुद्धि संस्कार के लिए श्री सूर्यप्रकाश कुमार, श्रीमती स्वर्णलता शर्मा तथा इन्द्रानगर आर्यसमाज मन्दिर के समस्त अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

पृष्ठ १ का शेष

सत्यार्थ प्रकाश और गोरक्षा ....

ग्रामीण अंचलों तथा उनके निकटवर्ती शहरों का यह दायित्व है कि समूचे आर्य जगत में एक नई प्रचार प्रसार क्रान्ति के लिए विचार और अनुभव प्राप्त करने के लिए इस सम्मेलन में दोनों दिन रहकर पुण्य लाभ भी कमाएं।

श्री महेन्द्र आर्य के अनुसार यह सम्मेलन साबित करेगा कि धन लिप्सा वाले लोग प्रचार–प्रसार में सहयोगी नहीं हो सकते उनकी दौड़ केवल पद और पैसे तक ही है। वास्तविक प्रचार धन से अधिक कर्मठता की मांग करता है।

God won't ask about the color of your skin. He'll ask about the content of your character.

मेरे स्वर्गीय सुपुत्र ने मुझे इसी जीवन में स्वर्ग दिखा दिया – महाशय रामविलास खुराना

जीवन और मृत्यु तो आत्मा की अनन्त यात्रा के एक पडाव की भांति है जिसमें व्यक्ति कुछ अवधि ठहर कर सम्पर्क में आने वाली शेष आत्माओं के लिए कुछ विशेष स्मृतियां छोड़ जाता है। उन स्मृतियों का स्मरण करके या सुनकर उस आने जाने वाली आत्मा के सत्कार और क्षमता आदि का परिचय प्राप्त होता है।

दिल्ली के सुविख्यात दानवीर आर्य नेता श्री महाशय राम विलास खुराना जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री अशोक खुराना का ६२ वर्ष की अवस्था में निधन होने पर पिता के मुख से सर्वत्र यह वाक्य सुनकर सामान्य जनता में धर्म और वैदिक मर्यादाओं के प्रति सम्मोहन स्वाभाविक हो गया - 'मेरे पुत्र ने मुझे इसी जीवन में स्वर्ग का दृश्य दिखा दिया था। मेरे मुंह से निकले एक एक शब्द को पूरी श्रद्धा के साथ पालन करने में वह सदैव उत्साह से परिपूर्ण दिखाई दिया।

श्री अशोक खुराना विगत कुछ वर्षों से कैंसर रोग से पीड़ित थे। श्री रामविलास खुराना एवं उनकी धर्मपत्नी तथा समस्त परिजनों ने हर सम्भव सेवा एवं प्रयास से उनका उपचार किया। अन्ततः आत्मा की यात्रा पर वह दिव्य



स्व० श्री अशोक खुराना

आत्मा १० अक्तूबर की प्रातः वेला में प्रस्थान कर गई।

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगमबोध घाट पर सम्पन्न किया गया। उनकी स्मृति में उठाला रस्म आर्य समाज गुजरावाला टाउन दिल्ली में यज्ञ–प्रवचन एवं श्रद्धांजलियों के साथ सम्पन्न हुई। इस आर्यसमाज के निर्माण में लगी ईंटो के साथ श्री अशोक आर्य की स्मृति इतिहास का एक चिरस्मरणीय अध्याय बना रहेगा। सार्वदेशिक सभा की ओर से समामन्त्री श्री विमल वधावन, उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, दिल्ली सभा की ओर से प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव तथा कई अन्य प्रतिष्ठित आर्य जनों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए। प्रवचन श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी के द्वारा तथा श्री प्रेमपाल शास्त्री जी के निर्देशन संचालन में पुरोहित जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

आर्य और बृहत हिन्दू समाज

– उमाकान्त उपाध्याय

'वैदिक सार्वदेशिक' में हिन्दू नहीं आर्य से अपना परिचय देने की प्रेरणा प्रत्येक अंक में स्वामी अग्निवेश के नाम से उनके चित्र के साथ छप रही है। हम जब जब इसे पढ़ते हैं, सदा ही एक भाव मन में आता है कि कहीं यह प्रेरणा आर्यसमाज के सदस्यों को बृहद हिन्दू समाज से पृथक् होने का कारण तो नहीं हो जाएगी ? यह सब प्रकार से आर्यसमाज और बृहद हिन्दू समाज के लिए अनिष्ट, हानिकारक सिद्ध होगा। अतः विचारार्थ कुछ बिन्दु यहां उपस्थित हैं –

१ महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने जो 'हिन्दू नहीं आर्य' कहा था वह इसी हिन्दु समाज के लिए ही कहा था। धर्मपरिवर्तन से अपने भाइयों को बचाने की बात इसी हिन्दू समाज के लिए थी। देशी रजवाड़ों को इसी हिन्दू समाज को ईसाई, मुसलमान प्रचारकों से बचाने की प्रेरणा अपने पत्रों मे करते थे।

२. आर्य कोई जाति नहीं है। यह मनुष्य का गुणवाची विशेषण हैं। दस्यु भी विशेषण है। आर्य के सम्बन्ध में एक श्लोक है –

कर्तव्यमाचरन कार्यम्,
अकर्तव्यमनाचरन।
तिष्ठति प्रकृताचारि, स वा आर्य
इति स्मृतः।।

जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों का आचरण करे, अकर्तव्य कभी न करे प्रकृत, स्वाभाविक आचरण करता रहे वह आर्य है।

३. हिन्दू भी कोई जाति नहीं है। अनेक भारतीय मूल की मान्यताओं को मानने वाले लोगों का समुदाय है। जो भी भारतवर्ष को अपनी मातृभूमिपितृभूमि समझे वही हिन्दू समुदाय का है।

४. बृहत हिन्दू समाज से आर्यसमाज का बहुत कुछ साझी है। वेद, दर्शन, उपनिषद, रामायण, महाभारत, रामकृष्ण, सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीयता आदि साझे का है। आर्यसमाज के ९९ प्रतिशत से भी अधिक लोग हिन्दू समाज से ही आए हैं। जिहाद, काफिर, दारुल इस्लाम आदि की भावनाएं हमारे और मुसलमानों के बीच में बड़ी भारी बाधाएं हैं। महान धर्मगुरू पोप भारत आए और अपने राजकीय सम्मान के उत्तर में २१वीं सदी में हमें ईसाई बनाने का संकल्प सुनाकर अपने अनुयायियों को प्रोत्साहन दे गए।

५. आज तक आर्यसमाज को कई संघर्ष करने पड़े। हैदराबाद का धर्मस्वतन्त्रता सत्याग्रह, सिन्ध में लीगी सरकार के विरुद्ध सत्यार्थ प्रकाश के स्वतन्त्र प्रचार के लिए सत्याग्रह, पंजाब में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह सब में हिन्दू समाज ने ही हमारा साथ दिया था।

६. यह ठीक है कि कई जगहों पर रा०स्व० संघ के लोगों ने आर्यसमाज पर और आर्यसमाज की संस्थाओं पर अधिकार कर लिया है। निहित स्वार्थी पहले संस्थाओं में घुसते हैं, फिर चालाकी से अधिकार कर लेते हैं। इसलिए सारी संस्था से विरोध उचित नहीं है। अपने घर में ही देखें सार्वदेशिक सभा में, सभी प्रान्तीय सभाओं में, अनेक गुरुकुलों, स्कूलों आदि में, हजारों इकाइयों में भी निहित स्वार्थी उचित अनुचित उपायों से अधिकार किए बैठे हैं। भूमि बेच रहे हैं, स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। आज भी बृहद हिन्दू समाज में कई करोड़ लोग आर्यसमाज को अपना समझते हैं। रा०स्व०संघ और वि०हि०प० में करोड़ों आर्यसमाज को अपना समझते हैं।

– ईशावास्यम्
पी० ३० कालिन्दी, कोलकाता

दीपावली के अवसर पर ऋषि निर्वाणोत्सव का कार्यक्रम आयोजित



आर्य समाज प्रताप नगर, दिल्ली में दीपावली के अवसर पर **ऋषि निर्वाणोत्सव** का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें माननीय **श्रद्धेय स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती** जी का मुख्य प्रवचन हुआ। आपने कहा कि आज पहले से अधिक आर्यसमाज के क्रांतिकारी विचारों और सुधारात्मक कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

समारोह में मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के **पूर्व शिक्षा कार्यकारी पार्षद श्री कुलानंद भारतीय जी** ने कहा कि देश की सभी समस्याओं का हल आर्यसमाज के कार्यक्रम में छिपा है। हमें भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिये पुनः युवा–वर्ग को ऐसे ठोस कार्यक्रम देने होंगे, जिससे वह सरलता से आधुनिक संस्कृति के समकक्ष रखकर आत्मसात कर सके।

युवा वक्ता **श्री ओम सपरा** ने कहा कि "महर्षि दयानंद ने धर्म की रक्षा तथा देश के उद्धार के लिये अपने जीवन की तनिक भी परवाह नहीं की तथा कई बार जहर पिया व अन्ततः दीपावली के दिन निर्वाण प्राप्त किया। आपके अंतिम शब्द थे "हे ईश्वर – तूने अच्छी लीली की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।" ईश्वर के प्रति ऐसी अगाध श्रद्धा और विश्वास का अनुपम उदाहरण दूसरा ढूंढे नहीं मिलता। पं. लेखराम के कथन के अनुसार आज तकरीर तथा तहरीर के काम को पुनः गति देने की जरूरत है।"

कार्यक्रम में श्री प्रदीप सभरवाल, योगेश सभरवाल, गुलशन राय, श्री वर्मा, श्री सुश्री रजनी, माता पोपली जी, हजारीलाल, वेदव्रत सभरवाल, अशोक कुमार, योगाचार्य श्री के. बी. राय, अश्वनी पाठक, वेदप्रकाश चौधरी, बालकृष्ण चौधरी, शंकरदेव आर्य आदि ने भी भाग लिया।

-केवल कृष्ण सेठी, मंत्री
आर्य समाज, प्रताप नगर,
दिल्ली–७

बच्चों को धन कमाने से रोककर शिक्षा कमाने में लगायें

-मिठाई लाल सिंह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह ने भारत सरकार द्वारा बाल मजदूरी को रोकने के कानून को सख्ती से लागू करने के प्रयासों का स्वागत करते हुये कहा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी बच्चों को किसी भी कीमत पर शिक्षा देने की वकालत की है। महर्षि दयानन्द के अनुसार बच्चों को शिक्षा न दिलाना माता पिता के लिए दण्डनीय अपराध बनना चाहियें। इसके विपरीत गरीबी की आड़ में कुछ लोग अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के स्थान पर बचपन से ही रोजगार के चक्कर में लगा देते हैं। इससे देश का भावी विकास रूक जाता है।

उन्होंने समस्त आर्य समाजों, अन्य आर्य समाज सेवी संस्थाओं और शिक्षण संस्थाओं से आहवान् किया कि अपने अपने स्थानीय क्षेत्रों में बच्चों को धन कमाने से रोककर उन्हें शिक्षा प्रदान

डेंग्यू तथा चिकुनगुन्या : जानकारी तथा अग्रिम सुरक्षात्मक कदम

– आर.एम. बढ़वाणा

मार्च, २००६ में महाराष्ट्र राज्य के बहुत सी तहसीलों में चिकनगुनीया का प्रकोप दिखाई दिया। वर्तमान में और भी अधिक तहसीलें उससे प्रभावित हुई हैं। उसका सही उच्चार 'चिकुनगुन्या' है, नही कि चिकन गुनीया। इस रोग का चिक्कुन अर्थात मुर्गी से कोई सम्बन्ध नहीं।

यह रोग विषाणुजन्य है। इस रोग के विषाणु टोगा कुटुम्ब के वायरस हैं। यह टोगा वायरस सर्वप्रथम ..... टान्जानिया में रोगी और एडीस इजिप्ति मच्छर मे पाया गया है। इस टोगा वायरस का वाह्यावरण होता है। मादा (फिमेल) एडीस इजिप्ति मच्छर इस वायरस को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में (काटने से) डंक द्वारा पहुंचाता है। इस वायरस के रोग प्रतिकारक तत्व एण्टीबोडीस, घोडे, ढोर और पालतू प्राणियों में दिखाई पड़ते है, किन्तु किसी प्राणी में रोग पैदा किए बगैर विषाणु हमेशा खुराक प्राप्त करके बढ़कर निवास करते हो ऐसा दिखाई दिया नहीं है।

यह संक्रामक रोग मूलतः अफ्रिका का है। चिकुन गुन्या शब्द भी अफ्रिका का शब्द है, इसका अर्थ संधिवा के कारण दर्द के मारे शिरपांव एक हो जाना।

भारत में वह रोग सर्वप्रथम १९६३ में दिखाई दिया, जब भारत के कई हिस्सों में डेंग्यू बुखार के साथ ये महामारी फैल गयी थी। सन् १९७३ तक इस रोग का आक्रमण भारत के विभिन्न भागों से अनियमित रूप से होता रहा। मार्च और अप्रैल २००६ के प्रारम्भ में महाराष्ट्र की कई तहसीलों में इस रोग का प्रभाव दिखाई दिया।

इडीस इजिप्ति मच्छर :

भारत में डेंग्यू और चीकुनगुन्या दोनों रोग एडीस इजिप्ति मच्छर द्वारा फैलते हैं। जबकि अफ्रिका, मध्य अमरीका और दक्षिण अमरीका में यह मच्छर पीला बुखार फैलाता है। ऐसा मानना है कि यह मच्छर इजिप्त (अफ्रिका) में पैदा हुआ और यात्रियों के साथ दुनिया के विभिन्न भागों में फैला। एडीस इजिप्ति का अर्थ होता है नाखशु इजिप्शियन। शहरी पर्यावरण में बदलाव जैसे शहरों का तेज गति से विकास, बस्ती विस्फोट, गंदा पानी, गंदे पानी से भरे हुए छोटे–छोटे गड्ढ़े, कचड़ा, स्वच्छता का निम्न स्तर इत्यादि एडीस मच्छरों के उपद्रव को बढ़ाता है।

आदत

मादा (फिमेल) मच्छर घर के अन्दर व बाहर संग्रहित पानी में अण्डे देती है। नर मच्छर कभी भी डसते नहीं हैं वे वनस्पति के रसपान द्वारा जीवित रहते हैं। युवा मादा मच्छर को उसके अण्डों के विकास हेतु २ या ३ दिन में एक बार रक्त (ब्लड) भोजन में लेना पड़ता है। मादा सामान्यतः दिन में प्रातः ८ से १ बजे तक और दोपहर ३ से ५ बजे के बीच में डसकर रक्त चूसती है। लोग जोकि दिवस दरम्यान घर या ऑफिस में रहते हैं उनको यह मादा मच्छर डंसने का जोखिम ज्यादा होता है क्योंकि यह मच्छर घर के अन्दर अंधेरे में रहना पसन्द करता है।

पिछले कई महीनों से समग्र भारत के लोगों के स्वास्थ्य का स्तर बिगड़ रहा है। जगह-जगह चिकुनगुन्या, झेरी मसेरिया, डेंग्यू आदि विभिन्न प्रकार के रोगों का बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ है और उसमें भी पिछले दो तीन महीनों से तो इस वर्ष दिखाई पड़े चिकुनगुन्या नामक रोग से तो समग्र भारतवर्ष में भयंकर दहशत का वातावरण बन गया है।

चिकुनगुन्या का रोग वर्तमान में सर्वव्यापी हो गया है और सरकारी एवं प्राइवेट अस्पताल इस रोग से ग्रस्त मरीजों से भरे पड़े हुए है और उसके इलाज हेतु पेनकिलर दवाइयों का जबरदस्त प्रयोग हो रहा है। सभी डॉक्टर ऐसे मरीजों को ज्यादा से ज्यादा पानी एवं निम्बू का शर्बत लेने की सलाह दे रहे हैं।

चिकुनगुन्या के ब्लड सेम्पल परीक्षण हेतु पूना भेजे गए हैं। चिकुनगुन्या रोग का परीक्षण भारत में एकमात्र पूना में ही होता है। पूना लेबोरेटरी में समग्र भारत में से चिकुनगुन्या के परीक्षण हेतु ब्लड सेम्पल आने से परीक्षण में देरी होती है। सरकारी डॉक्टरों ने बताया है कि चिकुनगुन्या, मन्की गुनिया और वायरल फीवर से प्रभावित मरीज को निम्बू के शर्त का सेवन करना चाहिए, अधिक मात्रा में पानी पीना चाहिए एवं इलाज में एस्पीरीन और स्टीरोइड दवाइयों का उपयोग नहीं करना चाहिए। हो सके तो इन्जेक्शन नहीं लेने की अपील मुख्य जिला आरोग्य अधिकारी ने की है। घर के आसपास पानी भरे गड्ढ़े न रहे, गड्ढे हो तो ऑइल डाले, टंकी इत्यादि एयरटाइट ढक्कन से ढ़कें।

मच्छर का उत्पत्ति स्थान :

१. घर के गमले में जहां पानी भरा रहता है। २. पुराने बेकार स्कूटर, कार के टायर इत्यादि जिसमें पानी जमा रहता है। ३. पेड़ के छेद में, ४. पानी भरने के बिन उपयोगी बर्तन बाल्टी आदि, ५. खुली गटर, ६. घर की टंकी, ७. एयर कूलर, ८. मछली घर, ९. बोतल में उगाए हुए छोटे पौधे का पानी, १०. वाहन द्वारा पड़े हुए खड्डे जिसमें पानी का जमाव होता है, ११. कन्ट्रक्शन साइट जहां पानी भरा हुआ हो, १२. फैंके हुए डिब्बे, बोटल, ड्रम, शीशे इत्यादि, १३. छिछरे कुएं, कूडी, तालाब आदि, १४. नारियल का ऊपरी हिस्सा जिसमें पानी भरा रहता हो, १५. नाव, जहाज आदि जिसमें पानी भरा रहता हो।

एडीस इजिप्ति मच्छर का जीवनचक्र :

पानी भरने के साधन या स्थान जिसकी दिवार पर सिगरेट के आकार के अण्डे मादा मच्छर देती है। ये अण्डे सप्ताह या महीने तक नष्ट नहीं होते। इसके इस गुण के कारण पानी सूख जाने पर भी अण्डे का वहन होने से उस पर पूर्णतया काबू पाया नहीं जा सकता। इस अण्डे में से बच्चे निकलने के बाद ५ से ७ दिन पानी में रहते हैं क्योंकि उसके जीवनचक्र के लिए प्रथम सप्ताह पानी में बिताना अनिवार्य होने से हर सप्ताह में एक बार भरा पानी खाली हो जाए तो इस मच्छर की उत्पत्ति और डेंग्यू बुखार को रोका जा सकता है।

यह लावा (बच्चे) पानी में उल्टे सिर तैरता रहता है और सूक्ष्म जीव जन्तु और वनस्पति को भोजन के रूप में ग्रहण करता है। इस मच्छर के जीवनचक्र में अल्पविराम के आकार की पुटया नामक अवस्था (काल) १ से २ दिन की होती है। यह पुटया खुराक नहीं है, फिर भी पानी की सतह पर शांत पड़ा रहता है।

युवा मच्छरों की पीठ और पैर के भाग में सफेद पट्टे होते हैं जिसकी वजह से वे टाइगर मच्छर (चित्ता मच्छर) के नाम से जाने जाते हैं। ये मच्छर ४०० मीटर के मर्यादित अन्तर तक उड़ सकते हैं, किन्तु मानव द्वारा संचालित वाहनों में लम्बे अन्तर तक जा सकते हैं। मादा एडीस इजिप्ति मच्छर की आयु ३ सप्ताह है। नर का आयुस्य कम होता है। सुबह शाम घर में मच्छर प्रवेश न हो पाएं ऐसी व्यवस्था करें।

प्रसिद्ध डॉक्टरों की सलाह :

१. चिकुनगुन्या इत्यादि रोगों के फैलाव में डायबिटीस, किडनी, हृदयरोग एवं हेपीटाइटीस के मरीजों को काफी सावधानी तथा जागरूकता रखना अति आवश्यक है।

२. विभिन्न प्रकार के रोगियों का ब्रूफेन, बोवरेन, नीमसयुलीड और कोम्बीफलेम जैसी पेनकीलर दवाइयों का कम मात्रा में प्रयोग करना हितकारी है।

३. एस्पीरीन का भी प्रयोग वर्तमान समय में बन्द करना चाहिए।

४. वर्तमान समय में किसी भी मरीज को किसी भी प्रकार की मदहोशी या बार बार निद्रावस्था की स्थिति आती हो तो तुरन्त डाक्टर की सलाह लेनी चाहिए।

५. चिकुनगुन्या के दर्दी को यथा सम्भव मच्छरदानी का प्रयोग करना चाहिए।

६. रोगी को ज्यादा से ज्यादा पानी व अन्य प्रवाही देते रहना चाहिए।

अनुवादक -

श्री विषयकुमार एम० आर्य
(सिद्धान्ताचार्य)

प्रेषक -

सेठ श्री बलदेवराज जी आर्य,
आनन्द, गुजरात

God won't ask about the clothes you had in your closet, He'll ask how many you helped to clothe.

यज्ञ क्यों ?

— ज्ञानेश्वरार्य, एम०कॉम०, दर्शनाचार्य

पर्यावरण प्रदूषण :

साम्प्रत काल में पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर ने मात्र हवा ही नहीं अपितु पानी, पृथ्वी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश आदि समस्त महत्वपूर्ण संसाधनों को अपनी चंगुल में फंसा लिया है। दूषित भौतिक पदार्थों से उत्पन्न अन्न, वनस्पति, शाक, कन्द, मूल, फल, फूल, औषध आदि खाद्य पदार्थ दूषित हो गए हैं। इन दूषित खाद्यान्नों के उपयोग से मनुष्य के शरीर में बनने वाली रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्यरज आदि धातुएं भी अशुद्ध, निकृष्ट तथा निर्बल बन चुकी हैं। इन तमाम धातुओं, रसों के आधार से काम करने वाले मन, बुद्धि, आत्मा भी दोषयुक्त विकृत बन गए हैं। परिणामस्वरूप मनुष्यों के विचार, वाणी तथ व्यवहार दोषयुक्त बन गए हैं। इसका प्रभाव, अन्तिम प्रभाव यह है कि आज व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा, सद्भाव, संगठन, त्याग, धैर्य, क्षमा, सहनशक्ति, सेवा, दया, निष्कामता की भावना समाप्त प्रायः हो गई है और इससे उलटा परस्पर–स्वार्थ, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, संशय, चिन्ता, विगठन, अन्याय, छलकपट, असहिष्णुता, क्रूरता, अभिमान, उच्छृंखलता आदि बढ़ रहे हैं।

आओ इन समस्त बुराइयों के मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाराक्षस को नष्ट करने वाले अमोधशास्त्र यज्ञ (हवन) का प्रयोग करें।

क्या आप जानते हैं ?

(१.) सामान्य रूप से हसवा में २१ प्रतिशित ऑक्सीजन, ७८ प्रतिशत नाईट्रोजन, ०.०३प्रतिशत कार्बन डाय ऑक्साईड तथा लगभग १ प्रतिशत अन्य जहरीली गैसों के मिलने के कारण इसकी संरचना में परिवर्तन होने से वायु प्रदूषण होता है।

(२.) ६० प्रतिशत वायु प्रदूषण मोटर वाहनों से और ३५ प्रतिशत बड़े तथा मध्यम उद्योगों से फैलता है।

(३.) एक मोटर वाहन १७० कि.मी. की यात्रा में उतना ऑक्सीजन फूंक डालता है जितना कि एक व्यक्ति को एक वर्ष के लिए आवश्यक होता है।

(४.) किसी भी स्वचालित वाहन में एक गैलन पेट्रोल/डीजल के दहन से तीन पाऊंड नाइटरोजन ऑक्साइड वायु निकलती है जो कि ५ से २० लाख घनफीट हवा को प्रदूषित कर देती है।

(५.) प्राकृतिक सन्तुलन के लिए पृथ्वी पर भूमि के ३३ प्रतिशत भाग पर वन होना अति आवश्यक है। हमारे देश में वर्तमान में मात्र १६ प्रतिशत भूमि पर वन हैं।

दिल्ली जैसे महानगरों में लोग जाने–अनजाने प्रति दिन २० सिगरेटों के धुएं में जितना विष होता है उतना विष प्रदूषित वायु के कारण अपने फेफड़ों में खींच लेते हैं।

(६.) मनुष्य एक दिन में औसतन २१, ६००० बार श्वसन क्रिया करता है और इस क्रिया में १६ कि०ग्रा० ऑक्सीजन आवश्यक होता है।

(७.) एक व्यक्ति एक वर्ष में १२ टन कार्बन डाय ऑक्साईड उच्छ्वास से वातावरण में बाहर फैंकता है।

(८.) एक बड़ा पूर्ण विकसित वृक्ष एक मनुष्य के सम्पूर्ण आयुष्य के लिए जितनी आवश्यक होती है उतनी मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है। और वह हवा, पानी, ध्वनि के प्रदूषण तथा धूल को रोकता है।

(९.) वायु प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्वों से रहित, अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।

(१०.) प्रदूषण के कारण पौधों की कार्बन डाय ऑक्साईड शोषण करने की तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द हो रही है।

(११.) पिछले कई वर्षों से फल, सब्जी, खाद्यन्न आदि का परीक्षण करने पर पता चला है कि इन सबमें जहरीले कीटनाशक रसायनों के अंश विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित मात्रा से कई गुना अधिक पाया जाता है।

(१२.) पृथ्वी पर होने वाली कुछ रासायनिक क्रियाओं से पर्यावरण में फैलनेवाले प्रदूषण के कारण आकाश स्थित ओजोन वायु की परत में एक बड़ा छिद्र हुआ है यदि इसी गति से छिद्र होते रहेंगे तो पैराबैंगनी किरणों को रोकना संभव नहीं रहेगा। और इसका परिणाम यह होगा कि लोग केन्सर, आंखों में ग्रन्थि आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त होंगे तथा वृक्ष वनस्पति भी प्रभावित होंगे।

(१३.) बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियन्त्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षों बाद ऐसी स्थिति बन जाएगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राणवायु का सिलिंडर बांधकर रखना होगा जिससे शुद्ध वायु ली जा सके। जैसे आज अशुद्ध जल के कारण खनिज जल की बोतल का तथा नाक को ढकने के लिए कपड़े की पट्टी का प्रचलन हो गया है।

(१४.) प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरुद्ध यदि सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जाएगा तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पाएगा।

यज्ञ और आधुनिक विज्ञान

१. रूस के वैज्ञानिक श्री शिरोविच ने एक पुस्तक में लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुआं परमाणु विकिरण के प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया 'यज्ञ' के नाम से जानी जाती है।

२. विभिन्न रोगों के जन्तुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है।

— एम० मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री (एन्शिएण्ट हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन)

३. शक्कर के दहन से उत्पन्न धुएं में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है। इससे क्षय रोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट हो जाते हैं।

— वैज्ञानिक ट्रिलबर्ट (फ्रांस)

४. केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटांणु भी समाप्त हो जाते हैं।

— डॉ० कर्नल किंग

५. मुनक्का, किशमिश, मखाणे आदि से हवन करने से सन्निपात ज्वर, टाईफॉइड के कीटाणु मात्र घण्टे में नष्ट हो जाते हैं।

— डॉ० डीलिट

६. ३६' x २२' x १०' = लगभग ८००० वर्ग फुट के एक हॉल में एक समय हवन करने से कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का ७७.५ प्रतिशत भाग नष्ट हो गया, इतना ही नहीं इस प्रयोग से ६६ प्रतिशत हानिकारक कीटाणु नष्ट हो गए।

— फर्ग्युसन कॉलेज पूणे के जीवाणु शास्त्रियों का प्रयोग

७. अमेरिका, चिली, पॉलैण्ड, जर्मनी आदि देशों में अग्निहोत्र (हवन) की लोकप्रियता बढ़ रही है।

८. विश्व के अनेक देशों में रोगों को दूर करने के लिए, प्रदूषण को दूर करने के लिए, तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए यज्ञ चिकित्सा का प्रचलन बढ़ रहा है।

यज्ञ के विषय में वैदिक, शास्त्रीय प्रमाण

१ समिधाओं से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करके उसे घृत से प्रबुद्ध करो और उस प्रदीप्त अग्नि में उत्तम उत्तम सामग्री की आहुति दो।

— यजुर्वेद ३–१

२. जब अग्नि में सुगंधित पदार्थों का हवन होता है तभी वह यज्ञ वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करता है तथा शरीर और औषधि आदि पदार्थों की रक्षा करके अनेक प्रकार के रसों को उत्पन्न करता है, उन शुद्ध पदार्थों के भोग से मनुष्यों के विद्या, ज्ञान और बल की वृद्धि होती है।

— यजुर्वेद १–१

३. जो यज्ञ से शुद्ध किए हुए अन्न, जल, वायु आदि पदार्थ हैं वे सब की शुद्धि करके बल, पराक्रम तथा दीर्घायु के लिए समर्थ होते हैं। इसलिए सब मनुष्यों को यज्ञ कर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

— यजुर्वेद १–२०

४. जैसी यज्ञ करने से वायु और जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी अन्य प्रकार से नहीं हो सकती।

— ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

५. यज्ञकुण्ड में डाली हुई सामग्री दुःख देने वाले रोगों को ऐसे बहाकर ले जाती है जैसे नदी झाग को बहाकर ले जाती है।

— अथर्ववेद १–८–१

६. गाय के घी के साथ हवन की सामग्री यज्ञ कुण्ड में जलकर विशेष शक्तिशाली बनकर दूषित वायुमण्डल के ६६ प्रकार के दुर्गुणों को सरलता से नष्ट कर देती है।

— ऋग्वेद १–८४–१३

७. शुभ दिनों का सम्पादन यज्ञ के द्वारा किया जाता है।

— यजुर्वेद १६–६

८. अन्तरिक्ष में जो विविध प्रकार के वायु तत्वों का स्तर है उनका बिगाड़ मत करो, नष्ट मत करो। ये तत्व हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

— यजुर्वेद ५–४३

— वानप्रस्थ साधक आश्रम
रोजड़, पत्रालय सागरपुर,
जि० साबरकांठा, गुजरात–०७

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 5-11-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 2/3-11-2006

मेरी इंग्लैण्ड प्रचार यात्रा के संक्षिप्त अनुभव

प्यारे भारतवासियो,
सादर नमस्ते।

तपःपूत योगनिष्ठ पूज्य गुरुदेव स्वामी सत्यपति जी के सान्निध्य में लगभग २२ वर्षों से रहते हुए दर्शन, उपनिषद एवं वेद के प्रमुख स्थलों के अध्ययन से जीवन में ईश्वर भक्ति, सुखशान्ति, धैर्य, उत्साह को प्राप्त किया। उसी को जनजन तक पहुंचाने हेतु देश के कोने-कोने में प्रचारप्रसार करता रहता हूं। विश्व कल्याण के पुनीत प्रवाह को आगे बढ़ाने हेतु वैदिक योगविज्ञान ज्योति से प्रवास देशवासियों के हृदय भी आलोकित हों इस उद्देश्य से २६ जून से २५ जुलाई, २००६ तक इंग्लैण्ड में प्रचार किया। वहां लन्दन में तीन सप्ताह, लेस्टर में एक सप्ताह का समय लगाया। कार्यक्रमों में वहां श्रोताओं में अच्छा उत्साह था। लोग बड़ी श्रद्धा और उत्सुकता से प्रवचन सुनते थे। प्रवचन के बाद शंकासमाधान में विशेष रूप से रुचि लेते थे। शंकासमाधान की प्रक्रिया इस प्रकार से होती थी, जैसे –

सिद्धान्ती – पुनर्जन्म होता है या नहीं ?

जिज्ञासु – पुनर्जन्म किसने देखा है ?

सिद्धान्ती – हमने देखा है, आप सबने देखा है।

जिज्ञासु – वह कैसे ?

सिद्धान्ती – अभी दिखाते हैं। अच्छा आप कुछ प्रश्नों का सही सही उत्तर देते जाएंगे ?

जिज्ञासु – बिलकुल देते जाएंगे।

सिद्धान्ती – अच्छा तो बताइए, यह शरीर कर्मों का फल है या मुफ्त में मिला है ?

जिज्ञासु – कर्मों का फल है।

सिद्धान्ती – यदि कर्मों का फल है मान लिया तो इतना और बताइए, न्याय किसे कहते हैं? पहले कर्म पश्चात् फल अथवा पहले फल पश्चात् कर्म ?

जिज्ञासु – पहले कर्म होना चाहिए पुनः फल मिलना चाहिए।

सिद्धान्ती – अच्छा तो इतना और बताइए यह शरीर जिन कर्मों का फल है वे कर्म आपने कब किए ?

जिज्ञासु – पिछले जन्म में।

सिद्धान्ती – देखिए आपने स्वयं बोला कि कर्म किया पिछले जन्म में और फल मिला इस जन्म में, इससे हो गई न पुनर्जन्म की सिद्धि।

इसी प्रकार अनेक अन्ध विश्वास की बातें भी शंकाओं के रूप में पूछते थे और उनका समाधान प्राप्त होने पर बहुत सन्तुष्ट एवं प्रसन्न होते थे। अनेक कार्यक्रमों में श्रोताओं की संख्या १५० से २०० तक भी रही। पारिवारिक कार्यक्रमों में संख्या कम भी होती थी। अधिकतर शनिवार और रविवार को लोग अवकाश होने के कारण प्रचार का लाभ लेने के लिए अधिक समय निकाल पाते थे। वहां पर बाह्य व्यवस्थाएं जैसे कारें, बसें, रेलगाड़ियां, ट्रेफिककण्ट्रोल, ड्राइविंग, सड़कें, सफाई आदि तो बहुत अच्छी हैं, परन्तु खानपान और चरित्र अच्छे नहीं हैं। वहां के मूल निवासियों (गोरों) में तो भोजन में मांसाहार, मद्यपान और नंगापन बहुत ही अधिक है। उसका प्रभाव वहां के भारतीयों पर भी पड़ रहा है और टेलिविजन, इण्टरनेट, मोबाइल आदि के माध्यम से यहां भारत में भी आ रहा है। साक्षात् अध्ययन के उपरान्त मैं अपने भारतवासियों से भी कहना चाहता हूं कि –

"आप लोग उन पश्चिमी देशों की नकल न करें क्योंकि वहां के लोग पश्चिमी सभ्यता के कारण बहुत सुखी नहीं है। उन लोगों में चरित्र अच्छा न होने के कारण सदा मानसिक अशान्ति बनी रहती है। क्योंकि केवल बाह्य व्यवस्थाओं के अच्छा होने मात्र से ही कोई सम्पूर्ण सुखी नहीं हो जाता। यद्यपि भारत में बाह्य व्यवस्थाओं में कुछ कमियां अवश्य हैं फिर भी यहां पारिवारिक प्रेम, भाईचारा, बड़ों का आदरसम्मान, सेवा, समर्पण, त्याग, निःस्वार्थ परोपकार की भावना आदि विशेषताएं देखने को मिलती हैं जो वहां के इंगलिश नागरिकों में प्रायः नहीं मिलती हैं। इन भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के कारण ही व्यक्ति अच्छी तरह से सुखी हो सकता है। अतः पश्चिमी सभ्यता में इनकी कमी होने कारण वहां के लोग अधिकतर अशांति और तनाव में जी रहे है।"

मैं अपने भारत निवासियों को सन्देश देना चाहता हूं कि वे भारत की संस्कृति और सभ्यता को ही पूरे जोर के साथ अपनाएं तथा पश्चिमी चमक-दमक के पीछे न भागें। भारतीय संस्कृति और सभ्यता से ही सबको उत्तम सुख मिलेगा। भारतीय सभ्यता ही संसार में सबसे अच्छी है। यह वेदों पर आधारित है। वेद ईश्वरकृत हैं अतः सब लोग वेदों को ही अपनाएं। धन्यवाद।

– स्वा. विवेकानन्द परिव्राजक
(पूर्वनाम विवेक भूषण दर्शनाचार्य)
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन,
रोजड, साबरकांठा (गुजरात)

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9811221083) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in वेबसाइट : http://www.sarvadeshik.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक १४ | १६ नवम्बर से २५ नवम्बर, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | मा०सप्तमी

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक सम्पन्न

सत्यार्थ प्रकाश को एक लाख घरों में पहुंचाने का अभियान

मुम्बई सभा द्वारा तीस हजार सत्यार्थ प्रकाश प्रदान करने का संकल्प

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा आर्य उप-प्रतिनिधि सभा गौतम बुद्ध नगर के सम्मलित प्रयासों से वैदिक धर्म प्रचार का अनूठा, अनुकरणीय एव उत्साह की दीप्ति करने वाला सत्यार्थ प्रकाश एवं गोरक्षा सम्मेलन २ और ३ दिसम्बर (शनिवार एव रविवार) का नोयडा के सेक्टर ३२ में आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन की तैयारियों के लिए प्रतिदिन संयोजक श्री महेन्द्र सिंह आर्य सैकडों किलोमीटर की यात्राएं वाहन द्वारा करते हुए गॉव-२, जिले-२ मे सामान्य जनता से सम्पर्क कर रहे हैं। इस सम्पर्क अभियान में ही हजारों सत्यार्थ प्रकाश निःशुल्क वितरित किए जा चुके हैं।

सम्पूर्ण सम्मेलन के दौरान एक लाख सत्यार्थ प्रकाश वितरित करने का महान एवं एतिहासिक लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस सम्मेलन से जुडे समस्त आर्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से इसी आशय की प्रार्थना के साथ कार्य में जुट जाते हैं कि इस [illegible] पर बडिया टन्ट, दरिया, खाने का प्रबन्ध होने से पूर्व एक लाख सत्यार्थ प्रकाश अवश्य ही एक लाख घरों मे पहुचे और भावी प्रचार अभियान के तहत इन परिवारो से धर्म प्रचार योजना के अन्तर्गत सम्पर्क बनाए रखा जा सके।

इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई अन्तरंग बैठक में भी विभिन्न प्रांतो से पधारे अधिकारियों ने सारे देश से अधिकाधिक सहयोग उपलब्ध कराने का संकल्प लिया।

मुम्बई मे आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित एक अन्य बैठक मे कुल ३० हजार सत्यार्थ निःशुल्क वितरण हेतु प्रदान करने का वचन दिया गया। इस बैठक में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि मुम्बई से गणमान्य आर्य लोग नोयडा के इस सम्मेलन की इस निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण की आलौकिकता को देखने आएगे। इस सहयोग मे स्वर्गीय श्री ओंकार नाथ आर्य जी की स्मृति में उनकी धर्म परायणा पत्नी माता शिवराजवती जी ने भी दस हजार सत्यार्थ प्रकाश का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मुम्बई सभा के मन्त्री श्री अरूण अबरोल ने कहा कि सम्मेलन मे बजट का कोई महत्व नही होता। सम्मेलन छोटा हो या बड़ा परन्तु इसके दो लाभ अवश्य होन चाहिए-- प्रथम वैदिक धर्म की घर-२ स्थापना के गम्भीर प्रयास तथा दूसरा अपनी सगठनात्मक एकता को मजबूत बनाने मे सहायक। दिल्ली का महासम्मेलन बेशक कितना ही सुन्दर क्यों न हो परन्तु [illegible] की उस कटाक्ष का कोई जवाब नही दे सका कि वेद उत्तम ग्रन्थ है, महर्षि दयानन्द जी महान योगी थे परन्तु आप उनके अनुयायी अच्छे नहीं हैं। परस्पर विवाद हर हालत में समाप्त किए जाने चाहिए।

अरूण अबरोल ने कहा कि मैने स्वयं कल श्री देवरत्न आर्य से प्रार्थना की कि वे भी इस बैठक में पधारे जिससे विवाद समाधान का कोई उपाय ढूंढा जा सके। उन्होंने कहा कि सम्मेलन का आयोजन सत्यार्थ प्रकाश को घर-२ पहुचाने की दृष्टि से किया जाना सराहनीय है। परन्तु यदि आर्य समाज के विवाद निपटारे के लिए कोई मार्ग प्रशस्त हो सके तो यह सम्मेलन एतिहासिक होगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि विवादो के बावजूद भी सार्वदेशिक सभा के असली प्रचार दायित्वों का निर्वहन हम कर रहे है। विवादो से कार्य करने मे बाधा उत्पन्न होती है। अत किसी भी प्रकार से विवाद समाप्त होना ही चाहिए। बेशक यदि अग्निवेश तथा देवरत्न आर्य चाहे तो हम किसी भी मंच पर उनसे बात करने के लिए तैयार हैं।

मुम्बई के माटुंगा आर्य समाज मे आयोजित इस बैठक में स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती माता शिवराजवती, डा. तुलसीराय बगिया, श्री सुरेश गुप्ता, श्री पाण्डेय जी, श्री हरीश आर्य, श्री गुलजारी लाल गुप्ता, श्री सुनील मानकतला, श्री विश्वभूषण आर्य, श्री प्रभू भाई वैलाणी आदि सहित कई आर्य महानुभाव उपस्थित थे।

दिल्ली, हरियाणा और पंजाब की सभाओं द्वारा दस-दस हजार सत्यार्थ प्रकाश देने का आश्वासन

हरियाणा सभा के प्रधान श्री भगत मंगतू राम, दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैध इन्द्र देव ने तथा पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की ओर से सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक में यह आश्वासन दिया गया कि वे दस-दस हजार सत्यार्थ प्रकाश इस सम्मेलन में वितरण हेतु प्रदान करेंगे।

भव्य झांकियों से भी होगा वैदिक धर्म प्रचार घर-२ वेद और सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश

सत्यार्थ प्रकाश एवं गोरक्षा सम्मेलन के दौरान शोभा यात्रा में एक भव्य झाकी पर चारों वेदों के बडे-२ कट आऊट बनवाकर प्रदर्शित किए जाएगे। एक अन्य झाकी पर सत्यार्थ प्रकाश तथा अलग से गाय के कट आऊट वाली झांकिया आलौकिक सन्देश प्रसारित करेगी। इन झाकियो के माध्यम से घर-२ वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश रखने, पढने-पढाने, सुनने-सुनाने तथा उनकी शिक्षाओं पर आचरण का सन्देश दिया जाएगा। गोमाता के कट आऊट वाली झाकिया गोमाता की रक्षा, श्रद्धा, उसके पालन, गोपदार्थो के सेवन, गोहत्या बन्दी, शाकाहार के प्रचलन तथा मांसाहार बन्द करने की प्रेरणाओं का प्रचार करेगी।

दिल्ली की आर्य समाजों के नाम खुला पत्र

(पृष्ठ दो पर)



आर्य समाज रमेश नगर मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वैध इन्द्र देव जी का स्वागत करते हुए दिल्ली के पूर्व मुख्य मत्री श्री मदन लाल खुराना

समुद्र समान शोभा यात्रा

सत्यार्थ प्रकाश एव गोरक्षा सम्मेलन के प्रथम दिन २ दिसम्बर को आयोजित शोभा यात्रा का विशाल रूप दर्शको के मानस पटल पर एक अमिट छाप छोडेगा। सम्मेलन के संयोजक श्री महेन्द्र सिंह आर्य ने बताया कि गॉव-२ आमन्त्रण और प्रचार यात्रा के दौरान सत्यार्थ प्रकाश वितरण से गॉववासी बडे उत्साहित है और स्वतः ही अपने-२ ट्रैक्टरो, बुग्गियों तथा अन्य ग्रामीण वाहनों सहित हजारो की संख्या मे भाग लेने के आश्वासन दे रहे है। इन सब वाहनों के शामिल होने से अनुमान है कि लगभग दो हजार वाहनों की यह शोभा यात्रा एतिहासिक होगी।

दिल्ली की आर्य समाजों के नाम

दिल्ली सभा प्रधान वैध इन्द्र देव जी का खुला पत्र

प्रिय आर्य बन्धुवर

सादर नमस्ते

आशा है प्रभू कृपा से आप तथा समस्त आर्यजन सहपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के चौथे नियम में सत्य का उल्लेख करते हुए आहवान किया था कि "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सबको सदा उद्दत रहना चाहिए।" परन्तु आज आवश्यकता यह महसूस करने की है कि कुछ लोग सत्य को ग्रहण तो कर लेते हैं, सत्य को समझ लेते हैं, परन्तु तदनुसार आचरण करके सत्य का प्रदर्शन अपने जीवन में नहीं कर पाते। हम यदि महर्षि के सच्चे अनुयायी कहलाना चाहते हैं तो हमें सदैव अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सत्य आचरण को सर्वाधिक महत्व देना चाहिए।

आर्य समाज रूपी एक पवित्र और महान आन्दोलन के पदाधिकारी बनकर जिन लोगों को संगठनात्मक एकता स्थापित करते हुए अपने सत्य आचरण से एक आलौकिक छवि प्रस्तुत करनी थी वे लोग ही यदि संगठनात्मक कमजोरियों से स्वार्थ सिद्धि तथा आर्थिक अनयिमितताओं से परिपूर्ण छवि बनाते जा रहे हो तो क्या इसका मूक रहकर समर्थन करते रहना आर्य जनता को शोभा देता है?

इसका उत्तर आपके मन में पूरी तरह स्पष्ट है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अनेकों अनियमितताओं तथा संगठन विरोधी गतिविधियों के कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को इसके पूर्व अधिकारियों की अन्तरंग को भंग करके एक तदर्थ समीति गठित करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

तदर्थ समीति के प्रधान के नाते मेरे सामने एक ही लक्ष्य था कि-- आर्य समाजों के सच्चे आर्य प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी की देख-रेख में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न करवा दिया जाए। मैं आर्य जगत का, वैदिक धर्म का और राष्ट्र का एक समर्पित सेवक ही बना रहना चाहता हू। समाज की व्यवस्थानुसार मुझसे जिस सेवा की भी अपेक्षा की जाएगी, मैं उसके लिए तन, मन और धन से सदैव तत्पर रहूंगा।

दिल्ली की आर्य समाजों में परस्पर एक जुटता बनी रहे और आर्यो के मध्य कहीं किसी प्रकार का वैमनस्य न बने इसके लिए यही एक मात्र सुगम उपाय है कि दिल्ली की आर्य समाजों के आर्य प्रतिनिधि आगामी साधारण त्रैवार्षिक अधिवेशन १७ दिसम्बर २००६ (रविवार) को प्रातः ११ बजे आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में एकत्र होकर [illegible] छवि वाले [illegible] सज्जनों [illegible] दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] अधिकारियों [illegible] अन्य सदस्यों का चुनें।

इस अधिवेशन के प्रति [illegible] के पूर्व अधिकारियों द्वारा [illegible] अनर्गल प्रलाप किया जा रहा [illegible] उससे आर्य जन भ्रमित न हों। स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चुनाव के द्वारा यह अधिवेशन आर्य समाज की संगठनात्मक सुदृटता में सहायक ही होगा।

शुभकामनाओं सहित।

आपका

(वैध इन्द्र देव)

सभा प्रधान

आर्य समाज दीवान हाल द्वारा २० हजार गौकरूणानिधि का निःशुल्क वितरण सहयोग

आर्य समाज दीवान हाल के द्वारा २० हजार गौ करूणानिधि पुस्तकों का विशेष प्रकाशन करवाकर सत्यार्थ प्रकाश एवं गौरक्षा सम्मेलन के दौरान निःशुल्क वितरण करवाया जाएगा। आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्ण गोपाल एवं मन्त्री डा. रविकान्त ने बड़े उत्साह से इस सम्मेलन में अपने सहयोग को एक छोटी सी आहूती बताया।

डॉ. सुद्युम्न आर्य को वेद-वेदांग पुरस्कार

मुम्बई की प्रमुख आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा आर्य जगत के वैदिक विद्वानों को सम्मानित और पुरस्कृत करने की योजना सर्वत्र प्रशंसनीय है। विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी १४-१५ अक्टूबर को पुरस्कार वितरण समारोह हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज मन्दिर के सभागार में आयोजित किया गया।

इस वर्ष का सर्वोच्च वेद वेदांग पुरस्कार आर्य जगत की मूक सेवा करने वाले वैदिक विद्वान डा. सुद्युम्न आर्य जी को प्रदान किया गया। डा. सुद्युम्न आर्य उत्तर प्रदेश के बलिया क्षेत्र में स्नातकोत्तर कालेज में रीडर हैं।

डा. सुद्युम्न आर्य जी के द्वारा वैदिक साहित्य से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना, पुनर्लेखन, अनुवाद आदि किया गया है, जिनमे से मुख्य है-

१. "रोचन्तां शब्दभूमयः" नामक ग्रन्थ में अतिरोचक निबन्ध प्रस्तुत किए गए हैं।

२. "राजन्तां दर्शनाशवः" में दर्शन शास्त्र पर आधारित निबन्ध है।

३. "अधिविज्ञानं दर्शनाशास्त्रम्" में भौतिक विज्ञान पर निबन्ध है।

४. भारतीय दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान।

५. महान गणितज्ञ श्रीधराचार्य के ग्रन्थ "त्रिशतिका" का पुनर्लेखन।

६. गणित शास्त्र के विकास की भारतीय परम्परा।

७. "निघण्टु निर्वचनम्" का सम्पादन आचार्य विजयपाल विधावारिधि जी के साथ।

८. आचार्य पद्मनाभ मिश्र के दुर्लभ ग्रन्थ "वीरभद्रदेव चम्पू" का सम्पादन।

९. माधव उख्य द्वारा लिखित "वीरभानूदय काव्यम्" का हिन्दी अनुवाद।

१०. Indian heritage as reflected by linguistics विषय पर शोध कार्य।

डा. सुद्युम्न आर्य को अब तक ८ बार उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ, २ बार दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा अखिल भारतीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है।

आपके पूज्य पिता श्री कमला प्रसाद जी आर्य बडी उम्र में भी प्रतिदिन अष्टाध्यायी का पारायण करते थे। आपने वाराणसी में पूज्य पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के चरणों में रहकर उनकी छत्रछाया में लगभग १८ वर्ष तक अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त किया। आचार्य विजयपाल जी विद्यावारिधि ने आपको अनेक ग्रन्थों का अध्यापन किया। वाराणसी की पाण्डित्य-परम्परा में आपने पं. राम प्रसाद जी त्रिपाठी, पं. हरे राम जी शुक्ल प्रभृति प्राकण्ड विद्वानों से न्याय, वेदान्त ग्रन्थों का अध्ययन किया।

आपकी बड़ी बहिन पूज्या डा. प्रज्ञा देवी जी सम्प्रति यशः काय से जीवित हैं। आपकी छोटी बहिन आचार्य मेधा देवी जी हैं।

आपकी भागिनेयी सुश्री नन्दिता शास्त्री जी शास्त्रों की निष्णात विदुषी हैं, आपके बहनोई स्व. आचार्य रामचन्द्र जी ने अपने पाण्डित्य से आजीवन सबको प्रभावित किया। वर्तमान में उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री वाचोनिधि आर्य संस्कृत विद्या एवं आर्य समाज की सेवा से उच्च मानदण्डों को स्थापित कर रहे हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा रानी हैं।

सम्मेलन की तैयारियों के लिए बैठकों का दौर

उत्तर प्रदेश के मेरठ गाजियाबाद, हापुड, गढमुक्तेश्वर, शाहजहांपुर, हरिद्वार, बिजनौर, नोयडा तथा हरियाणा के फरीदाबाद, वल्लभगढ आदि क्षेत्रों में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन की तैयारियों के लिए उत्साहवर्धक बैठकें आयोजित हो चुकी हैं। १६ नवम्बर को कानपुर, बागपत आदि क्षेत्रों में बैठकें निधारित हैं।

आर्य समाज सांताक्रुज द्वारा सम्मानित विद्वान, विदुषियां एवं संस्थाएं

कैप्टन जगराम आर्य, हरियाणा, — वेदोपदेशक पुरस्कार

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे, लातूर, — मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार

डॉ. प्रद्युम्न शास्त्री, हरियाणा, — पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार

विदुषी शन्नो देवी, उडीसा, — श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार

स्वामी इन्द्रमुनि, बिहार, — स्व. राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार

आचार्य सुधांशु जी आर्य हरियाणा, — श्रीमती कृष्णा गांधी आर्य युवक पुरस्कार

श्रीमती पुष्पा शास्त्री, रवाडी-हरियाणा, — श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार

हरिदत्त गुरुकुल भैयापुर, लाढोत — श्रीमती भागीदेवी छाबडिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार

आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना — श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार

गुरुकुल चोटीपुरा एवं दाधिया के छात्र छात्राएं — श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कार

'वेश' समुदाय का उद्गम और विस्तार

मुख्य विषय का वर्णन करने से पूर्व हम अपने पाठकों को यह चेतावनी देना अपना पुनीत कर्त्तव्य मानते हैं कि जिस वेश समुदाय का हम यहां पर वर्णन कर रहे हैं, वर्तमान में वह आर्य समाज के प्रबल शत्रु के रूप में कार्यरत है अतः उसका समूलोच्छेदन ही आर्य समाजियों को इस समय एकमात्र कर्त्तव्य होना चाहिये इसके लिये परस्पर के सब मतभेद भुला कर, प्रतिष्ठा के प्रश्नों को एक ओर रख कर इस समुदाय के उच्छेद के लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये।

अब यह अतीत की दुर्घटना है कि उस समय श्यामराव नाम का एक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता उत्तर भारत की हिन्दी पट्टी में कम्युनिज्म के कुप्रचार की दृष्टि से कलकत्ता से दिल्ली भेजा गया और अपने किन्हीं सहयात्रियों (फैलो ट्रेवलर की कृपा से वह आर्य समाज अनारकली नई दिल्ली में ठाठ से रहने लगा। अर्थ की कोई कमी नहीं, कितना ही अनर्थ करने में वह समर्थ था; आर्य समाज में प्रचार के नाम पर उसने आर्य समाज भवन से ही 'राजधर्म' नामक पत्र प्रारम्भ कर दिया। आर्य समाज में सब मिलते-जुलते विचारों के आधार पर कम्युनिज्म की दुन्दुभि बजने लगी। इसके आत्मीजनों के अतिरिक्त किसी को सन्देह ही नहीं हुआ कि यह आर्य समाज की नहीं अपितु कम्युनिज्म की दुन्दुभि बज रही है। न किसी ने उससे इसके आय के स्त्रोत ही पूछा।

इस प्रकार कम्युनिज्म की दुन्दुभि बजाता हुआ वह पंजाब में प्रविष्ट हुआ। किसी प्रकार मार्ग बनाता हुआ गुरुकुल झज्जर पहुंच गया वहां उसे अपने ही विचारों का एक ऐसा विद्यार्थी भी मिल गया जिसने आचार्य भगवानदेव कालान्तर में स्वामी ओमानन्द जी की नाक से दम कर रख था। इस प्रकार पंजाब में भी उसे प्रवेश मिल गया। तब तक हरियाणा प्रदेश अस्तित्व में नहीं आया था दिल्ली और पंजाब में उसका ठिकाना बन गया।

दिल्ली में रहते हुए कनाट प्लेस घूमते हुए उसे उपन्यास सम्राट वैद्य श्री गुरुदत्त के विषय में ज्ञात हुआ कि शनिवार शाम के समय उनके चिकित्सालय में कुछ लोगों की नियमित गोष्ठी होती है। यदा-कदा वह वहां जाने लगा। चर्चा में भी धीरे-धीरे भाग लेने लगा। गोष्ठी का कोई विषय निर्धारित नहीं होता था। सामान्य और सामयिक विषयों से बात आरम्भ होती और ज्यों केले के पात में पात, त्यों बात में बात की तरह देश दशा और हिन्दुत्व पर विचार-विमर्श, शंका समाधान आदि होने लगा। कम्युनिज्म पर घात-प्रतिघात भी होता। इस प्रकार लगभग दो घंटे तक तक चर्चा चलती रहती थी। श्यामराव को भी यह जानने का अवसर मिल जाता था कि समाज में कम्युनिज्म की स्थिति क्या है।

क्रम चलता रहा, लोग आते-जाते रहे। इसी क्रम में एक शाम को जब हम दो तीन लोग ही वहां पर रह गये थे तो श्यामराव ने अपनी चर्चा आरम्भ की और बातों-बातों में उसने वैद्य जी से परामर्श मांगा कि वह अपने जीवन का किस प्रकार सदुपयोग कर सकता है। वैद्य जी ने उसकी स्थिति और उत्तर दायित्वों के विषय में पूछा तो उसने बताया कि परिवार में केवल उसकी माता है, जो हैदराबाद में अपने निवास पर सुख-चैन से रहती है, उसकी सारी व्यवस्था है। उसकी (श्यामराव) की अपनी स्थिति भी सुदृढ़ है, अर्थ की कोई चिन्ता नहीं, क्यों कि वह तो पार्टी का होल-टाइमर था। श्यामराव ने यह बता दिया कि उसने आजीवन अविवाहित (ब्रह्मचारी नहीं) रहने का निश्चय कर रखा है।

सरल हृदय वैद्य जी ने उसकी बात पर भरोसा किया और उसकी स्थिति पर विचार कर उसे सुझाव देते हुए कहा, " आप पढ़े लिखे हैं, युवक हैं, लगनशील हैं, अतः बहुत कुछ कर सकते हैं। आप संन्यास ले लीजिए। भारत में काषाय वस्त्रों के प्रति बड़ी आस्था है। लोग सन्यासियों की बात सुनते हैं। इस प्रकार आप आर्य समाज की बढ़ी सेवा कर सकेंगे।

तब तक वैद्य जी को उसके कम्युनिस्ट होने का आभास नहीं हुआ था। किन्तु उसकी आत्मनिर्भरता की स्थिति देख कर कुछ सन्देह अवश्य होता था। क्योंकि राजधर्म मासिक में तो व्यय हो सकता था, आय नहीं। थोड़े दिनों से ही इस स्थिति कर निराकरण हो गया। दैव योग से लम्बे समय से अमेरिका से संघर्ष रत और रुग्ण वियतमान के तानाशाह का निधन हो गया।

उसके निधन पर राजधर्म के माध्यम से एक श्यामराव इतना रोया जितना अग्नि वेश अपने आका इन्द्रवेश के निधन पर भी नहीं रोया होगा। इन्द्रदेव के निधन को तो उसने अच्छी तरह भुनाया है। इससे स्थिति स्पष्ट हो गई कि श्यामराव कम्युनिस्ट प्रचारक है।

शनैः-शनैः श्यामराव ने गुरुकुल झज्जर के विद्यार्थियों में अपनी पैठ बढ़ाइ और उसने कम्युनिज्म की पौध के लिए उर्वराभूमि पाया। अनेक विद्यार्थियों को उसने पिछलग्गू बना लिया। हरियाणा में अपनी पैठ बढ़ाई और दिल्ली छोड़ कर रोहतक को गढ़ बनाया। रोहतक में जब पैर जम गये तो एक दिन गुरुकुल के कुछ विद्यार्थियों को साथ ले कर श्यामराव ने। उन साथियों के साथ सादा वस्त्र त्यागे और हरियाणा बाना धारण कर वेश समुदाय की नींव डाल दी। आर्य समाज में कम्युनिस्ट घुसपैठियों ने उसका साथ दिया और भोले-भाले आर्य समाजी छलावे में आकर उसको स्वामी मान बैठे। वास्तव में कम्युनिस्टों ने वेश समुदाय को आर्य समाज में घुसपैठ के लिये एक विंग बनाया हुआ है। वेश के दुर्भाग्य से कम्युनिस्टों के बल पर संप्रग सत्ता में आया और उसके आश्रय पुलिस बल के आधार पर वेश समुदाय को बलात् सार्वदेशिक सभा के कार्यालय दयानन्द भवन पर अधिकार करने का अवसर मिल गया। अन्यथा कुछ वर्ष पूर्व मनु की प्रतिमा को भ्रष्ट कर और मनुस्मृति को जलाने का जघन्य कार्य करने वाला कोई व्यक्ति आर्य समाजी कहला सकता है।

'दयानन्द' भवन अब छद्म कम्युनिस्टों का केन्द्र बन गया है जहां आर्य समाज के नाम पर कम्युनिज्म का प्रचार-प्रसार होता है। आर्य समाजियों के धन से राजधर्म का आर्य समाजी संस्करण वैदिक सार्वदेशिक प्रकाशित हो कर रोहतक केन्द्र की गतिविधियां जब दयानन्द भवन में स्थानान्तरित हो गई हैं। अनेक महत्वाकांक्षी सत्त-धन-मान लुप्त आर्य समाजी इस केन्द्र के पिछलग्गू बन गये हैं। वे नव-दीक्षित लालची वेश समुदाय की दुन्दुभि बजाने में ही अपना आर्यसमाजीत्व समझ बैठे हैं। अब आचार्यों और पण्डितों के स्थान पर मौलाना और पादरियों को कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि बनाया जाने लगा है। अक्टूबर माह में एक श्राद्ध समारोह में कोटा की ताजा घटना इसका प्रमाण है।

वेश समुदाय आर्य समाज को विघटित करने में वर्तमान में तो सफलता प्राप्त कर रहा है, किन्तु यह सफलता कब तक स्थिर रहगी, यह भविष्य के गर्त में है। यदि आर्य समाजी नहीं चेते और लाभ, लालच तथा प्रतिष्ठा के प्रश्न पर कम्युनिस्टों का नाच नाचते रहे तो कम्युनिस्ट गर्त से निकलने में समर्थ नहीं हो जायेंगे। जैसा कि तीसरी सर्वादेशिक के गठन में उन्हें सफलता मिल गई है जिसमें कम्युनिस्टों और फैलो ट्रेवलरों का बोलबाला है।

इस स्थिति में आर्य समाजियों का यह कर्तव्य है कि वेश समुदाय के इस विस्तार को अवरुद्ध करें। अन्यथा कालान्तर में आप देखेंगे कि दयानन्द भवन का नाम मार्क्समंजिल हो कर रहेगा। तब आप पछताते और हाथ मलते रह जायेंगे। इस समय देश के शासन में कम्युनिस्टों का वर्चस्व है उसके परिणाम स्वरूप वेश समुदाय अपने अनैतिक कृत्यों को तत्परता से दोहरा रहा है। यद्यपि वेश समुदाय का वैभव काल तब था जब देश में जनता पार्टी का राज था। उस समय कम्युनिस्ट भी साझीदार थे। हरियाणा मन्त्रिमण्डल में भी वेश समुदाय साझीदार था। यहां तब इनमें से एक वेश भाजपा तक को भ्रम में डाल कर उसके प्रत्याशी के रूप में संसद में भी पहुंच गया था। वह स्थिति अब नहीं है। कम्युनिस्ट शासित प्रदेशों में यद्यपि वेश समुदाय की पहुंच नहीं है तदापि उत्तर प्रदेश की अर्द्ध कम्युनिस्ट सरकार में उसकी भागीदारी है।

वर्तमान में भारतीयता के विरुद्ध विष-वमन करने के लिये उसने संप्रग की सहायता से दूर दर्शन पर मथन चेनल प्रारम्भ कर दिया है और जब वह आर्यो के नाम का दुरुपयोग कर एक अन्य चैनल की तैयारी में संलग्न है। राज धर्म, वैदिक सार्वदेशिक और आर्य समाज प्रहरी नाम से तीन पत्रों का प्रकाशन भी इस श्रृंखला की एक उपलब्धि है।

यह सब आर्य समाज के समाप्त करने की परियोजना का एक अंग है किन्तु आर्य समाजी हैं कि इस छल-छद्म को न समझते हुए उसमें सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

क्या इस सबके लिए ही महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी। स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल, पं. लेखराम आदि का बलिदान क्या यों कि व्यर्थ जाने दिया जायगा। आर्य सन्यासियो! साधो इस घड़ी में अपने कर्तव्य का स्मरण कर परस्पर वैमनस्य को भुला कर आर्य समाज के वर्तमान में एक मात्र शत्रु को ठीक से पहचानो और कटिबद्ध हो कर वेश समुदाय को आर्य समाज के पटल पर से निःशेष कर अपने दायित्व का पालन करो।

दयानन्द भवन को गोघातक मांसाहारियों, मद्यपायियों तथा मुल्ला और पादरियों से मुक्त कराओ।

अभी नहीं तो, कभी नहीं।

३६५, साइट-१, विकासपुरी, नई दिल्ली ११००१८

आर्य समाज राजौरी गार्डन दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर राजौरी गार्डन का ५२ वां वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद परायण महायज्ञ का आयोजन २० नवम्बर से २६ नवम्बर तक किया जाएगा। आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, हरिद्वार इस यज्ञ के ब्रह्मा होंगे। समापन समारोह में श्री रासासिंह रावत, संसद सदस्य, वैद्य इन्द्र देव प्रधान, श्री नरेन्द्र आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री वेदव्रत शर्मा उप प्रधान सार्वदैशिक सभा आदि विशेष अतिथि होंगे।

दण्ड व्यवस्था सुधार के लिए होती है।

अमर सिंह आर्य

जब से आतंकारी मोम्मद अफजल को न्यायाल द्वारा फांसी की सजा सुनाई है तभी से पूरे देश में व्यर्थ की बहस छिडी हुई है कि आंतककारी को फॉसी की सजा माफ कर दी जाय। लम्बी न्याय प्रक्रिया ने उच्च न्यायालय ने प्रस्तुत पक्के सबूतों के आधार दोषी करार दिये गये आंतकवादी के साथ देश के चन्द लोगों की सहानभूति न्याय प्रक्रिया के साथ खिलवाड है। इस विवाद को अंधे कितर न्यूज चैनलों ने पैदा किया है। इनके रिपोर्टर निरन्तर इस सम्बन्ध के दोषी के परिवार जनों का रोना-धोना प्रसारित करते रहते है। जिससे कुछ व्यक्ति भावना में बहकर दुर्दान्त अपराधियों के पक्ष में भी हो जाते है। इसमें जम्मू कश्मर के मुख्य मन्त्री श्री गुलाम नबी आजाद एवं भू. पू. मुख्यमंत्री फारूख अब्दुला के गैर जिम्मेदाराना टिप्पणी कि "यदि मोहम्मद अफजल को फॉसी दी गई तो कश्मीर जल उठेगा" क्या राष्ट्र की कमजोर मानसिकता का प्रतीक नहीं है? आतंकवादियों के साथ बरते गये सहानभूति पूर्ण रवैये का ही परिणाम है कि उनके हौसले बुलंद होते जा रहे हैं और सरकार घुटने टेकती चली जा रही है क्या आतंकवादियों के खिलाफ सरकार सघर्ष करने में कमजोर है प्रश्न उठता है कि सजा देने के पीछे क्या उद्देश्य है? –

(दोषी) को दंड देने के पीछे उद्देश्य यह होता है कि जनता में सुधार हो। जैसा कि मनुस्मृति के आधार पर महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में दंड के विषय में विस्तृत विचार प्रस्तुत किये है कि –

१. दंड वह है जो (राजा) न्यायाधीश न्याय के प्रचार कर्त्ता और सबका शासन कर्त्ता चारों वर्णो में 'धर्मस्य प्रतिभू स्मृत' धर्म का प्रतिभू अर्थात जिम्मेदार है।

२. वही प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रजा का रक्षक सोते हुए मनुष्यों में जागता है इसीलिए बुद्धिमान् लोग दंड को ही 'धर्म' कहते है।

३. जो दंड ठीक प्रकार से विचार कर निश्चित किया जाय वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाये तो सब ओर से राजा (न्यायाधीश) व प्रजा का विनाश कर देता है।

४. बिना उचित दंड से सब पूर्ण दूषित और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाये और प्रजा में आंतकियों का भय फैल जाय।

५. जो आप्त पुरूषों के सहाय, विद्या, सुशिक्षा से रहित, विषयों में आसक्त मूढ़ है वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कभी नहीं हो सकता। और जो पवित्र आत्मा, सत्याचार और सत्यपुरूषों का संगी यथावत नीति शास्त्र के अनुकूल चलने हारा श्रेष्ठ पुरूषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान है वही न्यायरूपी दण्ड को चलाने में समर्थ होता हैं चाहे पुत्रादि बालक हों चाहे गुरु हो, चाहे पिता आदि वृद्ध, चाहे ब्राह्मण, चाहे किसी भी मत सम्प्रदाय का ही व्यक्ति हो, जो धर्म को छोड़ अधर्म में वर्तमान दूसरों को बिना अपराध मारने वाला हो, उसको बिना विचारे मार डालना चाहिए। बिना अपराध मारने वाला हो, उसकी बिना दुष्ट पुरूषों को मारने में न्यायाधीश या राष्ट्रपति को कोई पाप नहीं लगता। क्योंकि कठोरता से मारना जानो। क्रोध से क्रोध की लड़ाई है जितना क्रूरतापूर्वक कृत्य का है उतना ही वह अपराधी सख्त दण्ड का हकदार है।

दण्ड देने के पीछे भावना द्वेष नहीं है और ना ही भय होना चाहिए। प्रश्न यह पैदा होता है कि जिहाद के नाम पर जो ये आंतवाद खून खराबा हो रहा है वह कैसे रोका जाय? किसी सम्प्रदाय विशेष के चंद व्यक्तियों ने धर्म के नाम पर या आजादी के नाम पर यह बवण्डर उठा रखा है वह वाजिब नहीं है तो भू. पू. मुख्य मंत्री फारूख अब्दूला या श्री गुलाम नबी आजाद मौजूदा मुख्य मंत्री से पूछा जाय कि क्या उनकी मांगे मान ली जाय या एक प्रान्त विशेष में दंगों के डर से पूरे देश की शन्ति को दाव पर लगा दिया जाय। किसी भी सूरत में उन दोनों ही महानुभावी तथा अन्य समर्थकों की यह बात स्वीकार करने योग्य नहीं है। राष्ट्र का मनोबल तभी बढ़ेगा, जब अलगाववादी संगठनों या आंतकवादियों को मुँहतोड़ जवाब दिया जायेगा। राष्ट्र भयभीत होने से नहीं चलता यही नीति शास्त्र कहते हैं। मौम्मद अफजल व उनके अन्य साथियों का अपराध कभी भी माफ करने योग्य नहीं है अतः सरकार व राष्ट्रपति को उसके लिए कोई रियायत न दी जाये।

मन्त्री

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा

अग्निवेश की वैश्विक छवि की चाहना

डा. भवानी लाल भारतीय

महानुभाव का पोप के वैटिकन, जेनेवा के यू.एन.ओ. कार्यक्रमों तथा अन्य वैश्विक मंचों पर आमंत्रित किया जाता है तो यह हम सबके लिए गर्व की वस्तु होगी। किन्तु आर्य समाज हमसे कुछ अन्य बातों की अपेक्षा रखता है। आर्य समाज के उत्थान के लिए जो कार्यक्रम बनें उनमें हमारे विद्वत् समुदाय की सहमति, सन्यासी वर्ग का आशीर्वाद, उपदेशकों का विचार-विमर्श तथा सर्व सामान्य आर्यजनों की राय आवश्यक होती है। पहले भी ऐसा ही होता रहा है। हमारे यशस्वी नेताओं स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा नारायण स्वामी एवं स्वामी स्वतंत्रानन्द ने जो कार्यक्रम बनाये वे गहन विचार-विमर्श तथा आत्मावलोकन के पश्चात समाज के सम्मुख रखे गये थे। अब जो सप्त सूत्री कार्यक्रम रखे गये हैं वे केवल बहिर्मुखी हैं। इनमें आत्मोन्नति, वेद प्रचार तथा आर्ष विधाओं के पुनरूद्धार की कोई गुंजाइश भी नहीं है! जहां तक आध्यात्म जागरण का सवाल है वह तो राजनीतिज्ञों के निकट आने तथा अपने अनुकूल ईसाई-मुसलमानों को अपने मंच की शिरकत कराने तक ही सीमित रहा। अयोध्या वस्तुतः लखनऊ से राजघट तक सामुदायिक सौहार्द स्थापना के लिए जो पदयात्रा निकाली गई उसमें इनके मित्र मुल्ला-मौलवियों ने कैसे भड़काऊ तथा आग उगलने वाले भाषण दिया उनपर तो पं. सत्यव्रत सार्मवेदी ने अपने पत्र आर्य नीति में क्षोभ जाहिर किया था।

वैश्विक छवि बनाई थी स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ ने। पं. अयोध्या प्रसाद तथा पं. प्रकाशवीर शास्त्री ने। किन्तु इसके पीछे उनका तप, त्याग, अध्ययन तथा व्यापक दृष्टि थी। वे भिखारियों के आगे गिड़गिड़ाये नहीं थे अपितु उन्होंने उनकी धूर्तताओं और चालबाजियों से अवगत कराया था। वक्तृता देने में स्वामी विवेकानन्द भी कम नहीं थे, किन्तु उन्होंने एक शास्त्र वाक्य को उद्धत कर स्पष्ट कर दिया था कि केवल वाग वैखरी (वाक चातुर्य) शब्दों का घटाटोप तथा व्याख्यान कुशलता हमारे बन्धन के कारण ही बनेंगे, मुक्ति के कारण नहीं।

वाग्वेखरी शब्द झंरी शास्त्र व्याख्यान कौशलम्। यह एक युक्ति दे सकते हैं, मुक्ति नहीं। संन्यासी का प्राथमिक कार्य तो सांसारिक एषणाओं से सर्वथा मुक्त होकर परमात्मा के प्रति समर्पणपूर्वक आत्मिक साधना में प्रवृत्त होना है। तथापि लोकसंग्रह भी उसका एक कर्त्तव्य है, जैसा कि महर्षि दयानन्द ने किया। किन्तु इसमें उसे सफलता तभी मिलेगी जब उसकी साधना, तपस्या तथा द्वन्द्वसहन की क्षमता में परिपूर्णता हो। परकीयों में छवि बनाने का उनका एक घृणित प्रयत्न• तब देखने में आया जब उन्होंने गुरु अर्जुन देव जी के बलिदान दिवस पंर सिखों को आश्वासन दिया कि सत्यार्थप्रकाश में आये सिख मत समीक्षा के अवतरणों का उनकी इच्छा के अनुसार संशोधन किया जाएगा। सत्यार्थप्रकाश जैसे कालजयी कृति के बारे में उनका यह गैर जिम्मेदाराना रवैया नितान्त आपत्तिजनक है।

नन्दन वन जोधपुर

हम बीमार क्यों होते हैं?

हम बीमार क्यों होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर आयुर्वेद के अनुसार है – जब हम अपने आहार विहार में कुपथ्य करते हैं अर्थात् बदपरहेजी या लापरवाही करते हैं तब रोगग्रस्त हो जाते हैं। यह पूर्णतया सत्य है। जब मन इन्द्रियों के वशीभूत होकर गलत काम करोगे तो बीमारी में फंसोगे। स्वास्थ्यरूपी भवन के तीन स्तम्भ माने गए हैं– १. आहार, २. निद्रा, ३. ब्रह्मचर्य। यदि स्वस्थ रहना चाहते हो तो तीन स्तम्भों को सुन्दर सुदृढ बनाकर रखो। शुद्ध सात्विक भोजन करो। मीट, मछली, अण्डा– मनुष्य का भोजन नहीं है। इसके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं। शाकाहारी भोजन ही हितकर है। सच पूछो तो दूषित भोजन के कारण भ्रष्टाचार फैल रहा है क्योंकि जैसा आहार होगा वैसा ही विचार और व्यवहार होगा। विस्तार से बचने के लिए सारांश में लिखा है। अपना भोजन सुधारो, परिश्रम करो और पूरा आराम करो। दुनिया में जितने सुख हैं उनमें सबसे पहला सुख निरोगी काया है।

-देवराज आर्य मित्र, हरिनगर, नई दिल्ली

श्री राजीव आर्य का निधन

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान स्व. श्री नरेन्द्र विधालंकार जी एवं श्रीमती सुमेधा विधालंकृता जी के सुपुत्र श्री राजीव आर्य का ४७ वर्ष की युवावस्था में आकस्मिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में यज्ञ एवं श्रद्धांजली सभा का आयोजन गुलमोहर पार्क में किया गया जिसमें डॉ. महेश विधालंकार, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, हरिद्वार, श्री वेददत शर्मा, उप प्रधान सार्वदेशिक तथा कई अन्य आर्य समाज के प्रमुख अधिकारी एवं विद्वान उपस्थित हुए। श्री राजीव आर्य दैनिक हिन्दुस्तान में खेल विभाग में सम्पादक थे। परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करे। उनके पीछे परिवार में माता जी श्रीमती सुमेधा, उनकी धर्मपत्नी तथा दो बेटियां हैं।

पुनर्जन्म का वैदिक सिद्धान्त

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेति भोगम्।
ज्योक् पश्येम् सूर्य्यमुच्चरन्तनुमते मृळया नः स्वस्ति।।१।।
पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्वै ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्तिः।।२।।

भापार्थ– (असुनीते) हे सुखदायक परमेश्वर! आप (पुनरस्मासु चक्षु.) कृपा करके पुनर्जन्म में हमारे बीच में उत्तम नेत्र आदि सब इन्द्रियां स्थापन कीजिये। तथा (पुनः प्राणं) प्राण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, बल, पराक्रम आदि युक्त शरीर पुनर्जन्म में कीजिये। (इह न धेहि भोगं) हे जगीश्वर! इस संसार अर्थात् इस जन्म और परजन्म में हम लोग उत्तम भोगों को प्राप्त हों। तथा (ज्योक् पश्येम सूर्य्यमुच्चरन्तम्) हे भगवन्! आपकी कृपा से उत्तम सूर्य्यलोक, प्राण और आपको विज्ञान तथा प्रेम से सदा देखते रहें। (अनुमते मृया नः स्वस्ति) हे अनुमते = सबको मान देनेहारे! सब जन्मों को मृडय = सुखी रखिये, जिससे हम लोगों को स्वस्ति अर्थात् कल्याण हो।।१।।

(पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पु०) हे सर्वशक्तिमान्! आपके अनुग्रह से हमारे लिये बारबार पृथिवी प्राण को, प्रकाश चक्षु को, और अन्तरिक्ष स्थानानि अवकाशों को देते रहें। पुनर्नः सोमस्तन्व ददातु पुनर्जन्म में सोम अर्थात् ओषधियों का रस हमको उत्तम शरीर देने में अनुकूल रहे। तथा (पुनः पूषा०) पुष्टि करने वाला परमेश्वर कृपा करके सब जन्मों में हमको सब दुःख निवारण करनेवाली पथ्यरूप स्वस्ति को देवे।।२।।

पुनर्मनः पुनरायुर्म आगम् पुनः प्राणः पुनरात्मा म आगम् पुनश्चक्षुः
पुनः श्रोत्रं वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात् ।।३।।
पुनर्मैत्विद्रियं पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मणं च।
पुनरग्नयो धिष्णयां यथास्थाम कल्पयन्तामिहवै।।४।।
आ यो धर्माणि प्रथमः सासद ततो वपूंषि कृणुपे पुरूणिं।
धारयुर्योनिं प्रथम आ विदेशो यो वाचमनुदितां चिकेत।।५।।

भापाथ– (पुनर्मनः पुनरात्मा) हे सर्वज्ञ ईश्वर! जब जब हम जन्म लेवे, तब तब हमको शुद्ध मन, पूर्ण आयु, आरोग्यता प्राण, कुशलतायुक्त जीवात्मा, उत्तम चक्षु और श्रोत्र प्राप्त हों। (वैश्वानरोऽदब्ध०) जो विश्व में विराजमान ईश्वर है, वह जब जन्मों में हमारे शरीरों का पालन करे। (अग्निर्नः) सब पापों के नाश करने वाले आप हमको (पातु दुरितादवद्यात्) बुरे कामों और सब दुःखों से पुनर्जन्म में अलग रखें ।।३।।

(पुनर्मैत्विद्रयम्) हे जगदीश्वर! आप की कृपा से पुनर्जन्म में मन आदि ग्यारह इन्द्रिय मुझ को प्राप्त हों। अर्थात् सर्वदा मनुष्य देह ही प्राप्त होता रहे। (पुनरात्मा) अर्थात् प्राणों को धारण करने हारा सामर्थ्य मुझ पर प्राप्त होता रहे। जिससे दूसरे जन्म से भी हम लोग सौ वर्ष वा अच्छे आचरण से अधिक भी जीवें। (द्रविणं) तथा सत्यविद्यादि श्रेष्ठ धन भी पुनर्जन्म में प्राप्त होते रहें। (ब्राह्मणं च) और सदा के लिये ब्रह्म जो वेद है, उसका व्याख्यान सहित विज्ञान तथा आप ही में हमारी निष्ठा बनी रहे। (पुनरग्नयः) तथा सब जगत् के उपहार के अर्थ हम लोग अग्निहोत्रादि यज्ञ को करते रहें। (धिष्ण्या यथास्थाम) हे जगदीश्वर! हम लोग जैसे पूर्वजन्मों में शुभ गुण धारण करने वाली बुद्धि से उत्तम शरीर और इन्द्रियसहित थे, वैसे ही इस संसार के पुनर्जन्म में भी बुद्धि के साथ मनुष्यदेह के कृत्य करने में समर्थ हों। ये सब शुद्धबुद्धि के साथ (मैतु) मुझको यथावत् प्राप्त हों। (इहैव) जिनसे हम लोग इस संसार में मनुष्यजन्म को धारण करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सदा सिद्ध करें, और इंस सामग्री से आपकी भक्ति को प्रेम से सदा प्यार करें। जिस करके किसी जन्म में हमको कभी दुःख प्राप्त न हो ।।४।।

(आ यो धर्माणि०) जो मनुष्य पूर्वजन्म में धर्माचरण करता है, (ततो वपूंषि कृणुषे पुरूणि) उस धर्माचरण के फल के अनेक उत्तम शरीरों को धारण करता, और अर्धमात्मा मनुष्य नीच शरीर को प्राप्त होता है। (धास्युर्योनि०) जो पूर्वजन्म में किये हुए पाप पुण्य के फलों को भोग करने के स्वभावयुक्त जीवात्मा है, वह पूर्व शरीर को छोड के वायु के साथ रहता है, पुनः जल ओषधि वा प्राण आदि में प्रवेश करके वीर्य्य मे प्रवेश करता है, तदनन्तर योनि अर्थात् गर्भाश्य में स्थिर होके पुनः जन्म लेता है। (यो वाचमनुदिता) जो जीव अनुदित वाणी, अर्थात् जैसी ईश्वर ने वेदों में सत्यभापण करने की आज्ञा दी है वैसा ही (आचिकेत) यथावत् जान के बोलता है, और धर्म ही में (ससाद) यथावत् स्थित रहता है, वह मनुष्ययोनि मे उत्तम शरीर धारण करके अनेक सुखों का भोगता है। और जो अधर्माचरण करता है, वह अनेक नीच शरीर अर्थात कीट पतङग पशु आदि के शरीर को धारण करके अनेक दुःखों को भोगता है ।।५।।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का स्वाध्याय करने के लिए विज्ञान विद्यार्थियों को प्रेरित करे क्योंकि इस अनमोल ग्रन्थ में विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा स्पष्ट किए गए हैं।

विमलवधावन आर्य, सम्पादक

द्वे सृती अश्रृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
तभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ।।६।।
मृतश्चाहं' पुनर्जातो जातश्चहं पुनर्मृतः।
नानायोनिसिहस्राणि मयोषितानि यानि वै ।।१।।
आहारा विविधा भुक्ताःपीता नानाविधाःस्तनाः।
मातरो विविधा दृष्टाः पितरः सुहृदस्तथा ।।२।।
अवाङ्मुखः पीडयमानो जन्तुश्चैव समन्वितः (३) ।।७।।
स्वरसवाही विदुषोऽपि तथाऽभिरूढोऽभिनिवेशः' ।।८।।
पुनरुत्पत्रिः प्रेत्यभावः ।।६।।

(उत्तर) ज्ञान दो प्रकार का होता है– एक प्रत्यक्ष, दूसरा अनुमानादि से। जैसे एक वैद्य और दूसरा अवैद्य, इन दोनों को ज्वर आने से वैद्य तो इस का पूर्व निदान जान लेता है, और दूसरा नहीं जान सकता। परन्तु उस पूर्व कुपथ्य का कार्य जो ज्वर है, वह दोनों को प्रत्यक्ष होने से वे जान लेते हैं कि किसी कुमथ्य से ही यह ज्वर हुआ है, अन्यथा नहीं। इसमें इतना विशेष है कि विद्वान् ठीक–ठीक रोग के कारण और कार्य्य का निश्चय करके जानता है, और वह अविद्वान् कार्य्य को तो ठीक ठीक जानता है, परन्तु कारण में उसको यथावत् निश्चय नहीं होता। वैसे ही ईश्वर न्यायकारी होने से किसी को बिना कारण से सुख व दुःख कभी नहीं देता। जब हम को पुण्य पाप का कार्य्य सुख और दुःख प्रत्यक्ष है, तब हमको ठीक निश्रय होता है कि पूर्वजन्म के पाप पुण्यों के बिना उत्तम मध्यम और नीच शरीर तथा बुद्धयादि पदार्थ कभी नहीं मिल सकते। इससे हम लोग निश्चय करके जानते हैं कि ईश्वर का न्याय और हमारा सुधार ये दोनों काम यथावत् बनते हैं।

इत्यादि प्रश्नोत्तर बुद्धिमान् लोग अपने विचार से यथावत् जान लेवें। मैं यहां इस विषय के बढ़ाने की आवश्यकता नहीं देखता।

–(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से)

चैन्नई के आर्य स्तम्भ श्री जयदेव जी को पत्नी शोक

चैन्नई आर्य समाज एवं डी.ए.वी. संस्थाओं के प्रमुख स्तम्भ श्री जयदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती प्रभा चौधरी जी का निधन २७ अक्टूबर को चैन्नई में हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थी। उनकी चिकित्सा में श्री जयदेव जी एवं अन्य परिजनों ने अथक प्रयास किए। परन्तु ईश्वर की न्याय व्यवस्था के तहत २७ अक्टूबर को उनकी पुन्य आत्मा ने देह त्याग दिया। वे आर्य समाज के समस्त कार्यक्रमों में तथा विद्वानों की सेवा सम्मान में सदैव उत्साह पूर्वक भाग लेती थी।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न अन्तरंग बैठक में शोक प्रस्ताव पारित किया गया कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा परिजनों को उनके निधन का दारुण दुःख सहन करने [illegible] शक्ति प्रदान करें।

आत्मा का शृंगार करें

हमारे शरीर में जितनी भी इन्द्रियां रहती हैं, ये पक्षियों के समान अन्दर–बाहर उड़ती फिरती हैं। ये इन्द्रियां ऋषि इन्द्रियां कहलाती हैं। ज्ञान लाने वाली ज्ञानेन्द्रियां कहलाती है। इन्हें संगमन करना बड़ा प्रिय लगता है। बाहर से सुन्दर–सुन्दर रूपों में विलक्षणाल लाती है। इनमें नाना प्रकार के अद्भुत गुण हैं आंख खोलो–सम्पूर्ण संसार दीखता है। आंख बन्द करो तो कुछ नहीं। आंख में विलक्षण शक्ति है। हमारे लिए आनन्ददायक अनुभूतियां पैदा करती है।

जीवन में एक समय ऐसा भी आता है, जब ये अदभुत इन्द्रियां हमारी ज्ञान पिपासा को तृप्त नहीं कर सकती। ये बाहर से जो भी प्रकाश सुन्दरता रस लेकर आती है वह सब कुछ तुच्छ लगने लगता है। यह तब होता है, जब छठी इन्द्रिय विवेक (मन) द्वारा अन्दर के प्रकाश की तरफ हमारा ध्यान जाता है। ऐसी अवस्था जाग्रत होने पर इन्द्रियों का उड़ना बन्द हो जाता है। ऐसी अवस्था जाग्रत होने पर इन्द्रियों का उड़ना बन्द हो जाता है। सब इन्द्रियां मन के प्रकाश के मुकाबले अपने अन्धकार को और अपनी परिमितता के बन्धन को अनुभव करती हैं। एहसास कराती है कि इन्द्रियों का ज्ञान तो बहुत था और बन्धा हुआ महसूस होता है। लौकिक संसार की आंख अति सूक्ष्म को, ओट के पार को नहीं देख सकती।

यह बन्धन, अन्धकार तब अनुभव होता है जबकि अन्दर के महान, सब कुछ जान सकने वाले प्रकाश का पता लगता है। इसे इन्द्र (परमात्मा) का आत्मा का दिया प्रकाश कहते हैं। इस प्रकाश पिपासा से व्याकुल होकर इन्द्रियां आत्मा के प्रकाश को पाने के लिए तड़पती हैं और परमात्मा से प्रार्थना करती है, "प्रभु! अन्धकार का पर्दा उठा दो हमारी आंखें ज्ञान से प्रकाशित कर दो। हम अन्धे हैं। हमें ज्ञानचक्षु दे दो। हमें संसार रूपी बन्धन से मुक्त कर दो। हम जिस भी देश, काल और वस्तु को देखना चाहें, प्रभु! आपके इस प्रकाश में प्रज्ञालोक में देख सकें। हमारी इन्द्रियां आपकी शक्ति स्त्रोत शंख में न जाए तो कहां जाए?

"पश्यन्ति सर्वे चक्षुसा न सर्वे मनसा विदुं।"

(अथर्व)

भौतिक संसार में भौतिक चक्षु से दीखने वाला सुख क्षणिक, दुःख परिणामी और नाशकारक होता है। प्राणी अज्ञान अनित्य द्रव्यों के शृंगार में फंस कर अपनी क्षणिक दीखने वाली खूबसूरती के मोह में फंस कर अहंकार को गले लगा लेता है। मन की आंख खुल जाने पर अपनी इन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों, मन, बुद्धि, चित्त, पांच भौतिक तत्वों को मलिनता, अहंकार आदि कुसंस्कारों से छुडाकर, ज्ञानवान, बलशाली, पवित्र, निर्मल और आनन्दमयी बनाने के लिए सांसारिक विषयों में नहीं फंसाते। ज्ञान चक्षु मिल जाने पर सांसारिक विषयों से हट जाते हैं। प्रभु के भक्त भोगों में नहीं फंसते। इमे हिते ब्रहम कृतः सुते सचा मद्यौ न मक्षा आसते इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो नृथे न पांदमादधुः।।

प्रभु का सच्चा भक्त उठते–बैठते चलते फिरते प्रभु में रमते हैं संसार में रहकर, संसार के कार्य करते समय प्रभु से विमुख नहीं होते। इस संसार में जो भी रस है। उसी रसमय का दिया है। हम इस संसार में उसी रसमय के रस की तलाश में आते हैं। और उसे प्राप्त करने के लिए कैसा प्रयास कैसा पुरुषार्थ करते हैं। जानने का प्रयास करते। वेद में एक शब्द आता है जिसे मधु कहते है। जिसका अर्थ शहद है शहद, गुणकारी, शक्तिवर्धक, पौष्टिक, स्वास्थ्यवर्धक और त्वचा के लिए लाभकारी है, किन्तु हम इसे कैसे प्रयोग करते है मधु को देखकर मक्खियां भिनभिनाने लगती हैं। झपटती हैं, चिपटती हैं और चिपट–चिपटकर उसमें लिप्त हो जाती है। और जो परिणाम निकलता है हम सभी भली प्रकार जानते है। संसार में आना संसार के पदार्थ को आत्मा का भाग मानना, उनमें लिप्त हो जाना और कीड़े मकोड़े की भान्ति जीवन नष्ट करके चले जाना दूसरी ओर वे मधु भक्षिक भी है। जहां भी झुण्ड रूप में जाती हैं डेरा डालती है। संसार को मधु देती है। एक भी उस मधु में ने तो चिपटती है, न लिप्त होती है और न ही मरती हैं।

ऐसे ही सन्तप्त जीव आनन्द की तलाश में निकलते हैं। जैसे ही आनन्दघन प्रभु का मेल होता है, वे मधु भक्षिकाओं की भान्ति आसन जमा लेते हैं। अब वे अपनी समस्त कामनाओं का विषय परमेश्वर को बना लेते हैं क्योंकि उन्होंने आनन्द की मीमांसा कर ली है। जिसने परमात्मा के आनन्द को पा लिया, वे सांसारिक विषयों में क्यों फंसेंगे। जिन्होंने भगवान् की चाहना की, वे विषयों से हट जाते हैं।

परमात्मा का आनन्द शाश्वत। शाश्वत होते क्षणिक को कौन लेना पसन्द करेगा? संसार के सभी सुख साधन, द्रव्य पदार्थ, अनित्य और क्षणिक हैं। इनमें शाश्वत आराम नहीं मिल सकता। इसके लिए अनित्य द्रव्यों का त्याग अनित्य है। अहंकार को मारे बिना प्रभु आनन्द असम्भव है। जब अन्त में आत्म बलिदान की भावना उत्पन्न हो गई, तब आत्मा की भोग रुचि विलीन हो जाती है।

प्रभु की स्तुति का फल सदा मीठा व ज्ञान को बढ़ाने वाला होता है। दृढ़ निष्ठा और आस्था से उपासना करनी चाहिए। संसार के सकल पदार्थ जो हमने संग्रहीत किए हैं, ये यहीं रह जाएंगे। कोई भी साथ नहीं जाएगा। साथ जाएगा–केवल धर्म। धर्म का भाव ईश्वर की पूजा। स्तुति, प्रार्थना, उपासना द्वारा त्यागपूर्वक ईश्वर की आराधना ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए परोपकारी कार्य करना ईश्वर पूजा है। यही मुख्य धर्म है। यही साथ जाएगा। यही साथ देता है। जिसने इसका संचय नहीं किया, वह पछताता है। अधर्म से अन्त में अन्त समय बेचैनी, व्याकुलता का अनुभव होता है।

संसार के पदार्थ वास्तव में नीरस है। यदि उनमें रस की प्राप्ति होती है तो वह प्रभु की व्याप्ति के कारण। यदि परमात्मा हमारा त्याग कर दे तो किसी भी पदार्थ में रस–प्राप्ति न हो। आओ। हम सभी परमात्मा से मेल बनाए रखें और स्तुति करते रहें।

अन्त में इस विश्वास के साथ उत्तम कोटि के कर्म करते हुए अपनी आत्मा को अपनी इन्द्रियों को अपनी बुद्धि को इतना पवित्र, निर्मल, ज्ञानवान, बलशाली व आनन्दमयी बनाएं कि इस शरीर पर सोलह शृंगार की जगह आत्मा पर अनन्य गुणों का भंडार सन्चित होता रहे और हम सदैव प्रभु के ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित, सुगन्धित होकर मानव जाति के निर्माण, कल्याण के कार्य करते हुए ऐसे गुण धारण करने वाले बनें:............

(१) पितृभक्त पुत्र (२) सहृदय सखा (३) कुशल खिलाडी (४) सक्रिय छात्र नेता (५) धुन के धनी (६) अदम्य उत्साह की मूर्ति (७) विस्मयोत्पादक स्मरण शक्ति एवं प्रतिभा के स्वामी (८) अपरिमित ज्ञान के भण्डार (९) विद्या–वारिधि (१०) मनमोहक कवि (११) योग्य लेखक (१२) गम्भीर दार्शनिक (१३) उत्कृष्ट वैज्ञानिक (१४) प्रबल सुधारक (१५) सफल अध्यापक (१६) सुलझे हुए शिक्षा–शास्त्री (१७) ओजस्वी वक्ता (१८) तपस्वी प्रचारक (१९) प्रबल सुधारक (२०) दूरदर्शी नेता (२१) स्वाभिमानी देशभक्त (२२) सच्चे योगी (२३) तपोनिष्ठ मुनि (२४) वेदशास्त्रों के मर्मज्ञ (२५) समर्पित सत्यान्वेषक (२६) परम ऋषि भक्त (२७) ईश्वरानुरागी।

स्वामी आर्य तपस्वी सुखदेव
३७६, द्वितीय मेन रोड़,
महावीर नगर,
लासपेट, पान्डेचरी
पिनः ६०५००८
मो. ६३४४४४४८१६

राष्ट्रपति को वोट राजनीति के तहत समझौते की आवश्यकता नहीं

आर्यसमाज रामपुर (उ०प्र०) की ओर से राष्ट्रपति को भेजे गए पत्र में कहा गया है कि संसद पर सुनियोजित ढंग से हमला दिग्भ्रमित तथा देशद्रोही व्यक्तियों ने पाकिस्तान की तथा आई०एस०आई० की शह पर किया। उन व्यक्तियों पर देशद्रोह आदि का अपराध मानते हुए उच्चतम न्यायालयों में मुकदमा भारतीय दण्ड संहिता की विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत चला और मान्य उच्चतम न्यायालय द्वारा सूत्रधार तथा समस्त अपराधी निर्णीत हुए। श्री मौम्मद अफजल गुरू संसद पर हमले का सूत्रधार तथा समस्त अपराधियों को दिशा निर्देश देने वाला व्यक्ति है। जिसने अक्षम अपराध देशद्रोह किया है। मान्य सर्वोच्च न्यायालय ने मौ० अफजल गुरू सजा--ए--मौत की सजा दी है और वह सजा–ए–मौत की प्रतीक्षा कर रहा है, जिसका कि वह जायज हकदार है।

पत्र में यह भी कहा गया है कि संसद मात्र कोई ईंट पत्थर से निर्मित भवन नहीं। अपितु भारत की सर्वोच्चता एवं सम्प्रभुता को केन्द्र है। अपराध की गंभीरता को दृष्टिगत करते हुए यद्यपि सजा बहुत छोटी है किन्तु अन्य कोई विकल्प भी नहीं है। अपराध का भारत के संविधान विधि तथा न्यायालयों में किंचित मात्र विश्वास नहीं है तभी उसने भारत की सर्वोच्च संस्था संसद पर आक्रमण किया। अपने विश्वास व चरित्र के अनुरूप ही उसने स्वयं के हस्ताक्षर से दया की याचिका भी आपके समक्ष प्रस्तुत नहीं की है। अपितु कुछ पथ भ्रष्ट परिवारजनों ने विशेषकर पत्नि ने क्षमा याचना प्रस्तुत की है। हमारे विचार से इतने बड़े देशद्रोही के लिए नैतिक समर्थन देने वाले अथवा क्षमा याचना करने वाले भी देशद्रोही हैं एवं सख्त दण्ड के पात्र हैं। इन समस्त तथ्यों को दृष्टिगत करते हुए अफजल को किसी भी कीमत पर क्षमा अथवा कम सजा तथा आजीवन कारावास का पात्र न बनाया जाए। पुनश्च हमारा निवेदन है कि यदि फांसी को आजन्म कारावास में परिवर्तित किया जाता है तो फिर कोई देशद्रोही दुःसाहसी किसी वायुयान का अपहरण कर राष्ट्र को ब्लैक मेलकर मौलाना मसूद अजहर जैसा उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है तथा पुनः संसद हमले का शिकार हो सकती है और देश असुरक्षा का शिकार हो सकता है। राष्ट्र की जनता को इससे गलत संदेश जाएगा और राष्ट्र भक्तों को असीमित वेदना इससे पहुंचेगी। आर्यसमाज इस क्षमा याचिका का कड़ा विरोध करता है तथा एक बड़ा आन्दोलन प्रारम्भ करने के लिए बाध्य होगा। राष्ट्रपति सर्वोपरि है उसमें किसी प्रकार की समझौते की आवश्यकता नहीं है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की शताब्दी

६ से ८ अप्रैल २००७

गुरुकुल महाविद्यायल ज्वालापुर (हरिद्वार) की स्थापना के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आगामी ६ अप्रैल २००७ से ६ अप्रैल २००७ तक शताब्दी समारोह मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधाराओं से अनुप्राणित वीतराग तार्किक शिरोमणि एवं महान विद्वान् श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती के द्वारा सन १९०७ ई० में जिन पांच गुरुकुलों की स्थापना की गयी थी इन्हीं में से एक आपका (प्रिय) गुरुकुल महाविद्यायल ज्वालापुर है जोकि अपनी स्थापना से ही भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत को पूरे विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करता आ रहा है व स्वामी दर्शनान्द जी सरस्वती के संकल्प के अनुरूप आज भी भारतीय संस्कृति की निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता हुआ अपना शताब्दी समारोह दि० ६ अप्रैल २००७ से ६ अप्रैल २००७ तक बडे ही हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाने जा रहा है।

इस भव्य समारोह पर कुछ अत्यन्त विशिष्ट व्यक्तियों को आमन्त्रित किया जा रहा है व देश विदेश के सभी आर्यजनों को भी सादर आमन्त्रित किया जाता है। कृपया अधिक से अधिक सख्या में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ायें।

(डा. हरिगोपाल शास्त्री)
प्राचार्य

हे ईश्वर! हमें सुबुद्धि दो-।

स्वर्ण युग

युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना मानव के कल्याण के लिए की थी और उसमें तप त्याग, पुरुषार्थ–समाज सुधार व वैदिक अध्यात्म का सन्देश संसार को दिया था। उसी सन्देश को लेकर महर्षि जी के दिवंगत होने के पश्चात पाचं दशंको तक आर्य संगठन ने महान समाज सुधार कार्य, वैदिक सन्देश गणराज्य चेतना का सन्देश देकर आर्य समाज का विश्व में गौरवमय इतिहास रचा था। इसमें सन्यासी वानप्रस्थी व आर्य नेता व साधारण कार्य कर्त्ताओं ने अदभुद त्याग व निस्वार्थ बलिदान दिये, और आर्य शब्द को सार्थक करके दिखाया था। इसको हम आर्य समाज का स्वर्ण युग कह सकते हैं।

काला युग

पांच दशकों के बाद आर्य समाजों में पद प्रभाव व अन्य गुणों की लोलुपता बढने लगी और सिधान्त हीन, स्वध्यायहीन आर्य समाजों में घुसने लगे और बडे २ पदों तक पहुंच गये, इससे आर्य समाजियो की संख्या बढने लगी और आर्यो की संख्या घटने लगी। फलस्वरूप जो बुजर्गो ने आर्य समाज की छवि बनायी थी हम आर्य समाजी उसको धूमिल करने लगे। मैं यह नहीं कहता कि वर्तमान में आर्य नहीं हैं सच्चे आर्य बहुत हैं किन्तु आर्य समाजियों की संख्या अधिक होने से वह असहाय से बैठे हैं। वतर्मान का वातावरण आर्य जगत में बहुत ही दूषित हो गया है। सन्यासियों से लेकर आम सदस्य तक व पदाधिकारी आर्य समाज की छवि धूमिल कर रहे हैं। और अग्निवेश जैसे सन्यासी वेश व अन्य प्रभावशाली व्यक्ति आर्य समाज के नियमों व सिद्धान्तों को दर किनार करके पर लोलुपता सम्पत्ती हड़पने या अधिकार प्राप्त करके जबरदस्ती कर रहे है। आर्य समाज के इतिहास में यह समय काला समय कहा जायेगा। आर्य जगत मे जितने भी अच्छे कार्य हो रहे थे। वह इन व्यर्थ के झगडो में गौण पड गये हैं। सम्पूर्ण मानव जाति में आर्य समाज का गलत संदेश जा रहा है। जनसंख्या के हिसाब से जो आर्य समाज का विस्तार होना चाहिए था वह नही हुआ और वैदिक सस्कारों विचारों व्यवहारों के सिद्धान्तों से आर्य समाजी समझौता करते चले जा रहे हैं। यह बहुत ही चिन्ता का विषय है। शायद आप मेरे विचारों से सहमत हो किन्तु चालीस वर्षो से आर्य समाज की मैं जो सेवा कर रहा हूँ उसके अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ।

आर्य समाज के विकास हेतु सुझाव

१ सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि व उप प्रतिनिधि सभाओं के झगडों को देख कर सभी पदाधिकारियों को आर्य समाज के भावी हित में त्याग पत्र दे देने चाहिए और सम्पूर्ण आर्य जगत के प्रतिनिधियों द्वारा सर्वसम्मत चुनाव करके आर्य समाज सगठंन को बचाना होगा।

२. सार्वदेशिक सभा से अग्नि वेश को तुरन्त हट जाना चाहिए यदि वह हटधर्मी नहीं छोडते तो आर्य जन क्रान्ती द्वारा उनको सार्वदेशिक भवन से निकालना होगा। जनमत की सदैव जीत होती है। सारे विश्व के आर्यो को इस समस्या के हल करने के लिए एक जुट होना पडेगा।

३. सन्यासी व वानप्रस्थीयों को पद लोलुपता वित्तेषणा को त्याग कर जनता में प्रचार के लिए निकलना होगा। उपदेशक भजनों उपदेशकों को व्यवसायी न होकर मिशनरी बनना होगा।

४ आर्य प्रतिनिधि सभा व उपप्रतिनिधि सभावो को एक–एक प्रचार समिति तैयार करके उसका व्यय वहन करके ग्राम–२ मौहल्ले–मौहल्ले में व्यापक प्रचार कराना होगा।

संरक्षकपद

नवयुवकों को आगे आने हेतु वयोवृद्धों को आर्य समाज के पदों से हटना होगा, और संरक्षक मार्ग दर्शक बनकर प्रत्येक आर्य समाज को गति देना होगा। सार्वदेशिक सभा को देशकाल परिस्थिति के अनुसार सरक्षक पद रखना अनिवार्य करना होगा इससे आर्य समाज में प्रगति आयेगी। नयी पीढी को कार्य करने का मौका मिलेगा।

वित्तव्यवस्था

प्रत्येक धनी आर्य समाजों को सार्वदेशिक सभा निर्देश करने का नियम बनाऐ कि निधारित राशि से अधिक कोई आर्य समाज ज्यादा बैंक बैलेन्स, एफडी आदी न करे और शेष धन आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं को प्रचारार्थ दे देवें। अधिक धन सम्पति ही प्रत्येक विवादों की जननी है।

गुरुकुलों की सहायता गुरुकुलों को अधिक से अधिक सहायता दी जावे।

न्याय सभा

प्रत्येक विवादों के निवारण हेतु निस्वार्थ विद्वान सन्यासी व गैर सन्यासियों की कम से कम २१ विद्वानों की सभा बनायी जाये और उसका किसी भी विवाद का अन्तिम निणर्य माना जाए।

साप्ताहिक सत्संग

साप्ताहिक सत्सगों में सभी पदाधिकारियो एवं सदस्यों को सपरिवार आना अनिवार्य किया जाये। तथा प्रत्येक आर्य समाज के सदस्यों के युवक व युवती पुत्र-पुत्रियों की सूची मांग कर उनको आर्य समाज द्वारा निमन्त्रण दिया जाये और समाजों में उनका सम्मान कर आर्य समाज में भाग लेने को प्रेरित किया जाये। इससे नवयुवक आर्य समाज से जुडेगें

विनम्र निवेदन

आर्य जगत से निवेदन है कि हम यज्ञ को सर्व–श्रेष्ट कर्म मानते हैं किन्तु नित्य जो यज्ञ करते हैं उसके अर्थो से अभिनिज्ञ रहते है इसलिए यह यज्ञ भी हमारे लिए रुढ़ी होते जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द जी ने संध्या व यज्ञ मंत्रों में वेद मंत्रों का छाँट–छाँट कर मार्ग दर्शन के लिए दिये हैं। जैसे अष्टाज्याहुतिमन्चः मे पहला मंत्र है।

ओ३म् त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य.................. ऋ६१६–१–४ अर्थात् हे प्रकाश स्वरूप प्रमात्मन। आप हमारे सब दृश्य–अद्रश्य के जानने वाले हैं। आप यज्ञ क़रने वालों में सर्व श्रेष्ट हैं। तेजस्वी प्रकाशमय हैं। श्रेष्ट ग्रहण करने योग्य विद्वान के अनादर से हमें प्रथक रखें तथा सब प्रकार के द्वेषभावों को हमसे दूर करें। हम द्वेष कर्मो से दूर रहें।

(पं. उम्मेदसिंह विशारद
वैदिक प्रचारक देहरादून
उत्तरांचल)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Pos. Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 19-11-2006 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 16/17-11-2006

खुशहाल हुए बेहाल

सत्य सत्य ही होता है, चाहे वह प्रिय हो या अप्रिय

विदित हो कि सत्यार्थ प्रकाश विश्व की एक अनुपम कुंजी तथा आर्यसमाज की पूंजी है। जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु विरजानन्द जी से प्राप्त ज्ञान एवं हिमगिरि के गुफाओं मे हुए आत्मिक उत्थान के फलस्वरूप उनके हृदयोद्‌गार तथा विभिन्न ग्रन्थों का सार संग्रहीत है। ईश्वर नाम व्याख्या, बाल शिक्षा, अध्ययन–अध्यापन विषमय, संस्कार, वर्णाश्रम, राजधर्म, सृष्टि उत्पत्ति एवं विविध मत–मतान्तरों से सम्बद्ध यथार्थ निरूपण है। महर्षि की दृष्टि मे एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक ग्रन्थ की मान्यता में ही सभी मनुष्यों का समग्र सुख सम्भव है। उतएव उन्होंने अन्धविश्वास, पाखण्ड, छुआछूत, दलित–नारी उत्पीड़न, जड़पूजा, बहुदेववाद के विरुद्ध परस्पर–प्रेम, सदभाव दलित–नारी सम्मान एवं एक ईश्वरपूजा की परम्परा को पुनर्स्थापित किया। पराधीनता से ग्रस्त भारतीयों को स्वतन्त्रता का पीयूष पिलाया। सत्यार्थ प्रकाश के चौदह सम्मुलासो में चौदह ज्ञानरत्नों को पिरोकर समस्त मानव को नवज्योति प्रदान की।

खुशहालचन्द हुए, जो संयासोपरान्त महात्मा आनन्द स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके आत्मिक चिंतन तथा सरस, सुबोध, सारगर्भित प्रवचन ने न जाने कितने भूले–भटके मानव का कायाकल्प की है। देश ही नहीं, विदेशों में भी उनके उपदेशों का काफी प्रभाव रहा है। किन्तु, उस मनीषी ने कभी सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन को अनुभव न किए।

आर्य मुसाफिर पं० लेखराम जो तहरीर और तकरीर के प्रबल समर्थक थे। सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर कई शास्त्रार्थ मे उन्होंने विरोधियों के दांत खट्टा कर डाले। मुंशीराम जैसे कट्टर नास्तिक एवं तार्किक ने अपने कई प्रश्नों का हल सत्यार्थ प्रकाश से पाकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। भौतिकी से एम०एस०सी० की डिग्री प्राप्त पं० गुरुदत्त ने चौदह बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर यह लिखा था कि– जब–जब मै इस ग्रन्थ को पढ़ता हूं। तब तब नई–नई बात ही मुझको मिलती है। यदि यह एक हजार रुपये में भी मिलता तो भी मैं अवश्य खरीदता। जबकि उस समय उसकी कीमत मात्र ढाई आने थी।

स्वामी दर्शनानन्दजी, स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी, म० नारायण स्वामी, स्वामी समर्पणानन्दजी, सर्वदानन्द जी, मुनीश्वरानन्द जी, ब्रह्मानन्दजी दण्डी, सर्वानन्दजी, ओमानन्दजी, दीक्षानन्द जी जैसे वेदों के मर्मज्ञ सन्यासी, गंगा प्रसाद उपाध्याय, अयोध्या प्रसाद, आचार्य अभयदेव, रामनाथ वेदालकार, सत्यव्रत वेदालकार जैसे उद्‌भट वैदिक विद्वान् एवं पं० चमूपतिजी, अमर स्वामी, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० शांति प्रकाश, पं० विद्यानन्द मतकी जैसे महान् शास्त्रार्थ महारथी आर्य जगत मे हुए हैं। जिनके ज्ञानालोक ने असंख्य जनों अज्ञानतिमिर को दूर कर विश्व में आर्यसमाज और ओ३म् ध्वज को लहराया है। किन्तु उन तत्ववेत्ताओं ने भी सत्यार्थ प्रकाश में कोई खोंट नही पाया। किन्तु शायद एक बार भी सिलसिलेवार ढंग से पूरे ग्रन्थ का वाचन न कर सके होंगे और संशोधन के लिए खुशहाल से बेहाल हो गए। इनकी दृष्टि मे गुरु नानक उदार हृदय के ईश्वरभक्त थे। क्या आपको महर्षि अनुदार और ईश्वर विरोधी दिख पडते हैं? जिसने अपने विषदाता को भी अशर्फी की थैली देकर जीवन दान दे दिया, क्या इससे बढ़कर उदारता का उदाहरण संसार में है क्या? महाशय जी! यदि उनकी वाणी ही आपको प्रिय लगते हैं तो देर क्यों? पहुंच जाइए गुरुद्वारा कीजिए गुरु ग्रन्थ साहिब की आरती–वन्दना, डुलाइए नित चॅवर। क्यों आर्यसमाज के कुर्सी पर आसीन हो, जिस बर्तन में खाते हैं, उसी में छेद कर रहे हैं। महोदयजी! आर्यसमाज या उनके शिक्षण संस्थाओं मे तो गुरु नानकजी एवं गुरुगोविन्द जी के चित्र दिखा सकते हैं? देखिए जाकर स्वर्णमंदिर के संग्रहालय में, जहां राष्ट्रनेत्री इन्दिरा गांधी के हत्यारे सतवन्त सिंह और बेअन्त सिंह के चित्र अमर शहीदों में और देशभक्ति की निशानी है?

अतएव सत्य–सत्य होता है चाहे वह प्रिय हो या अप्रिय। महर्षि स्वयं सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे लिखते हैं– "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।"

अतएव उन्होंने जो कुछ लिखा है वह लोकोपकार हेतु न किसी को दुखी या अहित करने के लिए। किन्तु हठ, दुराग्रह एवं अन्धविश्वास के वशीभूत व्यक्ति अपना सुधार न कर बुरा ही मान ले तो इसमें ऋषि का क्या दोष ? सच तो यही है.

आइना चेहरे के सब दाग दिखा देता है।उसकी फितरत का तकाजा है.
यह शिकवा कैसा? आप सत्यार्थ की तनकीद से नाराज न हों, अपना चेहरा ही धो डालिए, गुस्सा कैसा?

निवेदक प्रो. ब्रह्मदेव आर्य
आर्य समाज चेवारा
शेखपुरा (बिहार) ८११३०४

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9811221083) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
वेबसाइट : http://www.sarvadeshik.com
(फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



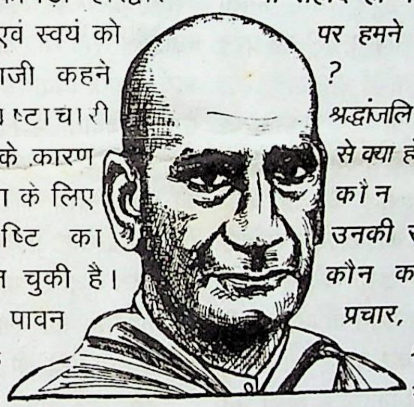
वर्ष ४५ अंक १५ | १७ दिसम्बर से २३ दिसम्बर, २००६ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | मा०कृ०१२

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य कर्म स्थली गुरुकुल कांगड़ी में बलिदान दिवस यात्रा

२३ दिसम्बर, २००६ (शनिवार)

हरिद्वार। स्वामी श्रद्धानन्द जी की पवित्र पावन कर्मस्थली गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार कुछ धूर्त एवं स्वयं को आर्य समाजी कहने वाले भ्रष्टाचारी व्यक्तियों के कारण भू-माफिया के लिए गिद्ध दृष्टि का कारण बन चुकी है। इस पवित्र पावन एतिहासिक स्थल से



सच्चे आर्यों को अत्यन्त भावुक प्रेम है। उन्ही सच्चे आर्यों के आशीर्वाद और सदभावनाओं के कारण आज तक इस पवित्र स्थली की रक्षा सम्भव होती आ रही है। भविष्य में भी यह सुरक्षा बनी रहे इसके लिए समस्त आर्यों को वर्ष में अनेकों बार इस स्थली पर एकत्र होकर संकल्प साधना करनी चाहिए। गुरुकुल कांगडी के वर्तमान पदाधिकाकारी एवं समूचा आर्य जगत इस महान परम्परा की रक्षा के लिए हर बलिदान के लिए तैयार है।

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल परम्परा ही नहीं अपितु आर्यसमाज, पंजाब सभा और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए भी सदैव अपने जीवन की आहूति दी है। उनके इस बलिदानी स्वरूप को देख कर ही तो उनके विद्वान पुत्र की लेखनी ने कहा था –

वो शहीद हो गए,
पर हमने क्या किया ?
श्रद्धांजलि शब्दों में देने से क्या होगा
कौन चलेगा उनकी राह पर,
कौन करेगा धर्म प्रचार,
श्रद्धा की गंगा कौन बहाएगा।

उत्तर दो ... उत्तर दो ...

आज स्वामी श्रद्धानन्द की धरती से एक अजीब प्रश्न खड़ा हो गया है कि इतने बड़े प्रश्नों को छोड़ों, मेरे छोटे से प्रश्न का उत्तर दो ...

कौन करेगा रक्षा इस गुरुकुल रूपी पावन पुण्य स्थली की ? पदलोलुप, धन हडप करने वाले या निस्वार्थ त्यागी तपस्वी ...

उत्तर दो... उत्तर दो ...

आईए, समस्त सच्चे आर्य २३ दिसम्बर, २००६ (शनिवार) की प्रातः बेला तक हरिद्वार पहुंच कर प्रातः ६ बजे प्रारम्भ होने वाली बलिदान यात्रा तथा संकल्प जन सभा में भाग लेकर इन उत्तरों की खोज करें। स्वयं महसूस करे कि उन महान दायित्वों का निर्वहन आज के आर्य किस प्रकार करेंगें।

शोभायात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी, वैदिक यतिमण्डल के प्रधान पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी तथा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुदर्शनशर्मा करेंगे।

दूर से आने वाले आर्य जन यदि २२ दिसम्बर की रात्रि तक भी पहुंचे तो उनके आवास की व्यवस्था उपलब्ध होगी। अपने पधारने की पूर्व सूचना श्री स्वतंत्र कुमार, कुलपति जी को फोन नं० ६७१६००४४५१ पर अवश्य दें।

सार्वदेशिक सभा के मुकदमें में निर्णय पुनः सुरक्षित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मन्त्री श्री विमल वधावन जी के द्वारा अग्निवेश तथा उसके अन्य साथियों के विरुद्ध चल रहा मुकदमा दिल्ली उच्च न्यायालय में १७ नवम्बर को सुनवाई के लिए प्रस्तुत हुआ।

इससे पूर्व १७ अप्रैल को माननीय न्यायाधीश ने फैसला सुरक्षित कर दिया था। परन्तु श्री देवरत्न आर्य को सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा पदमुक्त किए जाने के बाद उन्होंने अपनी अक्षमताओं के बावजूद गुटबाजी को जन्म देते हुए प्रकाश आर्य के नाम से एक प्रार्थना पत्र अदालत में प्रस्तुत करवा दिया जो पूरी तरह निराधार था। इस प्रार्थना पत्र में श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि श्री विमल वधावन के स्थान पर उन्हें मन्त्री नियुक्त किया गया है। इस प्रार्थना पत्र के ही कारण मुकदमे के निर्णय में लगभग ७-८ माह का विलम्ब हो गया है। इस निराधार प्रार्थना पत्र को किनारे रखते हुए माननीय न्यायाधीश ने पुनः फैसला सुरक्षित कर दिया है।

दुर्भाग्यवश घर के चिराग ही घर की आग को बढ़ा रहे हैं। पहले विलम्ब का कारण अग्निवेश गुट था और अब प्रकाश आर्य, राजसिंह आर्य और देवरत्न आर्य गुट ने अडचने लगानी प्रारम्भ कर दी हैं। आग बुझाने का उपाय किसी को भी नहीं सूझ रहा। ईश्वर आर्यों की बुद्धि को सन्मार्ग पर चलाए। गायत्री मन्त्र के रटने वाले तोते साबित हो रहे हैं ये ढोंगी धन हड़पने वाले पदलोलुप कथित आर्य।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

२३ दिसम्बर, २००६ (शनिवार) को हरिद्वार में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २३ दिसम्बर, २००६ (शनिवार) को दोपहर बाद ४ बजे से वेद मन्दिर, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आयोजित किया गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी इस अधिवेशन की अध्यक्षता करेंगे।

समस्त प्रान्तीय सभाओं के उन प्रतिनिधियों को बैठक की सूचना/आमन्त्रण आदि डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं जो सार्वदेशिक सभा के साधारण सदस्य है।

बैठक से पूर्व प्रातः ६ बजे से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर शोभायात्रा का शुभारम्भ गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से होगा और वापिस विश्वविद्यालय में ही जन सभा का आयोजन होगा।

– विमल वधावन आर्य, सभामन्त्री

सम्पादक
विमल वधावन

सम्पादकीय

स्वार्थ की आग लगी है चारो तरफ



विगत २३ नवम्बर को दिन दिहाड़े अग्निवेश तथा उसके साथियों के समर्थन से लगभग बीस-पच्चीस अपराधी तथ्यों ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के बीच स्थित छोटे गुरुकुल के कार्यालय पर कब्जा जमाने का विफल प्रयास किया। इस अपराधी कृत्य का गुरुकुल के सुरक्षाकर्मियों द्वारा डटकर विरोध हुआ। अपराधी तत्वों ने जब गोली चलाई तो सुरक्षाकर्मियों ने भी मुकाबला करते हुए जवाबी फायर किया तो अपराधी तत्व चूहे-बिल्लियों की तरफ भाग खड़े हुए। यह सारा षडयन्त्र राजनीतिक अपराधियों की सहायता से रचा गया था। इससे पूर्व विगत वर्ष जनकराज शर्मा नामक अपराधी बने राजनेता को छोटे गुरुकुल का अधिष्ठाता बनाकर अगस्त २००५ में कब्जे के लिए भेजा गया था।

गुरुकुल के अधिकारियों विशेष रूप से कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा तथा मुख्य अधिष्ठाता श्री वेदव्रत शर्मा, कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार तथा सम्पदा अधिकारी श्री करतार सिंह जी के द्वारा की गई व्यवस्थाओं से उस समय भी कब्जे का प्रयास सफल नही हो सका।

इस बार उसी जनकराज शर्मा के एक अन्य सहयोगी अमरीष शर्मा को इस कार्य की जिम्मेवारी सौंपी गई। यह सारे षडयन्त्र केवल गुरुकुल की पवित्र भूमि का कब्जा भू-माफिया को सौंपने की खातिर किए जा रहे हैं जिससे करोड़ों रुपए की धनराशियां उस वक्त जमीन बिक्री में शामिल तथाकथित आर्य नेताओं ने डकार ली थी। हालाकि उसका परिणाम आर्य जनता द्वारा उन्हें दिखा दिया गया। आर्य जगत से उन लोगों का पूर्णतः सफाया सा हो गया परन्तु हरियाणा के कुछ आर्यसमाजी नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण ही वे तत्व सिर पर टोपियां और पगड़ियां बांधते फिर रहे हैं।

कुछ तो आकर चले गए
कुछ जाने को तैयार।।
ये दुनिया नही जांगीर
किसी कि ...

परन्तु आध्यत्मिकना से कोसों दूर है ऐसे व्यक्ति और उनके समर्थक। दुर्भाग्यवश शेरसिंह जैसे भूमि विक्रय में अग्रणी नेता को हरियाणा की धरती पर ही सम्मानित किया जाने लगा।

राजसिंह द्वारा भी गुरुकुल विश्वविद्यालय का तथाकथित कुलाधिपति रूप धारण करके कब्जे के प्रयास हरिद्वार से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्रों में इतिहास बन चुके हैं। उसने दिल्लीवासियों को खूब गुमराह किया। करोड़ो रुपए डकारने वालों ने उन लोगों पर आरोप लगाने प्रारम्भ कर दिए जिन्होंने समाज या सभा का कभी पानी भी शायद मजबूरी में ही पिया हो।

यह सारी कब्जेबाजी की घटनाओं के तार परस्पर मिले हुए हैं। मुझे समझ नहीं आता कि ऐसे समाज में किस प्रकार और कब तक कोई व्यक्ति तप करता हुआ निस्वार्थ होकर कार्य करता रह सकता है। स्वार्थवाद की आग लगी है चारो तरफ।

मुझे पद से हटने में एक क्षण का भी विचार नहीं करना है क्योंकि मेरा मूल विचार बिना पद, बिना धन और बिना किसी भी न्यूनतम स्वार्थ के समाज में कार्य करना है।

श्री देवरत्न आर्य से कोई भी यह मौलिक प्रश्न पूछे कि -

(१.) क्या विमल वधावन ने वर्ष २००१ में आपके साथ कार्यकारी प्रधान बनने के लिए कोई जोर-जबरदस्ती की थी या न बनने के लिए।

(२.) इसी प्रकार वर्ष २००४ में मन्त्री बनने के लिए मैंने आग्रह या साधारण प्रार्थना भी कभी की थी या उसके विपरीत मैं किसी भी पद के बिना रहने की जिद कर रहा था।

(३.) जनवरी, २००६ में अग्निवेश कब्जे की आग से लड़ते हुए एक वर्ष बीत जाने पर उसमें प्रधान के नाते इनका क्या सहयोग था ? फिर भी संघर्ष में जूझते हुए मुझ पर इस बात का दबाव डाला जा रहा था कि अन्तरंग और साधारण सभा में से राजसिंह और आचार्य बलदेव जी के नापसन्द लोगों को हटाकर उनके पसन्द लोगों को शामिल कर दिया जाए। संघर्ष में जोर लगाने की कोई संकल्पबद्धता कहीं नजर नहीं आई।

शेष पृष्ठ ४ पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन
१७ दिसम्बर, २००६ को आर्यसमाज दीवान हाल में आयोजित

सार्वदेशिक न्याय सभा के आदेश संख्या ७६६ दिनांक २६-६-२००५ के द्वारा श्री देवरत्न आर्य को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से मुक्त कर दिया गया था। श्री देवरत्न आर्य के द्वारा की गई अनियमितताओं के दृष्टिगत जारी इस आदेश तथा उनकी अस्वस्थता का कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा लगातार दुरुपयोग किए जाने के कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक २ जुलाई, २००६ में श्री देवरत्न के स्थान पर श्री मिठाई लाल सिंह जी को सार्वदेशिक सभा का प्रधान नियुक्त किया गया।

सार्वदेशिक सभा के आदेश संख्या ८५० दिनांक १५-६-२००६ के द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग को भंग करके तदर्थ समिति गठित की गई जिसमें प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव, महामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' तथा कोषाध्यक्ष श्री दयानन्द मदान जी को नियुक्त किया गया। आर्यसमाज में बढ़ रही स्वच्छन्दता तथा विघटनात्मक गतिविधियों के दृष्टिगण ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक था।

इस बीच में समूची आर्य जनता ने स्वच्छन्दता के खुले दर्शन भी अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के रूप में कर लिए हैं। आर्य जनता के कुछ प्रश्न आज भी पूरी तरह अनुतरित हैं -

क) अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए एकत्रित धन राशियां न तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के खातों में जमा की गईं और न सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के खातों में। आखिर इस सारी व्यवस्था के लिए राशियां व्यक्तिगत हस्ताक्षरों से संचालित खातों में क्यों डाली गई ?

ख) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के खातों में जब वे राशियां नहीं है तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उनके लिए जवाबदेह भी नहीं होगी। उनकी जवाबदेही किस पर है ? आर्य जनता किससे हिसाब मांगे ? यह प्रश्न सदैव अनुतरित रहेगा।

ग) किसी बैठक में ४ करोड खर्च की बात कही जाती है तो कहीं २ करोड की तो कहीं एक करोड़ की। आखिर सच्चाई क्या है ? इसी प्रकार आर्य जनों के आगमन के आंकड़े भी बढ़ा चढ़ा कर बताए जा रहे हैं जिससे अधिकाधिक खर्चो का समायोजन किया जा सके। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बार बार आय व्यय का विवरण मांगने पर भी आज तक कोई प्रतिक्रिया पूर्व अधिकारियों द्वारा नहीं दिखाई गई। इन पूर्व अधिकारियों के यह कार्य अब अपराध की श्रेणी में आते जा रहे हैं। इसके लिए कानूनी कार्यवही ही एक मात्र उपाय है।

घ) दिल्ली सभा के स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव करवाने का कोई प्रयास ३ वर्ष की अवधि बीत जाने के बाद पूरे एक वर्ष तक क्यों नहीं किया गया ?

ड) आज जब तदर्थ समिति ने सार्वदेशिक न्याय सभा की देख रेख में चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी और १७ दिसम्बर २००६ (अधिवेशन स्थल दीवान हाल) का निर्धारण कर दिया गया तो अतिक्रमण के रूप में कुछ पूर्व अधिकारियों ने सत्ता छिनती देख कर बिना तैयारी के ही एक समानान्तर निर्वाचन अधिवेशन की घोषणा कैसे कर दी ? जब कि इन्होंने इससे पूर्व किसी पत्र परिपत्र के द्वारा दिल्ली की आर्यसमाजों से प्रतिनिधियों के नाम आदि नहीं मांगे थे।

च) आर्यसमाजों में अपनी पसन्द के आधार पर गुटबाजियां बढ़ाई जा रही थी। आज दर्जनों आर्य समाजें विवादग्रस्त हैं और समस्त विवादों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व अधिकारियों की स्वच्छन्दता परिलक्षित हो रही है। प्रत्येक आर्यसमाज की आय पर कुदृष्टि भी कुछ पूर्व अधिकारियों की लालसा का कारण बन गयी थी।

इन सब प्रश्नों के बीच दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को अवैधानिकता से बचाने के लिए ही १७ दिसम्बर, २००६ को आर्यसमाज दीवान हाल में सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन आयोजित किया गया है। इस कार्य में समस्त आर्यों का यथोचित सहयोग अपेक्षित है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कुछ पूर्वाधिकारी अब भी आर्य समाजों को पत्र भेजकर प्रतिनिधियों को १७ दिसम्बर, २००६ (आर्यसमाज दीवान हाल) के अधिवेशन से दूर रखने का प्रयास कर रहे हैं। उनका यह कार्य पूरी तरह से विघटनात्मक तथा स्वार्थ पूर्ण है। कृपया ऐसे अनाधिकृत पत्रों की ओर कोई ध्यान न दें। इस प्रकार के समस्त विघटनात्मक प्रयास सार्वदेशिक न्याय सभा के आदेशों की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अवहेलना है। □

ओ३म् की महिमा

ओ३म् खं ब्रह्म।

यजु० ४०/१७

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में परमात्मा का वर्णन करके बतलाया है कि परमात्मा का नाम ओ३म् है, यह आकाशवत सर्वव्यापक एवं ब्रह्म–सर्वतों महान है।

योगीराज पतंजलि ने ईश्वर को निरतिशयं कहा है। जिससे अधिक और न हो (सबसे अधिक) उसको निरतिशयं कहते हैं।

'तत्र निरतिशयं सर्वज्ञ बीजम्'

– योग. समाधिपाद २५

ईश्वर में इतना ज्ञान है कि उसके बराबर या उससे अधिक ज्ञान, किसी में भी नहीं हो सकता अर्थात ईश्वर सर्वज्ञ है। जबकि जीव, अल्पज्ञ और प्रकृति अज्ञ (जड़) है।

ईश्वर में जो निरतिशयं ज्ञान है, वह ईश्वर के (सर्वज्ञबीजम) सर्वज्ञ होने का कारण है। ईश्वर में इतना ज्ञान है कि उसके बराबर या उससे अधिक किसी का भी नहीं हो सकता और आगे कहा है –

स एष पूर्वेषमपि गुरुः कालेनानवच्छेदात।

– योग.समाधिपाद २६

वह ईश्वर पूर्व गुरुओं (ऋर्षियों, महर्षियों) का भी गुरु है। काल के द्वारा नष्ट न होने से।

ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को प्राप्त करके ही कोई शरीरधारी व्यक्ति गुरु बनने में समर्थ होता है। इसलिए वह परमेश्वर सृष्टि के आदि से लेकर अब तक जितने भी ऋषि, महर्षि, आचार्य, अध्यापक, उपदेशक इत्यादि गुरु हुए हैं तथा जो आगे होंगे, उन सबका भी गुरु है क्योंकि वह काल से कभी नष्ट नहीं होता, वह अमर है।

इसी प्रकार से वह पिछली सृष्टियों में भी सबका गुरु था और आगे आने वाली सृष्टियां में भी सबका गुरु रहेगा और

तस्य वाचकः प्रणवः।

– योग. समाधिपाद २७

उस ईश्वर का वाचक बताने वाला शब्द – नाम प्रण्व–ओम् है।

योगिराज पतञ्जलि ने उसी प्रणव ओम् के जप का विधान करके उसके फल का निरूपण अगले दो सूक्तों में इस प्रकार किया है –

तज्जपस्तदर्थभावनम्।

– समाधिपाद २८

इस ओम् शब्द का जप करना चाहिए और उसके अर्थ का (ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव का) मन में विचार करना चाहिए। और

ततः प्रत्येकचेतना-धिगमोऽप्यन्तराया भावश्च।

– समाधिपाद २६

उस शब्द का तप करने तथा उसके अर्थ (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव) का विचार करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है तथा योग के विघ्नों (बाधकों) का विनाश होता है।

ततः ईश्वर प्राणिधान सहित ओम् के जप और अर्थ चिन्तन से प्रत्येकचेतनाऽधिगमः अन्तरात्मा का साक्षात्कार होता है और अन्तरायाऽभावा – (योग के) विघ्नों का अभाव होता है।

इसलिए, ईश्वर के निज नाम ओम् का ही समर्पण तथा जप करना अभीष्ट है।

– *चितरंजन वत्स*
ई–८५, अंसारी नगर,
नई दिल्ली–२६

२००७ सत्यार्थ प्रकाश वितरण वर्ष के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ नोएडा सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी की अध्यक्षता में सत्यार्थ प्रकाश एवं गौरक्षा सम्मेलन हजारों आर्यों की उपस्थिति में भव्यता के साथ नोएडा में सम्पन्न हुआ।

५०१ हवन कुण्डों का ईटों से निर्माण करवाकर उनमें प्रज्ज्वलित अग्नियों के माध्यन से आयोजकों ने ईश्वरीय तरंगों का साक्षात अनुभव यज्ञ में उपस्थित धर्म प्रेमी आर्य जनों को प्रदान किया। प्रत्येक व्यक्ति उन यज्ञ कुण्डों की भव्यता को देखकर एक दूसरे से यह पूछने के लिए मजबूर हो गया कि क्या आपने ५०१ कुण्डों में यज्ञ होता पहले कभी देखा है ? इस विशाल यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० जयेन्द्र थे।

सम्मेलन में इसी प्रकार का दूसरा प्रशंसनीय वातावरण १ लाख सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना को लेकर पैदा हुआ। प्रत्येक व्यक्ति [illegible] एक ही बात थी कि ऐसी योजना पहले कभी सुनने नहीं मिली। परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से वर्ष २००७ के दौरान यह संकल्प अवश्य पूरा कर लिया जाएगा।

सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी के साथ मुम्बई से दानवीर आर्यों की टोली पहुंची जिसमें स्वामी संकल्पानन्द जी, श्रीमती देवराजवती आर्या, श्री विश्वभूषण, श्री डॉ० तुलसीराम बांगिया, श्री अरुण अब्रोल, श्री सतीश चन्द्र गुप्ता, श्री मदन रहेजा, श्री प्रभू भाई लाणी आदि सम्मलित थे।

पंजाब से सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा तथा श्री देवेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में आर्यजनों ने सम्मेलन में भाग लिया।

उत्तरांचल से श्री हजारी लाल जी तथा श्री देवराज आर्य ने नेतृत्व में हरिद्वार तथा अन्य स्थलों से आर्यजन पधारे।

गुरुकुल कांगड़ी से कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार, मध्य विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री अनिल शर्मा, श्री अशोक यादव, श्री [illegible]ष गुप्ता, दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव, हरियाणा सभा के प्रधान श्री भगत मंगतूराम तमिलनाडू सभा के प्रधान श्री [illegible]धचन्द्र आदि ने दल बल सहित इस सम्मेलन में भाग लिया।

वैदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश शास्त्री श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, श्री महावीर अग्रवाल, श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, ब्रि० चितरंजन सावन्त, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, श्रीमती आशारानी राय, ब्र० आर्य नरेश, आचार्य रामानन्द, महाशय वेगराज जी भजनोपदेशक, डॉ० गणेश दत [illegible], डॉ० अन्नपूर्णा, प्रो० इसराईल खान आर्य, ब्र० ओ३म् स्वरूप [illegible], डॉ० विरेन्द्र जैन, आदि की उपस्थिति ने सम्मेलन के समस्त [illegible] को सुशोभित किया।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री जय नारायण [illegible]ण जी के नेतृत्व में श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री लक्ष्मीचन्द, श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री सुखवीर आर्य, श्री विमल आर्य, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री अरतिन्द कुमार आदि ने अपनी पवित्र कर्मठता से सम्मेलन का सुन्दर आयोजन किया। □

ईश्वरभक्त व्यक्ति बुराईयों में नहीं फंसता

उत्तर प्रदेश के बागपत क्षेत्र में ढिकोली ग्राम में वेद प्रचार के तीन दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न विद्वानों, भजनोपदेशकों आदि ने ईश्वर भक्ति, देश भक्ति और समाज सेवा के रोचक विचारों से ग्रामवासियों में आर्यसमाज के सिद्धान्तों मन्तव्यों का प्रचार-प्रासर किया। तीनों दिन प्रातःकाल को भव्य यज्ञ से प्रारम्भ करके प्रातः और सायं प्रवचन सत्रों का आयोजन किया जाता था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य जी ने १८ और १६ नवम्बर को दोनों सत्रों में उपस्थित रहकर ग्रामीण जनता को आर्यसमाज की ज्ञान धारा के साथ जुड़ने की प्रेरणाएं दीं।

उन्होंने कहा कि वेद का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की सामान्य प्रेरणाएं देता है। ईश्वर से प्रेम किए बिना हमारा जीवन उस अनाथ बच्चे की तरह है जो समाज में दूर–दूर भटकता रहता है और दिशाहीन होकर गंदा खान पान और गंदे संस्कारों को इकट्ठा करता रहता है।

ईश्वर से प्रेम करने वाला व्यक्ति सदैव अपने सिर पर सर्वोच्च पिता का साया महसूस करता है और बुराईयों से बचा रहता है।

पूर्णमदः पूर्णमिदं .... मन्त्र की व्याख्या करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि सारी सृष्टि ईश्वर से परिपूर्ण है। इस पूर्ण में से यदि पूर्ण को निकाल लिया जाए तो भी वह पूर्ण ही रहती है। इसका अभिप्राय ईश्वर की सर्वविद्यमानता से है। ईश्वर की व्यववस्थाओं में से कुछ भी चुरा कर कोई व्यक्ति कहीं नहीं ले जा सकता क्योंकि व्यक्ति जहां भी चोरी या लुकाछिपी करेगा और चोरी का सामान रखेगा वहां भी तो ईश्वर विद्यमान है। ईश्वर की सर्वविद्यमानता को समझने वाला और ईश्वर का सच्चा प्रेमी कभी बुराईयों में नहीं फंस सकता।

श्री वधावन ने कहा कि आर्यसमाज का मुख्य कार्य प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर से जोड़ना है यह कार्य चोरी करने वाले स्वार्थी लोग या पद लोलुप नहीं कर सकते। यह कार्य निस्वार्थ भाव वाले लोगों का है।

वर्तमान में आर्यसमाज में आई शिथिलता को दूर करने का भी यही एकमात्र उपाय है कि निस्वार्थ होकर बिना पदों के सेवा करके ईश्वर भक्ति और समाज सेवा का कार्य किया जाए।

इस तीन दिवसीय प्रचार कार्यक्रम में श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री अजब सिंह सहारनपुर आदि ने भी भाग लिया। □

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी पुनः वेद प्रचार कार्यक्रमों में

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने विगत लगभग १ वर्ष से भी अधिक का अमूल्य समय पांडिचेरी में जीवन प्रभात आश्रम की स्थापना व्यवस्था के लिए आहूत किया। यह प्रकल्प अब आर्यसमाज गांधीधाम के अन्तर्गत सुचारू रूप से प्रारम्भ हो गया है।

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने पुनः वेद प्रचार कार्यक्रमों में अपना निस्वार्थ सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया है।

६ और १० दिसम्बर को होशंगाबाद गुरुकुल में प्रचार के बाद अब वे १२ से १६ दिसम्बर तक बागपत के ढिकोली गांव के आस पास **'हमारा गांव वेद प्रचार योजना'** के अन्तर्गत गए हैं। २३–२४ दिसम्बर को उनका कार्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में निर्धारित है।

उनसे सम्पर्क करने के लिए पता इस प्रकार है –

आर्य तपस्वी सुखेदव जी
डी-११/११८, रोहिणी, सेक्टर-८, दिल्ली - ८५
फोन नं० : ०११-२७६४१६१ (निवास)
०६८६६७६६६८ (मोबाईल)

Licence No. U(C) 93/2006
Licensed to Post Without Pre-payment

प्रतिष्ठा में

पृष्ठ २ का शेष

स्वार्थ की आग लगी है चारो तरफ

इसी कारण से मैंने १३ जनवरी, २००६ को अपनी व्यथा कथा लिखते हुए पद त्याग की भावना व्यक्त करते हुए उन्हें यह स्पष्ट लिखा था कि आप कोई नया मन्त्री नियुक्त कर लें। परन्तु जवाब में श्री देवरत्न ने कहा कि आप ईमानदारी और कर्मठता से सब कार्य करने कर रहे हो जबकि मैं स्वयं अस्वस्थ और कार्य में अक्षम हूं अतः आप प्रधान बदल लो। इसके बावजूद मार्च, २००६ से श्री देवरत्न आर्य को महासम्मेलन के सब्जबाग दिखा कर राजसिंह और आचार्य बलदेव की गुटबाजी ने ऐसा मोह में बांधा कि घर में लगी आग को बुझाने का कोई प्रयास नहीं बल्कि आग को बढ़ाने के कार्य किए जाने लगे। उसी का नतीजा निकला कि श्री देवरत्न और प्रकाश आर्य के हस्तक्षेप से संघर्ष रूपी मुकदमें के निर्णय में ७–८ महीने और विलम्ब हो गया।

इन लोगों को अब भी आग बुझाने और संघर्ष को सफल करने की किसी योजना का कोई मार्ग नहीं सूझा। समस्त सभाओं को शामिल करके सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन यथाशीघ्र करवाने की कोई योजना आज भी इनकी दृष्टि में नहीं है। ऐसे हालात में भी दिमाग में अमेरिका, मॉरिशस और सूरीनाम में जा–जाकर सम्मेलन करने की धुन सवार है इन कथित आर्यो पर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक धारा लागातार फरवरी, २००५ से चल रही है। दयानन्द भवन पर कब्जा छिनने के बावजूद कानूनी रूप से वही धारा संघर्ष के लिए कर्त्तव्यबद्ध होकर कार्य करती रही है। सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री [illegible] जी का आशीर्वाद, संरक्षण, सारा निर्देशन और उनका कर्मठतापूर्ण सहयोग इस संघर्ष आंदोलन की आत्मा है। उनके अभिनन्दन के लिए समूची धरती पर कोई शब्द नहीं मिलेगा।

सार्वदेशिक न्याय सभा ने ही विगत चुनाव कई बार सम्पन्न करवाए हैं। अग्निवेश जैसे तत्व सदैव न्याय सभा के संरक्षण को तोड़ने का प्रयास करते रहे हैं।

आज कुछ लोग हमारी मुख्य धारा से भी निकल कर इस संघर्ष के विरुद्ध लामबन्द हो गए हैं। यह दुर्भाग्यशाली है।

समस्त सभाओं को एकजुटता के साथ निर्वाचन की राय बनाने में कुछ आर्य नेताओं ने पहल दिखाई है जिनमें डॉ० राधाकृष्ण वर्मा, श्री वाचोनिधि आर्य, डॉ० तुलसीराम बांगिया और श्री जयनारायण अरुण आदि महानुभावों के नाम उल्लेखनीय हैं। यदि ये महानुभाव समस्त कार्यो को पवित्र मनसा अपने नियन्त्रण में लेकर कोई नई व्यवस्था बनाने में सफल हो जाते हैं तो मैं सब से पहले केवल आज ही नहीं अपितु वर्तमान मानव चोले में आर्यसमाज के किसी पर न रहने के संकल्प के पुनः त्याग और हर सहयोग लिए तैयार हूं।

इति ओ३म।

– विमल वधावन

सभा

ढिकोली (बागपत-उ०प्र०) से प्रारम्भ हुई
हमारा गांव वेद प्रचार योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 'हमारा गांव वेद प्रचार योजना' का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। ढिकोली गांव के आस पास १४ गांवों को कड़ियां बना दिवसीय प्रचार कार्यक्रम के रूप में इस योजना का परीक्षण १२ दिसम्बर को प्रारम्भ किया गया। इसके लि आर्य तपस्वी सुखदेव जी ७ दिवसीय प्रचार कार्यक्रम अन्तर्गत मुख्य प्रचारक के रूप में भेजे गए हैं। १६ दिसम्बर इस प्रथम कार्यक्रम का समापन समारोह ढिकोली में ही होगा। इस कार्यक्रम की विस्तृत योजना प्रथम अनुभव के आगामी अंक में प्रस्तुत की जाएगी।

– विमल वधावन आर्य, सभा

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9811221083) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित
ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in वेबसाईट : http://www.sarvadeshik